सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : अगुवा / पास्टर

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 8

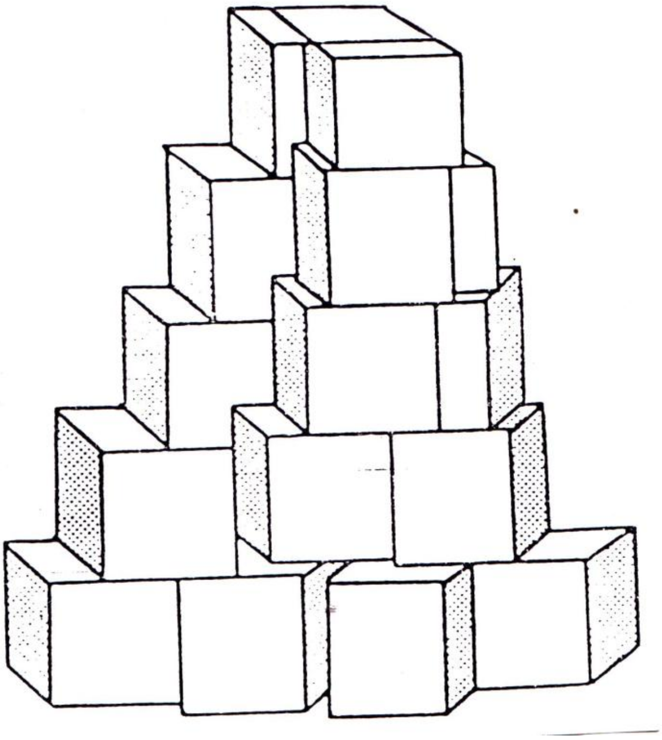

स्तर:

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. सैल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

<u>सिद्धान्त</u> : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र. : 8

पृष्ठ

क्रमाँक

- एक सफल मसीही अगुवा कैसे बनें (14 अध्याय) 1096
    - (1) सफलता का बाइबल का परिदृश्य
    - (2) प्रभावशाली मसीही अगुआई के सिद्धान्त
    - (3) सही अभिप्राय होना
    - (4) एक अच्छी नींव रखना - चरित्र, वरदान और व्यक्तित्व
    - (5) अगुआई की कीमत समझना
    - (6) अगुआई के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू
    - (7) एक अगुवे का आत्मिक जीवन
    - (8) परस्पर सम्बंध
    - (9) फैसले करना
    - (10) सौंपने की कला
    - (11) जीतने की इच्छा को काम में लाना
    - (12) वरदान और योग्यता सेवाएँ
    - (13) तनाव को जीतना और जलने से बचना
    - (14) अगुवे का इनाम
- अगुआई की हृदय सम्बंधी योग्यताएँ 1176
- एक अगुवे का हृदय और आत्म-मूल्याँकन की आवश्यकता 1191
- एक सच्चे मसीही अगुवे की योग्यताएँ 1193
- मसीह के अधीन अगुआई -- जिम्मेवारियाँ और योग्यताएँ 1197
- मसीही अगुआई की योग्यताएँ / आत्म-मूल्याँकन प्रश्नावली 1200
- पौलुस के अगुआई के सिद्धान्त (दूसरे कुरिन्थियों के अध्ययन पर आधारित) 1212
- पौलुस से अगुआई के विषय में गहरी जानकारी -- अन्य प्रकार की योग्यताएँ 1216
- बाइबल के आत्मिक अधिकार को समझना (8 अध्याय) 1220
    - (1) राज्य का अधिकार
    - (2) नकली आत्मिक अधिकार
    - (3) जादू-टोना के विरुद्ध हमारा कवच
    - (4) ईजेबेल की आत्मा
    - (5) नियंत्रण की आत्मा और विधिवादिता
    - (6) जादू-टोना के योजनाबद्ध आक्रमण
    - (7) आधुनिक फरीसी
    - (8) हमारा सबसे बड़ा सामर्थ्य और शत्रु

एक सफल मसीही अगुवा कैसे बनें

अध्याय एक -- सफलता का बाइबल का दृश्य

"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान किए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।" (यहोशू 1:8)। "सफलता" शब्द बाइबल में एक ही बार मिलता है। यह इब्रानी शब्द "sakal" है, जिसका अर्थ है: समझ होना, बुद्धिमान बनना, और अच्छी सफलता पाना। परमेश्वर ने यहोशू से यदि वह विश्वासयोग्यता के साथ उसके निर्देशों का पालन करेगा सफलता की प्रतिज्ञा की थी। यहोशू की पुस्तक से प्रकट है कि परमेश्वर ने उसके वचन को पूरा किया और यहोशू की प्रतिज्ञा की गई सफलता दी।

जो इब्रानी शब्द यहोशू द्वारा परमेश्वर की सहायता से पाई गई सफलता को सही-सही व्यक्त करता है, "Yaresh" है। यह यहोशू 13:12 में पाया जाता है, "इन्हीं को मूसा ने मारकर उनकी प्रजा को उस देश से निकाल दिया ("yaresh")था।" इसका अर्थ है: कब्ज़ा करना, पिछले निवासियों को निकाल देना और उनके स्थान पर कब्ज़ा कर लेना। उनको खदेड़ना, निकालना, नष्ट करना और दायवंचित करना। उनकी विरासत पर आक्रमण करना और उसे पूरी तरह अपने कब्ज़े में कर लेना। शत्रु को उसकी सम्पत्ति पर कब्ज़ा करके दरिद्र कर देना। प्रकट है इसमें कनान के देश और शहरों को कब्ज़े में करना सम्मिलित था जो पिछने निवासियों की सम्पत्ति थी। परन्तु जो सफलता उसने पाई थी केवल उसने और इस्राएलियों ने जो सम्पत्ति अपने कब्ज़े में की थी से ही आँकी नहीं गई थी, परन्तु इस तथ्य से कि उन्होंने उस उद्देश्य को पूरा किया था जिसे परमेश्वर ने उनके लिए नियुक्त किया हुआ था।

बाइबल की दृष्टि से, सफलता, का अर्थ शारीरिक समृद्धि, या प्रसिद्धि या व्यापक नाम पाने से कहीं अधिक है। इसका अर्थ उन सब से भी अधिक है जिसे हम शब्दकोष में पाते हैं, जैसे कि उपलब्धि, प्राप्ति, लाभ, समृद्धि, प्रवीणता, और विजय। बाइबल की दृष्टि से, सफलता तब ही सफलता है जब हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य पूरी तरह पूरा होता है।

बाइबल की दृष्टि से, सफलता का अर्थ है:

- अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य का पता लगाना और पूरा करना।
- वह व्यक्ति बनना, अभी और सारे अनन्तकाल के लिए, जो परमेश्वर चाहता है आप बनें।
- परमेश्वर की स्वीकृति और प्रशंसा पाना।

यहोशू की पुस्तक हमें सिखाती है कि इस सब में पुराने निवासियों को जीतना, हराना, और निकालना, और देश को नए निवासियों से भर देना सम्मिलित है। इसका अर्थ पुराने रवैयों, सोचने के तरीकों, विचारों और आदतों को निकालना और नओं को स्थापित करना है। इस प्रक्रिया को मुख्य रूप से परमेश्वर के वचन पर निरन्तर मनन करते रहने और एक निरन्तर सकारात्मक स्वीकृति और जो ग्रहण किया गया है उसे करने से प्राप्त किया जाता है।

कलीसिया के कुछ क्षेत्रों में सफलता पर वर्तमान जोर ने मामले पर मसीही विचार को ध्रुवित कर दिया है। विषय पर बहुत ही विस्तृत विचार हैं और रवैये एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुए हैं। इस प्रकार हमारे पास कुछ कलीसियाएँ और सेवाएँ हैं जिनको "अति-विश्वास" कहा जाता है, और दूसरी हैं जो दूसरे सिरे पर हैं, जिनमें विश्वास के सामर्थ्य का लगभग सम्पूर्ण इन्कार है।

सत्य में सदा सन्तुलन होता है और यदि हम अपने आपको किसी भी सिरे की ओर धकेलने देते हैं, तो हम भ्रम में पड़ सकते हैं। एक सन्तुलित दृष्टिकोण स्वस्थ और बाइबल का दृश्य है। यह न केवल उन चीजों पर लागू होता है जिनकी चर्चा हम कर रहे हैं। यह अधिकाँश विचारों और सिद्धान्तों के विषय में भी सत्य है। कुछ मसीही सफलता पर जोर से इतने सावधान हो गए हैं कि वे इससे बिलकुल पीछे हट गए हैं, और एक नकारात्मक रवैया अपना लिया है जिससे कुछ और नहीं परन्तु मध्यम ही प्राप्त किया जाता है। हमें स्मरण रखना है कि सफलता का अन्तिम विकल्प असफलता है, और यदि हम सफलता प्राप्त नहीं करते तो सबसे उत्तम जिसकी हम अपेक्षा कर सकते हैं मध्यम ही होगा। मध्यम का अर्थ साधारण, बीच का है। कुल मिलाकर जीवन में ऐसा लगेगा कि सब लोग:

- 10% सफल हैं,
- 10% असफल हैं, और
- 80% साधारण, या मध्यम हैं।

इन में कौन सा आपको लगता है आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा है? आप कहाँ होना चाहेंगे?

क्या "खराब सफलता" नामक कोई चीज होती है?

क्योंकि परमेश्वर ने यहोशू से "अच्छी सफलता" की प्रतिज्ञा की थी, हम सोच सकते हैं कि क्या खराब सफलता जैसी कोई चीज भी होती है? मेरा विश्वास है कि उत्तर हाँ है। मेरा विश्वास है कि खराब सफलता का प्रमाण टूटे हुए सपनों, टूटे हुए जीवनों, और टूटे हुए विवाहों के रूप में हमारे चारों ओर है। मेरा विश्वास है कि मूल रूप से तीन तरीकों से एक व्यक्ति "सफल" हो सकता है, फिर भी उनकी सफलता खराब सफलता है।

अ. दूसरों की कीमत या चोट पर प्राप्त की गई

सफलता का मार्ग अकसर एक अत्यन्त ही प्रतियोगी है, और सबके पीछे जो सफल होते हैं बहुत असफल भी होते हैं, जो प्रायः सफल हुए हुओं की सफलता के उपफल होते हैं। मैं ने विवाहों और परिवारों को टूटते हुए देखा है जिनमें सम्बंधों को सफलता की खोज पर बलिदान किया गया था।

आ. जब प्रक्रिया में व्यक्ति का चरित्र बिगड़ जाता है

कभी-कभी, "सफलता" पाने की प्रक्रिया में, व्यक्ति के नैतिक सिद्धान्तों और नीतिशास्त्रों को बहुत चुनौती मिलती है और प्रायः समझौता किया जाता है। व्यवसाय का संसार इतना भ्रष्टता से भरा होता है कि उसमें लगने के लिए और ईमानदारी और सम्पूर्णता को बनाए रखने के लिए चरित्र के साधनों की आवश्यकता पड़ती है। यदि सफलता आपकी सम्पूर्णता की कीमत पर पाई जाती है, तब यह अत्यन्त कीमती है और जहाँ तक परमेश्वर का सम्बंध है यह सफलता नहीं है।

इ. जिसके स्थाई परिणाम नहीं होते

इस संसार की सफलता वह है जो इसी जीवन तक चलती है। इस जीवन के कुछ सबसे "सफल" लोग अनन्तकाल में कंगाल और असफल होंगे। सच्ची सफलता वह है जो अनन्तकाल में भी चलेगी और इस संक्षिप्त जीवन में भी। बाइबल कहती है, "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन 14:12)

सफलता परमेश्वर से एक शब्द के साथ आरम्भ हुई थी

यहोशू की सफलता परमेश्वर के शब्दों से जिन्हें उसे उससे कहा था आरम्भ हुई थी जैसा यहोशू 1:1-9 में लिखा है। परमेश्वर ने उसके जीवन में उसका उद्देश्य बोलकर उसे चुनौती दी थी। क्योंकि सफलता है परमेश्वर के उद्देश्य का पता लगाना और पूरा करना, इसलिए इसकी खोज तब आरम्भ होती है जब परमेश्वर उस व्यक्ति पर उसकी निश्चित इच्छा प्रकट करता है।

<u>जब हम पहले यहोशू से मिलते हैं, तब वह:</u>

- जवान था
- अनुभवहीन और कच्चा था
- अगुआई की जिम्मेवारियों के लिए ठीक से तैयार नहीं था
- मूसा के अधीन था

परन्तु वह:

- मूसा का एक सच्चा सेवक भी था। (इब्रानीः "Ebed" - अर्थ है: एक दास)
- एक परिश्रमी अनुयायी भी था। गिनती 1:16, 26, 28
- मूसा का एक उत्सुक पालक भी था।
- मूसा का आज्ञाकारी भी था।

परमेश्वर प्रायः उनसे बात करता है जो उसे "खोज रहे" होते हैं।
"माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।" (मत्ती 7:7)। परमेश्वर बिरले ही एक व्यक्ति के जीवन में घुसता है जो उसे उत्सुकता के साथ खोज नहीं रहा और उससे सुनके की इच्छा नहीं कर रहा है। वह कहता है, "तुम उसे ढूँढोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।"
आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है। यदि आपको पता नहीं है परमेश्वर ने आपके लिए जीवन में क्या पाने की इच्छा की हुई है, तब आपको उसे प्रार्थना में उत्सुकता के साथ खोजना आरम्भ कर देना चाहिए जब तक आपको पता न चल जाए उसने आपके लिए क्या उद्देश्य बना रखा है।

कभी-कभी, परमेश्वर एक श्रव्य आवाज़ में बोलता है।

बाइबल के दिनों में परमेश्वर लोगों से प्रायः एक श्रव्य आवाज़ में बोलता था। परन्तु आज यह कम होता है, सम्भवतः क्योंकि हमारे पास बाइबल के लोगों से कहीं अधिक मात्रा में परमेश्वर का वचन है। निस्संदेह परमेश्वर अभी भी श्रव्य आवाज़ में बोल सकता है और कभी-कभी बोलता भी है, परन्तु यह अकसर परम और नाटकीय परिस्थितियों में ही होता है।

कभी-कभी वह एक दर्शन या स्वपन के द्वारा बोल सकता है

दर्शन और स्वपन बाइबल के दिनों तक ही सीमित नहीं हैं। परमेश्वर इस साधन के द्वारा बोल सकता और अभी भी बोलता है। एक दर्शन और एक स्वपन के बीच मुख्य अन्तर यह है कि एक दर्शन तब मिलता है जब व्यक्ति जागा हुआ होता है, और एक स्वपन तब मिलता है जब वह सो रहा होता है। इन साधनों के द्वारा परमेश्वर दृश्यों और चित्रों में सत्य प्रकट करता है। यह एक बहुत ही रंगीन और नाटकीय तरीका है जिसमें परमेश्वर चिन्हों और रूपक-कथाओं द्वारा बोलता है। परन्तु, यह अकसर एक भविष्यसूचक माध्यम है जिसका अर्थ बताने की आवश्यकता होती है।

जिस दर्शन की मैं बात कर रहा हूँ अलौकिक रूप से दिया जाता है। यह अकसर लम्बे समय तक प्रार्थना करने और परमेश्वर की बाट जोहने के दौरान होता है। यह एक व्यक्ति के मन में हो सकता है, या यह बाहर हो सकता है, जिसमें व्यक्ति इसे देखता और सुनता है जैसे कि एक दृश्य उसकी आँखों के सामने चल रहा हो। उसका अर्थ भी प्रार्थना में परमेश्वर की बाट जोहने के द्वारा मिलता है, परन्तु कभी-कभी अर्थ के लिए, या अर्थ की पुष्टि के लिए बाहरी सहायता की आवश्यकता होती है। जब परमेश्वर एक भविष्यसूचक तरीके से बात करता है, तब दूसरे भविष्यद्वक्ताओं से पुष्टि पाना सदा बुद्धिमानी होता है। (1 कुरिन्थियों 14:26-33)।

परमेश्वर अकसर बाइबल के द्वारा बात करता है

आज परमेश्वर के बोलने का सबसे प्रायिक तरीका उसका वचन, बाइबल है। पवित्र आत्मा बाइबल में से कुछ चीजों को जीवित करता या जोर डालता है। हम बाइबल पढ़ रहे होते हैं जब यह होता है, या पवित्र आत्मा वचन को कभी भी हमारे मन में लाता है। दोनों तरीकों से एक वचन अचानक जीवित हो जाता है और परमेश्वर उसकी हमें समझ देता है। परमेश्वर इस तरीके से आश्चर्यचकित बातों को हम पर प्रकट करता है। जिन वचनों के विषय में हमें लगता है हम "जानते" थे अधिक स्पष्ट और उपयोगी हो उठते हैं। उसके वचन के द्वारा बोलने से परमेश्वर ईश्वरीय सिद्धान्तों पर स्पष्ट जोर देता है।

प्रकटीकरण प्रायः हमारे विचारों से हल्के से प्रवाहित होती है

जब परमेश्वर हम से उसके वचन के द्वारा बात करता है तो यह अकसर एक नाटकीय तरीके से नहीं होता है परन्तु एक कोमल आसवन द्वारा होता है। उसका प्रकटीकरण हल्के से हमारी आत्मा में उतरता है, "जैसे सुबह की ओस पृथ्वी पर उतरती है।" यह सामान्यतः हमारे अवचेतन विचारों में हल्की, शान्त, आग्रह के समान निकलती है, और हमारी समझ में आती है। ऐसे प्रकटीकरण, जब हमारी आत्मा परमेश्वर के साथ संगति में होती है, अकसर आत्मिक बातचीत के द्वारा आगे बढ़ाए और पाए जा सकते हैं। एक दीन और आपत्तिहीन तरीके से परमेश्वर के आत्मा से पूछ-ताछ की जा सकती है, और वह हमें उत्तर देगा और परमेश्वर की इच्छा के विषय में हमारी समझ को बढ़ाएगा।

चीजों को प्रकट करने का यह तरीका इतना स्वाभाविक जान पड़ता है कि हम संदेह प्रकट कर सकते हैं कि क्या यह परमेश्वर ही है जो हम से बात कर रहा है, या यह हमारी कल्पना है। परन्तु जो चीजें परमेश्वर इस प्रकार प्रकट करता है प्रमाण देती हैं कि यह निस्संदेह परमेश्वर ही है जो हम से बात कर रहा है। अचानक, हमें वह तथ्य और ज्ञान प्राप्त होता है जिनको जानने का हमारे पास कोई स्वाभाविक साधन नहीं था। ऐसा ज्ञान प्रायः एक ज्ञान का वचन या बुद्धि का वचन है जिसे परमेश्वर ने उसके आत्मा के द्वारा दिया है।

साथ चलनेवाली परिस्थितियाँ अगुआई की पुष्टि करेंगी

एक बार जब परमेश्वर ने हम से बात की है और हम प्रकटीकरण के अनुसार आगे चलने लगते हैं, तब परिस्थितियाँ पुष्टि करने के लिए प्रकट होती हैं कि हम सही कर रहे हैं। यह तब तक नहीं होगा जब तक हम विश्वास से आगे नहीं बढ़ते। जैसे हम आज्ञापालन में आगे बढ़ने लगेंगे, परमेश्वर उसकी अगुआई की पुष्टि सकारात्मक परिस्थितियाँ लाकर करने लगेगा। उदाहरणार्थ, वह एक विशेष काम के लिए जिन साधनों की हमें आवश्यकता है भेजेगा। हम सम्भवतः किसी भी मानवीय सहयोग के बिना आरम्भ करेंगे, परन्तु परमेश्वर आवश्यक साधनों का प्रबंध करेगा यह संकेत देने के लिए कि हम उसके उद्देश्य में चल रहे हैं।

परमेश्वर ने यहोशू से बात की। यह एकः

व्यक्तिगत वचन था।

परमेश्वर ने यहोशू से सीधे, किसी दूसरे के द्वारा बात नहीं की। अकसर ऐसे लोग होते हैं जिन्हें लगता है उनके पास आपके लिए एक वचन है। ऐसे शब्दों से सावधान रहो। यदि परमेश्वर आप से बात करना चाहता है, तब वह किसी दूसरे की सहायता के बिना कर सकता है। किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा भविष्यद्वाणी का वचन प्रायः उसकी पुष्टि करने के लिए आता है जिसे परमेश्वर ने पहले ही आपके हृदय में कहा हुआ है।

ऐसे अवसर होते हैं जब परमेश्वर किसी को हमें कोई वचन देने भेजता है परन्तु यह अकसर तब होता है जब किसी कारण से हम अपने आप परमेश्वर को नहीं सुन पा रहे हैं, या परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोध कर रहे हैं। (उदा., राजा दाऊद और नातान)।

निश्चित और व्यावहारिक वचन था।

यहोशू को परमेश्वर का वचन तुरन्त समझ में आता है। यह कोई अस्पष्ट या अव्यावहारिक नहीं था, परन्तु अत्यन्त स्पष्ट और सुनिश्चित था। इससे यहोशू को ठीक-ठीक पता चल गया परमेश्वर क्या चाहता था वह करे, और उसके परिणाम क्या होंगे। यहोशू तुरन्त परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने लगा जिसके परिणामस्वरूप वह भारी विजयें देखने लगा जैसे कि यरीहो और ऐ, और सारे कनान की विजयें।

कुछ लोग परमेश्वर से बड़े जटिल निर्देश पाते हैं जिनको वे कभी भी व्यावहार में नहीं ला पाते हैं। जिस "वचन" को वे पाते हैं इतना अति-आत्मिक और जटिल होता है कि इससे कुछ भी वास्तविक और उपयोगी काम नहीं हो पाता है।

शर्तबन्ध वचन था।

बहुत सारी प्रतिज्ञाएँ जिन्हें परमेश्वर देता है शर्तों के साथ आती हैं। उन्हें काम में लाने और पूरा होने के लिए कुछ शर्तों को पूरा किया जाना आवश्यक होता है। सबसे प्रत्यक्ष शर्त विश्वास है। "विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)

परन्तु दूसरी शर्तें भी हैं, जिन में से अधिक का सम्बंध परमेश्वर के वचन की ओर यहोशू के रवैये से है।

- अ. उसे इस पर दिन और रात मनन करना चाहिए -- कल्पना और मनन
- आ. इसे उसके मुँह में रहना चाहिए -- शाब्दिक
- इ. उसे उस सब को करना है जो उसमें लिखा है -- कार्यान्वित करना
- ई. उसे इसका पालन करने के लिए दृढ़ और साहसी होना है।
- उ. उसने डरना नहीं है और न ही निराश होना है।

एक और शर्त थी कि परमेश्वर उसे उन्हीं स्थानों को देगा जिन पर उसके कदम पड़ेंगे। (यहोशू 1:3)। यहोशू को विश्वास के साथ प्रतिज्ञात प्रदेश में जाना था। उसे असल में विश्वास में आगे बढ़ना था, और परमेश्वर तब तक उसे वह क्षेत्र नहीं देगा जब तक उस पर उसके पैर नहीं पड़ते हैं। जैसे वह एक क्षेत्र पर परमेश्वर के नाम में उसके पैर रखता था, वह उस क्षेत्र पर विश्वास के द्वारा दावा कर रहा था।

परमेश्वर की शर्तों की माँग यहोशू और इस्राएल के लोगों से आज्ञाकारी क्रिया की थी। अनेक बार उनके शत्रुओं की संख्या उनसे अधिक होती थी जो इस्राएलियों से स्वाभाविक लाभ में होते थे। परन्तु परमेश्वर ने उनके विश्वास और आज्ञापालन को देखा और उनको विजय दी। धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, उन्होंने उनकी मीरास में प्रवेश किया और उसे अपने अधिकार में कर लिया।

अपने जंगल में से बाहर निकलना

परमेश्वर अकसर अपना काम हमारे जंगल के अनुभवों के दौरान आरम्भ करता है। हमारे जीवन के एक सूखे और बंजर समय में, जब कुछ भी ठीक नहीं हो रहा होता है, या एक ऐसे स्थान में जहाँ हमारे स्वपन रेगिस्तान की रेत के नीचे दब गए लगते हैं।

यह मूसा के विषय में सत्य था। फिरौन के दरबार में चालीस वर्ष बिताने के बाद, और उन सब सुखों का आनन्द लेने के बाद जो पदवी और धन दे सकता है, वह अपने आप को "रेगिस्तान के पिछवाड़े" में पाता है। प्रतिदिन रेगिस्तान पर चलते रहने के दौरान वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके जीवन का अब कोई अर्थ हो सकता है। परन्तु परमेश्वर उसके साथ जंगल में था और उसके हृदय में एक चिंगारी जला दी थी जो कभी भी बुझ नहीं सकती थी। परमेश्वर के कई महान अगुवे जंगल में से प्रकट हुए हैं और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा किया है।

मेरा विचार है कि परमेश्वर हम से हमारे जंगल में मिलता है ताकि जैसे उद्देश्य हमारे जीवन में बनने लगते हैं, हम सदा याद रखें कि जब वह अपने अदभुत उद्देश्य हमारे भीतर पूरे करने लगा था हम "रेगिस्तान के पिछवाड़े" में, एक सूखे और बंजर स्थान में थे। यह हमें सदा याद दिलाता रहेगा कि कोई भी महिमा जो उसके उदेश्यों के हम में पूरा होने से निकलेगी पूरी तरह उसी की है!
जब तक परमेश्वर हमारे जीवनों के लिए उसकी निश्चित योजनाएँ हमारे भीतर पूरी नहीं करने लगता, जीवन प्रायः एक जंगल, सूखा, बंजर और बेकार सा लगता है। परन्तु वह रेगिस्तान को खिला सकता और जंगल को पानी के सोतो में बदल सकता है।

जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा। (यहोशू 1:5)
मूसा इस्राएक के नेतृत्व के लिए एक बहुत ही असंभावित व्यक्ति था। उसका आत्म-रूप बहुत ही छोटा था, वह बहुत की खराब वक्ता था, उसमें आत्मविश्वास की कमी थी, और वह बहानों से भरा हुआ था कि कैसे वह इस्राएलियों को गुलामी से निकाल कर उनके प्रतिज्ञात देश में ले जाने के लिए सही व्यक्ति नहीं था।
यह सच्चाई कि परमेश्वर इन सब बाधाओं को पार करने और मूसा को एक ऐसा प्रभावशाली अगुवा बनाने में सफल हुआ था, इससे यहोशू को निश्चित रूप से बहुत प्रोत्साहन मिला होगा। यह हर अभिलाषी अगुवे के लिए अत्यन्त प्रोत्साहन होना चाहिए। यदि परमेश्वर मूसा में से एक ऐसा अगुवा बना सकता है, तब वह यहोशू के साथ भी ऐसा कर सकता है। यदि वह यहोशू के साथ कर सकता है, तब वह मेरे साथ भी कर सकता है!

यीशु सदा एक सा है।

नए नियम में एक सबसे प्रेरणात्मक वचन यह है, "यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है।" (इब्रानियों 13:8)। इस वचन को अकसर लोगों को, चंगाई पाने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और उन्हें स्मरण दिलाया जाता है कि जिस यीशु ने बाइबल के दिनों में लोगो को चंगा किया था, वही यीशु आज भी है और आज भी बीमारों को चंगा करेगा। इस जोर का इन्कार या निन्दा नहीं करते हुए, मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर लाना चाहता हूँ कि संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे इसे चंगाई के साथ जोड़ा जाए। असल में, इससे पहले का वचन मसीही अगुवों के विषय में है जो उनके नेतृत्व की निपुणताओं और व्यवहार के लिए अनुकरणीय थे। पौलुस विश्वासियों को उपदेश दे रहा है कि वे उनके अगुवों के अच्छे उदाहरण का अनुकरण करें, और कहता है, "यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है", जिसका अर्थ निकलता है कि जिस मसीह ने उनके अगुवों को ऐसा अनुकरणीय बनाया था, उनके लिए भी वैसा ही कर सकता है।

"तू" प्रभावशाली होगा।

हालाँकि यह परमेश्वर है जो हमें प्रभावशाली करता और सफल बनाता है, प्रक्रिया में एक मानवीय पहलू भी है। कुछ चीजों हैं जिन्हें हमें प्रक्रिया को काम में लाने के लिए करना होता है। यहोशू को देश पर अधिकार करने के लिए तैयारी करने को कहा गया था।

एक सूची बनाना।

हर व्यक्ति में अप्रयुक्त साधन होते हैं। ऐसे वरदान और निपुणताएँ जिन्हें कभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं किया गया है। वह सारी सम्भावना जिसकी परमेश्वर का अगुवा बनने के लिए आपको आवश्यकता है, आप में है। इस में से कुछ अप्रकट योग्यताओं के रूप में है जिसे पवित्र आत्मा उत्तेजित और विकसित करेगा। दूसरे पहलू सही रवैयों के रूप में हैं जिन्हें परमेश्वर आप में बढ़ाना चाहेगा। सबसे बड़ी सम्भावना "**आप में मसीह**" के रूप में है - आप में मसीह के आत्मा की उपस्थिति, जिसे परमेश्वर विकसित करेगा जब तक यह आपके सारे अस्तित्व को भर नहीं देता और आपके जीवन और चरित्र को बना नहीं देता। याद रहे आप मसीह में भरपूर हो। कुलु. 2:10।
मसीह का आत्मा आपके अन्दर है। वह तब से वहाँ है जब आपने पश्चाताप और विश्वास में अपना जीवन मसीह को समर्पित किया था। परन्तु आप भी बहुत सारा वहाँ पर हैं जिसे आपके अन्दर मसीह के आत्मा के अधीन लाने की आवश्यकता है। आपके लिए परमेश्वर के उद्देश्य का प्रमुख पहलू, जैसे वह आपकी अगुआई की सम्भावना को विकसित करेगा, आपको उसके पुत्र के स्वरूप में बदलना है। **जो अगुवा मसीह के स्वरूप में बढ़ नहीं रहा है परमेश्वर के बुलावे के असली उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहा है**!
हम उस भविष्यसूचक समय में जी रहे हैं जब "परमेश्वर के पुत्र प्रकट होंगे।" जिस समय के लिए सारी सृष्टि कराह रही और पीड़ाओं में तड़प रही थी निकट है। इसके होने से पहले परमेश्वर विश्वासियों की एक मण्डली को बनाने और प्रकट करनेवाला है जो सच्चाई से मसीह के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करेंगे। विश्वासियों की एक सेना जो पृथ्वी पर यीशु की उपस्थिति होंगे। मसीह की

देह को मसीह समान अगुवों की बहुत आवश्यकता है जिनके जीवनों को देखकर विश्वासी उनके जीवन बना सकते हैं। यह एक सामर्थी उपस्थिति, अच्छे प्रशासन की कुशलताएँ, या एक करिश्मावाला व्यक्तित्व होने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अपनी परमेश्वर द्वारा दी गई सम्भावनाओं का एक सकारात्मक मूल्याँकन करो।

"उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।" (1 पतरस 1:3)। अधिकाँश विश्वासियों को वे मसीह में कौन और क्या हैं का एक सम्पूर्ण, सकारात्मक, बाइबल पर आधारित मूल्याँकन करने की आवश्यकता है। कलीसिया ने इसके पाप और हमारे मानवीय पतित स्वभाव पर अति-जोर के द्वारा काफी असफलताओं को उत्पन्न किया है। इसने पुरुषों को प्रायश्चित की निरन्तर क्रियाओं में नीच बनने, और भले कर्मो के द्वारा उनके अपने उद्धार को पैदा करने का दण्ड दिया है। यह समय है हम देखें परमेश्वर क्या कहता है। उसे जो नई सृष्टि के विषय में कहना है सोख लें, और उसके उद्धार के वचन के प्रकाश में चलें।

विशेषकर सम्भावित अगुवों को उनकी छिपी हुई अगुआई की निपुणताओं का एक सकारात्मक मूल्याँकन करने की आवश्यकता है। उन्हें पता होना चाहिए कि यदि परमेश्वर ने उन्हें एक अगुआई के काम के लिए बुलाया है तब यह इसलिए है क्योंकि वह जानता है उनमें सम्भावना है। यदि यहोशू के समान, वे "जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की चौकसी करें", तब परमेश्वर उनके सब काम सफल करेगा, उन्हें प्रभावशाली बनाएगा।

अपनी सीमाओं और अयोग्यताओं पर अधिक ध्यान देने के बदले, हमें इन चीजों की अधिक चेतना होनी चाहिए:

- परमेश्वर का अनुग्रह
- उसकी दया और भलाई
- हमें क्षमा किया गया है।
- हमारा मेलमिलाप हुआ है और धर्मी ठहराए गए हैं।
- हम मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता बने हैं।
- हम अब परमेश्वर की सन्तान और पुत्र हैं।
- हम परमेश्वर के हाथों की कला है, मसीह में भले काम करने के लिए रचे गए हैं।
- हम उसके राज्य के नियुक्त किए और अधिकार पाए सदस्य हैं।
- हमें अन्धकार से छुड़ाकर, उसकी अद्भुत ज्योति में रखा है।
- उलझन में से ईश्वरीय प्रकाश में।
- अनिश्चितता में से शान्त भरोसे में।
- डर से विश्वास में।
- हमारी अयोग्यता में से उसकी रचनात्मक योग्यता में।

आपके पास जो है उसे इस्तेमाल करना।

परमेश्वर ने मूसा से पूछा, "तेरे हाथ में वह क्या है ?" (निर्गमन 4:2)। मूसा ने कहा, "लाठी।" एक साधारण लाठी। एक पेड़ की एक साधारण लकड़ी। यह कोई ऐसी नहीं लगती थी जिसे परमेश्वर कोई बड़े तरीके से इस्तेमाल कर सकता था। परन्तु परमेश्वर के पास बड़ी योजनाएँ थीं जिसमें वह साधारण लाठी सम्मिलित थी। मूसा को शीघ्र ही पाता चलनेवाला था जो परमेश्वर उस साधारण लाठी और कुछ विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा करनेवाला था।

आपको नहीं लगता हो आपके हाथ में कुछ अधिक है। आप बिना महान करिश्मा या निपुणता वाले एक मध्यम, साधारण व्यक्ति हो, परन्तु यदि आप उसे जो आपके पास है पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित कर दोगे, केवल वह ही जानता है क्या सम्भावनाएँ हो सकती हैं।

- आपके पास परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यताएँ हैं जो अभी भी छिपी हुई हैं।
- आपको उन्हें पहचानना और स्वीकार करना है।
- उन्हें प्रशिक्षण देने और विकसित करने लगो।
- हर द्वार में से प्रवेश करो जिसे परमेश्वर आपके लिए खोलता है।

समझो कि परमेश्वर ने आपको जैसे आप हैं बनाया है। जितना आप अपने आप को जानते हो उससे कहीं अधिक वह आपको जानता है। वह आपकी सीमाओं और गुणों की पूरी जानकारी रखता है, फिर भी उसने आपको उसके लोगों का अगुवा नियुक्त किया है। आप अनोखे हो। आपके समान दूसरा कोई नहीं है। आप जो परमेश्वर के लिए कर सकते हो कोई नहीं कर सकता है।

अपनी बुद्धि और ज्ञान में, उसने आपको आपकी अगुआई की क्षमता में फल लाने के लिए चुना और नियुक्त किया है। उसने आप को "उन भले कामों के लिए" सृजा है जिन्हें परमेश्वर ने "पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया है।" (इफि. 2:10)।

परमेश्वर ने आपको आपके अगुआई के काम में अच्छी सफलता पाने के लिए भी नियुक्त किया है। जैसे आप हर चीज में जो आप करते हो दीनता के साथ उसके आत्मा की अगुआई का अनुकरण करोगे, परमेश्वर आपकी अगुआई को प्रभावशाली और सफल करेगा। जैसे आप दीनता के साथ उस पर निर्भर रहोगे, और पहचानोगे कि कुछ भी मूल्यवान् और अनन्त मूल्य वाली चीज, केवल परमेश्वर ही आपके द्वारा काम करते हुए पूरा कर सकता है। अपने आप को पूरी तरह उसके अधिकार में रखो। अपने जीवन को नए सिरे से उसके उद्देश्यों के लिए दे दो। उसके अनुग्रह से वह सब कुछ बनने का निश्चय करो जो उसने आपको बनने के लिए नियुक्त किया है और वह सब पूरा करने का निश्चय करो जो करने के लिए उसने आपके लिए निर्णय किया है। क्योंकि तब वह आपको सफलता देगा और तब आप प्रभावशाली बनोगे!

अध्याय दो -- प्रभावशाली मसीही अगुआई के सिद्धान्त

प्रभावशाली अगुआई जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्धि, प्रभावकारिता, और सफलता के लिए एक प्रमुख कुंजी है। यह कलीसिया में भी उतना ही सत्य है जितना किसी दूसरे क्षेत्र में है।

इस अध्ययन का इरादा मसीही अगुवों की उनके स्वाभाविक, आत्मिक, और उपार्जित अगुआई की निपुणताओं को आगे विकसित करने में सहायता करना है। यह अगुआई के आत्मिक पहलुओं से, और अगुआई की निपुणताओं के विकास से निपटती है। परमेश्वर इस समय अगुवों को एक विश्व-व्यापी फसल की तैयारी और उसके राज्य के प्रकट होने के लिए प्रशिक्षण दे रहा है। वह उन्हें चरित्र, आज्ञापालन और अधिकार में तैयार करने का प्रयत्न कर रहा है।

अच्छी अगुआई की निर्णायक आवश्यकता

अ. अच्छी अगुआई के बिना, अराजकता का राज्य होता है।
न्यायियों 17:6; 18:1-19 "जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।"

आ. अगुआई के बिना, गड़बड़ होती है।

इ. लोग एक चरवाहे के बिना भेड़ों के समान हैं।

अगुआई की कुछ परिभाषाएँ:

अ: जो मार्गदर्शन करता और मार्ग दिखाने के लिए आगे जाता है

एक अगुवे को लोगों के सामने होने के योग्य और इच्छुक होना चाहिए और मार्ग दिखाना चाहिए। इसमें पहल-शक्ति, साहस, और विश्वास लगता है। किसी ने कहा है, "जब तक आप अपनी गर्दन बाहर निकालने के इच्छुक नहीं हैं, आप अपना सिर भीड़ के ऊपर नहीं कर पाओगे।"

आ: जो एक मण्डली का मार्गदर्शन करता, संचालन करता, और आदेश देता है।

एक अगुवा एक एकाकी कभी नहीं हो सकता है। वह एक मण्डली का भाग है जिसके लिए वह उसके अगुवे के रूप में जिम्मेवार है। उसे अपने आप को उस मण्डली के समान समझना है, केवल एक सदस्य के रूप में ही नहीं, परन्तु एक अगुवे के रूप में जो इसकी दिशा और क्रियाओं के लिए जिम्मेवार है।

इ: जो दूसरों के रवैयों और कार्यो को प्रभावित करता है।

एक अगुवे में दूसरों को यहाँ तक प्रेरित करने की योग्यता है कि वह उनके रवैयों और कार्यो को सकारात्मक और निरन्तर प्रभावित करता है। वह उन्हें सही दिशा में ले चलता है। वह उन्हें जब मार्ग कठोर और पथ पर बाधाएँ हैं तब भी चलते रहने के लिए प्रेरित करता है।

ई: कोई जिसके पीछे लोग चलना चाहते हैं।

एक अगुवे में गुण हैं जिसके कारण लोग उसके पीछे चलना चाहते हैं। एक अगुवा एक अगुवा नहीं है यदि कोई उसके पीछे नहीं चल रहा है। यह अगुआई के गुणों का अन्तिम संकेत हैं -- लोग उसके पीछे चल रहे हैं! एक व्यक्ति को अगुआई के किताबी

सिद्धान्त पता हों, वे विषय पर शिक्षा दे सकते हों या इस पर एक पुस्तक भी लिखें, परन्तु अगुआई की सच्ची परीक्षा अनुयायियों का होना है। क्या लोग उसके पीछे चलते हैं, और वे किस प्रकार के काम कर रहे हैं ?

उः जिसमें दूसरों को एक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने की योग्यता है।

प्रभावशाली अगुआई का एक महत्त्वपूर्ण भाग दूसरों को प्रेरित करने की योग्यता है, अर्थात्, उन्हें सही दिशा में चलाना। परन्तु प्रेरणा तब ही प्रभावशाली होगी यदि अन्तिम लक्ष्य प्राप्त किया जाता है। कुछ अगुवे लोगों को चला लेते हैं। वे लोगों को हर प्रकार के कार्यक्रमों और क्रियाओं में लगा लेते हैं, परन्तु वे अन्तिम लक्ष्य को कभी भी प्राप्त कर नहीं पाते, वे केवल कुछ करते रहते हैं। सच्ची अगुआई काम करती है। यह इसका अन्तिम लक्ष्य प्राप्त करती है।

प्रभावशाली अगुआई के कुछ पहलू

अः भविष्यसूचक, भविष्य पूर्वानुमान लगा लेना।

अच्छी अगुआई का एक सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू भविष्य को पढ़ने और पूर्वानुमान लगाने की योग्यता है। कम्पनी कार्यकारी को भविष्य की बाज़ार की प्रवृत्ति का पता लगाने और आनेवाले वर्षों में लोग क्या चाहेंगे पूर्वानुमान लगाने योग्य होना चाहिए। यदि वह ऐसी चीजों का निर्माण करता है जिनकी लोगों को पाँच वर्षों में आवश्यकता नहीं होगी, तब तो वह चूक गया है।

मसीही अगुआई के शब्दों में, हम इस व्यक्ति को कभी-कभी एक "दर्शी" कहते हैं। कोई ऐसा नहीं जिसे सदा आत्मिक दर्शन मिलते रहते हैं, परन्तु ऐसा व्यक्ति जो भविष्य में आनेवाली चुनौतियों और अवसरों को सही-सही भाँप लेता है। मैं कुछ अगुवों को जानता हूँ जिन्होंने एक ऐसे क्षेत्र में भूमि खरीदी थी जहाँ कोई बस्ती नहीं थी और फिर उस क्षेत्र में जनसंख्या बढ़ने लगी जिसने उनकी कलीसिया की इमारत को चारों ओर से घेर लिया है। उन्होंने भावी प्रवृत्ति को "देखा" और इसके साथ आगे बढ़ गए।

आः युद्धनीतिज्ञ, भविष्य की योजना बनाने योग्य।

एक युद्धनीतिज्ञ मूल रूप से व्यावहारिक होता है। वह न केवल भाविष्य की चुनौती को पहचानता है, वह चुनौती का सामना करने के लिए योजनाएँ भी बना सकता है। युद्धनीतिज्ञ स्वपन देखनेवाला नहीं है। वह एक यथार्थवादी है। वह अपने सामने आनेवाले अवसरों को पहचानता है और भविष्य की फसल काटने के लिए पर्याप्त, स्पष्ट, व्यावहारिक, निष्पद्य योजनाएँ बनाता है।

कलीसिया स्थापना या कलीसिया की वृद्धि के लिए एक योजना उतनी ही अनिवार्य है जितनी एक इमारत खड़ी करने के लिए है। वह निर्माता कितना मूर्ख होगा जो पहले पूरी तरह उनकी योजनाओं को बनाए और लिखे बिना बनाने लगता है। वह बनानेवाली इमारत के हर छोटे-बड़े पहलू के विषय में बैठकर सोच-विचार करता है। वास्तुकार को नमूना बनाने के लिए बुलाया जाता है। आकलक एक पूरा मूल्य निकालता है। सर्वेक्षक प्रस्तावित स्थान की जाँच करता है। अभियन्ता योजना के ढाँचे की जाँच करता है। ये सब उनकी खोजों और आकलन को लिख कर रखते हैं। दूसरे शब्दों में, कोई भी क्रिया होने से पहले परियोजना पूरी तरह योजनाबद्ध और मूल्याँकन की जाती है। कोई भी समझदार व्यक्ति एक उचित योजना के बिना निर्माण करने का प्रयत्न नहीं करेगा। न ही उनको करने दिया जाएगा। स्थानीय अधिकारी उचित योजना और नीति के बिना एक इमारत को खड़ा करने की मंजूरी नहीं देंगे। न ही मसीही अगुवे को पहले पूरी तरह छानबीन और उचित योजनाओं के बिना किसी क्रिया में लगना चाहिए।

इः संचारक

एक कारण कि क्यों सब नीतियाँ और योजनाएँ स्पष्ट रूप से निश्चित की जानी और लिख ली जानी चाहिए ताकि उनको अच्छी तरह सूचित किया जा सके। हर ब्योरे को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिससे कि नीति को पूरी तरह हर सम्बंधित व्यक्ति को पूरी तरह और स्पष्ट रूप से बताया जा सके।

प्रभावशाली अगुवे को एक स्पष्ट और योग्य संचारक होना चाहिए। उसे दर्शन और नीति को प्रत्यायक रूप से बता सकने योग्य होना चाहिए जिससे वह अपने सहयोगियों और कार्यकर्त्ताओं के भरोसे और सहयोग को जीत सके। इस विषय में संचारन की निपुणताओं को विकसित करना आवश्यक है। सफल अगुवे को उसकी लिखित, बोलनेवाली, और दूसरी उचित साधनों में संचार की योग्यताओं को विकसित और तेज करने का प्रयत्न करना चाहिए।

ईः प्रेरक

प्रेरित करने का अर्थ है लोगों की रुचि को उत्तेजित करना और एक निश्चित लक्ष्य की पूर्ति के लिए उनसे एक सकारात्मक कार्य करवाना। इसमें उनको एक दिशा में चलने के लिए सूचना देना और उत्तेजित करना सम्मिलित है। इसमें उनको निरन्तर प्रेरित और काम में लगाए रखना सम्मिलित है। प्रेरक कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित करते रहता और आगे की गति बनाए रखता है।

उः आदर्श और उदाहरण

एक अगुवे को जो वह उसके अनुयायियों को बनने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है उसका एक उदाहरण और आदर्श होना चाहिए। वह उनको एक काम की ओर समर्पित होने के लिए मना नहीं सकता है जिसकी ओर वह आप पूरी तरह समर्पित नही है। अधिक प्रेरणा उदाहरण से न कि उपदेश से आती है। यदि उसकी अगुआई "जो मैं कहता हूँ, न कि जो मैं करता हूँ करो" है तब कोई भी प्रेरित नहीं होने वाला है।

ऊ: कोई जिसके पीछ लोग चलने में आश्वस्त महसूस करते हैं।

एक अच्छा अगुवा उसके लोगों की प्रशंसा पाता है। वे किसी प्रकार से उसका अनुकरण करना चाहते हैं। वह उनके लिए एक नमूना पेश करता है जिस पर वे उनके जीवन बनाना चाहते हैं। इसे प्राप्त करने के लिए इस अगुवे को उसके अनुयायियों की दृष्टि में विश्वासनीयत और सम्मान चाहिए, और ऐसी विश्वासनीयता एक काफी समय के बाद (अकसर उनकी सेवा करने के द्वारा) ही कमाई जाती है।

ए: अधिकार इस्तेमाल करने योग्य।

अगुवों को अधिकार इस्तेमाल करना समझना चाहिए। इसे सीखने का सामान्य तरीका अपने आप को अधिकार के अधीन रखकर करना है। सेना में नए रंगरूटों को अधिकाँश मूल प्रशिक्षण देने का यही कारण है। मुख्य बात जो उनको सीखनी पड़ती है अधिकार के अधीन होना और बिना प्रश्न किए आदेशों का पालन करना है। इसे जो मुख्य कारणों से उनमें भरा जाता है। पहला, ताकि वे युद्ध के समय उनके अगुवों का आज्ञापालन प्रश्न किए करेंगे। दूसरा, उनकी अधिकार के ढाँचे को समझने में सहायता करना है ताकि जब उनको अधिकार की भूमिका दी जाएगी वे भी इसे इस्तेमाल कर सकेंगे।

इसे सूबेदार की कहानी में बहुत अच्छी तरह चित्रित किया गया है जिसकी प्रशंसा यीशु ने की थी। (मत्ती 8:5-13)। अधिकारी अधिकार के सिद्धान्तों को समझता था क्योंकि वह अधिकार के अधीन था और अधिकार के स्थान पर भी था। यीशु ने कहा कि उसने ऐसा विश्वास सारे इस्राएल में नहीं देखा था।

ऐ: संगठक, वांछित लक्ष्य को प्राप्त करना।

संघटन करने का अर्थ अपने और दूसरों के लिए व्यवस्थित प्रबंध करना है जिससे एक लक्ष्य को प्रभावशाली तरीके से पूरा किया जा सके। कार्यकुशल प्रबंध के लिए संगठन करना अनिवार्य है। एक प्रभावशाली अगुवे को लोगों, नीतियों, और सामग्री के साथ-साथ उसके साधनों का प्रबंध अच्छी तरह करना चाहिए। ऐसा करने के लिए उसे एक योग्य संगठक होना जरूरी है।

ओ: वाद्य-मण्डल संचालक, जो मेलमिलाप को प्रेरित करता है।

एक वाद्य-मण्डल संचालक अगुआई क्या है का एक उत्तम उदाहरण है। वाद्य-मण्डल के हर संगीतज्ञ को सबसे पहले निश्चय करना चाहिए कि उसका वाद्य उचित रूप से सुर में है। तब संचालक निश्चय करता है कि हर वाद्य उस सामान्य स्वर के साथ सुर में है जिसे उसने दिया है। तब वह हर संगीतज्ञ को विशेष संगीत-लेख देता है और अपेक्षा करता है कि हर एक उसका खास भाग विश्वासयोग्यता के साथ बजाएगा और दूसरे वाद्यों के साथ सम्पूर्ण मेलमिलाप बनाए रखेगा। संचालक ताल का और जिस प्रकार से संगीत बजना चाहिए का आदेश देता है। सब उसकी अगुआई का अनुकरण करते हैं जिसका परिणाम एक यशस्वी और समस्वर प्रदर्शन होता है।

औ: एक जनरल, जो उसकी सेना को क्रम से रखता और आदेश देता है।

यह अन्तिम सादृश्य सम्भवत: सबसे सही है, शर्त यह है कि "जनरल" सदा स्मरण रखे कि वह प्रधान सेनापति के अधीन है जो प्रभु आप है। जनरल की एक ऊँची पदवी है और उसका बहुत अधिकार होता है, परन्तु वह भी "पराधीन व्यक्ति" है। एक जनरल उस अधिकार की सदा जानकारी रखता है जिसे वह इस्तेमाल कर सकता है परन्तु वह यह भी जानता है कि उसका अधिकार उसके प्रधान सेनापति से आता है।

जनरल यह भी पहचानता है कि वह अपने साथी अफसरों और दूसरे पदवालों पर निर्भर है। सेना का हर सदस्य महत्त्वपूर्ण है। छोटे सिपाही भी अनिवार्य हैं। सेना की प्रभावकारिता और सफलता हर सदस्य के उसके भाग को, सही स्थान पर, सही समय पर, पूरा करने से मिलती है। अन्त में जनरल पर ही इसे पूरा करने की जिम्मेवारी है। उसके अपनी सेना के हौसले को बनाए रखना है। उसे उनके उद्देश्य की एकता को प्रोत्साहन देना है। उसे युद्ध की योजना के पूरा होने के लिए काम करना चाहिए और इसे प्राप्त करने के लिए सारी सेना को एक मनुष्य के समान काम पर लगाना चाहिए।

अध्याय तीन -- सही अभिप्राय होना

"क्या तू अपने लिए बड़ाई खोज रहा है? उसे मत खोज।" यिर्मयाह 45:5। कई तरीकों से मसीही अगुआई सांसारिक अगुआई की सब किस्मों से बिलकुल भिन्न है और सही अभिप्राय होना कहीं अधिक विवेचनात्मक और अनिवार्य है।

सच्ची मसीही अगुआई बड़ाई खोजती है:

अ: परमेश्वर की महिमा के लिए।

बाइबल के एक सबसे अनोखे और विशिष्ठ अगुवे, मूसा की भारी इच्छी "अपना तेज (महिमा) दिखा" थी (निर्गमन 33:18)। "महिमा" ऐसा लगता है एक अमूर्त, कुछ धुँधला या अस्पष्ट चीज है परन्तु प्रतिदिन की भाषा में इसका अर्थ है: "प्रतिष्ठा", "प्रसिद्धि", "स्तुति", "ख्याति", और "सम्मान"। मसीही अगुवों के रूप में हमारी प्रमुख इच्छा इस प्रकार परमेश्वर की महिमा होते हुए देखना होनी चाहिए। हमें सब कुछ जो हम करते हैं उसमें परमेश्वर का नाम ऊँचा होते और महिमा पाते देखने की इच्छा होनी चाहिए, और हम में दृढ़ निश्चय होना चाहिए हम उसके नाम की निन्दा या अपनाम होने का कारण नहीं बनेंगे। हमें परमेश्वर के नाम, सम्मान, और महिमा की पूरे हृदय से रखवाली करनी चाहिए।

आ: उनके कल्याण के लिए जिनके ऊपर उनको उत्तरदायित्व मिला है।

मसीही अगुवों को अकसर चरवाहे कहा जाता है, जिन पर यीशु अच्छा चरवाहा है। परमेश्वर के लोगों को मेम्ने या भेड़ें कहा जाता है जिनके लिए हम "अधीन-चरवाहे" हैं, और जिनके लिए हम में प्रेम और चिन्ता होनी चाहिए। अच्छा चरवाहा "भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है।" (यूहन्ना 10:15, 17)। वह हमारा सर्वोच्च उदाहरण है जिसका अनुकरण हमें करना चाहिए। हम में भेड़ों और उनके कल्याण के लिए एक सेवक का हृदय होना चाहिए, उनके लिए बलिदान करने के इच्छुक होना चाहिए और उनके लिए अपने जीवन देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इ: खोए हुओं के लिए जिनके लिए मरा था।

उसी चरवाहे को निन्यानवे भेड़ों को जंगल में छोड़कर, और रात के समय में इसके सारे खतरों के साथ, एक खोई हुई भेड़ को खोजने जाते देखते हैं जब तक वह मिल नहीं जाती। एक बार फिर वह हमारा आदर्श और उदाहरण है। इस सादृश्य में अच्छे चरवाहे को एक सुसमाचार सुनानेवाले की भूमिका में देखा जाता है, जो भेड़ को छुड़ाने के लिए जो पाप के मार्ग पर भटक गई है अपने जीवन को जोखिम में डालता है।

ई: परमेश्वर के राज्य की प्रगति और वृद्धि।

हर मसीही अगुवे को -अपनी प्रगति नहीं, न ही उसके सम्प्रदाय की, या उसकी स्थानीय कलीसिया की भी नहीं - बल्कि परमेश्वर के राज्य की प्रगति के लिए समर्पित होना चाहिए। मूल प्रार्थना जिसे करने के लिए यीशु ने उसके चेलों को शिक्षा दी थी, यह थी, "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" हम अगुवे उस राज्य के सेवक हैं, और हमारा मुख्य लक्ष्य उस प्रार्थना का पूरा होना है।

कुछ गलत अभिप्राय:

अ: <u>अधिकार का आनन्द।</u>

कई लोगों में सम्भावित अभिमान और अह्म होता है जो दूसरों पर अधिकार इस्तेमाल करने के अवसर का आनन्द लेता है। सांसारिक अगुवे के लिए, मसीही सेवा इसे करने का अवसर देती है और हमें निरन्तर इसके प्रति सावधान रहना चाहिए। यदि हम "प्रभु का नाम व्यर्थ" लेने का जोखिम लेते हैं तब वह हमें निदोर्ष नहीं छोड़ेगा।

आ: <u>दूसरों को प्रभावित और वश में करने की इच्छा।</u>

शारीरिक नियंत्रण के सांसारिक और अनुचित प्रभाव से कई जीवन नष्ट हो चुके हैं। मसीही अगुवे को ऐसे रवैयों से किसी भी कीमत पर दूर रहना चाहिए। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर एक दिन उन सबका न्याय करेगा जो उसके अधिकार को इस प्रकार बिगाड़ते हैं।

इ: <u>श्रेष्ठता की इच्छा।</u>

यीशु के चुनिन्दा चेलों के बीच में भी श्रेष्ठता की इच्छा बुरी तरह से प्रचलित थी। यीशु को उन्हें अनेक बार फटकारना पड़ा था। इस प्रकार के रवैये राज्य की आत्मा, जिसमें है, "जो तुम में प्रधान होना चाहे, सब का दास बने" (मरकुस 10:44) के विरुद्ध चलते हैं।

ई: व्यक्तिगत पूर्ति को पाना।

एक उचित स्थान है जिसमें सेवा पूर्ति और सन्तोष का अवसर देती है, परन्तु यह हमारा मूल लक्ष्य नहीं होना चाहिए। हमारा लक्ष्य प्रभु को सन्तुष्ट करना होना चाहिए, - "वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा।" (यशायाह 53:11)।

मसीही अगुआई में सेवकपन सम्मिलित है

मरकुस 10:35-45 में यीशु ने बताया है कि परमेश्वर के राज्य में महानता की कुंजी सेवकपन है। जब्दी के पुत्र, याकूब और यूहन्ना यीशु के पास उसके राज्य में श्रेष्ठता के स्थान पाने की इच्छा से आए और यीशु ने समझाया कि परमेश्वर का राज्य संसार के राज्यों से भिन्न है। संसार में लोग उनके अनुयायियों पर प्रभुता करते, और अधिकार जताते हैं। "पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहिए वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने।"
यीशु हमारा सबसे अच्छा आदर्श है, और वह चाहता है कि हमारा भी वैसा ही रवैया हो जैसा उसका है। फिलि. 2:5, "वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।"

अ: दीनता

सबसे पहले दीनता है: मन और हृदय की दीनता। यह एक सेवक के योग्य एक विनीत नियंत्रण और आत्मसंयम होने को मान कर चलती है और इसका सबसे सुन्दर उदाहरण यीशु के जीवन में देखते हैं। जो जानता था कि वह परमेश्वर के तुल्य है परन्तु "अपने आप को शून्य कर दिया" और एक दास का स्वरूप धारण किया। (फिलि. 2:7)।

आ: विनम्रता

विनम्रता का अर्थ है: दीनता के साथ आज्ञाधीन, नमनशील, और आज्ञाकारी होना, और यह यीशु के जीवन में अनोखे रूप से दिखाई देती है जो "भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है" (यशायाह 53:7) के समान था। विनम्रता को कमज़ोरी से उलझाना नहीं है। बाइबल के विनम्रता के दो सबसे महान उदाहरण मूसा और यीशु हैं और उनको किसी भी प्रकार से कमज़ोर नहीं माना जा सकता है। विनम्रता असल में महान शक्ति है जो नियंत्रण में है।

इ: आज्ञापालन

आज्ञापालन है: दूसरे की इच्छा के अधीन होना। यह ऐसा व्यक्ति है जो अधिकार के और उसके मालिक के दीनता के साथ आज्ञाकारी और प्रेम से अधीन है। इसलिए परमेश्वर का आज्ञाकारी होना उद्धार के लिए अनिवार्य है। पौलुस "अन्यजातियों की अधीनता" की बात करता है (रोमियों 15:18)। आज्ञापालन शिष्यता और आत्मिक विकास और वृद्धि के लिए भी अनिवार्य है।

अध्याय चार -- एक अच्छी नींव रखना

अच्छी नींव का महत्त्व

नींवे गुप्त और प्रभावहीन होती हैं, फिर भी वे महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं जिन पर सारी इमानत की शक्ति आखिरकार निर्भर होती है।

अगुआई की नींव के लिए अनिवार्य तत्त्व हैं:

चरित्र, वरदान, और व्यक्तित्व

आओ हम संक्षेप में उन पर दृष्टि डालें:

1. चरित्र

चरित्र वाला व्यक्ति वह है जिसमें काफी भीतरी शक्ति, सन्तुलन, विश्वसनीयता और संगति होती है, और जो नैतिकता और सम्पूर्णता का ऊँचा स्तर बनाए रखता है। ऐसा व्यक्ति उन्से सिद्धान्तों से कभी भी समझौता नहीं करेगा, परन्तु उनकी ओर घृणा से

नहीं देखता है जो उसके व्यक्तिगत स्तरों पर खरे नहीं उतरते हैं। वह उचित और निष्पक्ष व्यक्ति है जो बिना डर या पक्षपात के सब से एक समान निपटता है।
चरित्र शक्तिशाली भीतरी साधनों का मिश्रण है जो सच्चे व्यक्ति को बनाते हैं। यह ईमानदारी, सम्पूर्णता, सन्तुलन, नैतिक शक्ति, और संगति का एक मजबूत मिश्रण है। सच्चा चरित्र भड़कीला या दिखावटी नहीं है। यह असली में "हृदय का गुप्त व्यक्ति" है। इसमें इस प्रकार के मजबूत गुण जैसे कि सम्पूर्णता, दीनता, शालीनता, विश्वसनीयता, धैर्य, न्याय, दया, और "जो कुछ तुम चाहते हो मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो" के सुनहरे नियम के द्वारा जीने की वचनबद्धता है।

चरित्र की गहराई के अपने इनाम होते हैं। जैसे भजनकार ने कहा, "खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल अच्छा है।" (भजन 37:37)। परमेश्वर की अधिक रुचि इसमें है जो आप बनते हैं, न कि जो आप पूरा करते हैं। यहाँ सब अगुवों के विचार के लिए एक दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण समीकरण है, करिश्मा ऋण चरित्र = अव्यवस्था। बहुत सारे मसीही अगुवे उसके स्थान से गिर पड़े हैं क्योंकि उनमें करिश्मा (व्यक्तित्व और अह्म)बहुत ज्यादा था और चरित्र बहुत कम था। परमेश्वर आपकी उपलब्धियों से आपके चरित्र (आपके व्यक्तिगत संघटन का गुण) में कहीं अधिक रुचि रखता है।
चरित्र हमारे अस्तित्व का निष्क्रिय पहलू है, जो आप असली में हैं! यह वे सामूहिक गुण हैं जो हमारे संघटन को बनाते हैं।

स्वाभाविक में अनेक प्रभावशाली तत्त्व हैं:

अः वंशानुगत। जिन विशेषताओं को हम अपने माता-पिता से पाते हैं और जीन, गुणसूत्रों और दूसरे चरित्र वाहकों के द्वारा लाए जाते हैं।

आः पालन-पोषण। हमारे वातावरण, नीतिशास्त्र और सिद्धान्तों का प्रभाव जिन्हें हम अपने जीवन के आरम्भ के दिनों में सीखते हैं।

इः शिक्षा। कुल मिलाकर जो हम अपनी शैक्षिक प्रणाली से सीखते हैं।

ईः अनुभव। जिन चीजों को हम जीवन के अनुभवों से सीखते और सोखते हैं।

ये स्वाभाविक प्रभाव थे जिन्होंने हमारे चरित्र को बनाने में सहायता की थी। जब हम मसीही बनते हैं, नए प्रकार के प्रभाव काम करने लगते हैं।

अः "मसीह तुम में" - कारण। (कुलु. 1:27)
मसीह हमें भीतर से बदलने आया था।

आः आत्मा के फल। (गला. 5:22-23)
- मसीही के अपने भीतर -- **प्रेम**, **आनन्द**, **शान्ति**
- मानवीय सम्बंधों में -- **धीरज**, **कृपा**, **भलाई**
- परमेश्वर की ओर -- **विश्वास**, **नम्रता**, **संयम**

इः जीवित वचन - कारण।
परमेश्वर उसके वचन में है। उसका चरित्र इसमें है। हम उसके वचन के द्वारा उसे और उसके गुणों को ग्रहण करते हैं। "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकार से बसने दो" (कुलु. 3:16)। बाइबल में परमेश्वर का चरित्र भरा हुआ है। इसमें सब कुछ परमेश्वर के चरित्र से अनुसार है। जैसे हम परमेश्वर के वचन को खाते हैं उसका चरित्र हम में बनते जाता है। नीतिवचन की पुस्तक इसका एक अतिउत्तम उदाहरण है। यह बुद्धि की व्यावहारिक बातों से भरी हुई है। हर अगुवे को नीतिवचनों में से हर दिन एक अध्याय को पढ़ना चाहिए। इसकी व्यावहारिक बुद्धि और नैतिक मूल्य तब अगुवे के आत्मा में छप जाएँगे और उसमें परमेश्वर के गुणों को बनाएँगे।

ईः पवित्र आत्मा - कारण।
चेले पिन्तेकुस्त के दिन बदल गए थे। (प्रेरितों 2)। हम भी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा बदल सकते हैं। यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा "सब सत्य का मार्ग बताएगा।" विश्वासी में उसकी उपस्थिति एक शान्त, परन्तु आग्रहकारी प्रेरणा है जो सदा सत्य के मार्ग पर ले जाती है, भ्रम के मार्ग पर कभी नहीं। तो जब तक हम अपने भीतर आत्मा की भीतरी प्रेरणा द्वारा चलते

जाएँगे, तो वह हमें निरन्तर उन चीजों में ले चलेगा जो "आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी और मनभावनी हैं।" (फिलि. 4:8)। जैसे हम इन सद्‌गुणों में चलेंगे परमेश्वर का चरित्र हम में बनता जाएगा।

उ: "परमेश्वर के व्यवहार" - कारण।
परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपने स्वरूप और समानता में बनाया था, परन्तु वह स्वरूप पतन के कारण भ्रष्ट हो गया था, और तब से लेकर मनुष्य ने उसके पूर्वजों के स्वाभाविक स्वरूप को अपना लिया है। मसीह के द्वारा, परमेश्वर उसके स्वरूप और समानता को हम में दोबारा स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु यह इतना सरल या आसानी से होनेवाला काम नहीं है। यह बिना प्रयत्न के नहीं होता है। परमेश्वर हमें विभिन्न परिस्थितियों और हालातों में से गुज़रने देता है जिनमें वह हम से निपटता है। "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है। और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है। तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, व्यभिचार की सन्तान ठहरे।" (इब्रानियों 12:5-8)।

आओ हम चरित्र और व्यक्तित्व की तुलना और भेद को संक्षेप में देखें:

चरित्र और व्यक्तित्व की तुलना:

चरित्र	**व्यक्तित्व**
निष्क्रिय पहलू	सक्रिय पहलू
आप कौन हैं	आप क्या करते हैं
व्यक्तिगत	सार्वजनिक
भीतरी	बाहरी

मसीह के चरित्र को विकसित करना

गलातियों 5:22-23 में, पौलुस आत्मा के फल का वर्णन करता है, "प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम।" ये ऐसे गुण नहीं हैं जिन्हें लाने के लिए हमें संघर्ष करना है, परन्तु जैसे हम अपने भीतर मसीह के आत्मा के अनुसार चलते जाएँगे वे प्रकट होते रहेंगे। वे उस व्यक्ति का प्रमाण हैं जो मसीह में और मसीह उन में बना हुआ है। यह प्रमाण है कि हम उसे उसका जीवन हमारे द्वारा जीने दे रहे हैं। इस प्रकार के अनुग्रह प्रमाण का एक भाग हैं कि मसीह असल में आप में रहता है। किसी ने प्रश्न किया है, "यदि आप को एक मसीही होने के जुर्म में कैद किया जाता है, तो क्या आपको दण्ड देने के लिए पर्याप्त प्रमाण होंगे?"

सद्‌गुणों और विशेषताओं की यह सूची मसीह के चरित्र का वर्णन है। चरित्र हमारे अस्तित्व का निष्क्रिय पहलू है। यह है जो व्यक्ति हम हैं। कई बार एक पास्टर को अपनी कलीसिया के किसी सदस्य के लिए चरित्र प्रमाणपत्र लिखना पड़ता है। वह विश्वासयोग्यता के साथ उस व्यक्ति का वर्णन करने का प्रयत्न करेगा। वह लिखेगा, "मैं इस व्यक्ति को पिछले पाँच वर्षों से जानता हूँ, जिस दौरान मैं ने उसे अत्यन्त वफादार और भरोसेमंद पाया है। वह कड़ी मेहनत करनेवाला और कर्तव्यनिष्ठ है। मैं ने उसे अधिकार का सम्मान करनेवाला और एक अच्छे अनुशासन वाला व्यक्ति पाया है। मुझे निश्चय है कि वह एक उत्तम कर्मचारी प्रमाणित होगा और भरोसेमंद सेवा देगा।" यह उस व्यक्ति का वर्णन करने का एक प्रयत्न है। अब जब पवित्र आत्मा बताना चाहता है यीशु किस प्रकार का व्यक्ति है, तब वह कहता है, "यीशु प्रेम, आनन्द और शान्ति है। वह धीरजवंत, कृपालु और भला है। वह विश्वासयोग्य, नम्र और संयमी है।"

पवित्र आत्मा मेरे और आपके विषय में भी वही बातें कहने की चाह रखता है। वह उन्हीं शब्दों से हमारे चरित्रों का भी ईमानदारी से वर्णन करना चाहता है। वह हमें मसीह के स्वरूप में बनाना चाहता है (1 कुरिं. 3:18), जिसमें हम में मसीह का चरित्र होना सम्मिलित है। वह चाहता है कि हम मसीह के जीवन को परिपक्वता की इस श्रेणी तक प्रकट करें जिससे मसीह के जीवन के ये प्रमाण हमारे जीवनों में स्पष्ट और निरन्तर रूप से दिखने लगें। यह तब ही हो सकता है जब हम अपने भीतर पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं का पालन करते रहेंगे।

मसीही अगुवों के कुछ वांछनीय चरित्र के गुण:

ये सब आत्मिक परिपक्वता की विशेषताएँ हैं जिन्हें परमेश्वर हम में विकसित करने का प्रयत्न कर रहा है। वे हमारे स्वाभाविक चरित्र में कुछ सीमा तक वर्तमान हो सकते हैं परन्तु परमेश्वर उन्हें हमारे भीतर आत्मा के फल के रूप में मजबूत करने का प्रयत्न कर रहा है। सारे आत्मिक प्रभाव जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवनों में लाया है मिलकर हम में एक भक्तिपूर्ण चरित्र उत्पन्न करते हैं, और हमें मसीह के स्वरूप और समानता में बदल देते हैं। एक सच्चा प्रभावशाली मसीही अगुवा "अपने आप बना" व्यक्ति नहीं है, बल्कि एक "परमेश्वर ने बनाया" व्यक्ति है। जिन गुणों और विशेषताओं के विषय में मैं बताने वाला हूँ, वे कोई स्वाभाविक, मानवीय विशेषताएँ नहीं हैं परन्तु वे परमेश्वर के आत्मा के हमारी भीतर रहने के कारण से हैं - और परमेश्वर के वचन के हमारे जीवन पर सकारात्मक प्रभाव के कारण। हमें पहचानना चाहिए कि हमारा आत्मिक विकास परमेश्वर की प्रमुख चिन्ता है। इसी कारण से हमें अपने आप को हर उस परिस्थिति के अधीन करना है जिसे वह हमारे जीवन में लाता है। जैसे हम करेंगे वह हर अवसर को हमें यीशु के स्वरूप में ढालने के लिए इस्तेमाल करेगा। आपकी अगुआई की भूमिका असल में परमेश्वर आपको क्या बना सकता है इसके विषय में है, न कि आप दूसरों को क्या बना सकते हो।

1. सहनशीलता

धैर्य या सहनशीलता के गुण को एक प्रभावशाली अगुवे की वांछनीय विशेषताओं की सूची के आरम्भ में रखना अनोखा लगेगा परन्तु अनुभव ने मुझे सिखाया है कि यह एक मूल और अनिवार्य गुण है।

यीशु की सेवा निश्चित रूप से इसे प्रमाणित करती है। उसके चेलों के साथ उसके सम्बंध के आरम्भ के दिन उसकी सहनशक्ति के दिन थे। यदि वह उनके साथ धीरज से पेश नहीं आया होता तो शायद कलीसिया का जन्म ही नहीं हुआ होता।

मसीही अगुआई में मूल रूप से दो चीजें हैं - परमेश्वर और लोग। जब कभी हमें लोगों के साथ सम्बंध में होना होता है हमें धीरज की आवश्यकता पड़ती है। इसी आवश्यकता के कारण परमेश्वर हम में धीरज के फल को उत्पन्न करना चाहता है। परमेश्वर हमारे जीवनों में परिस्थितियों और लोगों को उसके आत्मा के काम को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है, जो हम में परमेश्वर के स्वरूप को बनाते हैं।

2. सहानुभूति

समानुभूति दूसरों के विचारों और भावनाओं के साथ एक उदार और दयालु तरीके से पहचान बनाने की योग्यता है। यह दूसरे व्यक्ति के स्थान पर अपने आप को रखने और उनके परिदृश्य और दृष्टिकोण को पूरी तरह समझने की योग्यता है। यीशु "ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके।" वह हमारी जरूरतों को समझता है और समानुभूति से हमारे पास आता है। हर मसीही अगुवे को समय-समय पर रुक कर अपने हृदय की जाँच यह देखने के लिए करनी चाहिए कि क्या यह अभी भी दूसरों के लिए चिन्ता से प्रेरित है।

3. सम्पूर्णता और ईमानदारी

सम्पूर्णता है: भीतरी ईमानदारी, नैतिक उत्तमता और ठोस चरित्र। इस में ऊँचे नैतिक सिद्धान्तों और नीतिशास्त्र का एक दृढ़ और निरन्तर पालन सम्मिलित है। यह एक निरंतर ईमानदारी और भरोसेमंदी के द्वारा प्राप्त की गई विश्वसनीयता है जिसे एक लम्बे समय पर विभिन्न परिस्थितियों में परखा गया है। सम्पूर्णता का व्यक्ति होने का अर्थ है: ऐसा व्यक्ति होना जो अपने आप से और दूसरों से बिलकुल सच्चा है - जिस का भरोसा किया जा सकता और निर्भर हुआ जा सकता है। यह ईमानदारी और विश्वसनीयता का प्रमाणित नाम वाला एक व्यक्ति होना है।

4. निष्पक्षता

एक अच्छे अगुवे को लोगों की ओर उसके रवैये में एक समान होने को सदा अपना लक्ष्य बनाना चाहिए, और सबके साथ एक समान बर्ताव करने का प्रयत्न करना चाहिए। उसे सब समय निष्पक्ष रहना चाहिए, और सब के साथ उचित और बराबर का व्यवहार करना चाहिए। एक पास्टर की मण्डली में कोई भी उसका प्रियपात्र नहीं होना चाहिए। प्रकट है कि सब का कोई न कोई होता है जो दूसरों से अधिक उनके निकट होता है। प्रभु यीशु का भी पतरस, याकूब और यूहन्ना का भीतरी समुदाय था। फिर भी वह दूसरों के साथ बहुत उचित था - यहूदा के साथ भी जिसने उसे धोखा दिया।

5. शक्ति और विश्वसनीयता

एक अगुवे को मजबूत, और दृढ़ और अटल होना चाहिए। यीशु कोमल और नम्र था, फिर भी वह बहुत दृढ़ था। दृढ़ होने के लिए कठोर होना जरूरी नहीं है। दृढ़ होने का अर्थ है: अटल होना; इसका अर्थ निरन्तर और स्थिर होना है। बाइबल कहती है: "तुम्हारी बात "हाँ" की "हाँ", या "नहीं" की "नहीं" हो।" दृढ़ होने का हमारा अर्थ यही है।

6. अटल और दृढ़

एक अच्छे अगुवे को उसका मन बनाकर उस पर बने रहना चाहिए। सम्भावित अनुयायियों के लिए कुछ भी इतनी घबरा देनेवाली बात नहीं होगी कि उनका अगुवा अपना मन बना नहीं पाता है, या जो सदा अपना मन बदलता रहता है। फैसले करना अच्छी अगुआई की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विशेषता है, और निर्णायक और एकसा होने की योग्यता अनिवार्य है।

7. हास्य की एक अच्छी भावना

अगुआई अकसर एक गम्भीर काम है और समय समय पर इसकी गम्भीरता को हास्य के द्वारा हलका किया जाना चाहिए। एक अगुवे को कभी-कभी चीजों का हास्यजनक पहलू देखना चाहिए। यह बहुत स्फूर्तिदायक हो सकता है, और गंभीर स्थितियों को शान्त कर सकता है। परन्तु दूसरी कई चीजों के समान इसे जरूरत से ज्यादा भी किया जा सकता है। एक पुरानी कहावत कहती है, "जो धनुष सदा तना रहता है शीघ्र ही इसकी शक्ति खो देगा।" इसलिए अगुवे को भी मनोरंजन और विश्रान्ति के समयों की आवश्कता होती है। शान्त होने और आनन्द लेने की योग्यता अनिवार्य है। खूब हँसने और हास्य की एक भावना की योग्यता सुरक्षा-वाल्व का काम करती है जो दबाव में अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। अगुआई में हास्य का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू सम्भवतः कभी-कभी अपने ऊपर हँसने की योग्यता है। कई अगुवे उनको और उसके काम को बड़ी गम्भीरता के साथ लेते हैं और कभी-कभार उनके लिए नीचे उतरना और अपने ऊपर खूब हँसना जरूरी है।

8. सुगम्यता

जबकि हर व्यक्ति को और विशेषकर उनको जो अगुआई में हैं, उनके जीवन में कुछ एकान्त की आवश्यकता होती है, एक अच्छा अगुवा उसके अनुयायियों के लिए उपलभ्य और अभिगम्य होना चाहिए। उसे सुगम्य होना चाहिए। लोगों को लगना चाहिए कि अगुवा किसी प्रकार के भव्य एकाकीपन में अलग नहीं हो गया है।

9. आज्ञापालन

"अतः मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।" प्रेरितों 26:19। सेवा के लिए हमारा बुलावा असल में स्वर्ग से एक बुलावा है। हमारी अन्तिम जिम्मेवारी उस बुलावे की ओर आज्ञापालन है।

परन्तु, हमें स्पष्ट पता लगाना चाहिए कि उस बुलावे के लिए क्या आवश्यक है। हमें अपने सच्चे बुलावे की निश्चित प्रकृति का पता लगाना चाहिए। परमेश्वर ने असल में आप को क्या करने के लिए बुलाया है? वह विशेष वरदान क्या है जिसके लिए उसने आपको जिम्मेवारी दी है? क्या आप एक प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनानेवाले, पास्टर या शिक्षक हो? या क्या आपका बुलावा इन वरदानों का कुछ मिश्रण है? इसके विषय में निश्चित रहो। झूठी शालीनता मत बनाओ और विद्रोह करो कि आप के पास इन अदभुत वरदानों में से कुछ भी नहीं है। यदि आप में सच में इन में से कोई भी वरदान नहीं है तब सम्भवतः परमेश्वर ने आपको एक सेवक होने के लिए नहीं बुलाया है - जिसे वह बुलाता है, तैयार भी करता है। उस निश्चित बुलावे का पता लगाओ और पालन करो जिसे परमेश्वर ने आपको दिया है। परमेश्वर की इच्छा के आज्ञापालन में अपने बुलावे को पूरा करने का निश्चय करो।

क्या आपको एक विशेष स्थान और मण्डली के लिए बुलाया गया है जिसकी सेवा आप इस समय कर रहे हो? क्या आप एक सही समय और एक स्थान पर, एक सही व्यक्ति हो? यदि आपको इसका निश्चय है, तब परमेश्वर के पास आपके पूरा करने के लिए एक निश्चित योजना है। आपका प्रमुख काम इसे पहचानना और पूरा करना है।

10. वस्तुगत

वस्तुगत होना चीजों को एक निष्पक्ष तरीके से देखना है। भावात्मक, भावुक और व्यक्तिगत प्रभावों से अलग होना है। चीजों को व्यावहारिक रूप से देखना है। फैसले करना जो तथ्यों पर, न कि भावनाओं पर आधारित हैं। प्रबंध की एक प्रभावशाली और व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाली शैली है जिसे एम.बी.ओ. या वस्तुगत द्वारा प्रबंध कहते हैं। यह एक प्रबंध शैली का संकेत देती है जो इसके अन्तिम लक्ष्य को जानती है और इसके लक्ष्य तक पहुँचने और प्राप्त करने के लिए सब कुछ बनाती है। यह अन्तिम लक्ष्य को पहचानने और निश्चित करने, और लक्ष्य के पूरा होने के प्रकाश में सब नीतियों को निर्धारित करने पर बल देती है। यह एक दीर्घकालीन लक्ष्य की माँग करती है जिसे दल का हर सदस्य जानता और अपना बनाता है। यह अल्पकालिक लक्ष्य भी देती है जो दीर्घकालीन लक्ष्यों की ओर ले जाते हैं।

यह संकट प्रबंध की शैली से एक अच्छा परिवर्तन है जिसे कई कलीसियाओं ने अनजाने में अपना लिया है, जिसमें कलीसिया के पास कोई दीर्घकालीन लक्ष्य नहीं होता परन्तु एक संकट से दूसरे पर झपटती रहती है।

मसीही काम के होने में एक पेशेवर खतरा है -- "स्वर्ग के विषय में इतना सोचता है कि पृथ्वी के योग्य नहीं है।" प्रशासन की कार्यकुशलता को ऐसे देखा जाता है कि यह आत्मिक से कम है और जो अपने आप को आत्मिक विशिष्ठ वर्ग समझते हैं इसका तिरस्कार करते हैं। परन्तु यह सत्य नहीं है। परमेश्वर ने हमें एक स्वर्गीय दर्शन दिया है, परन्तु हमारी अगुआई का एक भाग उस दर्शन को पृथ्वी पर वास्तविक बनाना है - "तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में होती है, पृथ्वी पर भी हो।"

कई लोगों के लिए, आत्मिक विचार इतना धुँधला और अमूर्त है कि यह अलौकिक बन जाता है। हमारी सन्तुलित इच्छा "स्वाभाविक रूप से आत्मिक, और आत्मिक रूप से स्वाभाविक" होनी चाहिए। हमारा संदेश यह है कि परमेश्वर पृथ्वी पर उसके पुत्र के रूप में आया है और हमें उस पृथ्वी की अभिव्यक्ति को उपयुक्त और असली बनाना है।

11. व्यावहारिक

व्यवहार-कौशल दूसरों के साथ, विशेषकर नाजुक स्थितियों में कोमल हृदय से सम्बंध बनाने की एक निपुणता है। यह सही चीज बोलना, और उसे बोलने के सही समय और तरीके को जानने की कला है। यह लोगों के साथ अनावश्यक चोट पहुँचाए व्यवहार करने की निपुणता है। सही पहुँच लेकर और मामले से एक व्यावहारिक और सुविचारित तरीके से सम्भावित विस्फोटक स्थितियों को शान्त करने की योग्यता है। यह परस्पर सम्बंधों का प्रबंध करने की कला है और इसके लिए कोमलता और दृढ़ता के सही मिश्रण की आवश्यकता होती है।

12. अनुपालक

पास्टर के लिए एक दूसरा शब्द "निरीक्षक" है, जिसका अर्थ है: "देख-रेख करना।" इसी लिए मसीही अगुवे को अनुपालक होना चाहिए। "अपनी भेड़-बकरियों की दशा भली-भाँति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर।" नीतिवचन 27:23। मन लगाकर देखने के लिए पहला क्षेत्र आपका अपना जीवन, व्यवहार, और आचरण है। दूसरा आपकी मण्डली है। ("भेड़-बकरियाँ और झुण्ड")। एक चरवाहे के रूप में आपको पता होना चाहिए आपकी भेड़ें कितनी हैं। आपको इन भेड़ों को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहिए। आपको उनकी दशा का पता होना चाहिए। आपको उनके आत्मिक कल्याण के विषय में सच्चे हृदय से चिन्ता होनी चाहिए। आपको उनकी देखभाल करनी चाहिए। उनका मार्गदर्शन करो, रक्षा करो और चारा दो। आप इन चीजों को तब ही अच्छी तरह कर सकते हो यदि पहले उनकी वर्तमान दशा को जानते हो और उचित निरीक्षण, संघटन और प्रशासन द्वारा ही इस पर ध्यान रख सकते हो।

13. परिश्रमी

एक अच्छे और प्रभावशाली अगुवे को एक परिश्रमी चालक होना चाहिए। उसे एक विद्वान्, एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक, या सिद्धान्तवादी से अधिक होना चाहिए। उसे सक्रिय, व्यस्त, काम करनेवाला और उत्पादक होना चाहिए। परिश्रमी का अर्थ है: सावधान, सक्रिय, अध्यवसायी और अटल, दूसरे शब्दों में एक ऐसा व्यक्ति जो अध्यवसाय, एक समान और प्रभावशाली तरीके से काम करता है। "यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो कामकाज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।" नीतिवचन 22:29। "मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।" (लूका 19:13)। "कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आसली बेगार में पकड़े जाते हैं।" नीतिवचन 12:24। "कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है।" नीतिवचन 12:27।

14. उत्साही

"उत्साह" शब्द का मूल है: परमेश्वर में। इसलिए मसीही अगुवों को सच्चे उत्साह से कभी भी शर्मिन्दा नहीं होना चाहिए। यह एक ऐसी चीज है जो कई मसीही उद्यमों में बुरी तरह से गायब है, परन्तु इसके बिना कम ही प्राप्त किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश, कई मसीही और विशेषकर सेवक, भावात्मक प्रदर्शन से डरते हैं। वे जीवन में एक उत्साही रवैये के बदले, एक दार्शनिक रवैया अपनाते हैं। यीशु आप भी उत्साही और भावुक दोनों था, और हमें भी इन में से किसी से भी डरना नहीं है, शर्त यह है कि वे सन्तुलन में रहें और सही उत्पात में रखी जाएँ।

15. आशावादी

अगुआई को सदा आशावादी रहना चाहिए। आशावाद जीवन और परिस्थितियों का एक सकारात्मक दृष्टिकोण है -- ऐसा दृष्टिकोण जो सदा सम्भावनाओं को न कि समस्याओं को देखता है। यहोशू और कालेब आदर्श उदाहरण हैं, उन्होंने प्रतिज्ञात प्रदेश के सकारात्मक पहलुओं को देखा, जबकि निराशावादी दैत्यों की उनकी जानकारी से पराजित हो गए थे।

विश्वास सदा आशावादी होता है और विश्वास कलीसिया की वृद्धि के लिए अत्यावश्यक है। यदि आप में विश्वास है तो आप आशावादी हो और आप विश्वास करते हो कि सकारात्मक नकारात्मक पर जयवन्त होगा। समस्याएँ अवसर प्रदान करेंगी। आप विश्वास करते हो, "जो आपके लिए हैं वे उनसे बड़े हैं जो आपके विरोध में हैं।" दूसरे दो शब्द भी हैं जो उसी मूल से मिलते हैं जैसे आशावादी है और दोनों अगुवों के लिए आवश्यक हैं। पहला "आशावादी होना" है -- चीजों का सबसे प्रभावशाली या उत्तम इस्तेमाल करने की योग्यता। दूसरा "अनुकूलतम वातावरण" है -- विकास के लिए सबसे अनुकूल स्थितियाँ प्रदान करना। केवल एक आशावादी ही इन क्षमताओं को पैदा कर सकता है!

16. प्रेरणात्मक

एक प्रभावशाली अगुवे को उसके शब्दों और उदाहरण से दूसरों को प्रेरित करने योग्य होना चाहिए। प्रेरित करने का अर्थ है: प्रोत्साहित करना, जाँचना और कार्य के लिए प्रेरित करना। इसका अर्थ लोगों में जान डालना है। उन्हें जगाना और जीवन डालना। एक सामान्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्हें चलाना और काम पर लगाना। इसे करने के लिए अगुवे को स्वयं सच में प्रेरित होना चाहिए और प्रेरणा का यह गुण केवल परमेश्वर से ही आ सकता है।

चरित्र के गुणों के अलावा, वरदान और व्यक्तित्व महत्त्वपूर्ण हैं

वरदान

वरदान: वे योग्यताएँ और निपुणताएँ हैं जो हम में हैं, जिन में से कुछ स्वाभाविक दान हैं, और कुछ प्राप्त की गई निपुणताएँ हैं।

अ: स्वाभाविक योग्यताएँ

स्वभाव, भावनाओं, मनोवृत्ति, रूप-रंग, आवाज के गुण, और व्यक्तित्व के वरदान। ये सब हमारे अनोखे अस्तित्व और व्यक्तित्व के स्वाभाविक पहलू हैं। कुछ लोग दूसरों से उनके वंशागत व्यक्तित्व में अधिक भाग्यशाली होते हैं। कइयों की स्वाभाविक विशेषताएँ होती हैं जिनसे वे एक आकर्षक व्यक्ति बनते हैं जिसकी बहुत प्रशंसा की जाती है और बहुत माँग होती है। दूसरे उनकी विशेषताओं में कम भाग्यशाली लगते हैं। परन्तु किसी को भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि व्यक्तित्व की विशेषताओं को विकसित किया और बढ़ाया जा सकता है। कुछ लोग जिनको लगता था उनका व्यक्तित्व कम आकर्षक है उन्होंने उसे सफलतापूर्वक विकसित कर लिया है और अपने आप को एक रुचिकर और मनोहर व्यक्तित्व में बदल लिया है। जैसे पवित्र आत्मा के फल को हम में विकसित होने दिया जाता है, हमारे व्यक्तित्व घनिष्ठ होते और बढ़ते जाते हैं। एक व्यक्ति को उनमें यीशु की उपस्थिति से अधिक कुछ भी बढ़ा नहीं सकता है और यही काम परमेश्वर हम में करने का प्रयत्न कर रहा है।

दूसरे वरदानों की आवश्यकता हो सकती है, हम उन्हें कह सकते हैं:

आ: उपार्जित निपुणताएँ

इन में ज्ञान, सीखी गई निपुणताएँ, प्रचार की निपुणताएँ, आराधना की अगुआई की निपुणताएँ, प्रशासन की निपुणताएँ और संघटनात्मक निपुणताएँ सम्मिलित हैं।

ये सब विशेषताएँ हैं जिन्हें किसी भी सम्भावित अगुवे में अगुआई की सम्भावनाओं को घनिष्ठ करने और बढ़ाने के लिए सीखा, प्रयोग में लाया और विकसित किया जा सकता है। आपको परिश्रमी अध्ययन और अभ्यास के द्वारा अपनी अगुआई की निपुणताओं को घनिष्ठ करने का प्रयत्न करना चाहिए। उचित पुस्तकों को पढ़ो और अगुआई के सेमीनारों में जाओ। अगुआई की योग्यताओं को बढ़ानेवाली विभिन्न निपुणताओं में अपने ज्ञान और समझ को बढ़ाने के हर सम्भव प्रयत्न करो। अपने वरिष्ठ अगुवों को ध्यान से देखो, विशेषकर उनको जो उनके क्षेत्रों में सफल रहे हैं। उनकी नकल करने का प्रयत्न मत करो, परन्तु उनके समान या उनसे बढ़ चलने का प्रयत्न करो। उनका विश्वास और परमेश्वर के लिए उनकी उपलब्धियों को अपने लिए प्रेरणा बनने दो। उन्हें अपने परामर्शदाता बनने दो। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से दूसरों से अधिक वरदान पाए होते हैं परन्तु कई वरदानों और निपुणताओं को परिश्रम के साथ अध्ययन और तैयारी करके पाया जा सकता है।

मसीही अगुआई में आवश्यक कई निपुणताओं को बाइबल कालेजों या सेमिनरियों द्वारा प्रस्तुत अध्ययन की शिक्षाओं से सीखा जा सकता है। दुर्भाग्यवश, ऐसे कई स्थानों में मुख्य बल आध्यात्मिक और किताबी होता है। अगुआई के बहुत से व्यावहारिक मामलों को अनदेखा किया जाता है। यह भी सत्य है कि कई सम्भावित अगुवे, सुसमाचार सुनानेवाले और पास्टर एक बाइबल कालेज में शिक्षा पाने का अवसर नहीं पा सकते हैं। यहाँ हम ने उन मूल मामलों और निपुणताओं पर कुछ शिक्षा देने का प्रयत्न किया है जो प्रभावशाली मसीही अगुआई के लिए आवश्यक है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व हमारे स्वभाव, चरित्र, रूप-रंग, आवाज, आदि का हमारी सारी स्वाभाविक विशेषताओं का मिश्रण है जो एक व्यक्ति को बनाते हैं। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने आप को व्यक्त करता है। यह एक व्यक्ति की सुस्पष्ट विशेषताओं का दृश्य और सूचनीय अभिव्यक्ति है। यह व्यक्ति की विशेषताओं की कुल अभिव्यक्ति है और मुख्य रूप से यही चीजें एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करती हैं।

व्यक्तित्व की परिभाषा देना उतना सरल नहीं है जितना चरित्र की परिभाषा देना है। इसमें कुछ पहलू होते हैं जिनका वर्णन करना लगभग कठिन होता है। इसे असंख्य तरीकों से बताया जा सकता है और यह संचार की निपुणताओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण

सहायक है, विशेषकर मौखिक संचार में। एक रुचिकर व्यक्तित्व एक उबाऊ प्रवचन और एक मोहक प्रवचन में अन्तर हो सकता है। एक मनोहर व्यक्तित्व लोगों का ध्यान उन्हें आत्मिक सत्य देते हुए अपने पास रख सकता है। एक सच्चा प्रचारक जो व्यक्तित्व में कम है अपने श्रोताओं को खो सकता है। इसके विरुद्ध, एक पवित्र व्यक्तित्व जिसके पास हास्य की भावना और एक दिलचस्प तरीके से बोलने की योग्यता है, आत्मिक सत्य सिखाते समय एक मण्डली को आकर्षित रख सकता है।

यीशु निस्संदेह एक सजीव और आकर्षक व्यक्ति थे। जैसे वह लोगों के साथ एक दिलचस्प और आकर्षक तरीके से बात करता था, वह प्रत्यक्ष रूप से अपने अनोखे और आकर्षक व्यक्तित्व को प्रकट करता था। लोग घंटों बैठे उसे सुनते रहते थे, और भोजन करना और दूसरे सांसारिक काम भूल जाते थे। वे उसे सुनने के लिए मीलों चल कर आते थे। वह मनोहर दृष्टान्त और कहानियाँ सुनाता और उसके प्रवचन दिलचस्प कहानियों से भरे होते थे।

आपका व्यक्तित्व आपकी सबसे बड़ी मानवीय सम्पत्ति है। इसका अध्ययन करो और इसे समझो। इसे विकसित करो और इस्तेमाल करो। परन्तु यदा याद रखो कि "मसीह तुम में" एक उससे भी बड़ी बेजोड़ सम्पत्ति है।

एक आकर्षक और मनोहर व्यक्तित्व एक अगुवे और प्रचारक के रूप में आपका एक सबसे महत्त्वपूर्ण हथियार हो सकता है। परन्तु, इसे परमेश्वर को समर्पित किया जाना चाहिए ताकि वह इसे अपनी इच्छा के अनुसार नया रूप दे सके। एक स्वार्थी, अभिमानी और हठी व्यक्तित्व उतनी ही बड़ी समस्या हो सकती है जितनी एक समर्पित व्यक्तित्व आशीष हो सकती है।

अध्याय पाँच -- अगुआई की कीमत जानना

"जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम भी पी सकते हो?" (मत्ती 20:22)। "तुम में से कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं?" (लूका 14:28)। किसी भी मूल्यवान् चीज की कीमत होती है, और मसीही अगुआई का सौभाग्य कुछ भिन्न नहीं है। इसलिए हमें यीशु के आदेश का पालन करना चाहिए और "पहले बैठकर खर्च जोड़ना चाहिए, कि क्या मैं एक अगुवे से माँगी जानेवाली कीमत देने के योग्य और इच्छुक हूँ कि नहीं। कुछ खर्चे यहाँ दिए गए हैं।

1. "परमेश्वर के काम" की जिम्मेवारी

परमेश्वर के लोगों की अगुआई बड़े जिम्मेवारी वाला एक ऊँचा और पवित्र बुलावा है। ऐसी जिम्मेवारी को कभी भी लापरवाही से नहीं लिया जाना चाहिए। हम परमेश्वर के नाम के सम्मान के लिए जिम्मेवार हैं, क्योंकि लोग परमेश्वर के लोगों के व्यवहार और विशेषकर उसके अगुवों के काम को देखकर परमेश्वर का न्याय करते हैं।

2. ऊँची अपेक्षाएँ

परमेश्वर अपने सेवकों से बड़ी अपेक्षा रखता है। हमारे अधीन लोग और संसार के लोग भी सामान्यतः रखते हैं। हमारी भी मसीही अगुवों के रूप में ऊँची अपेक्षाएँ होती हैं।

3. अगुआई का "बोझ"

एक बोझ एक भारी जिम्मेवारी हो सकती है। परमेश्वर के वचन को लोगों तक पहुँचाने की जिम्मेवारी अकसर एक भारी बोझ है। परमेश्वर के लोगों की देखरेख की जिम्मेवारी बोझ हो सकती है। मूसा ने अगुआई की जिम्मेवारी का एक बारी बोझ उठाया हुआ था, जिसके विषय में यित्रों ने उसे सलाह दी थी कि वह इसे प्रचीनों के साथ बाँट ले (निर्गमन 18:2)। यीशु ने भी हमें उससे कुछ रहस्य सीखने की सलाह दी है जो हमारा बोझ कम कर सकते हैं। (मत्ती 11:28-30)।

4. अगुआई का एकाकीपन

किसी भी संस्था में उच्च पद के विषय में कुछ एकाकीपन अवश्य होता है। कुछ चिन्ता के विषय होते हैं जिन्हें दूसरों को बताना उचित नहीं होता। दूसरे लोग प्रायः गोपनीय बातें बाँटते हैं जो बातें चिन्ता बनती हैं जिन्हें दूसरों को बताया नहीं जा सकता है।

5. अगुआई के दबाव और तनाव

गम्भीर जिम्मेवारियाँ, एक भारी काम का बोझ, और अत्यावश्यक काम अकसर अगुवे पर दबाव और तनाव डालते हैं। यह जरूरी है कि अगुवा सीख ले कि वह कैसे विश्राम करे और अगुआई के दबाव से छुट्टि ले। यीशु आप ऐसा अनेक बार करते थे। यदि उसे ऐसा करने की आवश्यकता थी, तब हमें कितनी होगी?

6. आलोचना से निपटना सीखना

एक आदर्श वातावरण में, आलोचना नहीं होनी चाहिए। परन्तु जीवन की वास्तविकता यह है कि यह होती है और हर अगुवे को इससे निपटना सीखना है नहीं तो यह उसे निराश करेगी और नष्ट कर देगी। अधिकाँश आलोचना उन लोगों से आती है जो वैसे भी आलोचना करने के योग्य नहीं हैं। मैं ने सदा अपने आप से यह पूछना सहायक पाया है। "इस आलोचना के लिए वह व्यक्ति कितना योग्य है ?" यदि मुझे पता चले कि वह व्यक्ति जो आलोचना कर रहा है उसे उन चीजों के विषय में बहुत कम जानकारी या अनुभव है तब मुझे लगता है मुझे उसके न्याय पर ध्यान नहीं देना चाहिए। परन्तु, यदि कोई जो अनुभवी और जानकार है, जिसने प्रमाणित किया है कि जो वह कह रहा है उसे जानता है, तब मैं सुनूँगा और जो कहा जा रहा है उसका मूल्याँकन करूँगा।

7. परीक्षा को जीतना

बाइबल के महापुरुष प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर के सेवक अकसर परीक्षा के लक्ष्य होते हैं। किसी को भी सोचना नहीं है वह बच सकता है। पवित्रशास्त्र करता है, "इसलिए जो समझता है, मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।" (1 कुरिं. 10:12)। मसीही अगुवे शत्रु के विशेष लक्ष्य होते हैं। यदि शैतान चरवाहे को मार सके तब भेड़ें बिखर जाएँगी। यदि वह एक अगुवे को गिरा सके, तब लोगों का मनोबल टूट सकता है। इसीलिए हर अगुवे को सावधान और चौकन्ने रहना है क्योंकि, "तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।" (1 पतरस 5:8)।

8. अपनी सम्पूर्णता बनाए रखना

सम्पूर्णता नैतिक खरापन, ईमानदारी और चरित्र की उत्तमता है। इसका सम्बंध आपकी एकसमान विश्वसनीयता और नेकनामी से है। सम्पूर्णता शब्द का मूल, पूर्ण होना और खरापन है। चरित्र के विषय में, इसमें ईमानदारी, सद्गुण, नैतिक खरापन और सिद्धान्त सम्मिलित हैं। यह कई तरीकों से मसीही अगुवे के लिए अनिवार्य है। पहला, यह आवश्यक है कि अगुवा परमेश्वर के सामने अपनी सम्पूर्णता बनाए रखे, अर्थात्, कि वह परमेश्वर के साथ पूर्ण रूप से सच्चा है। दूसरा, वह लोगों और परमेश्वर के काम के लिए सम्पूर्णता का व्यक्ति हो। लोगों को जानना है कि वे उनके अगुवे पर भरोसा कर सकते हैं। परन्तु इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि अगुवा अपनी खातिर सम्पूर्णता बनाए रखे क्योंकि यदि अगुवे में सच्ची सम्पूर्णता की कमी है तब वह अपने साथ जी नहीं सकेगा।

9. अगुवे के परिवार पर दबाव

अगुआई के दबाव केवल अगुवे पर ही नहीं आते हैं, वे उसकी पत्नी और बच्चों को भी प्रभावित करते हैं। इसलिए उन्हें भी उन निरन्तर दबावों से कुछ छूट मिलनी चाहिए जो अगुआई लाती है। पास्टर के बच्चों को अकसर अनावश्यक दबावों को झेलना पड़ता है क्योंकि लोग उनसे पास्टर के बच्चे होने के कारण अधिक अपेक्षा करते हैं। उन्हें इससे निपटने के लिए सहायता और प्रोत्साहन की जरूरत पड़ती है। उन्हें उनके काम से कुछ मुआवजा और लाभ भी मिलने चाहिए।

यह आवश्यक है कि अगुवा इस मामले के महत्त्व को समझे और इसकी चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ सकारात्मक कदम उठाए। उसे उसके परिवार के काम को उनके काम की आशीषों, और जिम्मेवारियों से भी बराबर करने का प्रयत्न करना है। सारी जिम्मेवारी उठाने के साथ-साथ, उन्हें उनके स्थान के लाभों के विषय में पता होना चाहिए, और उनका आनन्द भी लेना चाहिए।

अध्याय छः -- अगुआई के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू

एक प्रभावशाली अगुवे को आवश्यकता है:

1. दिशा की एक स्पष्ट भावना

"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं।" (नीतिवचन 29:18)। एक प्रभावशाली अगुवा होने के लिए, आपको स्पष्ट पता होना चाहिए कि आप जीवन में कहाँ जा रहे हो। यदि आप जानते नहीं आप कहाँ जा रहे हो, तो आप दूसरों की अगुआई कैसे करोगे ?

<u>इसके लिए एक "दर्शन" चाहिए, जिसे होना चाहिए:</u>

अः परमेश्वर द्वारा दिया गया

प्रभावशाली मसीही अगुआई में अपना दर्शन पूरा नहीं किया जाता है, परन्तु वह दर्शन जिसे परमेश्वर देता है। विचार एक दर्शन बनाने का नहीं है, परन्तु उस दर्शन को पाने और पूरा करने का है जो परमेश्वर के हृदय में से निकलता है।

आ: आत्मिक

दर्शन आत्मा देता है। इसलिए यह एक आत्मिक दर्शन है। मैं उस अलौकिक दर्शन की बात नहीं कर रहा हूँ जिसे बाइबल में अकसर अनुभव किया जाता था। आत्मिक दर्शन का अर्थ है: मन में या आत्मा में एक "चित्र" जिसे पवित्र आत्मा आपकी आत्मा में डालता है। जो आनेवाला है उसका एक आत्मिक चित्र या जानकारी। हमारा काम दर्शन का अर्थ पता लगाना और उसे पूरा करना है। "परमेश्वर की इच्छा जैसे स्वर्ग में होती है वैसे ही पृथ्वी पर" पूरी होते देखना।

इ: निश्चित

हालाँकि दर्शन आरम्भ में आत्मिक होता है, परन्तु यह अस्पष्ट या अनिर्णायक नहीं है। जैसे हम प्रार्थना और मनन में परमेश्वर की बाट जोहते हैं, तब वह उस सब का ब्योरा हमें देगा जिसे वह चाहता है हम उसके लिए करें। इसका एक सुन्दर उदाहरण मूसा और तम्बू है। जब परमेश्वर मूसा से उस तम्बू की बात करने लगा जिसे वह चाहता था मूसा बनाए, उस चीज के एक दर्शन ने मूसा के हृदय को पकड़ लिया। वह चालीस दिन और चालीस रात परमेश्वर के पर्वत पर रहा था जिस समय परमेश्वर ने तम्बू और उसके साजो-सामान और उनके कार्यो का हर ब्योरा उस पर प्रकट किया (निर्गमन 24:18 - 40:36)।

एक बार जब हमें परमेश्वर से कोई विचार मिले तब हमें उसे प्रार्थना में परमेश्वर के सामने रखना चाहिए। जितनी देर तक हम उसकी बाट जोहेंगे, और प्रार्थनापूर्वक दर्शन पर मनन करेंगे, उतना अधिक स्पष्ट और निश्चित वह बनता जाएगा। जैसे हम परमेश्वर की उपस्थिति में ध्यानपूर्वक बैठे रहेंगे वह हमारे लिए सब चीजों को प्रकट करेगा, जैसे उसने मूसा के लिए पर्वत पर किया था। हम अगुवों के लिए यह अनिवार्य है कि हम परमेश्वर की आवाज को एक स्पष्ट तरीके से सुनना और पता लगाना सीखें। जो परमेश्वर चाहता है हम करें उसका कुछ अस्पष्ट और अनिर्णायक विचार होना पर्याप्त नहीं है। हमें अपनी आत्मा में स्पष्ट जान लेने की आवश्यकता है ताकि हम स्पष्ट और विस्तार से जान सकें जो उसने हमारे करने के लिए योजना बनाई है।

आरम्भ में मूसा को केवल एक सामान्य विचार था कि परमेश्वर क्या चाहता है वह करे। उसे लगा था कि परमेश्वर उसे इस्राएल के लोगों का एक छुड़ानेवाला बनने के लिए तैयार कर रहा है, कि वह उन्हें मिस्री बन्दीकर्त्ताओं के कड़े परिश्रम और अन्याय से छुड़ाए जहाँ वे दुख उठा रहे थे। परिणामस्वरूप मूसा इसे अपनी शक्ति में करने लगा परन्तु जो वह कर सका केवल एक मिस्री का कत्ल था और फिर उसे एक भगोड़े के समान वहाँ से भागना पड़ा था। परन्तु यह "रेगिस्तान के पिछवाड़े" में ही था, जहाँ मूसा भाग कर शरण ली थी, कि मूसा ने परमेश्वर को एक गहरे आयाम में पाया और यह भी अधिक स्पष्टता के साथ समझ गया कि परमेश्वर क्या चाहता था वह करे। मूसा परमेश्वर के साथ एक अधिक घनिष्ठ सम्बंध बनाने लगा, जिसमें उसने और परमेश्वर ने आपस में बातचीत के साधनों को स्थापित किया जिसके द्वारा परमेश्वर अपना हृदय और सब कुछ जो उसने मूसा के लिए योजना बनाई थी बता सका था।

परमेश्वर अकसर हमें कठिनाई में पड़ने और रेगिस्तान के समान परीक्षाओं को अनुभव करने देता है ताकि वह हमें उस तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित कर सके। यह अकसर परमसंकट के स्थान पर होता है - जब हम अपनी रस्सी के अन्त तक पहुँचे होते हैं, कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों में प्रवेश करता है क्योंकि हम उसे खोजने लगते हैं और एक उत्सुक हृदय से उसे पुकारने लगते हैं। जब हम अपने आप को एक दुखद परिस्थिति में पाते हैं जिसके लिए हमारे पास कोई समाधान नहीं होता, तब परमेश्वर हमारा ध्यान पाता है। यह जानना दिलचस्प बात है कि परमेश्वर के कितने सेवकों ने जब वे परीक्षा और परमसंकट अनुभव कर रहे थे, उनके जीवन के बुलावे को पाया और उनकी सेवा में प्रवेश किया था। यदि परमेश्वर ने आपके जीवन को ऐसे एक स्थान में पहुँचने दिया है, तब कृपया निराश मत हो जाओ। परमेश्वर आपके रेगिस्तान के अनुभव में आपके साथ है। उसके पास आपको इस कठिन समय में से निकालने की योग्यता है। न केवल आप जीवित रहोगे, आप घनिष्ठ और उचित रूप से तैयार होकर निकलोगे ताकि उस उद्देश्य को पूरा कर सको जिसके लिए परमेश्वर ने आपको उसके राज्य में बुलाया है। परमेश्वर ने इसे पहले भी अनेक बार किया है और वह इसे दोबारा कर सकता है!

ई: मापने योग्य

जिन ब्योरों को परमेश्वर ने मूसा को दिया था उसमें निश्चित माप और वजन सम्मिलित थे। सारी परियोजना को ठीक-ठीक मापा, हिसाब लगाया और खर्चा जोड़ा जा सकता था। उसी प्रकार जो दर्शन परमेश्वर वृद्धि और विकास के विषय में देगा ऐसा होगा जिसे मापा जा सकेगा और इसके पूरे होने पर ध्यान रखा जा सकेगा। यह कभी-कभी कितना अनोखा लगता है कि परमेश्वर की योजनाएँ कितनी विस्तृत होती हैं, और उसे हर छोटी से छोटी चीज पूरा करते देखकर कितना आनन्द मिलता है।

उ: इसमें विश्वास का तत्त्व होना चाहिए। रोमियों 12:3

हर दर्शन जिसे परमेश्वर देता है उसमें विश्वास का तत्त्व बना होता है - "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है" (इब्रानियों 11:6)। तो उस दर्शन के पूरा होने में आपको विश्वास इस्तेमाल करने की जरूरत पड़ेगी, और जैसे हम इसके पूरा होने की ओर काम करेंगे, परमेश्वर आपके विश्वास को परखेगा और बढ़ाएगा।

विश्वास का तत्त्व माँग करेगा कि परियोजना के भाग के पूरा होने में विश्वास इस्तेमाल किया जाए। इसका अर्थ यह भी होगा कि यदि काम में विश्वास इस्तेमाल नहीं किया जाता है तब असफल होने की सम्भावना भी होगी। परमेश्वर के काम को अपनी शक्ति में करना न केवल कठिन है - असम्भव भी है!

इस प्रकार आपको अपने दर्शन पर विचार करने की आवश्यकता है:

प्रार्थनापूर्वक

कुछ भी जो हम परमेश्वर के लिए करते हैं प्रार्थना में आरम्भ होता है और इसके विकास औप पूरा होने के लिए प्रार्थना पर निर्भर होता है। यदि आप चाहते हो परमेश्वर आपके हृदय में बातें करे और उसकी इच्छा आप पर प्रकट करे तब प्रार्थना में उसे खोजने का निश्चय करो। याद रहे कि प्रार्थना केवल यही नहीं कि आप परमेश्वर से बात करें, प्रार्थना का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है जब परमेश्वर आप से बात करता है। बाइबल का हर चरित्र जिसने परमेश्वर के लिए कुछ काम किया है प्रार्थना और आत्मिक सहभागिता के स्थान पर ही अपना आदेश पाया था। हर अगुवा जो परमेश्वर के लिए कुछ काम करता है एक प्रार्थना का व्यक्ति अवश्य होगा।

धैर्य के साथ

प्रभु का बोझ एक व्यक्ति को उसके फालतू समय में नहीं दिया जाता है। यह तब प्रकट किया जाता है है जब वे धैर्य के साथ उसकी बाट जोहते हैं। मूसा ने सिनै पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रातें बिताई थीं। उस सारे समय के दौरान परमेश्वर ने मूसा को जो काम उसे करना था उसकी हर छोटी से छोटी बात धैर्य के साथ और विस्तार से बताई थी।

सकारात्मक रूप से

जैसे हम उसकी इच्छा का पता लगाने के लिए परमेश्वर की बाट जोहते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम ऐसा हृदय और मन के एक सकारात्मक रवैये में करें। परमेश्वर अपनी इच्छा विश्वास के लोगों को ही बता सकता है। उसकी बातें स्वाभाविक मनुष्य के मन के परे होती हैं और इसे पाने के लिए एक सकारात्मक विश्वास की आवश्यकता होती है।
हम परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रतिज्ञा के प्रदेश में तब ही प्रवेश कर सकते हैं जब हम उन चीजों की ओर जिन्हें वह प्रकट करता है एक सकारात्मक रवैया दिखाएँ। एक नकारात्मक या संदेही रवैया रखते हुए उसकी इच्छा का पता लगाने में परमेश्वर का और अपना समय बर्बाद मत करो।

भविष्यद्वाणी के द्वारा

एक सकारात्मक रवैया होने के अलावा आपको एक भविष्यसूचक दृष्टिकोण भी बनाने की आवश्यकता है। यह विश्वास की आँखों के द्वारा परमेश्वर के भविष्य में देखना है और चीजों के पूरा होने को इससे पहले वे स्वाभाविक में पूरी हों विश्वास से देखना है। सब कुछ जो परमेश्वर चाहता है आप करें और जिन योजनाओं को उसने आपके लिए बना रखा है उनकी भविष्यसूचक तस्वीर आप अपनी आत्मा में पा सकते हो।

परमेश्वर द्वारा दिए दर्शन के दूसरे पहलू:

अ: इसे देखो -- अपनी आत्मा की आँखों से इसे देखो।

आ: इसका मूल्याँकन करो -- इसका मूल्याँकन करो और इसे पूरी तरह समझ लो।

इ: इसे लिख लो -- हर चीज को लिख लो।

ई: इसे व्यक्त करो -- इसे बोलो। स्वीकार करो। "मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले।" (भजन 19:14)।

2. पूरा होने की एक निश्चित इच्छा

एक दर्शन के जन्म से लेकर उसके पूरा होने के बीच कई परीक्षाएँ और चुनौतियाँ आती हैं।
आपको जरूरत पड़ेगी:

अ: निर्णायकता

एक पक्का फैला करो और उस पर बने रहो। "ऐसा मनुष्य कुछ न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा, वह व्यक्ति दुचित्ता है और अपनी सारी बातों में चंचल है।" (याकूब 1:7-8)

आ: समर्पण

दर्शन के पूरा होने के लिए अपने आप को सम्पूर्ण हृदय से समर्पित करो। इसका अर्थ है अर्पित होना और लक्ष्य या व्यवसाय की ओर एकनिष्ठ वफादारी होना। किसी चीज को समर्पित करने का बाइबल में एक बड़ा महत्त्व है। एक बार जब कोई चीज परमेश्वर को समर्पित की जाती है, तो वह उसकी विशेष सम्पत्ति बन जाती है। इसे "प्रभु के लिए पवित्र" कहा जाता है, और कभी भी दोबारा पाया नहीं जा सकता है। इस प्रकार के समपर्ण की, अपनी ओर और उसके राज्य के काम की ओर, परमेश्वर माँग करता है।

इ. निश्चय

निश्चय का अर्थ है: उद्देश्य के पूर्ण संकल्प के साथ कार्य करना। यही तत्त्व है जो फैसले और समर्पण दोनों को प्रभावशाली तरीके से काम में लाता है, क्योंकि इसका अर्थ है:

- एक निश्चित फैसला करना
- फैसले के पूरा होने के लिए अपने आप को समर्पित करना
- चाहे कुछ भी हो, उस संकल्प को दृढ़ उद्देश्य के साथ पूरा करना

3. स्वउत्प्रेरित व्यक्ति

एक आत्म प्रवर्तक -- पहल करने का फैसला करना। एक अत्यन्त प्रेरित व्यक्ति। अगुवे अकसर "ढेर के ऊपर" होते हैं जिनके ऊपर उन्हें प्रेरित रखने के लिए कोई "बॉस" नहीं होता। इसलिए उन्हें पूरी शक्ति के साथ स्वप्रेरित होना जरूरी है जो उनके अपने उत्साह और शक्ति के स्तरों को बढ़ाए रखते हैं। उन्हें उनके स्तरों को निरन्तर बनाए और बढ़ाए रखने योग्य होना चाहिए।

4. आत्मानुशासित

मत्ती 16:24, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, (मेरा चेला बने) तो अपने आप का इन्कार (अनुशासन) करे।" आत्मानुशासन किसी भी अगुवे के लिए अनिवार्य है। उसकी अपनी व्यक्तिगत सम्पूर्णता को बनाए रखना उसके अनुयायियों के निरन्तर हौसले के लिए अनिवार्य है। क्योंकि अगुआई के उसके स्थान के कारण उसे अपने कार्यक्रम और समर्पण के स्तर को निर्धारित करने की स्वतन्त्रता मिलती है, तो उसे परमेश्वर, उसके बुलावे और उसके साथियों की ओर सच्चा रहने के लिए अपने आप से सच्चा रहना चाहिए। क्योंकि वह दल का अगुवा है और उसके सहयोगियों के अनुशासन के लिए जिम्मेवार है, उसे अपने जीवन के अनुशासन को निश्चित करना चाहिए।

उसे अनुसासित करना चाहिए:

- **उसका आत्मिक जीवन, भक्ति, आदि**

अनुशासित करने के लिए सब क्षेत्रों में से यह सबसे महत्त्वपूर्ण और नाजुक भी है, क्योंकि यदि व्यक्ति यहाँ असफल रहा हो बाकी के सब क्षेत्रों पर असर पड़ेगा। उसके आत्मिक जीवन और सम्बंध को अनुशासन के साथ बनाए रखने में बाकी सब कुछ अपना उचित स्तर पाएगा। यदि अगुवा नियमित आत्मिक नवीनीकरण और अपने आत्मिक साधनों को भरने के लिए समय और अवसर देने में असफल रहता है तब सम्भवत: उसमें उसके व्यक्तिगत जीवन के बाकी के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को उचित रूप से अनुसासित करने की शक्ति नहीं होगी।

- **उसका समय**

एक अगुवा अकसर अपने कार्यक्रम के अधिकार में होता है। वह अपने काम करने की सूची और अपने समय के साथ क्या करना है चुन सकता है। इसलिए यह अनिवार्य है कि वह इस विशेषाधिकार पर सच्चाई के साथ ध्यान दे कि कहीं वह समय व्यर्थ न गँवाए या दुरूपयोग करे। जिस पर प्रकार उसके सारे सहयोगी उसकी ओर उत्तरदायी हैं वह भी अपने आप को इस विषय में किसी की ओर उत्तरदायी बनाए।

- **उसकी यौन सम्बंधी प्रेरणाएँ और शक्तियाँ**

मसीही अगुवों के साथ-साथ, हर व्यक्ति में कुछ गुप्त यौन सम्बंधी प्रेरणाएँ और साधन होते हैं जिन्हें किसी न किसी तरीके से पूरा किया जाना चाहिए। इसे पूरा करने का पहला, और सबसे प्रत्यक्ष तरीका व्यक्ति के विवाह के संदर्भ और सम्बंध में है। आत्मिक

अगुवों के सही विवाहित सम्बंध होने चाहिए और उस सम्बंध में उन्हें पर्याप्त यौन पूर्ति और सुख मिलना चाहिए। परन्तु, ये शक्तियाँ सबसे परिपूर्ण और सन्तुष्ट विवाहिक सम्बंध में भी पूरी तरह समा नहीं सकेंगी। उन्हें दूसरी नचनात्मक और शक्ति की माँग करनेवाली क्रियाओं में लगाया जाना चाहिए और दूसरों के भले के लिए पूरी तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ये प्रेरणाएँ शक्ति और ताकत के स्रोत हैं जिनका उद्देश्य व्यक्ति की रचनात्मक योग्यताओं को बढ़ाना है। उन्हें जीवन और सेवा में पूरी तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए, नहीं तो वे कुमंत्रित और अनुचित तरीकों से निर्मुक्त होना चाहेंगी।

- **उसके व्यक्तिगत सम्बंध**

एक अगुवे को उसके साथियों के चुनाव में और जिन सम्बंधों को वह स्थापित करना चाहता है उनमें सदा बुद्धि और विवेक इस्तेमाल करना चाहिए। उसके सहयोगियों और साथी मजदूरों के अलावा, लगना नहीं चाहिए कि उसका एक भीतरी मण्डल है। न ही लगना चाहिए कि वह अपक्षपात के अलावा कुछ और भी है। अगुवों को प्रतिजाति के व्यक्ति के साथ किसी भीू प्रकार के सम्बंध के विषय में बहुत मजबूत विवेक इस्तेमाल करना चाहिए। उनके लिए आपे से बाहर हो जाना और अनर्थकारी परिणाम लाना बहुत सरल होता है।

5. संगत

एक संगत व्यक्ति वह है जोः स्थिर, दृढ़, उसी सिद्धान्तों की ओर विश्वासयोग्य है। भरोसेमंद, संगत, सदा एकसा, सच्चा। संगती और विश्वसनीयता चरित्र के पहलू हैं, परन्तु मसीही अगुवों के रूप में हमें मानवीय विशेषताओं से कहीं अधिक की आवश्यकता है। हमें आवश्यकता है कि परमेश्वर, जिसके चरित्र के साथ ये विशेषताएँ अनिवार्य हैं, उन्हें हमारी आत्माओं में भी जोड़ दे।

6. अच्छा विवेक

विवेक हम में वह शक्ति है जो हमारे विचारों, शब्दों और कार्यो के नैतिक गुणों को प्रभावित करता है। कोई भी मसीही उसके पूर्ण सम्भवना तक कार्य नहीं कर सकता है जबकि उसका विवेक अशान्त है। एक नाराज़ विवेक को रखते हुए परमेश्वर के लिए काम करने का प्रयत्न करना, एक कार के समान है जिसका हाथ वाला ब्रेक लगा हुआ है। यूहन्ना कहता है, "हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाब होता है; और जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और जो उसे भाता है उसे करते हैं।" (1 यूहन्ना 3:21-22)। "मैं ने आज तक परमेश्वर के लिए बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।" (प्रेरितों 23:1)। "मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।" (प्रेरितों 24:16)। "शुद्ध मन और अच्छे विवेक।" (1 तीमु. 1:5)।

एक अशान्त विवेक परमेश्वर की ओर हमारे विश्वास को चुरा लेता है। यह हमारी विश्वास की शक्ति को अशक्त करता है। (1 यूहन्ना 3:21)। यह पाने की हमारी क्षमता को रोकता है। (हम भले के बदले, बुरे की अपेक्षा करते हैं)।

7. दीन और शिक्षणीय आत्मा

सब को बहुत कुछ सीखना है, परन्तु इसे पहचानने और स्वीकार करने में सच्ची दीनता लगती है। यीशु आप ही एक शिक्षणीय आत्मा की सुन्दरता का एक सर्वोच्च उदाहरण हैं। उसने अपने आपको दीन और नम्र घोषित किया था। (मत्ती 11:29)। और बाइबल बताती है कि उसने दुख उठा उठाकर (अनुभवों) सीखा था। (इब्रानियों 5:8)।

8. ऊपर से आनेवाली बुद्धि

सफलता का रहस्य क्या है? -- सही फैसले करने की बुद्धि होना! याकूब हमें बताता है कि, "यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।" (याकूब 1:5-8; 3-17)। मानवीय बुद्धि अच्छी है और एक अगुवे के लिए निश्चित रूप से एक जबरदस्त गुण है परन्तु आत्मिक अगुआई की चुनौतियों के लिए अपर्याप्त है। हमें असल में मानवीय और ईश्वरीय बुद्धि के मिश्रण की आवश्यकता है, सदा याद रखना है कि वे दोनों कभी-कभी विरोध में दिखेंगे, उस समय ईश्वरीय बुद्धि को सदा श्रेष्ठता मिलनी चाहिए। राजा सुलेमान एक बुद्धिमान अगुवे का एक उत्तम उदाहरण है जिसने ईश्वरीय बुद्धि पाने के लिए अपनी स्वाभाविक बुद्धि को इस्तेमाल किया जिससे उसकी अगुआई की योग्यताएँ बहुत बढ़ गई थीं। (2 इतिहास 1:7-12)।

9. एक सन्तुलित जीवन-शैली

"यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" (लूका 2:52)। उसका विकास चार दिशाओं में होता गया: मानसिक, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से -- जो स्वस्थ विकास है। अपने जीवन और क्रियाओं को अच्छा सन्तुलित रखने का प्रयत्न करो। उन्नति करनेवाली क्रियाओं में लगो जो आपके जीवन के हर भाग का विकास और मजबूत करेंगी। शारीरिक रूप से बढ़ने और विकसित होने के अतिरिक्त, यीशु बुद्धि में भी बढ़ता गया। यह मानसिक या बौद्धिक विकास है। हम इसे उत्तम पुस्तकों को पढ़कर और अध्ययन करके और सेमिनारों और लेक्टरों में भाग लेकर पा सकते हैं जहाँ हम कई चीजों का अपना अपना ज्ञान और समझ बढ़ा सकते हैं। हमारे मनों को उत्तेजित होने और चुनौती पाने की आवश्यकता है। हम अपने मनों के क्षितिजों को सकारात्मक तरीके से बढ़ाकर बहुत लाभ पा सकते हैं।

यीशु सामाजिक रूप से भी बढ़ता गया था। "वह मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" इसमें लोगों से सम्बंध कैसे बनाना है सीखना शामिल है। दुर्भाग्यवश, कई प्रचारक सोचते हैं कि इस कला का विकास अनावश्यक है। वे सामाजिक शिष्टाचारों और उन चीजों के पालन की उपेक्षा करते हैं जो सामाजिक सम्बंधों और सम्पर्कों को बढ़ाते हैं। परन्तु यीशु प्रकट है इन क्षेत्रों में बढ़ता गया था और अपनी पृथ्वी की सेवा के अधिकाँश भाग में लोगों में अत्यन्त लोकप्रिय था।

निसंस्देह हमारे आत्मिक जीवन का विकास कहीं अधिक महत्त्व का है, परन्तु इतना महत्त्वपूर्ण नहीं कि दूसरे विकास अनावश्यक या सतही हैं।

मार्ग का मध्य भाग

मैं ने सदा विश्वास किया है कि "सत्य मार्ग के बीच में होता है" और सन्तुलित है। और यदि हम किसी भी छोर, दाहिनी या बाईं ओर जाते हैं, हम भ्रम में पड़ सकते हैं। कोई भी जो किसी छोर पर जाता है असंगति विकसित कर सकता है। यदि एक व्यक्ति बहुत संकीर्ण मन वाला और अति "आत्मिक", या अति "पवित्र" बन जाता है, वह अकसर असंगत हो जाता है।

एक महान शिक्षक ने लिखा, "यदि एक व्यक्ति कहता है: 'क्योंकि ईर्ष्या, कामुकता और सम्मान की इच्छा बुरे मार्ग हैं....मैं अपने आप को उनसे बिलकुल अलग कर लूँगा और दूसरी छोर पर चला जाऊँगा, यहाँ तक चला जाता है कि वह स्वादिष्ट भोजन से परहेज करके भोजन के सुख का आनन्द नहीं लेता, जहाँ वह एक पत्नी से विवाह करने से इन्कार करता है, या एक अच्छे घर में रहने या अच्छे कपड़े पहनने से इन्कार करता है परन्तु बदले में चीथड़ों में रहना चुनता है...यह भी एक बुरा मार्ग है।"

सबसे उत्तम और सीधा मार्ग जिस पर चलने के लिए एक व्यक्ति को अपने आप को प्रशिक्षण देना चाहिए मध्य मार्ग है (जहाँ वह हर व्यक्तित्व के गुण में सन्तुलन विकसित करता है)। और जो इस मध्य मार्ग पर चलता है एक बुद्धिमान व्यक्ति कहलाता है।

10. एक "लोगों का व्यक्ति" बनो

मैं जवान प्रचारकों को बताते थकता नहीं हूँ कि सेवा मूल रूप से दो चीजों के बारे में है: यह परमेश्वर के बारे में, और यह लोगों के बारे में है। परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध को बनाना अनिवार्य है, परन्तु मानवीय स्वभाव का अध्ययन करना और लोगों को पसन्द करना सीखना और उनके साथ मिलना-जुलना अत्यन्त आवश्यक है। यीशु मानवीय स्वभाव का एक महान विद्यार्थी था। बाइबल कहती है, "परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था; और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है।" (यूहन्ना 2:24-25)।

11. हास्य की एक अच्छी भावना विकसित करो

हास्य की एक भावना हमेशा एक आशीष है, परन्तु विशेषकर अगुवों के लिए है। लोगों की आपकी सेवा के दौरान कई गम्भीर और दुखद बातें हो सकती हैं और तनाव के भी कई साधन होते हैं। आपको जीवन के हास्यकर पहलू को देख सकने की राहत और विश्राम की आवश्यकता भी है।

हास्य की एक अच्छी भावना सम्बंधों को सुखी से काम करने में सहायता करती है। यह एक प्रचारक के लिए एक विशेष आशीष भी हो सकती है। प्रचार एक भारी विषय है जिसे कभी-कभी राहत की आवश्यकता होती है जो केवल एक हास्य की एक अच्छी भावना प्रदान कर सकती है। परन्तु, प्रचारक को यहाँ भी सावधानी बरतनी चाहिए। हास्य उचित और सदा अच्छी पसन्द का होना चाहिए। हमें उस हास्य से दूर रहना चाहिए जो दूसरों पर किया जाता है। जो एक के लिए हास्यकर है दूसरे के लिए बहुत दुखदायी हो सकता है। कभी-कभार अपने ऊपर हँसना विशेषकर सहायक होता है। यदि आप अपने आप को कभी-कभी हँसने नहीं दोगे, तो आप सम्भवतः रोओगे।

12. दार्शनिक बनो

इस शब्द का मूल अर्थ है, "बुद्धि का प्रेम।" परन्तु, इसका अर्थ यह भी है: "अलग किया हुआ, जिससे कि दबाव में शान्त रह सको।" यह दूसरा अर्थ है जिससे मैं इस समय विशेषकर सम्बद्ध हूँ। सेवा में जरूरी होता है कि हम कई लोगों की समस्याओं और चोटों में सम्मिलित हों। यदि हम अपने आप को, बहुत सारे लोगों के साथ और बहुत सारी समस्याओं के साथ, बहुत भावात्मक रूप से सम्मिलित होने दें, तो दबाव इतना हो सकता है कि हमारा शरीर इसे सम्भाल न सके। इसीलिए हमें कुछ प्रकार का भावात्मक अलगाव बनाए रखें। एक अच्छा डाक्टर इसके लाभ को जानता है। वह उसके मरीज के साथ अति भावात्मक जुड़ने या चिन्तित होने के खतरों को जानता है। उनके डाक्टर के रूप में प्रभावशाली कार्य करने के लिए, उसे कुछ अलगाव और दूसरी बनाए रखनी चाहिए। यह सेवा में भी कुछ सीमा तक सच है।

बहुत सारे लोगों की समस्याओं को अपने मन में रखने का भी एक असली खतरा है। बहुत सारे भार उठाने के दबाव और तनाव कभी-कभी एक व्यक्ति के लिए बहुत भारी हो सकते हैं। यह विशेषकर सच है जब आप में लोगों के लिए एक सच्चा हृदय है। उनके लिए बहुत गहराई से महसूस करने की प्रवृति होती है। निसंस्देह हम जानते हैं कि इन सब बोझों को प्रभु पर डाल देना चाहिए। परन्तु सब इसे उस प्रकार नहीं कर पाते हैं जैसा उन्हें करना चाहिए और परिणामस्वरूप वे भावात्मक बोझ के भार से अपने आप गिर जाते हैं। मुझे लगता है कि कुछ ऐसा ही पौलुस के मित्र इपफ्रुदीतुस के साथ हुआ था जो "बीमार तो हो गया था यहाँ तक कि मरने पर था.....क्योंकि वह मसीह के काम के लिए अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मृत्यु के निकट आ गया था ताकि जो घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई उसे पूरा करे।" (फिलि. 2:27, 30)।

यह एक बहुत असली और डरावना व्यावसायिक जोखिम है जिसे हर कीमत पर दूर रखा जाना चाहिए। अतिकाम और बहुत सारा दबाव और तनाव यह स्थिति ला सकते हैं। हर अगुवे को इस खतरे की जानकारी होनी चाहिए और इसका शिकार बनने से बचने की हर सावधानी बरतनी चाहिए। मैं ने इस समया को पहचानने और इलाज के लिए एक अध्याय रख छोड़ा है।

13. प्रभावशाली अगुवे अच्छे संचारक होने चाहिए

प्रभावशाली अगुआई का एक सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू अच्छा संचार है और हर अगुवे को मानवीय संचार की निपुणताओं के हर सम्भव आयाम को विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। इन में से सबसे आगे मौखिक संचार है। बोले गए शब्द के द्वारा जानकारी दे पाना, स्पष्ट, संक्षिप्त और एक आकर्षक और रुचिकर तरीके से। अगुवे को शब्दों के प्रस्तुतिकरण के द्वारा लोगों के ध्यान को जीतने और अपने पास रखने की निपुणता को विकसित करना चाहिए। एक अतिरिक्त निपुणता जिसे विकसित किया जा सकता है लिखने की है। एक साप्ताह्कि सूचना-पत्र लोगों को कार्यक्रमों के पहलुओं और परिणामों के विषय में सूचित रखने का एक उत्तम तरीका है।

अ: अगुआई के बीच स्पष्ट संचार

जबकि दर्शन, इसकी नीतियाँ और योजनाएँ, अभी भी भ्रूण अवस्था में हैं, अगुआई के दल को एक प्रस्तावित कार्यक्रम के हर सम्भव पहलू पर प्रार्थनापूर्वक और सावधानी के साथ विचार करना चाहिए। उन्हें इसके विषय में प्रार्थना करनी, इसके विषय में बातें करनी, विचार-विमर्श और इसका पूरी तरह मूल्याँकन करना चाहिए। यदि इसके विषय में कोई भ्रम या संदेह हो, तो उनका पता लगाने का यही समय है। सारे प्रस्ताव को पूरी तरह व्यक्त किया जाना और बारीकी से विचार-विमर्श किया जाना चाहिए ताकि हर सम्भव संयोग पर विचार किया जा सके।

इसी अवधि के दौरान अगुआई दर्शन के विषय में इधर या उधर निश्चित हो सकती है। वे या तो उत्तेजित प्रेरणा से प्रेरित हो सकते हैं या उनमें इसकी वैधता और व्यवहार्यता के विषय में गम्भीर संदेह हो सकते हैं।

अगुआई के दल को दर्शन को बड़े विस्तार से बताना चाहिए। उन्हें:

- मिलकर प्रार्थना करनी चाहिए।
- फीड-बैक माँगना, और स्वीकार करना चाहिए, और इकट्ठे मूल्याँकन करना चाहिए।
- इकट्ठे योजना बनानी चाहिए।
- स्पष्ट पार्श्वचित्र निर्धारित करने चाहिए।
- पर्याप्त अधिकार देने चाहिए।
- नियमित रिपोर्ट लेनी चाहिए।
- नियमित इकट्ठे सब अगुवों को मिलना चाहिए।
- अकेले-अकेले अगुवों से निरन्तर मिलना चाहिए।

आः लोगों को एक स्पष्ट दर्शन बताया जाना चाहिए

एक निश्चित काम को प्रभावशाली तरीके से पूरा करने के लिए, जो लोग सम्मिलित हैं उनको सब कुछ जिसका सामना करना और जिसकी जरूरत है की पूरी समझ होनी चाहिए। केवल अगुवों को ही आगे का मार्ग पता हो पर्याप्त नहीं है। सब को जो इसके पूरा होने में भाग लेने वाले हैं एक स्पष्ट और पूरी समझ होनी चाहिए। यह एक अगुवे के काम का हिस्सा है कि वह काम को स्पष्ट और विस्तृत रूप से बताए। प्रभु ने हबक्कुक को बताया, "दर्शन की बातें लिख दे; वरन् पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएँ।" (हब. *2:2*)।

एक कलीसिया के लिए एक कार्यक्रम या दर्शन को पूरी तरह समझने के लिए, उस दर्शन को स्पष्ट, लगातार और विस्तृत रूप से बताया जाना चाहिए। उन्हें इसे हर परिदृश्य से बारम्बार सुनना चाहिए। उन्हें इसे सुनना और देखना चाहिए। इसे उन्हें बहुत विभिन्न तरीकों से बताया जाना चाहिए। उन्हें हर अवसर पर बताया, प्रेरित किया और उत्तेजित किया जाना चाहिए, जब तक दर्शन उनके जीवनों का अंग नहीं बन जाता। ऐसा करने के लिए अगुआई को प्रार्थनापूर्वक और पूरी तरह अपने आप को दर्शन के हर पहलू से इतना परिचित कर लेना चाहिए कि इसे बताना उनके लिए दूसरा स्वभाव बन जाए। उन्हें स्पष्ट रूप से बताने योग्य होना चाहिए किः

- परमेश्वर ने आपको क्या बताया है ? - प्रेरणा
- कलीसिया किस दिशा में जा रही है ? - दिशा
- हम वहाँ कैसे पहुँचने वाले हैं ? - प्राप्ति के लिए लक्ष्य
- क्या शिक्षा और प्रशिक्षण उपलब्ध हैं ?

इः परस्पर संचार पर अधिकार प्राप्त कर लो

अगुवे को दल के हर सदस्य के साथ अकेले और दल के संदर्भ में बातचीत करनी चाहिए। यह निश्चित करने के लिए है कि दल का हर सदस्य सच्चे हृदय से काम की ओर समर्पित है। यदि दर्शन की बात सामूहिक रूप से ही की जाती है, तब ऐसे सदस्य हो सकते हैं जिनके मन में संदेह या प्रतिबन्ध हैं जिन्हें दल की सभाओं में सबके सामने बोलने का उनमें साहस नहीं है। इसलिए हर सदस्य के पास अकेले में जाया जाना और बात की जानी चाहिए ताकि जो वे दर्शन के विषय में सामान्य रूप से, और उनके अपने काम के विषय में निश्चित रूप से महसूस करते हैं बोलने का उन्हें पर्याप्त अवसर मिल सके। अगुवे को हर सदस्य के पास जाना चाहिएः

- उनकी अगुआई की निपुणताओं में सुधार लाने के लिए,
- उनकी प्रगति या अन्यथा का मूल्याँकन करने के लिए,
- अपने परामर्शदाता की निपुणताओं को इस्तेमाल करने के लिए,
- निश्चित करने के लिए कि आपका तरीका गैर-धमकी-भरा है, और
- कभी भी तब सामना मत करो जब आप भावात्मक रूप से अशान्त हो।

14. अच्छे अगुवों को अच्छे सुननेवाले होना चाहिए

यह सत्य है कि अगुवों को योग्य संचारक होना चाहिए, परन्तु उन्हें अच्छे सुननेवाले भी होना चाहिए। अगुवे के कान परमेश्वर के लिए खुले होने चाहिए, और उसके साथियों और दल के सदस्यों की ओर भी खुले होंने चाहिए। एक स्थान जहाँ यह होना चाहिए, हैः कर्मचारी सभाओं में।

अः क्या सबको खुल कर बोलने का अवसर है ?
आः क्या आपकी अगुआई एक सच्ची दल की आत्मा बनने देती है ?
इः क्या परस्पर सम्बंध के द्वारा दल में सम्बंध सुधरते हैं ?
ईः क्या आप दल के सोचने के तरीकों का पता लगा सकते और सूचित कर सकते हो ?
उः क्या किए गए फैसले सामूहिक हैं ?

15. अच्छे अगुवों को प्रभावशाली वक्ता होना है

प्रभावशाली अगुवों को संचार के हर क्षेत्र में योग्य संचारक होना चाहिए, परन्तु उन्हें विशेषकर मौखिक निपुणताओं में निपुण होना चाहिए। बाइबल में यह प्रयत्क्ष है कि अधिकाँश अगुवे मौखिक संचार की निपुणताओं में प्रभावशाली थे।

प्रभावशाली बोली एक सबसे शक्तिशाली उपलब्ध प्रेरक है। शक्तिशाली वक्ताओं ने उनके इतिहास के संकटकालीन समय में देशों को हिलाया है।

मसीही अगुआई के क्षेत्र में बोलने की शक्ति प्रचार और सिखाने दोनों के लिए स्पष्ट रूप से महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, यह लोगों को प्रेरित करने और उत्तेजित करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है जिससे वे उनकी कलीसियाओं के दर्शन को पूरा कर सकें।

16. अच्छे अगुवे सब स्तरों पर एक प्रभावशाली नेटवर्क विकसित करते और बनाए रखते हैं

प्रभावशाली अगुवे को कभी भी अकेले काम नहीं करना चाहिए। उसकी सफलता का रहस्य उसके दल और अनुयायियों का मिल-जुलकर काम करना है। इसे पाने के लिए आवश्यक है कि वह अपने संचार के साधनों को खुले और प्रभावशाली रखे।

कर्मचारी स्तर पर। नियमित अर्थपूर्ण सभाएँ जहाँ रिपोर्टें बनाईं, विचार कीं और विश्लेषण की जाती हैं। हर सौंपा गया अगुवा अपने विशेष विभाग की गतिविधियों की रिपोर्ट दे सकता है। इस अगुआई के स्तर पर योजनाएँ और भावी कार्यक्रम प्रार्थनापूर्वक बनाए जा सकते हैं।

मण्डली के स्तर पर। यह महत्त्वपूर्ण है कि कलीसिया के सदस्यों को कार्यक्रम की हर अवस्था की जानकारी दी जाती रहे जिससे वे प्रार्थना द्वारा सहयोग देते रहें। विभिन्न क्रियाओं के समाचार सूचनाओं द्वारा दिए जा सकते हैं और यदि सम्भव हो तो किसी प्रकार के सूचना-पत्र नियमित सूचित किए जा सकते हैं।

छोटे (सेल) समूह के स्तर पर। भविष्य की कलीसिया में, सेल समूह या ग्रह कलीसियाएँ पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाएँगे। सेल समूह कलीसिया भविष्य की कलीसिया है। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि इन समूहों के अगुवों और सदस्यों को कलीसिया की योजनाओं और गतिविधियों की सूचना नियमित दी जाती रहे। उन्हें दर्शन का एक अनिवार्य अंग होना है।

17. अच्छे अगुवों को सकारात्मक गति उत्पन्न करनी चाहिए प्रभावशाली अगुवे अगुआई की गति व्यक्त करते हैं

प्रभावशाली अगुवे एक विशेष करिश्मा या प्रभाव रखते और उत्पन्न करते हैं जो लोगों को आकर्षित और प्रभावित दोनों करता है। यह कभी-कभी एक अकथनीय तत्त्व है परन्तु कुछ ऐसा है जिसे दूसरे भाँपते और बिना विचारे पहचानते हैं। एक अदृश्य गुण जो दूसरों को चुम्बक के समान खींचता है।

यह बिलकुल प्रत्यक्ष है कि अधिकाँश बाइबल के लोगों में ऐसी एक उपस्थिति थी। यीशु ने निश्चित रूप से इसे दिखाया था। जहाँ कहीं वे जाते, भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो लेती थी। वे उसके शब्दों से मोहित होते थे, और उसके बोले गए हर शब्द को लपक लेते थे। उसकी अगुआई सब कुछ जो वह कहता था और सब कुछ जो वह करता था प्रकट करती थी। यूहन्ना बपतिस्मादाता की भी एक वैसी ही गति थी। असल में, कई लोग उसे यीशु के समान समझते थे। (मत्ती 16:14)। पौलुस ने भी इस असामान्य अगुआई की गति को प्रकट किया था।

जिस तरीके से यह गुण व्यक्त किया जाता है हर व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकता है। परन्तु, जिस रूप में भी यह प्रकट होता है, यह अनिवार्य है कि एक अगुवे में यह गुण हो। यह गुण उसे लोगों से ऊपर रखता है, और उसे एक सच्चे अगुवे की पहचान देता है। एक अगुवे को सामान्य से बढ़कर अगुआई के गुणों को दिखाना चाहिए।

एक अगुवे को दिखना चाहिए। उसे सुप्रकट और एक अगुवे के रूप में पहचाना जाना चाहिए। लोग उसे तुरन्त पहचानने योग्य होने चाहिए। उस पर अगुआई का एक निश्चित चिन्ह होना चाहिए। यह उसके जीवन पर अगुआई का एक आवरण है।

एक अगुवे को सुना जाना चाहिए। एक सच्चे अगुवे की आवाज में एक सम्मोहक शक्ति होनी चाहिए। यह अवश्य नहीं कि स्वाभाविक स्वर या आवाग के गुण में हो। परन्तु जिस प्रकार वह बोलता है उस में कुछ होता है जो दूसरों का ध्यान आकर्षित करता, उसके सुननेवालों को पकड़े रहता, उन्हें कार्य के लिए प्रभावित करता और काम के लिए प्रेरित करता है।

एक अगुवे को एक आदर्श होना चाहिए। एक अच्छे अगुवे को उसके साथियों और अनुयायियों के लिए एक उदाहरण और एक आदर्श होना चाहिए। कोई जिसे देखकर वे उनके जीवन बना सकते हैं। उसकी अगुआई उतनी अधिक प्रभावशाली और उत्पादक होगी यदि लोग उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं जिसका जीवन उनके विश्वास और दर्शन की सच्चाई और वास्तविकता प्रकट करता है।

एक अगुवे को प्रेरित करनेवाला, उत्तेजक और गतिशील होना चाहिए

पहले प्रेरित कैरिसमैटिक अगुवे थे, जो पवित्र आत्मा की गतिशील सामर्थ्य द्वारा सामर्थ्य और अभिषेक पाए हुए थे। पिन्तेकुस्त की घटनाओं ने उनके जीवनों को पूरी तरह बदल दिया और उनकी अगुआई की सम्भावनाओं को बढ़ा दिया था। पिन्तेकुस्त की घटनाओं के पहले वे चेले (शिक्षार्थी) थे। परन्तु पिन्तेकुस्त के गतिशील अनुभव के बाद वे प्रभावशाली अगुवों के रूप में उभरे जो मसीह के उद्धार के सुसमाचार को लेकर संसार के अनेक भागों में गए।

उन पहले प्रेरितों ने सच्ची कैरिस्मेटिक अगुआई दिखाई थी। "कैरिस्मैटिक" शब्द का अर्थ है आत्मिक वरदानों का प्रदान किया जाना। आजकल इस शब्द को सांसारिक लोग एक सामर्थी व्यक्तित्व और अगुआई के गुणों वाले व्यक्ति का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। शब्द के इस उपयोग को मसीही अगुवों पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है। मसीही अगुवों को शब्द के दोनों भावों में कैरिस्मैटिक अगुवे होना है। आत्मिक वरदान पाए हुए और उनके जीवनों पर अगुआई का एक गतिशील वातावरण।

पिन्तेकुस्त की घटना के बाद जो व्यक्तित्व में बढ़ावा हुआ था उसे देखना बड़ा दिलचस्प है। सब प्रेरित पहले की तुलना में अधिक सामर्थी और गतिशील व्यक्ति बन गए थे परन्तु पतरस से अधिक स्पष्ट सम्भवतः कोई नहीं था। मसीह का तीन बार इन्कार करने के बाद ऐसा जान पड़ता था कि वह अपनी अगुआई की अभिलाषाओं में असफल रहा है परन्तु न केवल परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया और पुनःस्थापित किया, उसने असल में उसकी अगुआई की सम्भावनाओं को पहले से कहीं अधिक बढ़ा दिया। आत्मा की वही गति आज भी अगुवों के लिए उपलब्ध है। परमेश्वर अगुवों की एक सेना खड़ी कर रहा है जो उसके आत्मा से अभिषेक और सामर्थ्य पाए हुए हैं। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी, "जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे।" एक मसीही समूह की गति इसकी अगुआई से नहीं बल्कि पवित्र आत्मा से निकलनी चाहिए। अगुवे और कार्यकर्त्ता मिलकर सारे समूह को आत्मा का सामर्थ्य पाना चाहिए। अभिषेक "एक गतिशील शक्ति है, जो आत्मा से मिलता है, और जो सारे समूह को एक प्रभावशाली क्रिया के लिए आकर्षित करता है।"

पर्याप्त सकारात्मक अगुआई की अनुपस्थिति काम करनेवाली शक्ति में निर्जीवता आने देती है, परन्तु गतिशील अगुआई की निपुणताएँ गति को प्रेरित करेंगी और बनाए रखेंगी। यह शक्ति असंख्य प्रकार से दिखती है, परन्तु वरिष्ठ अगुवे में प्रायः अधिक स्पष्ट होती है। यह एक अगुआई का करिश्मा, एक अभिषेक या आत्मा है जिसे दल अकसर "पकड़" लेता है। यह विश्वास लाता है, कल्पना को उत्तेजित करता है, और दल की छिपी हुई शक्तियों को प्रेरित करता है।

हम एक सकारात्मक शक्ति को कैसे पैदा करें?

अः एक सकारात्मक, बाइबल-मुखी संदेश प्रचार करो

बाइबल नकारात्मक और सकारात्मक बातों से भरी हुई है और हमें दोनों पर ध्यान देना है। दुर्भाग्यवश कई कलीसियाएं नकारात्मक पर बल देती हैं और सकारात्मक को सदा संदेह और प्रतिबन्ध के साथ देखती हैं। सकारात्मक परिणाम पाने के लिए हमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और उस पर बल देना चाहिए। जैसे एक पुराना लोकप्रिय गीत कहता है, हमें "सकारातमक पर बल देना और नकारात्मक को निकालना" चाहिए।

जब तक हम एक सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाते और बल देते हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। एक सकारात्मक रुख अपनाने से डरो मत। परमेश्वर सकारात्मक है। सुसमाचार सकारात्मक है। बाइबल सकारात्मक है। विश्वास सकारात्मक है।

आः गतिशील पवित्र आत्मा को काम करने दो

पवित्र आत्मा की सारे विश्व में सबसे अधिक गतिशील शक्ति है। यदि हम उसे अपने जीवनों पर नियंत्रण करने दें, वह अपने गतिशील सामर्थ्य को हमारे द्वारा प्रकट करेगा। मसीह की कलीसिया को, परमेश्वर के राज्य के शासन के द्वारा, देशों पर राज्य करना है। परमेश्वर उसके लोगों को पुनर्जीवित करने वाला और उसके गतिशील सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों को पृथ्वी पर दोबारा करने वाला है। हमें पवित्र आत्मा को मसीह की देह में उसके सही स्थान को लेने देना है। "प्रभु तो आत्मा है : और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है। परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।" (2 कुरिं. 3:17-18)। जब हम पवित्र आत्मा को असली में प्रभु होने देते हैं, वह हमें उसकी सामर्थी शक्ति से बदलता है।

18. अगुवों को सदा आगे होना चाहिए

जब कभी भी इस्राएल के लोग सफर में होते थे, लेवी सदा लोगों से 2000 हाथ आगे होते थे। परमेश्वर ने ठहराया है कि उसके आत्मिक अगुवे मार्ग दिखाने के लिए आगे होने चाहिए। उसने निर्धारित किया था कि लेवी इस्राएल के लोगों से 2000 हाथ आगे चलें। उन्हें लोगों के आगे उन्हें अगुआई देने और गति निर्धारित करने के लिए होना है ताकि लोग पीछे-पीछे चल सकें। परन्तु

इतने आगे भी नहीं कि वे दिखाई न दें। यह मसीही अगुआई का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। **हमें लोगों के आगे रहना है परन्तु उन से दूर नहीं हो जाना है।**

ऐसे बहुत सारे गुण और विशेषताएं हैं जिन्हें अच्छे अगुवों के जीवनों में देखा जा सकता है जो उन्हें लोगों की दृष्टि में रखता है और लोगों को अनुकरण करने के लिए कुछ देता है। ऐसे करने से लोग परमेश्वर के मार्गो पर चल सकते हैं, और वे ऐसे गुणा विकसित कर पाते हैं जिनसे वे भी अच्छे अगुवे बनते हैं।

ऐसी विशेषताएँ जो आपको आगे रखती हैं

अः सकारात्मक रवैया और व्यवहार

लोग उसके पीछे चलना चाहते हैं जो जानता है वह कहाँ जा रहा है। एक ऐसा व्यक्ति जो निर्णायक है, और जिसका एक निश्चित उद्देश्य और एक योग्य काम पूरा करने का दृढ़ निश्चय है। वे अगुवे की ओर देखते हैं जिसका एक सकारात्मक रवैया और व्यवहार है। ऐसा जो एक सच्चे अगुवे के रूप में पहचाना गया है और निश्चित रूप से कुछ प्राप्त कर रहा है।

आः सम्पूर्णता और नीतिशास्त्र

आवश्यक है कि एक अगुवा सम्पूर्णता, ईमानदारी और विश्वासनीयता का व्यक्ति हो, जिसका एक शक्तिशाली नैतिक और नीतिशास्त्र स्तर हो जिसका वह विश्वासयोग्यता के साथ पालन करता है। एक विधिवादी व्यक्ति नहीं जो व्यवस्था के अक्षर का आग्रही है, परन्तु एक असली व्यक्ति जो उस व्यवस्था की आत्मा के अनुसार जीता है। एक व्यक्ति जिसके द्वारा यीशु प्रकट रूप से जी रहा है और जिसके द्वारा वह अपना शुद्ध जीवन प्रकट कर रहा है। पौलुस ने कहा कि, "शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।" (2 कुरिं. 3:6)।

इः सच्चाई और ईमानदारी

ईमारदारी एक अगुवे का एक अनिवार्य गुण है। प्रेम के समान यह "अनेक पापों को ढाँप देता है।" ईमानदारी पाखण्ड का उलटा है। यदि एक व्यक्ति गलती करता भी है, और यदि यह गलती ईमानदारी की आत्मा में की गई है तो इसे क्षमा किया जा सकता है। लोग ईमानदारी को सरलता से भाँप सकते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे यदि यह सच्चा नहीं है तो दिखाना कठिन है।

ईः शक्ति और नियंत्रण (व्यक्तिगत और लोगों के साथ)

कमज़ोरियों का कभी भी सम्मान नहीं होता है, और विशेषकर एक अगुवे में तो नहीं। एक अगुवे में शक्ति होनी चाहिए और उसे दिखनी चाहिए जिससे कि वह उसके अनुयायियों का सम्मान जीत सके। यह शक्ति पहले उसके व्यक्तिगत जीवन में प्रत्यक्ष होनी चाहिए। यदि एक व्यक्ति अपने में शक्तिशाली और निर्णायक नहीं है, तो वह दूसरों के साथ भी नहीं हो सकेगा।

उसे अपने व्यक्तिगत जीवन, आदतों, स्वभाव और व्यवहार में शक्ति और नियंत्रण इस्तेमाल करने चाहिए। एक व्यक्ति जो अपने आप को उचित रूप से अनुशासित नहीं कर पाया है, दूसरों में शक्ति प्रेरित नहीं कर सकेगा। उसकी व्यक्तिगत शक्ति और नियंत्रण उसके व्यक्तिगत रंग-रूप, समय-पाबंदी और संगति में प्रकट होने चाहिए। उन्हें इसमें भी प्रत्यक्ष होना चाहिए जिस प्रकार वह अपने परिवार के काम और अपने घर की व्यवस्था का संचालन करता है। पवित्रशास्त्र पूछता है, "जब कोई अपने घर का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?" (1 तीमु. 3:5)

उः लोगों में सच्ची रुचि

सेवा असल में एक "लोक उद्योग" है, और लोगों के साथ अच्छे से सम्बंध बनाने की योग्यता अत्यावश्यक है। सेवा असल में दो चीजों के विषय में है। यह परमेश्वर के विषय में, और यह लोगों के विषय में है। इसलिए एक मनोवृत्ति होना अत्यन्त लाभ की बात है जिससे सब प्रकार के लोगों के साथ मुक्त भाव और सरलता से सम्बंध बनाया जा सकता है।

ऊः मित्रभाव और सुगम्यता

"हाऊ टू विन फ्रेंड्स एँड इनफ्लूअन्स पीपल" नामक पुस्तक के लिखे जाने के बहुत पहले, बाइबल ने कहा था, "ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।" (नीतिवचन 18:24)। यीशु को अकसर "पापी और महसूल लेनेवालों का मित्र" कहा जाता था। वह सदा इतना सुगम्य होता था कि भीड़ की भीड़ उसकी ओर उसके व्यक्तित्व और मित्रता के स्नेह का आनन्द और लाभ लेने

के लिए खिंचे आते थे। आप एक मसीही अगुवे के रूप में चाहे कितने भी सफल क्यों न हो जाएँ, अपनी सफलता को लोगो को अपने से दूर मत करने दो। यदि आप सच्चाई से मसीह-समान होना चाहते हो तो आप सदा एक मित्रभाव वाले और सुगम्य व्यक्ति रहोगे।

ए: अच्छा सुननेवाला

यीशु अकसर संवाद और बातचीत को प्रोत्साहित करते थे। वे प्रश्न पूछते और फिर सुनते थे जब लोग उसकी ओर प्रतिक्रिया करते और उत्तर देते। ऐसे समय होते हैं जब एक व्यक्ति को सुनना भी उसे सबसे बड़ा सम्मान देना होता है और जब सुनने की अनिच्छा एक अत्यन्त दुख भरी बात होती है। दुर्भाग्यवश अनेक अगुवे सोचते हैं कि वे इतने महत्त्वपूर्ण हो गए हैं कि दूसरों को सुनने के लिए उनके पास समय नहीं है। वे स्वयं बोलने के इतने आदी हो गए होते हैं कि दूसरों को सुनने की कला को खो देते हैं।

ऐ: आकर्षक और प्रशंसनीय व्यक्तित्व

किसी भी प्रकार के जन-सम्पर्क के काम में एक आकर्षक और मनोहर व्यक्तित्व एक सुस्पष्ट लाभ है। प्रकट है कि मसीही सेवा एक मात्र जन-सम्पर्क के काम से कहीं अधिक है और इसकी सफलता उन चीजों पर निर्भर है जो अच्छे मानवीय सम्बंधों से कहीं अधिक महत्त्व के हैं। तिस पर भी, किसी भी समाज में बहुत सारे परस्पर सम्बंध काम कर रहे होते हैं, जो कलीसिया में भी होते हैं, और लोगों को आकर्षित करना, जीतना, और प्रेरित करना अनिवार्य है। यह अधिक सरलता से तब हो जाता है जब अगुवा एक आकर्षक, मित्रभाव वाला, और मनोहर व्यक्तित्व वाला व्यक्ति है। यह निश्चित रूप से लाभकारी होता है जब लोग अगुवे की प्रशंसा करते हैं और लोगों के लिए उसे पसन्द करना आसान होता है। यह एक सुस्पष्ट लाभ है जब लोग उनके लोगों के साथ सम्बंध बनाना और पीछे चलना आसान पाते हैं।

19. अपनी अगुआई की शक्तियों को विकसित करना

अ. अपनी अगुआई के अधिकार को व्यक्त करना

अगुवों को पता होना चाहिए कि उनके अधिकार को कैसे व्यक्त करना है। एक अगुवे के बिना का समूह अव्यवस्था में चला जाता है। अगुवों को उनके सहयोगियों का विरोध किए या दूर किए बिना, सकारात्मक तरीके से उनके अधिकार का प्रभाव डालना आना चाहिए। अधिकार के उनके इस्तेमाल को सदा दीनता और शक्ति के मिश्रण के साथ किया जाना चाहिए।

आ: अगुवों को काम में पहल करनी और बनाए रखना चाहिए

सच्चे अगुवे उत्प्रेरक होते हैं। वे काम में पहले करते और दूसरों को उनके साथ मिलने के लिए प्रेरित करते हैं और पहल-शक्ति को बनाए रखते हैं। अच्छे अगुवों में चीजों को आरम्भ करने और चलाते रहने की योग्यता होती है जब तक काम समाप्त नहीं हो जाता। प्रभावशाली अगुआई दूसरों को प्रेरित करके और दूसरों के प्रयासों को समन्वित करके काम करवाती है।

इ: अधिकार की ऋँखला को समझना

मत्ती 8:9, "मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ।" आपको अधिकार को प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल करने के लिए इसके अधीन रहना चाहिए। सूबेदार एक ऐसे व्यक्ति का उत्तम उदाहरण है जो अधिकार की ऋँखला को और यह कैसे काम करती है को समझ्ता था। वह उस अधिकार को समझता था जो उसके जीवन पर था और जिस तरीके से यह अधिकार उसे उसके अधीनस्थों पर अधिकार देता था।

यदि हम अपेक्षा करते हैं कि लोग हमारे अधिकार में बने रहें हमें भी अपने अधिकार के स्रोत के नीचे रहना है। हमारा असली अधिकार परमेश्वर से आता है जिसने हमें नियुक्त किया है, परन्तु उस अधिकार को वैध रहने के लिए हमें उन अधिकार के स्रोतों के अधीन भी रहना है जिन्हें परमेश्वर ने हमारे ऊपर रखा है।

ई: अधिकार के स्रोत को समझना

अधिकार के तीन मुख्य स्रोत हैं:

1) भूमिका का अधिकार (जो अधिकार काम के साथ जाता है)

क्योंकि हमारा काम परमेश्वर ने दिया है, तो उस काम को करने के लिए वही हमारे अधिकार का अन्तिम स्रोत है। हमारा अधिकार हमारी उपाधि में नहीं है। हम एक डाक्टर, पास्टर, या किसी दूसरी उपाधि से जाने जा सकते हैं, परन्तु हमारा असली अधिकार इससे कहीं बड़ा है। हमें किसी सम्प्रदाय ने नियुक्त किया होगा, या हमारी सम्प्रदाय ने किसी कार्यकारी काम के लिए हमें नियुक्त किया होगा, परन्तु हमारे असली अधिकार का स्रोत फिर भी स्वयं परमेश्वर है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने अधिकार के स्रोत के साथ सही सम्बंध में बने रहें। परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में बने रहें। उसके वचन और जिन शक्तियों को उसने नियुक्त किया है उनके साथ मेल में जीएँ। जब तक आप परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहोगे, वह आपके अधिकार को समर्थन देगा। यदि आप अभिमान या अवज्ञा के कारण उसके अधिकार के आवरण में से निकल जाओगे, तब उसका अधिकार आपके जीवन के द्वारा काम नहीं करेगा।

2) <u>ज्ञान की शक्ति</u> (ज्ञान, निपुणता, आदि से शक्ति लेना)

अपने काम और उसके प्रदर्शन की परिपक्व और पर्याप्त समझ आपको कुछ अधिकार देगा। यदि यह प्रकट हो कि आप क्या कर रहे हो, तब लोग उस काम को पूरा करने के लिए आपके साथ जुड़ने में अधिक सुविधा महसूस करेंगे। यदि वे उन परिणामों से देख सकें जिन्हें आप ला रहे हैं कि आप जानते हो आप क्या कर रहे हो तो वे आपके अगुआई के अधिकार को खुशी से पहचानेंगे, स्वीकार करेंगे और सम्मान करेंगे। स्वीकृत योग्यता अगुवे और उसके दल दोनों में विश्वास पैदा करती है।

3) <u>व्यक्तित्व की शक्ति</u> (आपका व्यक्तिगत प्रभाव)

यह निसंस्देह तीन अधिकार के स्रोतों में से सबसे कम महत्त्व का है, परन्तु यह फिर भी अत्यन्त प्रभावशाली और विकसित करने योग्य है। मैं उस अधिकार की बात कर रहा हूँ जिसे एक अगुवा पैदा करता है जो विनीत, सकारात्मक विश्वास दिखाता है। कोई जिसे अपने आप में और जो वह कर रहा है उसमें एक शान्त विश्वास है। एक अगुवा जो सब कुछ योग्य नियंत्रण के अधीन होने का संकेत देता है। अधिकाँश लोगों को सुरक्षा की एक भावना चाहिए, और योग्य अगुआई उन्हें ऐसी एक भावना देती है।

व्यक्ति का अपना एक प्रभाव होता है। एक कठोर, कल्पनाशक्तिहीन व्यक्ति से अधिक एक सजीव, रंगीन, मनोहर व्यक्ति दूसरों को अधिक प्रभावित कर सकता है। व्यक्तित्व की शक्ति का उचित विकास निश्चित रूप से एक वैध और वांछनीय चीज है। परमेश्वर आपके व्यक्तित्व का रचनाकार है। उसने विभिन्न तत्त्वों को डाला है जिससे आपका व्यक्तित्व बना है। परन्तु वह चाहता है कि आप अपने व्यक्तित्व को विकसित करें और सुधारें और इसकी सम्भावना और प्रभाव को सकारात्मक रूप से इस्तेमाल करें। आप एक व्यक्ति हैं जिसका व्यक्तित्व अद्वितीय है। परमेश्वर ने आपको एक निश्चित काम के लिए चुना है। वह कुछ चीजों को करने के लिए आपको, और आपकी अद्वितीय और विशेष निपुणताओं और व्यक्तित्व को इस्तेमाल करना चाहता है, जिस काम को और कोई भी उसी प्रकार नहीं कर सकता है।

सामर्थ्य के इन स्रोतों को कैसे इस्तेमाल करें ?

<u>अ:</u> भूमिका की शक्ति को प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल करें।

मूसा इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

-उसने अपनी सीमाओं को पहचाना।

-जब तक परमेश्वर उसके साथ नहीं जाता, वह नहीं जाना चाहता था।

-उसने नम्रता के साथ अधिकार को इस्तेमाल किया।

<u>आ:</u> ज्ञान की शक्ति को इस्तेमाल करना।

सीखना, और अपनी निपुणताओं को बढ़ाना कभी भी बंद मत करो। "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर।" (2 तीमु. 2:15)

<u>इ:</u> व्यक्तित्व की शक्ति को इस्तेमाल करना।

यीशु में, 'आप जो हो' बने रहना सीखो।

उः अपने अधिकार को इस्तेमाल करना

अपने अधिकार को सूचित करने के संवेदनशील और असंवेदनशील तरीके होते हैं। एक उतना ही हानिकर है जितना दूसरा उत्पादक है। प्रभावशाली और सफल अगुवे सामान्यतः वे हैं जिन्होंने उनके अधिकार को उस तरीके से इस्तेमाल करना सीखा है जो उनकी अगुआई को बढ़ाता और उनके सहयोगियों को विरोधी नहीं बनाता या दूर नहीं करता है। आपको अपने अधिकार की धारणा को अनेक प्रकार से स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रतिमा दिखाने के द्वारा शक्ति को सूचित करो।

हर अगुवा उस प्रतिमा के लिए जिम्मेवार है जिसे वह दिखाता है और उसे एक वैध अधिकार को विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए जिसका लोग स्वेच्छा से सम्मान कर सकते हैं। यदि आप एक अगुवे के समान नहीं करते, तब लोगों को दोष देने से कोई लाभ नहीं यदि वे आपकी ओर उनके अगुवे के रूप में प्रतिक्रिया नहीं करते।

दीन अधिकार के द्वारा बोलो और कार्य करो।

अधिकार के कार्यो को दीनता की एक मात्रा के साथ ही दिखाया जाना चाहिए। कई लोग उनके अगुवों के प्रत्यक्ष अहंकार की ओर घृणा प्रकट करते हैं। यदि उनको लगे कि उनके अगुवे उन पर अधिकार जताने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं तब वे बड़ी खुशी के साथ सम्मान और अधीनता दिखाएँगे। अहंकार के साथ दिखाया जा रहा अधिकार बड़ी सरलता के साथ वांछनीय प्रभाव का उलटा परिणाम पैदा कर सकता है।

अपने फैसलों पर दृढ़ बने रहो।

प्रभावशाली अगुआई के लिए आवश्यक है कि शक्तिशाली फैसले करे जिसके बिना लोग अकसर असुरक्षित महसूस करते हैं क्योंकि वे जान नहीं पाते हैं क्या हो रहा है। एक बार जब फैसले किए और घोषित किए जाते हैं तब उन पर बने रहना चाहिए, जब तक कोई ठोस कारण न हो कि उन्हें क्यों बदला जाए। यह बारम्बार नहीं होना चाहिए। जिन फैसलों को बदला जाता है वे अकसर गलत फैसले होते हैं और बहुत सारे गलत फैसले उनकी अगुआई में लोगों के विश्वास को नष्ट करता है।

उल्लंघन करनेवालों को एकान्त में अनुशासित करो।

हर अगुवे के सामने ऐसे अवसर आते हैं जब उसे दल के किसी सदस्य को सुधारना और अनुशासित करना पड़ता है। यदि सम्भव हो तो ऐसा कभी भी सब के सामने न किया जाए। कोई भी सुधार या ताड़ना एकान्त में की जाए। परन्तु, यदि उनका उल्लंघन सबके सामने किया गया था, तो उन्हें चेतावनी दी जानी चाहिए कि और अधिक उल्लंघनों से सबसे निपटा जाएगा।

प्रायिक समूह की सभाओं को रखो जहाँ आप विचार-विमर्श को बढ़ावा दे सकते हो परन्तु दिखाओ कि आप प्रभारी हो।

आपकी अगुआई का अधिकार सबसे पहले कर्मचारी सभाओं जैसे स्थानों में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, जहाँ समूह अभी छोटा और घनिष्ठ है। इससे आपको एक छोटे समूह में रवैयों और कार्यो को सुधारने का अवसर मिलता है, वरना बड़े समूहों में अनावश्यक घबराहट का सामना करना पड़ सकता है।

ऊः कब और कहाँ सीमा रेखा डालनी है जानना

हमेशा निश्चित करो कि आपके अधिकार के इस्तेमाल में परमेश्वर आपके साथ है। हमें उपदेश दिया गया है, "वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो।" जैसे कि परमेश्वर हमारे अधिकार का स्रोत है, हमें इसका इस्तेमाल उसके पवित्र नाम को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। एक अगुवे के पास कोई दूसरा अधिकार नहीं है केवल वही जो उसे दिया गया है, इसलिए उसे सदा परमेश्वर के नाम और उसकी धार्मिकता को ध्यान में रख कर इस्तेमाल करना चाहिए।

लोगों को कभी भी आपकी अगुआई का पालन करने पर विवश मत करो। मध्य पूर्व में, जहाँ बाइबल लिखी गई थी, चरवाहे उनकी भेड़ों के आगे जाते हैं और कभी भी उन्हें पीछे से हाँकते नहीं हैं। यीशु ऐसा ही चरवाहा था, और हमें भी वैसा ही होना है।

20. सदा परमेश्वर को सारा श्रेय और महिमा दो

अध्याय सात - एक अगुवे का आत्मिक जीवन

यह अध्याय इस अध्ययन में सबसे महत्त्वपूर्ण है। सच्ची प्रामाणिक मसीही अगुआई की कुंजी यहीं पर है जो है मसीह के साथ हमारे सम्बंध को विकसित करना और कि हमारी सेवा उस सही सम्बंध का फल हो। मसीह के साथ एक सही सम्बंध में से ही हम उसकी सेवा सच्चाई से कर सकते हैं। सम्बंध के बिना सेवा मशीनी, प्रेमरहित और विधिवादी होगी, और यह परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है।

दूसरे अध्याय अगुआई की निपुणताओं के विभिन्न पहलुओं से निपटते हैं और वे भी महत्त्वपूर्ण हैं। परन्तु हमारे आत्मिक मनुष्य का उचित विकास अत्यन्त आवश्यक और अनिवार्य है। यह हमारे बुलावे को पूरा करने के लिए मूल है।

यदि हम उन तरीकों की जाँच करें जिन्हें यीशु ने उसके चेलों पर इस्तेमाल किया था, हम पाएँगे कि उसकी प्रमुख रुचि उनके आत्मिक जीवनों का विकास था। उनके साथ उसके सम्बंध के आरम्भ में, उसने राज्य में जीवन जीने के तात्पर्य की शक्तिशाली सच्चाइयों को समझाया था। जिसे हम "पहाड़ी उपदेश" कहते हैं (मत्ती अध्याय 5-7) में, उसने उस कसौटी की स्पष्ट रूप से व्याख्या की थी जिस पर उसके सब चेलों को खरा उतरना है। उसने परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के सदस्यों के रूप में उनके पुराने जीवन और उनके नए जीवन के बीच सुधारवादी अन्तर पर बल दिया था।

प्रभावशाली अगुवे की पहली जिम्मेवारी परमेश्वर में उसके अपने जीवन का सही विकास और निरन्तर वृद्धि है। मूसा की वाचा के लेवियों के नमूने में याजकों को लोगों से जब कभी भी देश परमेश्वर के उद्देश्यों में चलता था 2000 हाथ आगे रहना होता था। उसी प्रकार मसीही अगुवे को लोगों के आगे उनके अनुकरण के लिए एक उदाहरण और मार्गदर्शक के रूप में रहना चाहिए। उसका आत्मिक विकास और परिणामी जीवन-शैली उनके लिए एक नमूना होना चाहिए। इसे बारम्बार कहा गया है कि, "परमेश्वर एक कलीसिया को इसके अगुवे से बड़ा नहीं बना सकता है", और कुछ सीमा तक यह सही है। इसलिए अगुवे की पहली चिन्ता यह नहीं होनी चाहिए कि "मैं अपनी कलीसिया कैसे बढ़ाऊँ", परन्तु कि "मैं कैसे निश्चित करूँ कि मेरा अपना आत्मिक जीवन अच्छी तरह व्यवस्थित है और कि मैं प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान और अनुग्रह में लगातार बढ़ रहा हूँ।" यदि अगुवे का जीवन दोषपूर्ण है, तब कलीसिया की नीवों को हानि पहुँचेगी।

एक विषय जिसके बारे में अगुवे को सदा पता होना चाहिए, व्यवसायिकता का खतरा है, अर्थात् सेवा को एक आत्मिक बुलावे से एक सांसारिक पेशे में भ्रष्ट होने देना। एक कलीसिया की अगुआई की क्रियाविधियों में खो जाना बहुत आसान है जिससे कि व्यक्तिगत जीवन अनदेखा हो जाता है। शुलेमी का शोकगीत था, "उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन बनाया; परन्तु मैं ने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की।" (श्रेष्ठगीत 1:6ब)। यह सरल कथन सेवा के जोखिमों पर बल देता है। दूसरों के आत्मिक जीवनों की रखवाली में खो जाने का खतरा कि अपना जीवन ही दुखपूर्ण रूप से अनदेखा हो जाता है। मुझे निश्चय है कि इस विश्वासघाती फँदे ने कई अगुवों का पतन किया है। प्रभावशाली अगुवों को सेवा की माँगों में इतना भी खो नहीं जाना चाहिए कि जिससे वे उनके अपने आत्मिक कल्याण की उपेक्षा कर बैठें।

अगुआई की निपुणताएँ और प्रबंध की योग्यताएं बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु मसीही अगुवे का आत्मिक जीवन आधार है, और वह इसी स्थान पर गिरता या खड़ा रहता है। एक अगुवे का आत्मिक ग्रहण उसके उत्पादन से अधिक होना चाहिए। हमारे आत्मिक अभ्याासों का अन्तिम उद्देश्य मसीह के साथ अपने सम्बंध को विकसित करना, उसकी समानता में बढ़ना, और उसकी सेवा के लिए तैयार होना है।

इन विचारों को मन में रखकर मैं उन आत्मिक अभ्यासों की बात करना चाहता हूँ जो एक अगुवे के जीवन के अनुरक्षण और विकास के लिए अनिवार्य हैं। ये अनुशासन मसीह के साथ हमारे व्यक्तिगत सम्बंध के विकास में सहायता के लिए अनिवार्य हैं। केवल उनकी खातिर उनकी खोज और अभ्यास अपर्याप्त है। इसे कभी भी एक औपचारिकता या धार्मिक नित्यक्रम में भ्रष्ट नहीं होने दिया जाना चाहिए। इन अभ्यासों का अर्थ अपना कर्तव्य पूरा करना नहीं है। यह अपने मालिक के साथ अच्छा समय बिताना और उसके साथ अपने सम्बंध को सक्रिय रखना है।

1. प्रार्थना

कई मसीहियों और कई अगुवों में प्रार्थना के विषय में पूर्वकल्पित विचार होते हैं। सबसे प्रचलित यह है, "प्रार्थना परमेश्वर से बात करना है।" यह एक जोखिमभरा विचार है क्योंकि यह पूरा नहीं, परन्तु थोड़ा सच है। हाँ, प्रार्थना परमेश्वर से बात करना है, परन्तु यह परमेश्वर को सुनना भी है। असल में यह "परमेश्वर से बातचीत करना" है - उससे बातचीत करना, अपना हृदय उसके सामने उँडेलना, अपनी सारी चिन्ताएँ उसे बताना, परन्तु उसके उत्तर को सुनना भी है।

हमें सदा याद रखना है कि जो परमेश्वर हम से कहता है उससे कहीं अधिक महत्त्व का है जो हम उसे कह सकते हैं। प्रार्थना एक दो-तरफा बातचीत है जिसमें सुनना और बोलना दोनों सम्मिलित हैं। अपने विशेष कार्यक्रम को लेकर परमेश्वर के सामने आने,

उसके कानों में उँडेल देने, और फिर सोचने कि आप ने प्रार्थना की है के विचार से दूर रहो। प्रार्थना मुख्य रूप से परस्पर सहभागिता है। यह परमेश्वर के साथ एक अच्छा समय बिताना है जैसे कि एक भरोसेमंद और प्रिय मित्र के साथ। इसे परमेश्वर का मुख खोजना भी कहते हैं।" "तू ने कहा है, मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है, हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।" (भजन 27:8)।

यह एक आनन्दप्रद और अनोखी अभिव्यक्ति है जो अपने हृदय के स्नेह के लक्ष्य के साथ समय बिताने के लिए अपने प्रिय को खोजना है। यह एक जवान पुरुष के समान है जो प्रणय-याचन चाहता है। अपनी प्रिय के चेहरे की एक झलक पाने के हर अवसर की खोज में रहना। अपने हृदय के आनन्द के साथ होने की परिस्थितियों का उपाय करना और अवसर बनाना। हृदय की इच्छा प्रिय जन के चेहरे को निहारना है, परन्तु प्रेमी की दृष्टि में आना भी है। परमेश्वर के साथ हमारा सम्बंध असल में एक रोमांस के समान है जिसे हमें स्नेह और उत्साह के साथ खोजना है। हमारे सम्बंध के इस सम्बंध को जीवित और सक्रिय रखना हमारी प्रमुख चिन्ता और खोज होनी चाहिए, क्योंकि प्रेम के इस सम्बंध में से फुसफुसाहट में कहा गया लाड़-प्यार और प्रेमी के रहस्य हैं जिन में पिता का हृदय खुलता है। इस संदर्भ और वातावरण में ही हमारा आत्मिक जीवन फलता-फूलता है और इस सम्पन्नीकरण में से सच्ची सेवा निकलती है।

सच्ची प्रार्थना में परमेश्वर की बाट जोहना भी है। "मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके वचन पर है।" (भजन 130:5)। यह एक सेवक का रवैया दिखाता है जो उसके मालिक की बाट धैर्य के साथ जोहता है, और उसके मालिक के हृदय की इच्छाओं और चाहों को सीखना है। यह परमेश्वर के सच्चे सेवक का एक आदर्श चित्र है। मालिक की इच्छा पूरी करने के लिए, और उसके उद्देश्यों को उसके लोगों को बताने के लिए मालिक की बाट जोहना। यह एक सही स्थान है जहाँ सेवा और मिशन के अधिकार पाए जा सकते हैं। फिर भी वहाँ होने का यह प्रमुख कारण नहीं है। हमारी पहली रुचि प्रभु के साथ बातचीत करना है, उसके चेहरे को खोजना है, उसकी आराधना और प्रशंसा करना है, परन्तु उससे संदेश पाना भी है जिसे वह चाहता है हम उन्हें दें जिनकी सेवा करने के लिए हमें बुलाया गया है।

2. परमेश्वर के वचन से जीना

"मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" (मत्ती 4:4)। यीशु ने इन वचनों को व्यवस्थाविवरण 8:3 से लेकर कहा था। उसका उद्देश्य यह दिखाना था कि अपनी मानवीय इच्छाओं को सन्तुष्ट करने से बेहतर परमेश्वर के वचन का पालन करना है। परन्तु, दो और विचार हैं जिनके विषय में मैं आपको बताना चाहता हूँ:

अ. जिन वचनों के द्वारा हमें जीना है परमेश्वर के वर्तमान, जीवित वचन हैं। वर्तमान सत्य के वचन जो परमेश्वर के मुँह में से निकल रहे हैं। परमेश्वर के पास अभी सत्य के वचन हैं जो वह हमें बताना चाहता है। ये वचन हमारी वर्तमान परिस्थितियों में जिन में हम अपने आप को पाते हैं हमारे लिए विशेषकर उपयुक्त हैं। हम इन्हें कभी-कभी परमेश्वर के "रीमा" वचन कहते हैं, जो "लोगोस" से भिन्न हैं, और ये सदा वर्तमान और सदा वर्तमान काल हैं।

आ. ये वचन परमेश्वर के मुँह में से निकलते हैं। ये वचन हमारे आत्मिक कान सुनते हैं। ये वे वचन नहीं जिन्हें हम पढ़ते हैं, परन्तु जिन्हें हम सुनते हैं। अब हो सकता है हम बाइबल पढ़ रहे हों जब परमेश्वर हम से इस प्रकार बोलता है। यह ऐसा है जैसे वह किसी चीज को रेखांकित करता है, हमारा ध्यान इसकी ओर खींचता है, और एक वर्तमान, उपयोगी वचन हमारी आत्मा में बोलता है। यह "रीमा" वचन है जिसके द्वारा हमें जीवित रहना है।

यह भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि अगुवे "वचन के मनुष्य" हों। परमेश्वर के वचन के प्रेमी, पाढक, विद्यार्थी, और अभ्यासकर्त्ता। "तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं। तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो गया हूँ, इसलिए मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ।" (भजन 119:103-104)

हमें सेवा के एक और व्यावसायिक जोखिम की जानकारी होनी चाहिए। मैं बात कर रहा हूँ बाइबल को मात्र प्रवचन तैयार करने की सामग्री के रूप में देखना, पवित्रशास्त्र के पास इस इरादे से आना कि वह प्रवचनों से भरा हुआ है जिन्हें हमें अपनी मण्डली को प्रचार करना है। यदि हम में ऐसा रवैया है तो सम्भव है हम परमेश्वर के वचन को उसके लोगों पर लगाएँगे, परन्तु अपने ऊपर नहीं। यह अत्यन्त खतरनाक है और हमें परमेश्वर के वचन के उपयोग के विषय में दोहरे स्तर में ले जा सकता है। लोगों के लिए एक स्तर, और हमारे लिए दूसरा।

हमें बढ़ने और आराधना करने की अपनी आत्मिक आवश्यकता को निरन्तर प्राथमिकता देनी चाहिए। हमारे आत्मिक जीवन को लगातार और संगत ध्यान की आवश्यकता होती है। पौलुस सदा एक जोखिमभरे खतरे के विषय में सचेत था। "परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।" (1 कुरिं. 9:27)

3. आत्मा में जीवन जीना

"यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।" (गलातियों 5:25)। आत्मा में जीना हमारे मसीही विश्वास के सच्चे महामार्ग से कोई छोटा सा विपथन नहीं है। यह कोई रहस्यवादी प्रवृति वालों के मनोरंजन के लिए एक दिलचस्प वैकल्पिक अतिरिक्त नहीं है। आत्मा में जीना मसीही जीवन जीने का वास्तविक, बाइबल का तरीका है। यह मसीही जीवन-शैली का नए नियम का विचार है जिसे परमेश्वर चाहता है उसके जब लोग जीएँ। इसकी जड़ें परमेश्वर के वचन में दृढ़ता के साथ लगी हुई हैं। यह वो जीवन-शैली है जिसे यीशु और प्रेरितों ने जीया था, और मसीहियत के लिए उतना ही वैध है जितना वे थे।

दूसरी कई चीजों के समान यह एक कला है जिसे सीखा और सोखा जाना चाहिए। इस तरीके से जीना सीखने का एकमात्र तरीका सिद्धान्तों का पालन करना और अनुभव से सीखना है। (और अपनी गतलियों से)। दीन रहो, अपनी गलतियों को प्रभु के सामने मानो, और उसकी क्षमा और पुनरूद्धार अनुभव करो। और जैसे आप विश्वासयोग्यता के साथ उसके आत्मा के पीछे चलने की प्रयत्न करते रहोगे, वह आपकी चाल में सुधान लाने में सहायता करेगा और वह और अधिक साहसिक कार्य में आपको प्रोत्साहित करेगा।

आत्मा में जीना अपनी स्वाभाविक इंद्रियों से जीने के बदले अपनी आत्मिक इंद्रियों से जीना सीखना है। स्वाभाविक मनुष्य उसकी स्वाभाविक इंद्रियों से जीता है जो हैं पाँच, अर्थात्, सूँघना, चखना, छूना, देखना और सुनना। मनुष्य इन इंद्रियों से जीता है क्योंकि उसकी आत्मिक इंद्रियाँ मरी हुई हैं। जब वह मसीह के पास आता है, वह हमें जीवित करता है और हमारा आत्मिक मनुष्य जी उठता है। अपनी पाँच स्वाभाविक इंद्रियों और जो वे हमें बताती हैं से जीने के बदले, वे विश्वास से, और जो परमेश्वर उन्हें कहता है से जीने लगते हैं।

4. दीनता

दीनता मुख्य रूप से हृदय और मन का एक रवैया है। अपनी योग्यताओं और महत्त्व का सन्तुलित मूल्याँकन। यह मन की नम्रता और निम्न का एक रवैया भी है। परमेश्वर की महानता की एक स्पष्ट जानकारी के अलावा कुछ भी उतने प्रभावशाली तरीके से दीनता का रवैया नहीं ला सकता है। राजा दाऊद था जिसने एक नम्र और दीन आत्मा को बनाए रखा था। जब वह किशोर था वह दीन था और जब बाद में वह इस्राएल का राजा बना, उसने तब भी दीनता की एक सुन्दर आत्मा को बनाए रखा था। मुझे निश्चय है कि यह काफी हद तक उसकी परमेश्वर की महानता की जानकारी और इसकी तुलना में उसकी अपनी महत्त्वहीनता की जानकारी थी। "जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?" (भजन 8:3-4)

परमेश्वर के लिए उसे इस्तेमाल और आशीष देना कठिन है जो दीन नहीं है, क्योंकि उनकी प्रवृति महिमा अपने लिए लेने की होती है, और परमेश्वर उसकी महिमा दूसरे के साथ नहीं बाँटेगा। "तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।" (1 पतरस 5:5-6)

अभिमान परमेश्वर के एक सेवक में पूर्ण रूप से अस्वीकार्य है क्योंकि वह व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह और कृपा के बिना बिलकुल कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेगा। सफलता जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रयत्न, निपुणता और दृढ़ता के कारण आ सकती है। परन्तु परमेश्वर के काम में, हम पूर्ण रूप से उस पर निर्भर हैं। परमेश्वर के सेवक को अभिमान से इस प्रकार भागना चाहिए जैसे कि यह उसका सबसे बुरा शत्रु है। परमेश्वर उन खतरों के विषय में असंख्य चेतावनियाँ देता है जो अभिमानी के पथ पर पड़े होते हैं।

- "यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अहंकार और बुरी चाल से।" (नीतिवचन 8:13)
- "जब अभिमान होता है, तब अपमान भी होता है, परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है।" (नीतिवचन 11:2)
- "झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।" (नीतिवचन 13:10)
- "विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है। घमण्डियों के संग लूट बाँट लेने से, दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है।" (नीतिवचन 16:18-19)

5. विश्वास

"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)। हर विश्वासी को विश्वास का व्यक्ति होना चाहिए परन्तु विशेषकर अगुवों को मजबूत विश्वास के पुरुष या स्त्रियाँ होना चाहिए। परमेश्वर का काम विश्वास को इस्तेमाल किए बिना नहीं पूरा हो सकता है। हर परियोजना जिसे हम परमेश्वर के लिए करते हैं विश्वास की परियोजना है, और अगुवे को विश्वास का व्यक्ति होना चाहिए जिससे वह सब सम्बंधित व्यक्ति के विश्वास को चुनौती दे सके, उत्तेजित और प्रोत्साहित कर सके।

जिस विश्वास की हम बात कर रहे हैं मुख्य रूप से परमेश्वर में और उसके वचन में विश्वास है। इस प्रकार के विश्वास को इस्तेमाल करने के लिए हमें पहले परमेश्वर से एक निश्चित वचन चाहिए जिसे अपने विश्वास का आधार बना सकें। मसीही अगुआई में आवश्यक विश्वास कोई अन्धा विश्वास, या अपने में विश्वास, या अपनी योग्यताओं में विश्वास नहीं है। सच्चा विश्वास परमेश्वर से एक निश्चित वचन की ओर एक सकारात्मक प्रतिक्रिया और क्रिया है। यदि परमेश्वर आपको कुछ करने के लिए कहता है, तो आप मान सकते हो कि जैसे आप उसके निर्देशों का पालन करोगे वह उस काम को आपके द्वारा करेगा। अय्यूब ने कहा, "जो कुछ मेरे लिए उसने ठान लिया है, उसी को वह पूरा करता है।" (अयूब 23:14)

परमेश्वर में सच्चा विश्वास कभी भी गैरजिम्मेवार या ढीठ नहीं होता। यह हवा के महल बनाकर, नहीं कहता, "मैं इस के लिए परमेश्वर पर विश्वास करनेवाला हूँ।" विश्वास का व्यक्ति अपनी बड़ी-बड़ी योजनाएँ नहीं बनाता और फिर विश्वास करता कि परमेश्वर आशीष देगा। असली विश्वास तक आरम्भ होता है जब परमेश्वर वचन देता है। यह परमेश्वर से एक निश्चित वचन की ओर सकारात्मक आज्ञापालन है।

विश्वास के व्यक्ति को आगे चलना है। परमेश्वर में विश्वास क्या है का उसे एक निरन्तर उदाहरण होना है। वह परमेश्वर से सुनता है। वह परमेश्वर द्वारा दिए जा रहे निर्देशों को पा सकता है। वह परमेश्वर के आज्ञा के वचन की ओर उचित प्रतिक्रिया कर सकता है। वह उन सब के विश्वास को प्रेरित कर सकता है जो काम को पूरा करने में लगे हुए हैं।

नहेम्याह ऐसा ही एक व्यक्ति था। जिस क्षण से उसने यरूशलेम की दुर्दशा के विषय में कुछ करने की परमेश्वर की चुनौती को भाँपा, वह विश्वास में प्रतिक्रिया करने लगा। वह उपयुक्त योजनाएँ बनाने लगा। लोगों को भर्ती करना, रुपया-पैसा इकट्ठा करना, नीतियाँ बनाना, काम करनेवालों का संगठन करना। वह काम के हर पहलू में स्वयं सम्मिलित था, फिर भी वह प्रभावशाली प्रतिनिधान का एक उत्तम उदाहरण भी है। नहेम्याह की पुस्तक प्रभावशाली, भक्त अगुआई के विषय में अनेक सबक सिखाती है। यह कार्यकुशलता और प्रभावकारिता का एक शक्तिशाली उदाहरण पेश करती है। इसे मन में रखकर कृपया पुस्तक को पढ़ो। और संगठन, प्रशासन और अगुआई की निपुणताओं के सब सिद्धान्तों को विषय में जो कुछ पता चले लिख लो।

6. आत्मिक पहचान

जीवन के किसी भी क्षेत्र में, प्रभावशाली अगुआई काफी हद तक सही फैसले करने पर निर्भर होती है। एक जवान कार्यकारी को एक बार एक वृद्ध, अनुभवी, और उत्कृष्ट रूप से सफल व्यवसायी से बात करने का अवसर मिला। उसने उसे बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा, "जनाब, सफलता का रहस्य क्या है?" "सही फैसले करना", वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया। "और सही फैसले कैसे किए जाते हैं?", जवान ने पूछा. "अनुभव!", वृद्ध ने कहा। "तो अनुभव कैसे पाया जा सकता है?", जवान ने आगे पूछा। "गलत फैसले करने के द्वारा", सफल व्यक्ति का उत्तर था।

मसीही अगुआई के क्षेत्र में भी सही फैसले करना सफलता का एक सिद्धान्त है, परन्तु इसे कर सकना कई गलत फैसले करने का परिणाम होना आवश्यक नहीं है। हमारे सही फैसलों का स्रोत आत्मिक पहचान का विकास होना चाहिए। परमेश्वर के काम में हम अपने फैसले करने के साथ प्रयोग नहीं कर सकते हैं। हम गलत फैसले करने का जोखिम नहीं ले सकते हैं, क्योंकि हम उन फैसलों के लिए जिम्मेवार हैं जिस पर प्रभु का नाम है, और कुछ हद तक उसका नाम दाँव पर है। एक खतरा है कि हमारी गलतियों का परमेश्वर के नाम और उसके बारे में लोगों के दृश्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। इसलिए हमें यह निश्चित करने के लिए बहुत ध्यान देना चाहिए कि हम ऐसा गलतियाँ न करें जिससे परमेश्वर की सम्पूर्णता पर गलत प्रभाव पड़े।

सही फैसलों पर पहुँचने का तरीका यह निश्चित करना है कि हमारे सारे फैसले परमेश्वर के सामने रखे हों और कि हम उसके उत्तर की ओर एक खुला हृदय और मन बनाए रखें। हमें अपनी योजनाएँ परमेश्वर के सामने उसी प्रकार रखनी हैं जिस प्रकार हिजकिय्याह ने पत्र को उसके सामने रखा था और उसके मार्गदर्शन और निर्देश के लिए उसकी प्रतीक्षा की थी। (2 राजा 19:14-19)। परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमें प्रभु के नाम का सम्मान करने और ऊँचा उठाने का आदेश मिला हुआ है। इसलिए हम बहुत सारी गलतियाँ नहीं कर सकते हैं। विशेषकर तब जब गलतियाँ गम्भीर, दूर तक प्रभावित करनेवाली, और परमेश्वर के काम को हानि पहुँचाने वाली हों।

7. आज्ञापालन

"सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से , और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।" (1 शमूएल 15:22-23)। परमेश्वर आज्ञापालन को बहुत महत्त्व देता है। यह इसलिए है क्योंकि, सेवा का काम, कलीसिया का काम, राज्य का बनाना, सब परमेश्वर का काम है। वह सब कुछ पर प्रधान है। इसलिए इसका हर पहलू उसकी पहल-शक्ति से आना चाहिए, और हमारा हर कार्य उसकी

आज्ञा का पालन होना चाहिए। इसका कोई भी विकल्प अविचार्य है। परमेश्वर इसे विद्रोह और हठ कहता है, और कहता है कि उसकी दृष्टि में यह जादू-टोना, ग्रहदेवताओं से पूछना, और मूर्ति पूजा के समान है।

अध्याय आठ - पारस्परिक सम्बंध

प्रभावशाली अगुआई अच्छे पारस्परिक सम्बंधों की माँग करती है। एक अगुवे को उसके अगुआई के दल और उसके "अनुयायियों" के साथ अच्छे से सम्बंध रखना चाहिए। यीशु उसके चेलों के साथ उसके सम्बंध में इसका एक आदर्श उदाहरण देता है। अगुआई का एक अत्यावश्यक पहलू लोगों का कुशलता के साथ प्रबंध करना है, क्योंकि लोग अगुवे के सबसे बड़े साधन हैं।

प्रभावशाली अगुवे को चाहिए:

लोग

कब एक अगुवा एक अगुवा नहीं है? - जब कोई उसके पीछे नहीं चलता!
एक अगुवे का न्याय उसकी अगुआई की निपुणताओं पर नहीं किया जाना चाहिए, परन्तु उसके अनुयायियों के गुण पर होना चाहिए।

- यीशु ने बारह चेलों को सावधानी से चुना था।
- उसने उनको चुनने में समय लिया था।
- उसने अगुआई के लिए उनकी सम्भावना को पहचाना था।
- उसने उनके साथ अच्छा समय बिताया था।
- उसने उसका जीवन उनके साथ बाँटा था।
- उन्होंने उसके साथ मिलकर सीखा था।

यीसु द्वारा चुनी गई नीति पर विचार करना दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण दोनों है। उसका काम संसार को मोल देकर छुड़ाना और फिर उसके उद्धार के सुसमाचार से उसे भरना था। यह देखना मोहक है कि उसने दूसरे काम को किस प्रकार किया था। यह देखना भी जिज्ञासा से भरा हुआ है कि कैसे उसने उसकी सेवा का मुख्य भाग बारह चेलों को प्रशिक्षण देने में बिताए थे। इस विषय पर उसका उदाहरण सम्भावित अगुवों को चेला बनाने के महत्त्व पर बल देना था।
डॉ. बिली ग्रहम, जिन्होंने इतिहास में किसी से भी अधिक लोगों को सुसमाचार सुनाया है, से एक बार पूछा गया था कि यदि उन्हें जीवन जीने का एक और अवसर मिले तो वे क्या भिन्न तरीके से करेंगे। उनका उत्तर अत्यन्त दिलचस्प था। उन्होंने कहा कि यदि उन्हें उसका जीवन दोबारा जीने और उसकी सेवा को दोबारा करने का अवसर मिले तो वह अपना ध्यान बारह पुरुषों को प्रशिक्षण देने, और अपना जीवन और सब कुछ जो वह जानते हैं उनमें उँडेलने में लगाएँगे।
अगुवे का प्रमुख काम दूसरे अगुवों को तैयार करना होना चाहिए!!! एक मनुष्य सैकड़ों लोगों की प्रभावशाली तरीके से रखवाली करने की आशा नहीं कर सकता है। उसे सहयोगियों, सहायकों और अधीन-रखवालों की आवश्यकता होगी। ऐसे लोगों को लेकर और प्रशिक्षण देकर अगुवा उसकी सम्भावना को बहुत अधिक बढ़ा लेता है। इसलिए एक अच्छा वरिष्ठ पास्टर उसके पास्तरीय दल को तैयार करने पर और वे बदले में सारे झुँड की रखवाली करने पर ध्यान देंगे।
हर अगुवे की उसके वरदानों के अनुसार सीमाएँ होती हैं। उदाहरणार्थ, एक पास्टर की योग्यता 100 व्यक्तियों की रखवाली करना हो सकता है। एक बार जब वह उस संख्या तक पहुँचता है तो वह कुछ सदस्यों और लेगा तो कुछ को खो देगा, परन्तु मण्डली लगभग 100 की संख्या के आस-पास ही रहेगी। वह उस घेरे को कैसे तोड़ सकता है? एक प्रत्यक्ष तरीका प्रचार, सिखाने, प्रशासन करने और सामान्य अगुआई की उसकी निपुणताओं में सुधार लाना है। इससे वह 150 सदस्यों तक पहुँच सकता है। परन्तु उससे अच्छा तरीका दूसरे सेवकों को खोजना है जिनके वरदान और योग्यताएँ उसके अपने वरदानों और योग्यताओं को पूरा करेंगी। उदाहरण के लिए, वरिष्ठ पास्टर की एक प्रभावशाली सुसमाचार सुनाने की सेवा हो सकती है, परन्तु वह एक अच्छा रखवाला नहीं है। वह बहुत लोगों को मसीह में लाता है, परन्तु वह उन्हें रख नहीं पाता है। इसलिए उसे ऐसे किसी को खोजना है जिसका वरदान

रखवाली करना है। इन वरदानों के मिश्रण से सदस्य बढ़कर 300 तक पहुँच सकते हैं। यदि दूसरे वरदानों को भी सही तरीके से जोड़ा गया तब लोगों की संख्या नाटकीय तरीके से बढ़ सकती है।

उसने उन्हें सम्बंध के द्वारा सिखाया

यीशु के चेलों ने केवल उसके साथ रहकर ही बहुत कुछ सीखा था। उन्होंने वह सब कुछ सुना जो उसने कहा था, और सब कुछ देखा जो उसने किया था। यह अपने मेन्टर से सीखने का एक आदर्श उदाहरण है। चलों ने केवल उसके साथ सम्बंध में रहकर काफी कुछ सीखा था। जो उन्होंने सीखा था उसका अधिकाँश अवचेतन में सोख लिया होगा। वे स्कूल में पढ़ाई करने नहीं गए थे। उनका प्रशिक्षम करने के द्वारा सीखना था। उन्होंने यीशु के सिखाने के आत्मिक तरीके से सीखा था जो था करने के द्वारा सीखना। यीशु ने कई चीजें उसके चेलों के सामने की थीं। वे देखते थे वह कैसे करता है और बाद में उसने उन्हें भी उन्हीं चीजों को करने को कहा था। किसी ने प्रक्रिया का इस सरल तरीके से वर्णन किया है।

1: मैं करता हूँ, और तुम मुझे करते हुए देखो।
2: मैं करता हूँ, और तुम करने में मेरी सहायता करो।
3: तुम करो और मैं तुम्हारी करने में सहायता करूँगा।
4: तुम करो और मैं तुम्हें करते हुए देखूँगा।
5: तुम करो, और कोई दूसरा तुम्हें करते देखेगा।

उसने उन्हें काम कैसे करना है दिखाया था

यीशु ने उसके चेलों को काम पर प्रशिक्षण दिया था। उसने उसकी सेवा के हर पहलू को उनको करके दिखाया था। उन्होंने जैसे उसे करते देखा सीखा था, और फिर उसने कहा कि वे भी वैसे ही करें जैसे उसने उसे करते देखा था। यही तरीका हमारे लिए भी बहुत प्रभावशाली तरीके से काम करेगा। अगुआई का यह तरीका कई पास्टरों को थकानेवाला और अत्यन्त दबाव वाला लगता है। कुछ को उनके काम को दूसरों के साथ बाँटने में कठिनाई होती है। वे अकेले काम करना, और अगुआई को अपने पास रखना पसन्द करते हैं। परन्तु अगुआई के इस निरंकुश तरीके का जिसमें अगुवा उसके भाइयों से दूर अकेले में काम करता है, बाइबल में कोई स्थान नहीं है। यह प्रतिबन्धों और गुप्त खतरों से भरा हुआ है। इस में उन जाँचों और सन्तुलनों की कमी होती है जो सच्ची दल की सेवा दे सकती है, और अकेले अगुवे को उन खतरों के हाथ छोड़ सकते हैं जो यदि उसे उसके साथियों की सुरक्षा मिली होती उस पर नहीं आते थे। जिस तरीके को यीशु ने इस्तेमाल किया और करके दिखाया सबसे अधिक उत्पादक है। उसने चेलों को अपने आप-पास इकट्ठा किया और उसका जीवन उनके साथ बाँटा। ऐसा करते हुए उसने परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के राज्य के तरीके को दिखाया था। उसने उसके चेलों को दिखाया कि राज्य का काम कैसे करना है और फिर उन्हें भी वही काम करने के लिए नियुक्त किया।

उसने उन्हें जिम्मेवारी दी

यीशु ने कहा, "तुम ही उन्हें खाने को दो।" (मत्ती 14:16)। यीशु ने उसके चेलों को कोई शीर्षक, या पद नहीं दिया था; उसने जिम्मेवारियाँ दीं। उसने उन्हें करने के लिए काम दिए थे। जब भीड़ भूख से मूर्छित होने पर थी और चेले इस बात को यीशु के ध्यान में लाए थे, उसने चुनौती को बिलकुल उनके सामने रखा था। "उनका जाना आवश्यक नहीं", उसने कहा, "तुम ही उन्हें खाने को दो।" उसकी सहायता और आशीष से वे हज़ारों लोगों को खिला सके थे। चेलों के लिए कैसा अनुभव था। दिन के अन्त में कितना आनन्द मिला होगा जब चेलों ने इस उपलब्धि पर विचार किया होगा।

इस प्रकार, "जब आप लोगों को भरती कर रहे हो, तो उन पर नज़र रखो जो जिम्मेवारी लेना चाहते हैं, न कि वे जो अधिकार लेना चाहते हैं।" मैं ने इसे एक सहायक कसौटी पाया है। यदि आपके पास लोग हैं जो जिम्मेवारी और उसके साथ आनेवाले काम को लेने के उत्सुक हैं, तो आपके पास कर्तव्यनिष्ठ और परिश्रमी लोग होंगे। परन्तु यदि आप ऐसे लोगों को लेते हो जो पद और शीर्षक, और उसके साथ आनेवाले अधिकार की चाह रखते हैं, तो आप अकसर पाएँगे कि ऐसे लोग परिश्रम करने में रुचि नहीं रखते हैं।

उसने उन्हें अधिकार सौंपा था

जिम्मेवारी सदा अधिकार से पहले आनी चाहिए। अधिकार उस किसी को दिया जाता है ताकि वह अपनी जिम्मेवारी अच्छी तरह निभा सके। जिस अधिकार को यीशु ने दिया था उसके नाम का अधिकार था। जब उसने चेलों को संसार में भेजा था, उसने उन्हें

सारे संसार में और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करने की, बड़ी जिम्मेवारी सौंपी थी। तब उन पर अपना अधिकार सौंपा, "वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी।" (मरकुस 16:15-18)।

यह अधिकार है जो काम के साथ चलती है। उसे करने का अधिकार जिसे करने को यीशु ने कहा था। सारे संसार में जाना, सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करना, सारी जातियों को चेला बनाना, कलीसिया और पृथ्वी पर उसके राज्य को स्थापित करना। हमें यह सब "उसके नाम में", करना है, अर्थात्, क्योंकि उसने इसी की आज्ञा दी है।

उसने उनको सामर्थ्य दिया

यीशु ने उसके चेलों को सामर्थ्य दिया, "जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" (लूका 24:49)। यह आत्मा का सामर्थ्य है जो हमें उन कामों को करने की योग्यता देता है जिन्हें यीशु ने किया था, और जिन्हें करने के लिए उसने उसके चेलों को नियुक्त किया था। "परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। (प्रेरितों 10:38)। "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।" (यूहन्ना 14:12)

उसने उनके कामों का निरीक्षण किया

जैसे यीशु और उसके चेले सारे देश भर में इकट्ठे सफर करते थे, वह निरन्तर उनके कामों को देखता और निरीक्षण करता था। वह उनका निरीक्षक था। जैसे वे उनके विभिन्न काम करते, वह उनके रवैयों का निरीक्षण भी करता था, और सही आत्मा बनाए रखने के लिए उनको सुधारते और ताड़ना दिया करता था।

उसने उनके काम को जाँचा और सुधारा

कई बार यीशु को उसके चेलों को सुधारना पड़ता था। कभी-कभी उसे उनको फटकारना भी पड़ता था, जो वह अकसर करता था। यह अकसर उनके रवैये होते थे जिनको सुधारने की आवश्यकता पड़ती थी, न कि उनके काम। <u>परन्तु परमेश्वर के काम में रवैये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं।</u>

इस सच्चाई के बावजूद कि उसे उसके चेलों को बारम्बार सुधारना पड़ता था, यीशु इसे अकसर एक सकारात्मक और उत्पादक तरीके से किया करते थे। वह सुधार दे पाता और इस तरीके से फटकार पाता था जिससे चेले न निराश होते या न उनकी आत्माएँ टूटतीं बल्कि उनको उचित सिधाई में लाती थीं। सामान्यतः लोग उनके लिए आपकी अपेक्षों के स्तर पर खरे उतरते हैं। यीशु ने उनसे सबसे ऊँचे स्तर की अपेक्षा की और पाया भी।

उसने अपेक्षा की कि वे उत्पन्न करें

हर व्यक्ति से जिसको चेला बनाया जाता है अपेक्षा की जाती है कि वह बाद में किसी दूसरे को चेला बनाए। असल में यदि पता लगाना हो कि कोई कितनी अच्छी तरह चेला बनाया गया है तो यह देखना चाहिए कि उसके चेले कैसा काम कर रहे हैं। "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2।

कुछ रवैये जिन्हें उसने उनमें (उनके मन में छापा था) बैठाया था:

दीनता

यीशु उसके चेलों के लिए दीनता का एक निरन्तर उदाहरण था। उसने इस अत्यावश्यक सच्चाई को उदाहरण और नियम द्वारा सिखाया था। परमेश्वर में मन में दीन वालों की ओर अनुकूल झुकाव है। उसे अभिमान, और अभिमानियों से घृणा होती है, परन्तु वह दीनों को भरपूर दया और अनुग्रह देता है। पतन से पहले अभिमान आता है, परन्तु परमेश्वर के राज्य में पदोन्नति से पहले दीनता आती है।

एकता

"यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।" (मत्ती 18:19)। परमेश्वर एक एकता, एक अनेकत्व है, और वह एकता से प्रेम करता और आशीष देता है। (भजन 133)। वह अगुवों के एक दल में एकता पर बल देता है और जहाँ फूट और बेइमानी होगी वह आशीष नहीं देगा।

 # मनोबल

एक व्यक्ति में, मनोबल का अर्थ है खुशी में होना, भविष्य के विषय में सकारात्मक अपेक्षा और उत्तेजना से भरा हुआ होना। कोई जो उसके सामने के काम में सम्मिलित होने के लिए उत्तेजित और उत्सुक है।

लोगों के समूह में, इस में ऊपर की सब चीजें सम्मिलित हैं परन्तु उनके अतिरिक्त एक अत्यावश्यक एकता, एकत्व, समूह की संयुक्त योग्यता में विश्वास है। यह एक रवैया है जिसे सैनिक स्थिति में बहुत महत्त्व दिया जाता है। जब सैनिकों की एक टुकड़ी के मनोबल की बात होती है तो इसका अर्थ है कि वे आश्वस्त, सुरक्षित, सकारात्मक हैं और कि यह मनोदशा उन सब में सामान्य है। उनमें उनकी सेना या टुकड़ी की संयुक्त योग्यता में विश्वास की एक भावना है। इसे अकसर "दलभावना" भी कहते हैं। एकता, एकत्व, मेलमिलाप, परस्पर निर्भरता और पारस्परिक सम्मान की भावना। इस आत्मा को यीशु ने उसके चेलों के मनों में डालने का प्रयत्न किया था और जिसे वह आज के मसीही अगुवों में भी देखना चाहता है।

अध्याय नौ - फैसले करना

अच्छी अगुआई काफी हद तक सही फैसले करने पर निर्भर होती है। हर अगुवे को फैसले करने की आवश्यकता का निरन्तर सामना करना पड़ता है और उसकी प्रभावकारिता काफी हद तक उनके सही होने की ऊँची दर पर निर्भर करती है। एक प्रभावशाली अगुवे को एक अच्छा फैसले करनेवाला होना चाहिए, क्योंकि उसकी प्रभावकारिता इस महत्त्वपूर्ण विषय पर बहुत निर्भर है।

फैसले करने के कुछ शत्रु:

1. असफलता का डर

हर सम्भावित अगुवे को असफलता के डर का सामना करना और निपटना पड़ता है। जिस व्यक्ति को यह समस्या कभी नहीं हुई है सम्भवतः अति आत्मविश्वासी है और "गिरने" के खतरे में है (नीतिवचन 16:18)। बाइबल के अधिकाँश अगुवों को इस डर को जीतना पड़ा था, और तब परमेश्वर उन्हें असाधारण उपलब्धियों में ले जा सका था।

2. अपार्यप्त जानकारी

सही फैसले करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विषय के बारे में जितनी अधिक जानकारी प्राप्त की जा सके की जानी चाहिए। अच्छे फैसले अपर्याप्त जानकारी से नहीं किए जा सकते हैं। यह विशेषकर तब और भी आवश्यक है जब दो विरोधी पक्षों के झगड़े को निपटाना होता है। जब फैसला एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में करना पड़ता है, तब समय लेकर सारे उपलब्ध तथ्यों और जानकारी को प्राप्त कर लो। कभी भी पक्षपाती परिदृश्य से फैसला मत करो, इससे आपकी विश्वासनीयता पर एक गम्भीर धब्बा लग सकता है।

3. विश्वास की कमी

फैसले करने में आत्मविश्वास की कमी से डरो मत। हमारे कई फैसलों का प्रभाव दूर तक जाता है और कई लोगों के जीवनों को प्रभावित करता है। आत्मविश्वास की कुछ कमी सावधानी लाती है और यदि यह सही फैसला करने में सहायता करती है तो यह एक अच्छी चीज है।

आत्मविश्वास की कमी के कारण आप कुछ महत्त्वपूर्ण चीजें कर सकते हैं:

- अः अधिक सावधानी बरतो।
- आः अधिक उत्सुकता से प्रार्थना करो।
- इः परमेश्वर की बुद्धि अधिक उत्सुकता से खोजो। (याकूब 1:5-7)
- ईः अपने विश्वसनीय मित्रों की सलाह लो। (नीतिवचन 11:14)

4. चीजों को टाल देने की आदत

आत्मविश्वास की कमी और व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना फैसले करने को एक डरावनी और बोझिल जिम्मेवारी बना देता है। ऐसी भावनाओं की ओर आदर्श प्रतिक्रिया फैसले करने में टाल-मटोल करना है, परन्तु फैसले को लगातार स्थगित करते रहने से विषय पहले से अधिक उलझन भरा हो जाता है।

महत्त्वपूर्ण फैसलों को कभी भी हड़बड़ी में नहीं किया जाना चाहिए। कभी-कभी सबसे उत्तम फैसला निष्क्रिय रहना होता है। परन्तु, आत्मविश्वास की कमी छोटे-छोटे फैसले करने में देरी करवा सकता है। देरी न केवल समय चुराता है, यह गड़बड़ भी पैदा करता है। छोटे-छोटे फैसले पड़े रहते हैं और वे हमें पराजित कर देते हैं। अपने सामान्य कार्यक्रम में फैसले करते रहने का प्रयत्न करो। उन्हें अपने सिर पर चढ़ने मत दो।

महत्त्वपूर्ण फैसलों में परामर्श की जरूरत पड़ती है।

"जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।" (नीतिवचन 11:14)। "इसलिए जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मंत्रियों के साथ होती है।" (नीतिवचन 24:6)। पौलुस कहता है: "परन्तु हम में मसीह का मन है।" (1 कुरिं. 2:16)। एक व्यक्ति के लिए उसमें "मसीह के मन" के होने का दावा करना अत्यन्त जोखिम भरा है यदि वह उस मण्डली का भाग है जो मामलों पर उसके फैसलों से सहमत नहीं होते हैं। सामूहिक रूप से मसीह के मन को खोजना और एक निष्कर्ष पर पहुँचना अधिक सुरक्षित है जहाँ दावा किया जा सके कि "पवित्र आत्मा को और हम को ठीक जान पड़ा।" (प्रेरितों 15:28)

अभिमान और धोखा दो सामान्य कारण हैं जिनके कारण कुछ अगुवे उनके साथियों से भक्त परामर्श नहीं लेते हैं। बड़े-बड़े फैसले, विशेषकर जिनसे दूसरे लोगों के जीवन मूल रूप से प्रभावित होते हैं, सामूहित रूप से पुष्टि पाए होने चाहिए। कोई भी अगुवा जो उसके अधिकाँश मित्रों और सलाहकारों की सलाह के विरुद्ध एक काम को करना चाहता है, एक ऐसे काम को हाथ में लेने के खतरे में है जो असफल होनेवाला है।

अच्छे फैसले करना:

सारे उपलब्ध तथ्यों को इकट्ठा करो

इसे एक गुप्तचर एजेंसी के तरीके से नहीं किया जाना चाहिए, परन्तु सम्पूर्णता के रवैये से और सब सम्बंधित की निष्पक्षता के लिए किया जाना चाहिए। इसे विधिवादिता के तरीके से नहीं किया जाना चाहिए, परन्तु अनुग्रह और कृपा के साथ किया जाना चाहिए।

उनका ठीक-ठीक और निष्पक्षता के साथ मूल्याँकन करो और अर्थ निकालो

परमेश्वर को बाइबल में एक अनुग्रकारी और दयालु न्यायी के रूप में, और एक ऐसे के रूप में जिसके निर्णय पूरी तरह विश्वासनीय हैं पेश किया गया है। अब्राहम ने कहा, "क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे ?" यह एक भाषणगत प्रश्न था जो एक प्रश्न होने के बदले एक कथन था। यह असल में कह रहा था कि जिसने सारी सृष्टि की रचना की है उसके लिए गलती करना असम्भव है। प्रत्यक्ष रूप से हमारी मानवता हमें परमेश्वर के जितना विश्वासनीय होने से रोकती है। फिर भी, परमेश्वर के सेवकों और प्रतिनिधियों के रूप में, हमें सदा अतिउत्तम न्यायी, विश्वासनीय, सही और भरोसेमंद होना चाहिए।

विषय की पूरी की पूरी सम्भव जानकारी पाओ

मैं यहाँ उस बुद्धि की बात कर रहा हूँ जो ऊपर से उतरती है। (याकूब 3:17)। "पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है।" इस प्रकार की बुद्धि उन सब के लिए उपलब्ध है जो सच्चाई से खोजते हैं। "पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटि हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी। पर विश्वास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे, क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। (याकूब 1:5-6)

परमेश्वर की बुद्धि को एक स्थिति में लाना, और विषय पर उसके मन को जानना, आवश्यक है। हमें, स्थितियों में उसके निर्णय को लाने के लिए, नियुक्त किया गया है। हमें सदा उसकी प्रदान की गई बुद्धि के साथ महत्त्वपूर्ण फैसले करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इसे उत्साही, धैर्यवान प्रार्थना का एक विषय बनाओ

कभी भी हड़बड़ी में कोई फैसला मत करो। कभी भी मत सोचो कि एक महत्त्वपूर्ण फैसले को ऐसी जल्दी में करना होगा कि आपके पास इसके विषय में प्रार्थना करने को समय ही न हो। शीघ्रता के साथ आगे बढ़ने में कई गतलियाँ हो जाती हैं।

सारे विषय को परमेश्वर के सामने रखो

"इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा। तब यहोवा के भवन में जाकर उसको यहोवा के सामने फैला दिया। (2 राजा 19:14)। निश्चय करो कि आप सारे विषय को जानबूझकर परमेश्वर के सामने रखोगे और विश्वास, प्रार्थना और आत्मिक सहभागिता में उसे समर्पित करोगे। जैसे ऐसा करते हो, तो अपनी आत्मा में उसका उत्तर और प्रभाव पाने के लिए उसकी बाट जोहो।

"प्रभु का मन" पाने का निश्चय करो।

कभी-कभी हम दाँव पर लगे विषयों के बारे में इतने सचेत होते हैं, और सम्मिलित लोगों के दृष्टिकोण के बारे में भी, और साथ में हमारे अपने स्वाभाविक विचार पर, कि हम स्थिति पर परमेश्वर के मन का पता लगाना भूल जाते हैं। सदा याद रखो कि परमेश्वर का परिदृश्य किसी दूसरे से इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि यदि हम परमेश्वर के मन से चूक जाते हैं, तो हम ने सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व को खो दिया है।

निकटतम और भरोसेमंद सलाहकारों से परामर्श करो

काम में और परमेश्वर के राज्य में अधिकाँश फैसले सामूहिक रूप से किए जाने चाहिए। किसी अकेले व्यक्ति को प्रभु के मन पर एकाधिकार नहीं है। सर्व महत्त्वपूर्ण फैसलों को सहमति के साथ, बहुगुण अगुआई में किया जाना चाहिए जो आखिरकार लिए गए फैसलों के लिए जिम्मेवार होंगे।

प्रार्थनापूर्वक परिणाम की कल्पना करने का प्रयत्न करो

जैसे आप स्थिति के विषय में प्रार्थना करते हो, तो अपनी आत्मा में परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए परिणाम क्या हो सकता है देखने का प्रयत्न करो। यदि आप इसे एक शुद्ध अभिप्राय के साथ प्रार्थनापूर्वक करते हो तो आप एक भविष्यसूचक परिदृश्य पा सकते हो। आप परमेश्वर के वांछित परिणाम को आत्मा में "देख" सकते हो। तब आप उसके प्रकाश में अपना फैसला कर सकते हो, और उसके पूरा होने की प्रतीक्षा कर सकते हो।

याद रहे कि:

एक फैसला तब ही अच्छा फैसला है यदि इससे वांछित परिणाम मिलता है।

एक अच्छे फैसले का सदा एक व्यावहारिक परिणाम होगा। जबकि एक फैसला सैद्धान्तिक है, यह अभी एक अच्छा या सही फैसला नहीं हो सकता है। सही फैसले सही परिणाम लाते हैं।

अच्छे फैसले करने में सम्मिलित है:

1. सही निर्णय लेना।
2. दृढ़ निश्चय प्रयोग करना।
3. स्थिर समर्पण प्रयोग करना।
4. उपयुक्त कार्य करना।
5. वांछित परिणाम प्राप्त करना।

सारांश:

प्रभावशाली अगुआई मात्र अच्छे फैसले करना ही नहीं है, यह उन्हें अधिकार और निर्णायकता के साथ करना है।

1. अच्छे फैसले आपको सही मार्ग पर लाते हैं।

2. और अधिक अच्छे फैसले आपको इस पर रखते हैं।

3. सही फैसले आपके अनुयायियों को बढ़ाते हैं।

4. व्यक्तिगत फैसले इस प्रकार करने चाहिएः

   अ. शान्ति से, ढीले होकर, और बिना दबाव के बैठ जाओ।

   आ. ध्यान भंग करने वाली चीजों को निकाल दो।

   इ. प्रार्थना में अपने विचार परमेश्वर को दे दो।

   ई. अपनी बाइबल और एक नोट-बुक लो।

   उ. अपनी आत्मा में परमेश्वर के साथ बातचीत करो।

   ऊ. सब कुछ जो मन में आता है उसे लिख लो।

5. फैसले करने का एक नुसखाः

   अ. प्रार्थनापूर्वक रवैया।

   आ. सुननेवाला हृदय।

   इ. निर्णायक मन।

   ई. निश्चित इच्छा-शक्ति।

   उ. सुविचारित क्रिया।

6. सोच-विचार में स्पष्टता।

   गड़बड़ के सब तत्त्वों को निकालने का प्रयत्न करो।

7. अनिश्चय एक खराब फैसला है।

   कमज़ोरी के क्षणों में हम कभी-कभी सोच सकते हैं कि हम एक फैसला नहीं कर सकेंगे और इसलिए हम करने में टाल-मटोल करते हैं। परन्तु, यह अपने आप में एक खराब फैसला बन जाता है। नहीं फैसला करने का फैसला कभी-कभी एक खराब फैसला होता है। फैसले में देरी करना कुछ अगुवों की आदत बन जाती है। वे एक महत्त्वपूर्ण फैसला करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। यह एक अगुवे के लिए एक बहुत घटिया गुण है और ऐसा है जिसे सफल होने के लिए जीतना आवश्यक है। अगुआई का अनिश्चय दल के सदस्यों के लिए अत्यन्त निराशजनक और गड़बड़ी पैदा करनेवाला हो सकता है।

8. एक खराब फैसला मामले का अन्त नहीं होना चाहिए।

   कोई भी भ्रमतीत नहीं है। हर एक कभी न कभी गलती कर सकता है परन्तु इसे घातक होने की आवश्यकता नहीं है। सदा स्वीकार करने के लिए तैयार रहो, "मैं ने एक गलत फैसला किया।" दीन बनो और इसे ठीक करने के लिए तैयार रहो। यह रवैया असल में विश्वास को बढ़ा सकता है। आप भ्रमातीत नहीं हो। न ही आपके साथी और अनुयायी हैं। यदि आप दीन और पश्चातापी बने रहोगे तो वे आपको क्षमा करेंगे और सुधारने में सहायता करेंगे।

9. बहुत सारे गलत फैसले लोगों के विश्वास को नष्ट कर देते हैं।

   जबकि कुछ गलतियाँ अनिवार्य हैं, फिर भी यदि बहुत सारी की जाती हैं और एक अगुवा गलत फैसले करने का नाम पाने लगता है, तब उसके साथी उसमें एक अगुवे के रूप में विश्वास खोने लगेंगे। गलत फैसले करना आपकी अगुआई की योग्यताओं में कभी भी विश्वास पैदा नहीं करेंगे।

10. फैसले करने के तीन महत्त्वपूर्ण तत्त्व।

   जबकि मुख्य फैसलों के लिए ईश्वरीय बुद्धि की आवश्यकता होती है, बहुत सारे छोटे छोटे फैसले करने पड़ते हैं जिनके लिए ईश्वरीय प्रकटीकरण आवश्यक नहीं होती। कोई भी व्यक्ति जो अगुआई का काम करता है उसे निरन्तर ऐसे फैसले करने की आवश्यकता पड़ेगी और उसे उनको उसकी अपनी बुद्धि और अनुभव से विश्वसनीयता के साथ करने योग्य होना चाहिए। तीन मूल साधन हैं जो इस प्रक्रिया में सहायक हो सकते हैं:

   अ. सामान्य बुद्धि

   यह किसी भी प्रकार के अगुवे के लिए आवश्यक है। दुख की बात है कि हम सब पाते हैं कि, "सामान्य बुद्धि इतनी सामान्य नहीं है।" दूसरे शब्दों में कई लोगों में इस क्षेत्र में कमी है। अपनी सामान्य बुद्धि को इस्तेमाल करना अपना व्यवसाय बना लो। जितना अधिक इसे इस्तेमाल करोगे, उतनी अधिक यह विकसित होगी।

   आ. समर्पण

   एक बार जब आप ने फैसला किया है, तब आपको इसे पूरा करने के लिए पूरी तरह समर्पित होना चाहिए।

इ. साहस

फैसला करना केवल आरम्भ है। एक बार इसके पूरा होने में समर्पित हो गए हो तब आपके पास किसी भी कीमत पर इसे पूरा करने का साहस होना चाहिए।

अध्याय दस - प्रतिनिधान की कला

हम ने फैसले करने के महत्त्व की संक्षेप में चर्चा की है और कि प्रभावशाली अगुआई के लिए यह कितना महत्त्वपूर्ण है। अगला विषय जो प्रभावशाली अगुआई के लिए निर्णायक है प्रतिनिधान के सिद्धान्तों को पहचानना और अभ्यास करना है। अब हम अपना ध्यान सम्मिलित मूल विषयों की ओर करेंगे।

अगुआई परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेवारी है।

मसीही अगुआई बाकी सब प्रकार की अगुआई से भिन्न है। राजनीति, उद्योग, व्यापार या वाणिज्य में अगुवे मानवीय योग्यताओं और निपुणताओं से काम करते हैं, परन्तु मसीही अगुआई परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेवारी के लिए काम करती है।
सब अगुवे अधिकार के अधीन और किसी को उत्तरदायी हैं। परन्तु मसीही अगुवे परमेश्वर को उत्तरदायी हैं।

अगुआई त्यागी नहीं जा सकती है (औपचारिक रूप से त्याग देना)

हम जानते हैं कि प्रभावशाली अगुवा एक बुद्धिमान काम सौंपनेवाला है परन्तु कुछ चीजें कभी भी सौंपी नहीं जानी चाहिए और अन्तिम अगुआई उन में से एक है। मूसा प्रतिनिधान का एक प्रभावशाली व्याख्याता बना था परन्तु वह परमेश्वर के लोग इस्राएल का प्रमुख अगुवा बना रहा था।
अधिकाँश कलीसियाएँ जो रचनात्मक बढ़त अनुभव कर रही हैं, उनका एक पास्तरीय या सेवकाई दल होता है और वे दल की सेवा के अच्छे सिद्धान्त विकसित करते हैं। परन्तु, किसी को उस दल का अगुवा होना ही है। कलीसिया के वातावरण में वरिष्ठ पास्टर वह व्यक्ति होता है। वह दल की अगुआई के विविध नमूनों में से किसी के साथ भी काम कर सकता है, परन्तु उसे अगुआई की प्रक्रिया के सबसे आगे होना है।
वह, परमेश्वर के अधीन, कलीसिया को प्रेरणा और दिशा देने के लिए जिम्मेवार है। वह डीकनों या एल्डरों की समिति के साथ काम कर सकता है, परन्तु उसका अन्तिम उत्तरदायित्व परमेश्वर की ओर है। विभिन्न कलीसिया की स्थितियों में जहाँ मैं ने एक पास्टर का काम किया है, मैं ने एल्डरों की समिति को अकसर कहा है, "मैं आपके **साथ** काम करूँगा, परन्तु आपके लिए नहीं। परमेश्वर मेरा मालिक है और वही है जिसे मुझे हिसाब देना होगा।
परन्तु, एक अगुवा न अकेले काम कर सकता है और न उसे करना चाहिए। यदि वह अकेले में काम करने का प्रयत्न करता है, तो उसकी व्यक्तिगत योग्यताएँ अत्यन्त सीमित हैं। एक सबसे महत्त्वपूर्ण निपुणता जिसे उसे सीखना और काम में लाना चाहिए, प्रतिनिधान (सौंपने) और एक सेवा का दल कैसे बनाना है की योग्यता है।

प्रतिनिधान की परिभाषा:

"एक काम दूसरे को सौंपना"
"दूसरे को अपनी ओर से काम करने का अधिकार देना"

प्रतिनिधान की सफलता निर्भर करती है:

- सौंपने की आवश्यकता को पहचानना।
- उन कामों को पहचानना जिन्हें सौंपा जा सकता है।
- उन कामों को पहचानना जिन्हें सौंपा नहीं जाना चाहिए।

प्रतिनिधान के विषय में तीन सामान्य रवैये हैं:

- जो कुछ भी सौंपते नहीं हैं।

- जो सब कुछ सौंप देते हैं।
- जो जानते हैं क्या सौंपना है और क्या नहीं सौंपना है।

प्रतिनिधान बाइबल का विचार है।

1. परमेश्वर ने मनुष्यजाति के उद्धार का काम उसके पुत्र को सौंपा था।

उद्धार के महान उद्देश्य में, परमेश्वर ने उसके पुत्र को अपनी ओर से हमारे संसार में, हमारे उद्धार को मोल लेने, भेजा। यीशु ने कहा, "ताकि हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूँ।" (इब्रानियों 10:7)। परमेश्वर ने उसके पुत्र को हमारा उद्धारकर्त्ता होने का काम सौंपा।

2. मूसा ने अपने साथ इस्राएल पर शासन करने का काम प्रचीनों को सौंपा था।

निर्गमन 18:13-27 में, हमारे पास प्रतिनिधान के सिद्धान्तों की सबसे उत्तम व्याख्या और उदाहरण है। मूसा का ससुर, यित्रों ने उसके दामाद मूसा को अगुआई की इस शैली की आवश्यकता और कला की शिक्षा दी थी। जिन सिद्धान्तों को यित्रों ने बताया था आज भी काम में आते हैं और संसार की विशाल निगम कम्पनियों के साथ-साथ अगुआई के सब क्षेत्रों में व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं।

3. यीशु ने संसार को सुसमाचार सुनाने का काम उसके चेलों को सौंपा है।

यह देखना दिलचस्प बात है कि यीशु ने उसकी कलीसिया और परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए इस अगुआई की शैली को चुना है। असल में, उसने उन्हीं सिद्धान्तों को इस्तेमाल किया जिन्हें पिता ने उसे भेजने में इस्तेमाल किया था। "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" अर्थात्, जिस तरीके से पिता ने मुझे भेजा था, मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। पिता ने यीशु को संसार का उद्धारकर्त्ता नियुक्त किया था। उसने यीशु को उद्धार का काम पूरा करने का काम सौंपा था।

4. परमेश्वर ने काम पूरा करने का काम हमें सौंपा है।

उसी प्रकार से यीशु ने सारे संसार भर में राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने का काम उसके चेलों को सौंपा है। इसे पूरा करने की प्रक्रिया में हमें भी प्रतिनिधान की प्रक्रिया को इस्तेमाल करना है।

<u>बुद्धिमान प्रतिनिधान में सम्मिलित है:</u>

1. सही व्यक्ति को नियुक्त करना

यह इतना स्पष्ट लगता है कि इस पर बल देने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। फिर भी बारम्बार देखा जाता है कि ऐसे लोगों को काम के लिए नियुक्त किया जाता है जो उस काम के लिए अनुपयुक्त हैं। इसके असंख्य कारण हैं, जिनमें से एक औचित्य है। सही व्यक्ति उपलब्ध नहीं होता है, इसलिए किसी को भी नियुक्त किया जाता है। यह बारम्बार होता है क्योंकि परमेश्वर के समय को उचित रूप से पहचाना नहीं जाता है।

2. सही समय पर

इन मामलों में परमेश्वर का समय प्राय: निर्णायक होता है। सही समय पर, परमेश्वर के पास अकसर सही व्यक्ति होता है। हमें सीखना है कि उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर के समय का पता कैसे लगाएँ, और उसके साथ चलें। इस में प्रभु की निरन्तर बाट जोहना सम्मिलित है। परमेश्वर की ओर एक संवेदनशीलता और एक आज्ञापालन, जो उसके उद्देश्यों के विकास में से उसके साथ कदम मिलाकर चलना है।

3. सही कामों के लिए

गलत काम के लिए नियुक्त एक व्यक्ति वैसा है जैसे दाऊद शाऊल का कवच पहनने का प्रयत्न कर रहा था। यह उनके लिए उचित नहीं है। एक बार जब एक व्यक्ति को उस काम लगाया जाता है जो उसके स्वभाव और वरदानों के लिए उपयुक्त है, तब वह उत्साह और समर्पण के साथ काम करके उत्तम परिणाम लाने लगता है।

4. प्रतिनिधान की प्रक्रिया

सफल प्रतिनिधान की प्रक्रिया का एक संक्षेप वर्णन यहाँ है।

(अ) काम को चुनो और निश्चित करो
समस्त काम को विभिन्न भागों में बाँटा जाना चाहिए। एक कलीसिया में इसमें सम्मिलित हो सकते हैं: वरिष्ठ पास्टर, उप पास्टर, संगीत का सेवक, सुसमाचार प्रचार का सेवक, बच्चों की सेवा का सेवक, पास्तरीय देखरेख, आदि। एक प्रबंधक, सेकरेटरी, खजांची, इत्यादि भी हो सकते हैं। इन विभिन्न कामों को स्पष्ट रूप से निश्चित किया होना चाहिए, और इनके साथ वे विभिन्न काम भी जिनके लिए नियुक्त व्यक्ति जिम्मेवार है और वे किसे उत्तरदायी हैं।

(आ) सही व्यक्ति (व्यक्तियों) को चुनो
विभिन्न कामों के लिए जिन व्यक्तियों को चुना और नियुक्त किया है, वे:

अ: काम करने योग्य, या कैसे करना है सीखने योग्य हो।

आ: उसके काम के पूरा करने में मेहनत करने का इच्छुक हो।

इ: दल के दूसरे सदस्यों के साथ मेलमिलाप में काम करने योग्य हो।

(इ) स्पष्ट रूप से बताओ
कामों और जिम्मेवारियों को स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए। इसे करने का उत्तम तरीका एक काम का विवरण बनाना है। इसमें सम्मिलित होगा व्यक्ति की भूमिका, उनका पद, वे किसे उत्तरदायी हैं, और उनकी निश्चित जिम्मेवारियाँ क्या हैं।

(ई) जिम्मेवारियाँ निर्धारित करना
काम के विवरण में हर काम का वर्णन होगा जिसके लिए नियुक्त व्यक्ति जिम्मेवार है। उन्हें स्पष्ट बताया जाना चाहिए कि उनका काम क्या होगा और उनसे क्या अपेक्षा की जाएगी। प्रकट है कि यह सब बातचीत और विचार-विमर्श के द्वारा बताया जाएगा और वरिष्ट पास्टर को निश्चित करना है कि उसके द्वारा नियुक्त व्यक्ति पूर्ण रूप से समझते हैं जो उनसे अपेक्षित है।

(उ) पर्याप्त अधिकार प्रदान करो
एक बार जब व्यक्ति को नियुक्त किया गया है, उसके अधिकार को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए। यह उनके लिए उनके काम के हर पहलू को पूरा करने के लिए पर्याप्त होना चाहिए।

(ऊ) उत्तरदायित्व माँगो
हालाँकि नियुक्त व्यक्ति के पास उसके काम को करने का पूरा अधिकार है, उसे उसके काम की रिपोर्ट नियमित देनी चाहिए। कोई तरीका बनाया जाना चाहिए जिससे प्रगति और समस्याओं की पूरी रिपोर्ट नियमित रूप से देना सम्भव हो। इसे कुछ हद तक कर्मचारी सभाओं में किया जाना चाहिए, परन्तु उन्हें उनके निरीक्षक के साथ व्यक्तिगत समय भी मिलना चाहिए।

(ए) निरीक्षण और मूल्याँकन करो
कार्यकर्त्ता की कार्यकुशलता और प्रभावकारिता का निरन्तर निरीक्षण और मूल्याँकन किया जाना चाहिए। भूमिका को अधिक उत्पादक बनाने के लिए समय समय पर बदलाव और समंजन की अकसर जरूरत पड़ेगी।

(ऐ) उपलब्धि की प्रशंसा करो और इनाम दो
दल के हर सदस्य को विजय की लूट बाँटने, और उनके परिश्रम के फल का कुछ आनन्द लेने योग्य होना चाहिए। दल के अगुवे को एक अच्छे किए गए काम को स्वीकार करना और प्रशंसा करनी चाहिए। उसे सदा प्रोत्साहन और सकारात्मक उपदेश देना चाहिए।

<u>बुद्धिमान और प्रभावशाली प्रतिनिधान:</u>

1. आपकी प्रभावकारिता को बढ़ाता है।
आप समझदारी के साथ काम सौंप कर अपनी प्रभावकारित को कई गुणा बढ़ा सकते हैं। समय लेने वाले कामों को दूसरों को देकर, आप अपना ध्यान उन कामों पर लगा सकते हैं जिनमें विशेषकर आपकी सुविज्ञता की आवश्यकता होती है।

2. एक प्रभावशाली दल बनाता है।

अधिकाँश कलीसिया जो आज रचनात्मक बढ़त अनुभव कर रही हैं दल सेवा इस्तेमाल कर रही हैं। एक बार जब एक कलीसिया कुछ सौ की संख्या पार कर लेती है तब एक व्यक्ति के लिए इसकी पर्याप्त रूप से देखभाल कर पाना असम्भव हो जाता है। एक अकेले अगुवे से कहीं अधिक एक दल जो समन्वय में काम करता है प्राप्त कर सकता है। विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई अधिक निपुणताएँ भी उपलब्ध होती हैं।

3. दूसरे लोगों में नई निपुणताओं को विकसित करो।

दल की सेवा दूसरों में सेवा की निपुणताओं को विकसित करने का सबसे अच्छा वातावरण है। दल का ढाँचा दूसरों को चेला बनाने और विकसित करने का अच्छा अवसर प्रदान करता है।

4. बड़े-बड़े काम पूरा करता है।

एक मजबूत दल किसी भी अकेले अगुवे से कहीं अधिक बड़े-बड़े काम पूरा कर सकता है। यदि आपका कोई बड़ा काम करने का एक दर्शन है तो आपको शुरू से ही एक मजबूत दल बनाने का काम आरम्भ कर देना चाहिए। अपने दल का आधार बनाना जितनी जल्दी आरम्भ किया जा सके अच्छा ही है। एक छोटी कलीसिया भी एक मजबूत दल की नींव रखना आरम्भ कर सकती है।

5. अधिक विश्वासियों को चेला बनाओ।

संसार को सुसमाचार सुनाने के काम का एक अंगभूत पहलू चेले बनाना है। (मत्ती 28:19)। शिष्यता की प्रक्रियाएँ उस कलीसिया में सबसे अधिक प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल की जा सकती हैं जिसमें कामों को करने का अधिकार दूसरों को भी दिया जाता है। प्रतिनिधान और दल सेवा का विचार कलीसिया के काम में अधिक लोगों के इस्तेमाल को प्रोत्साहन देता है। इससे लोगों को शिष्यता में सम्मिलित होने का प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि उनको विकसित की जा रही निपुणताओं को इस्तेमाल करने का अवसर मिलता है।

6. परमेश्वर की सेना को सज्जित करता है।

परमेश्वर की सेना में श्रेणी और ढाँचे की जरूरत पड़ती है, जिससे सेना को अधिक सरलता के साथ विकसित किया जा सकता है जिसमें अधिकार के ढाँचे को इस्तेमाल किया जाता है।

7. परमेश्वर के राज्य को बनाता है।

परमेश्वर के राज्य का शासन दो सिद्धान्तों पर आधारित है:

अ. परमेश्वर का अधिकार

आ. उस अधिकार की ओर हमारा आज्ञापालन

अध्याय ग्यारह - जीतने की इच्छा को काम में लाना

"क्या तू चंगा होना चाहता है?" (यूहन्ना 5:6)

हमारे मसीही जीवन के प्रारंभ से लेकर, इच्छाशक्ति बहुत महत्त्व रखती है। इच्छाशक्ति को इस्तेमाल किए बिना कुछ भी योग्य चीज प्राप्त नहीं की जी सकती है और यह अगुआई की उपलब्धियों के विषय में भी निश्चित रूप से सत्य है।

प्राण में हैं: मन, इच्छाशक्ति, और भावनाएँ, जो तीनों एक प्रभावशाली अगुवे के लिए अनिवार्य कारक हैं। मन मूल रूप से निष्क्रिय है, और भावनाएँ सक्रिय हैं। इच्छाशक्ति वह संतोलन कारक है और उत्प्रेरक है जो विचारों को कार्यो और उपलब्धियों में परिवर्तित करता है। इच्छाशक्ति वह कारक है जो स्वपनों और दर्शनों को वास्तविकता में परिवर्तित करती है। यह वो स्विच है जो सक्रिय विश्वास को चालू करता है, इसे निष्क्रिय पूर्वाभास से सक्रिय सहयोग में परिवर्तित करता है। यह वो पुल है जो हमें निष्क्रिय

आशा से सक्रिय विश्वास में ले जाता है। जब इच्छाशक्ति समर्पित होती है, विश्वास की क्रियाओं के क्षेत्र में चले जाते हैं और हम उन चीजों पर अधिकार करने लगते हैं जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है।

यीशु ने बैतहसदा के मनुष्य को चुनौती दी, "क्या तू चंगा होना चाहता है?" क्या तू चंगा होने की इच्छा रखता है नहीं, परन्तु क्या तू चंगा होना चाहता है - क्या तुम ने इरादा कर लिया है - क्या तुम में चंगा होने का निश्चय है? हमारी इच्छाशक्ति का प्रयोग हमारे विश्वास का केन्द्रित होना, हमारी भावनाओं का केन्द्रीकरण, हमारे समर्पण की अभिव्यक्ति है। यह हमारे अस्तित्व का सम्पूर्ण केन्द्रीकरण है जो उचित क्रिया में व्यक्त होता है।

ध्यान दो कि परमेश्वर कितनी बार कहता है, "मैं करूँगा।" उसके साथ समन्वय में जीने के लिए हमें भी "मैं करूँगा" कहना सीखना होगा। हम परमेश्वर की रचनात्मक सामर्थ्य और शक्ति के साथ समन्वय में तब ही जी सकते हैं जब हम अपनी इच्छाशक्ति को परमेश्वर की इच्छा के साथ केन्द्रित करते हैं।

हमारी इच्छाशक्ति, परमेश्वर के अधीन, हमारी नियति को निर्धारित करती है।

अः इच्छाशक्ति, चुनने की, और सही और उचित चुनाव करने की हमारी योग्यता है।

आः यह हमारे विश्वास की अभिव्यक्ति के अनुसार कार्यो को आरम्भ करने की योग्यता है।

इः यह उस कार्य को बनाए रखने की सामर्थ्य और शक्ति को छोड़ता है।

ईः यह दबाव की चुनौती के अधीन फलता-फूलता है।

उः यह प्राप्ति तक नचनात्मक शक्ति को बनाए रखती है।

इच्छाशक्ति स्वाभाविक रूप से जिद्दी है

हमारी मसीहपूर्व स्थिति में, शारीरिक इच्छाशक्ति परमेश्वर के विरोध में होती है। एक बार मसीही बनने के बाद इसे हमारी उद्धार पाई आत्मा के साथ समन्वय में लाना पड़ता है। यह एक साँड़ के समान है जिसे तोड़ा जाना या वश में किया जाना पड़ता है। जब साँड़ को तोड़ा जाता है, इसकी आत्मा नहीं तोड़ी जाती है, परन्तु इसे अनुशासन के अधीन लाया जाता है। यह शक्तिशाली रहता है, परन्तु अनुशासित हो जाता है।

मूल रूप से तीन प्रकार के लोग होते हैं:

1: **निर्भर प्रकार** का। जो मूल रूप से अनुयायी हैं, भेड़ के स्वभाव के प्रतीक और झुण्ड वृत्ति वाले, और अकसर कम ही पहल-शक्ति दिखाते हैं।

2: **स्वाधीन** प्रकार के। यह भेड़ के बदले, बकरी प्रकार के हैं। वे अपनी इच्छा करना चाहते हैं और बारम्बार अधिकार के अधीन होना नापसन्द करते हैं। यह मसीही अगुवों के लिए एक खतरनाक विशेषता है।

3: **निर्भर-स्वाधीन**। जिसकी इच्छाशक्ति परमेश्वर द्वारा तोड़ी और अनुशासित की गई है। परमेश्वर के सब महान अगुवे इस श्रेणी में हैं। वे अकसर एक स्वाभाविक मजबूत इच्छाशक्ति वाले और एक स्वाधीन स्वभाव के लोग हैं, जो पहलशक्ति और इच्छाशक्ति में मजबूत हैं। परन्तु, इससे पहले वे परमेश्वर के उद्देश्यों की प्रभावशाली तरीके से सेवा कर पाते, स्वाभाविक इच्छाशक्ति को टूटना था और परमेश्वर की इच्छा - उसका स्वभाव और उद्देश्य - के साथ समन्वय में आना था। परमेश्वर के उद्देश्य न हठ या कोशिश से, न ही व्यक्तित्व की ताकत या करिश्मे से पूरे किए जा सकते हैं।

मूसा इसका एक स्पष्ट उदाहरण हैं। चालीस वर्ष तक मिस्र के राजकुमार के रूप में जीने के परिणामस्वरूप, मूसा प्रबंध और शासन की कलाओं और निपुणताओं में प्रशिक्षण पाया हुआ था। वह इस प्रारंभिक प्रशिक्षण से एक आत्मविश्वासी और योग्य कार्यकारी के रूप में निकला था। अपनी ही शक्ति में उसने एक इस्राएली को सताव से छुड़ाने का प्रयत्न किया परन्तु केवल एक मिस्री को मारने में सफल हुआ और फिर अपने जीवन को बचाने भागना पड़ा। परमेश्वर को उसे चालीस वर्ष के लिए रेगिस्तान में ले जाकर मिस्र के सारे आत्मविश्वास को मिटाना पड़ा और उसे एक उस पर निर्भर व्यक्ति बनाना पड़ा। इस प्रकार के रेगिस्तान प्रकार के अनुभव याकूब, दाऊद, पौलुस और स्वयं प्रभु के साथ भी हुए थे। असल में, यह सब को नहीं तो, परमेश्वर के अधिकाँश अगुवों के साथ होता है।

जंगल का अनुभव प्रभावशाली अगुवों की तैयारी का एक अंगभूत पहलू है, और जब यह आपके साथ होता है तब आप को चकित या निराश नहीं होना है। इन जंगल के अनुभवों में, परमेश्वर हमें अहंकार, स्वार्थीपन और आत्मविश्वास से छुड़ाता है। वह हमें दीनता, अधीनता, आज्ञापालन, दया, और परिपक्वता में ढालता है। वह हमें स्वयं बने व्यक्तियों से परमेश्वर ने बनाए व्यक्तियों में रूपान्तरित कर देता है।

इच्छाशक्ति को उत्तेजित करना:

इच्छाशक्ति में विशाल सम्भावना और छिपी शक्ति होती है। यह विशेषकर तब सच होता है जब यह परमेश्वर के सामर्थ्य में विश्वास के साथ जुड़ा होता है। परन्तु इसे उत्तेजित किया जाना होता है। यहाँ कुछ कारक दिए गए हैं जो इच्छाशक्ति को उत्तेजित करेंगे और इसकी छिपी शक्तियों को निकालेंगे:

अ: इसे एक चुनौती दिखाओ।

इच्छाशक्ति तब सबसे अच्छा काम करती है जब विश्वास के साथ हो और एक चुनौती का सामना करे जो विश्वास के कार्य की माँग करती है। यीशु ने उसके चेलों को लगातार ऐसी चुनौतियाँ दी थीं। उदाहरणार्थ, उसने कहा, "अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।" यह कितनी जबरदस्त चुनौती है। यह ऐसी है जो आज हम कइयों के सामने खड़ी है। सारा संसार, इसके लोगों, देशों, धर्मों, और विचारों के साथ, एक विशाल फसल का खेत है। यह ऐसी फसल है जिसे मानवीय प्रयत्नों से कभी भी काटा नहीं जा सकता है। यह ऐसी फसल है जिसे परमेश्वर के सामर्थ्य, अधिकार और शक्ति के आलावा कभी भी इकट्ठा नहीं किया जा सकता है। ऐसी परियोजना में सहयोग हमारी इच्छाशक्ति और हमारे अस्तित्व के हर पहलू की माँग लगता है।

आ: आपका मन इस पर रहने दो।

इस चुनौती को अपने विचारों में बसने दो। हर कोण से इसके विषय में सोचो, विश्लेषण करो, खोज करो, पूछ-ताछ करो, जाँचो। इसकी घोरता को अपनी कल्पना को भरने दो, इसे अपनी पूर्ण जानकारी पर छा जाने दो। इसकी पहुँच को सोखने का प्रयत्न करो जब तक आपका मन इस महान चुनौती से सम्बंधित सब प्रकार की उत्तेजक और प्रेरक सम्भावनाओं को पैदा करने लगे।

इ: आपकी भावनाओं को इसकी ओर प्रतिक्रिया करने दो।

जैसे आप ऐसी एक चुनौती पर मनन करते हो तो आप इसे वैसे देखने लगोगे जैसे परमेश्वर इसे देखता है। आप इसके विषय में वैसे सोचने और महसूस करने लगोगे जैसे परमेश्वर करता है। इसके वातावरण को अपनी भावनाओं और उत्साह को उत्तेजित करने दो। इसे अपनी दया को उत्तेजित और आपकी भावनाओं को प्रेरित करने दो। इससे पहले आप सही से ऐसी एक चुनौती की ओर प्रतिक्रिया दिखा सको, इसे आपके सारे अस्तित्व को हिलाना होगा। इसे केवल विचारों की एक प्रक्रिया से अधिक होना चाहिए। इसे आपके सम्पूर्ण अस्तित्व को जकड़ना और उत्तेजित करना होगा।

ई: इसके विषय में सकारात्मक सोचो और बात करो।

इससे पहले आप ऐसे एक विशाल परियोजना में उत्पादक रूप से लग सको, आपको अपने आप को इससे सकारात्मक रूप से कायल होने देना होगा। यह तब ही हो सकता है जब आप पूर्ण रूप से कायल हो जाओ कि आप उत्पादक और प्रभावशाली तरीके से सम्मिलित हो सकते हो। इसलिए आप को इसकी ओर एक सकारात्मक पहुँच बनानी होगी। सब सकारात्मक कोणों को खोजो। अपने विचारों को उन पर बसने दो और उनके विषय में बातें करने लगो। आपके अपने विचारों और श्रव्य अभिव्यक्तियों से कुछ भी अधिक प्रत्यायक नहीं है। यदि आप सोचते हो आप इसे कर सकते हो, और आप कहते हो आप इसे कर सकते हो, तब आप इसे असल में करने के मार्ग पर हो। आपको विश्वास करना और स्वीकार करना चाहिए और ऐसा करने से आप इसके पूरा होने का मार्ग तैयार करोगे।

उ: सफलता की कल्पना करो।

मन की आश्चर्यजनक रचनात्मक योग्यताएँ हैं जिनमें से एक कल्पना करने की योग्यता है। यह असल में चीजों को विश्वास से देखने की योग्यता है जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है। यह सबसे अच्छा तब होता है जब आपके साथ परमेश्वर की उपस्थिति की एक असली भावना हो और आप अपने विचारों और कल्पना को वह देखने देते हो जो परमेश्वर के हृदय और मन में उस परियोजना के विषय में है जिसके लिए वह आपको चुनौती दे रहा है। यह असल में परमेश्वर से आपके मन में विचारों का अन्तरण है। जैसे उसका चित्र जो परमेश्वर आपके द्वारा पूरा करना चाहता है आपकी आत्मा में विकसित होता है, तो आपके पास कुछ विश्वास करने के लिए और आगे बढ़ने के लिए है।

ऊ: बिलकुल पक्का कर लो कि परमेश्वर इसमें है।

कल्पना करने की प्रक्रिया आत्मगत है जिसको वस्तुगत कसौटी से जाँचा जाना चाहिए। ऐसा करने का एक तरीका इसे अपने सहयोगियों को बताना और सामूहिक मूल्कॉंकन के लिए अधीन करना है। बाइबल कहती है कि सलाहकारों की बहुतायत में बुद्धि होती है। जब एक दर्शन को कुछ आत्मिक रूप से परिपक्व व्यक्तियों की पुष्टि मिलती है तब आप आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर सच में इसमें है।

एः उचित कार्य को प्रार्थनापूर्वक निर्धारित करो।

आपको अन्तिम को देखने और निकटतम की योजना करने की आवश्यकता है। वही परमेश्वर जो दर्शन देता है इसकी पूर्ति के लिए उपयुक्त नीतियों, योजनाओं, और क्रियाओं को भी प्रेरित करेगा। परमेश्वर व्यावहारिक परमेश्वर है और वह दर्शन के पूरा करने के लिए उपयोगी कदम भी देगा।

ऐः विश्वास में आगे बढ़ने लगो।

परमेश्वर का काम सदा विश्वास के लोग ही पूरा करते हैं। परमेश्वर का हर काम एक विश्वास का साहसिक कार्य है। यहोशू को कहा गया था, "जिस जिस स्थान पर तुम पाँव धरोगे वह सब मैं दे देता हूँ।" उसे विश्वास में आगे बढ़ना था। हर कदम विश्वास का कदम था, परन्तु हर स्थान पर जहाँ उसने उसका पाँव विश्वास में धरा, परमेश्वर ने उसे दे दिया।

इस विषय में एक चीज जिसे आपको पहचानना है वह यह है कि कोई भी चीज जिसमें असफलता की सम्भावना नहीं है विश्वास का एक साहसिक कार्य नहीं है। जैसे आप परमेश्वर का दर्शन पूरा करने लगोगे, कई ऐसे समय होंगे जब आप असफलता की सम्भावना का सामना करोगे। ऐसे समय जब लगेगा कि दर्शन का कोई भाग पूरा नहीं होने वाला है। ऐसे अवसर जब लगेगा कि परमेश्वर उसके वचन को पूरा करने नहीं आ रहा है। ऐसे समय होते हैं जब आप विश्वास और परमेश्वर पर निर्भरता में आगे बढ़ते रहते हो। आपको बारम्बार रोमांच मिलेगा जब आप परमेश्वर को उसके वचन और उसकी प्रतिज्ञा का सम्मान करते देखोगे।

अचेत मन की सामर्थ्य को काम में लगाना

इच्छाशक्ति का एक अंगभूत भाग अचेत मन की सामर्थ्य है। इसमें आश्चर्यजनक छिपी शक्ति है जिसे काम में लाया जाना और छोड़ा जाना चाहिए ताकि आपकी सम्पूर्ण सम्भावना को पूरा किया जा सके। अचेत मन कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क के समान है। इसमें वे सब प्रोग्राम हैं जिन्हें आपको प्रभावशाली कार्य करने के लिए जरूरत है।

<u>मानवीय मन तीन क्षेत्रों में कार्य करता है:</u>

1. सचेत मन प्रमुख है।

इस क्षेत्र में हमारे तात्कालिक सक्रिय विचार होते हैं। सब कुछ जो हम प्रतिदिन सोचते हैं इस क्षेत्र में होता है।

2. अवचेतन मन सचेत मन के बिलकुल नीचे होता है। यह गहरा, सतह के नीचे होता है जिसमें वह ज्ञान और जानकारी जिसकी तात्कालिक आवश्यकता नहीं होती जमा होती है। सब कुछ जो हम ने कभी सीखा या पाया है यहाँ जमा होता है। हम अवचेतन मन के अभिलेख में खोज करके उन चाजों का पता लगा सकते हैं जिन्हें हम ने सीखा है। हालाँकि हम इस सब चीजों के विषय में सचेत रूप से जानकार नहीं होते हैं वे सब अत्यन्त प्रभावशाली होती हैं।

3. अचेत मन।

यह वह क्षेत्र है जो हमारे दिमाग की सब स्वचालित क्रियाओं का संचालन करता है। मेरा विश्वास है कि बाइबल को अवचेतन मन के विषय में बहुत कुछ कहना है। मुझे निश्चित लगता है कि यह वही है जिसकी बाइबल नीतिवचन 23:7 में बात करती है, "जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।" यह सचेत मन का विचार नहीं, परन्तु वह जिसे वह अपने हृदय में सोचता है।

अवचेतन मन के विषय में कुछ तथ्य।

अवचेतन मनः

- सदा काम करता रहता है। चाह हम जागे हुए या सो रहे हैं।
- आश्चर्यजनक रूप से नचनात्मक और नए ढंग से काम करनेवाला होता है।
- व्यक्तिगत इच्छाशक्ति नहीं है परन्तु आदेश लेता है जिनमें वह हेर-फेर कर सकता है परन्तु कभी भी अस्वीकार नहीं करता।

अवचेतन मन को सकारात्मक रूप से अनुकूलित किया जाना चाहिए।

इसे करने का स्पष्ट तरीका परमेश्वर के वचन को अपने अन्दर लेना है, जो आपके अवचेतन को परमेश्वर के साथ समन्वय में लाता है। उसके मार्ग, और उसके उद्देश्य। यीशु ने कहा, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" परमेश्वर के वचन को सोख लेने से आपका मन परमेश्वर के विचारों के समन्वय में हो जाता है। उसका वचन आपके भीतर रहने से, वह उसके विचार आपके द्वारा सोच सकता है। इससे सबसे स्वस्थ प्रकार की सकारात्मक सोच पैदा होती है जो मात्र हर स्थिति में एक सकारात्मक रवैया ही नहीं रखती परन्तु सब चीजों में परमेश्वर और उसके वचन से सहमत होती है।

अपने अवचेतन मन की शक्ति को इस्तेमाल करना।

आपके मन में दो प्रकार की रचनात्मक शक्ति है:

1: निष्क्रिय - विचार, सोच, दर्शन, योजनाएँ, और नीतियाँ।

2: सक्रिय - उन विचारों और योजनाओं को एक वास्तविकता बनाना।

निष्क्रिय शक्ति को इस्तेमाल करना। रचनात्मक सोच-विचार की शक्ति।

अ: नए विचारों और धारणाओं के लिए जाग्रत और सतर्क रहना।

आ: उन विचारों की पूछःताछ और खोज करो।

इ: खुदाई करो। सतह के नीचे गहरा खोदो।

ई: ध्यान लगाओ, मनन करो और चिन्तन करोः - "उन पर ध्यान लगाया करो।"

उ: धैर्य रखो। अपनी सेवा की बाट जोहो।

ऊ: आशावादी बने रहो।

ए: अपने अभिप्रायों को साफ और शुद्ध रखो, नहीं तो दोष आपको गिरा देगा।

ऐ: सहयोग दो। बड़े-बड़े विचार सहयोग द्वारा पूरे होते हैं।

कुछ सक्रिय शक्ति प्रेरित करनेवाले।

यहाँ कुछ कारक दिए गए हैं जो उपलब्धि के लिए शक्ति को शक्तिशाली तरीके से प्रेरित करेंगे और निकालेंगे।

अ: एक महान विचार, जिसका समय आ गया है।

यह पहचानने से कुछ भी अधिक उत्तेजित या प्रेरित करनेवाला नहीं है कि आपको एक भविष्यसूचक विचार, एक अदभुत विचार मिला है जिसका पूरा होने का समय आ गया है। एक परियोजना जो समयोचित और उपयुक्त है, और जिसकी भविष्य के लिए एक भविष्यसूचक प्रतिज्ञा है। एक कार्यक्रम जिसे कई लोगों ने स्वागत और पुष्टि की है कि यह परमेश्वर के समय और उद्देश्य के लिए उपयुक्त और सही है।

आ: एक उत्तेजक नई सम्भावना।

जीवन का नित्यक्रम सांसारिक और भावशून्य हो जाता है। एक नया विचार सब कुछ में नई जान और उत्तेजना भर सकता है। परमेश्वर हम में नई चीज सदा लाना चाहता है परन्तु हमें नए को लेने के लिए पुराने को छोड़ने के लिए इच्छुक होना चाहिए। "देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रकट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे?" (यशायाह 43:19)। अनेक बार हम परिवर्तन और जो चुनौती यह लाता है उससे डरते हैं और परिणामस्वरूप हम पुराने से बँधे रहते हैं परन्तु परमेश्वर चाहता है हम एक नई और अधिक प्रभावशाली चीज को अनुभव करें।

इ: सकारात्मक सम्भावनाएँ -- भविष्य का एक उत्तेजक पूर्वाभास।

सकारात्मक कम्पन सदा उत्तेजक होते हैं। वे हमारे सारे अस्तित्व में नई उत्तेजना और उत्साह भर देते हैं। जब हम किसी चीज में लगते हैं जिसकी भावी सम्भावना है तो हमारे जीवन का सम्पूर्ण दृष्टिकोण बढ़ जाता है।

ई: विश्वास -- सकारात्मक पूर्वाभास और दृढ़निश्चय।

विश्वास का जीवन विश्वासी का मूल वातावरण है। जब हम विश्वास में होते हैं हम अपनी उत्तम योग्यता में होते हैं। परमेश्वर की हर परियोजना एक विश्वास का कार्य है और उसमें सहयोग देने से हम में से विश्वास तत्त्व निकलता है। हम सहयोग देने से फलते और फूलते हैं जो हमारे विश्वास के स्वभाव को बाहर निकालता है।

उ: उत्साह -- भावात्मक उलझाव और उत्तेजना।
परमेश्वर एक भावोत्तेजक प्राणी है और उसने हमें उसके स्वरूप और समानता में बनाया है इसलिए हम भी भावोत्तेजक और भावात्मक प्राणी है। जब हम अपनी सारी क्षमता से काम करते हैं तब अनिवार्य रूप से भावात्मक उलझाव और अभिव्यक्ति होती है। असली उत्साह बिना भावात्मक अभिव्यक्ति के अनुभव नहीं किया जा सकता है। उत्साह से डरो मत। बहुत सारे प्रचारक और कलीसियाएँ उत्साह और भावात्मक अभिव्यक्ति को हतोत्साह करते हैं जैसे कि यह बुरा और पापी है। उलटा सच है। कैसे हो सकता है हम परमेश्वर के लोग हों और इसके लिए उत्साही न हों ? ऐसी चीज असम्भव की परिभाषा है। परमेश्वर के काम और उसके राज्य में कुछ अधिक उत्साह इस्तेमाल किया जा सकता है। कुछ विश्वास करते हैं कि भावात्मक अभिव्यक्ति हमारी मसीही गवाही के लिए हानिकारक है। मेरा दृढ़ निश्चय है कि कलीसिया को अधिक लाभ होगा यदि अधिक लोग भावात्मक रूप से और उत्साह के साथ शामिल हों।

असली "तुम" कैसे बनें।

प्रभावशाली अगुआई प्रयोग में लाने के लिए आपको शान्त होना है नहीं तो अगुआई के दबाव बन जाएँगे और असहनीय हो जाएँगे। कुछ लोग अपने आप को दूसरे "सफल" अगुवों के नमूने पर बनाते हैं, और अपने ऊपर एक असहनीय बोझ डालते हैं। अपना जीवन किसी दूसरे पर बनाना दाऊद के समान है जो शाऊल का कवच पहनने का प्रयत्न कर रहा था। उसे शीघ्र पता चल गया कि यह उसके लिए बहुत बड़ा और भारी था। यदि उसे परमेश्वर के उद्देश्य को उसके लिए बनाना है तो उसे आप होना होगा, और उसे इस्तेमाल करना होगा जो परमेश्वर ने उसे दिया है।

आप होने से डरो मत

मुझे याद है कि जब मैं नया मसीही था, मुझे लगता था कि मुझे अपना जीवन दूसरे मसीहियों पर बनाना है। परन्तु मुझे शीघ्र पता चल गया कि ऐसा होने वाला नहीं है। जैसे मैं अपनी चिन्ता को परमेश्वर के पास ले गया, और उससे माँगने लगा कि वह मुझे दूसरे मसीहियों के समान बनने में सहायता करे, तो मैं ने बड़े स्पष्ट रूप से उसे कहते सुना, कि मैं नहीं चाहता तू किसी दूसरे के समान बने, मैं तुम्हें स्वतंत्र करूँगा कि तू मसीह में आप हो सके।
परमेश्वर ने जो अद्वितीय आप हैं उसका उद्धार किया है। वह चाहता है कि आप मसीह में आप हों। उसने आपको अगुआई के एक काम के लिए बुलाया है और उसके निश्चित उद्देश्य को पूरा करने के लिए, आपको आप बनने में सुविधा महसूस करनी है। आपको आप बनने का आनन्द लेना है और पहचानना है कि, आप बनना ठीक है। भिन्न होने से डरो मत। परमेश्वर विविधता का परमेश्वर है। यदि वह चाहता कि हम सब एक समान हों तब उसने हमें उसी प्रकार बनाया होता। क्योंकि उसने हमें बड़े विभिन्न प्रकार से बनाया है तो वह चाहता है हम वैसे ही हों। अपनी तुलना दूसरों के साथ करने की परीक्षा का सदा सामना करो। आपको अपने में जैसे परमेश्वर ने आपको बनाया है और जैसे वह आपको मसीह के स्वरूप और समानता में ढाल रहा है एक सही विश्वास विकसित करने की आवश्यकता है।

अध्याय बारह - वरदान और प्रतिभा सेवाएँ

आओ हम मसीही अगुआई और प्रबंध के दो पहलुओं पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालें।
"परमेश्वर ने कलीसिया में अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं : प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, **और** उपकार करनेवाले और प्रबंध करनेवाले।" 1 कुरिं. 12:28।
<u>बाइबल स्पष्ट रूप से अगुआई के दो पहलुओं का संकेत देती है</u>, और दोनों कलीसिया में प्रभावशाली काम होने, बढ़त और शक्ति के लिए अत्यावश्यक हैं।

सरलता के लिए मैं उनको नाम दूँगा:

1: **वरदान सेवाएँ**

उदा., प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक, पास्टर, सुसमाचार सुनानेवाले।

2: **प्रतिभा सेवाएँ**

उदा., उपकार करनेवाले, प्रबंध करनेवाले।

इन्हें इन दो शब्दों में अधिक सरलता के साथ पहचाना जा सकता है:

1: अगुआई

2: प्रबंध

दोनों धाराएँ कलीसिया के प्रारंभ में स्पष्ट देखी जा सकती हैं।

1. प्रेरिताई अगुवे

सुसमाचार सुनाना, भीड़ को एकत्र करना, मसीह की ओर समर्पण की आज्ञा देना, नए विश्वासियों को बपतिस्मा देना, आदि। प्रेरितों अध्याय 2 और 3।

2. प्रबंध करनेवाले

नए विश्वासियों को प्रभावशाली तरीके से कार्य करनेवाले समूहों में संगटित करना (स्थानीय कलीसियाएँ)। विधवाओं को भोजन देने वाली सेवाओं को आरम्भ करना और प्रबंध करना आदि। प्रेरितों 6:1-7

कलीसिया की प्रभावकारिता के लिए दो सेवाएँ अत्यन्त आवश्यक हैं। वे बिरले ही एक व्यक्ति में पाई जाती हैं, उदा., मूसा। निर्गमन 18:13-27

निम्नलिखित विशेषताएँ बाम्बार विरोध में होती हैं। इसका स्पष्ट उत्तर है दोनों सेवाओं को इकट्ठा करना जो समन्वय में काम करती हों (दल सेवा, प्रतिनिधान, प्रशिक्षण)।

अगुवे	प्रबंध करनेवाले
आरम्भ करना।	**दृढ़ करना।**
जोखिम लेना।	**जोखिम के तत्त्वों को कम करना।**
दर्शन देखना।	**लक्ष्य निर्धारित करना।**
दूरबीनों में से देखना।	**दूरबीनों में से देखना।**
दिशा की ओर ले चलना।	**प्रगति मानीटर करना।**
पथप्रदर्शक का काम करना।	**संघटित करना।**
जिम्मेवारी लेना।	**जिम्मेवारी स्वीकार करना।**
अवसर तैयार करना।	**अवसर स्वीकार करना।**
बलपूर्वक अधिकार इस्तेमाल करना।	**अधिकार सावधानी के साथ इस्तेमाल करना।**
उत्साह के साथ काम सौंपना।	**सावधानी के साथ सौंपना।**
विश्वास के लक्ष्य निर्धारित करना।	**"उचित" लक्ष्य निर्धारित करना।**
प्रगति के लिए प्रयत्न करना।	**संरक्षण के लिए काम करना।**
लोगों को प्रेरित करना।	**परियोजनाओं का प्रबंध करना।**
सृष्टि करना।	**बनाए रखना।**

उत्तेजक अगुआई, और अच्छा प्रबंध = सफलता!!!

क्या आप किसी को जानते हो जो उन विशेषताओं में मजबूत हैं जिनमें आप अपनी सेवा में कमज़ोर हो ?
आप उनके साथ अपनी शक्तियों को मिलाने के लिए कैसे जुड़ सकते हो ?

इन कथनों पर विचार करोः

- अः अगुवे अच्छे प्रबंधक बन सकते हैं।
- आः प्रबंधक बिरले ही गतिशील अगुवे बनते हैं।
- इः प्रबंध की निपुणताएँ अगुआई की निपुणताओं का स्थान नहीं ले सकती हैं।
- ईः एक अगुवे की प्रभावकारिता अन्त में उसके अनुयायियों की उत्तमता से जानी जा सकती है।

दो भूमिकाएँ, अर्थात्, अगुआई और प्रबंध, बहुत भिन्न हैं और दोनों के लिए उचित व्यक्ति प्रायः बहुत भिन्न होते हैं। दोनों अत्यावश्यक है, वरन् अगुआई के नमूने की सफलता के लिए अनिवार्य भी होते हैं और यह अत्यावश्यक है कि दोनों भूमिकाएँ इसे पहचानें।
अगुवे को पर्याप्त संघटनात्मक और प्रबंध की प्रक्रियाओं की उसकी आवश्यकता को पहचानना चाहिए। प्रशासक को पहचानना चाहिए कि उसका वरदान अधिकतम प्रभाव के साथ अगुवे के दर्शनद्रष्टा और प्रेरणात्मक के बिना काम नहीं कर सकता है।
पौलुस कहता है कि देह के हर सदस्य को दूसरे सदस्यों को पहचानना और सम्मान करना चाहिए। उन्हें उनके अन्तरों को और उनके कामों की विविधता को पहचानना चाहिए और दूसरों को अपने से अधिक सम्मान देना चाहिए। देह के प्रभावशाली और कार्यकुशलता के साथ काम करना विविध और अलग-अलग सदस्यों के होने पर और बिना संघर्ष के मिलकर ठीक बैठने और काम करने की उनकी योग्यता (इच्छा ?) पर निर्भर है।

वरदानों में अन्तर। (1 कुरिं. 12:14-31)

"देह में एक ही अंग नहीं परन्तु अनेक हैं।" पौलुस उनको पाँव, हाथ, कान और आँखों के रूप में चित्रित करता है। अगुवे (दर्शनद्रष्टा), प्रायः उन लोगों से बहुत भिन्न होते हैं जो प्रशासन के काम के लिए वरदान पाए, उचित और योग्य हैं। उनका स्वभाव, प्रकृति और व्यक्तित्व ही भिन्न है। अगुवा प्रायः एक चलचित, कैरिस्मेटिक प्रकार का व्यक्ति, उत्साही और खुले दिल वाला होता है। प्रशासक प्रायः काफी भिन्न होता है, चाहे बिलकुल उलटा न हो। हर एक को उनके अन्तरों को और उनके वरदानों की विविधता को पहचानना चाहिए। वे उतने भिन्न हैं जितना हाथ पाँव से है या कान आँख से है।

उनके कामों की विविधता

जितने विस्तृत भिन्न उनके वरदान हैं, उतने ही उनके वरदानों के कार्य हैं। उस व्यक्ति के लिए कितना कठिन होगा जिसके हाथ नहीं हैं और वह उन कामों को सामान्यतः हाथों और अँगुलियों से करता है पाँवों से करने पड़ें।

उनके कार्यों की पूरक प्रकृति

देह की सुन्दरता यह है कि सब भिन्न अंग एक दूसरे को पूरे करने के लिए बनाए गए हैं। ईर्ष्या या प्रतियोगिता के लिए कोई स्थान नहीं है। परमेश्वर ने हर सदस्य को उसका काम करने के लिए बनाया है और अन्तिम परिणाम एक सुखद और प्रभावकारी समन्वय है। देह, इसके सब अंगों के साथ मिलकर बहुत सारे कामों को सफलतापूर्वक कर सकती है जो एक अकेला सदस्य नहीं कर सकता है।

अध्याय तेरह - तनाव को जीतना और अत्यधिक थकान (Burnout)

(रहस्यमय बीमारी को उघारना)

पिछले दशक से सेवकों, मसीही कार्यकर्त्ताओं और कल्याण कार्यकर्त्ताओं को एक अत्यन्त गम्भीर चिकित्सा की दशा सताने लगी है। यह दशा उन वर्गों के हज़ारों को प्रभावित कर रही है, फिर इसके विषय बहुत कम ही पता चला है और कोई भी इसकी वास्तविकता को सम्भोदित करने के लिए तैयार नहीं है।

जब से मुझे इस अप्रिय घुसपैठिए का पता चला है मैं इसेः "रहस्यमय बीमारी" का नाम देने लगा हूँ - एक समस्या जिसे कोई भी स्वीकार करना नहीं चाहता है। मैं उस दशा की बात कर रहा हूँ जिसे सामान्यतः "अत्यधिक थकान (अँग्रेज़ी में बर्नआउट burnout) कहते हैं, जो पूर्ण तन्त्रिकीय और भावात्मक थकान के लिए अपारिभाषिक शब्द है।

इस संक्षिप्त अध्याय को लिखने का मेरा मुख्य उद्देश्य इस रहस्यमय बीमारी को उघारना है - परदों को फाड़ना और जो यह है उसे प्रकट करना। उन हज़ारों सेवकों और कल्याण कार्यकर्त्ताओ को इस दशा के विषय में चेतावनी देना जिसके विषय में वे सम्भवतः बहुत कम जानते हैं, परन्तु जो अगले कोने पर घात में बैठी है कि कब उन पर झपट पड़े।

मैं इस समस्या को खुले में लाना चाहता हूँ उनके लिए जो इस समय इसके विनाश को सह रहे हैं और एक हमदर्द को पा नहीं सके हैं। यह इसलिए है क्योंकि डॉक्टरों और पास्टरों के साथ-साथ बहुत कम लोग इस गम्भीर बीमारी की सहानुभूतिक समझ रखते हैं। मैं आम जनता को इस महामारी की भयानक वास्तविकता के विषय में बताना चाहता हूँ और जो समस्या में हैं उनके लिए वास्तविक साधनों को प्रदान करने में उनकी रुचि पाना चाहता हूँ।

यह एक "रहस्यमय बीमारी" क्यों है? - क्योंकि जो दुर्भाग्यमश इसके शिकार हुए हैं वे उनकी समस्या को सबके सामने लाने से लज्जा, शर्म महसूस करते और इसलिए इच्छुक नहीं हैं। इसे एक सार्वजविक तरीके से इसे स्वीकार करने के बदले कि वे इसके शिकार हो रहे हैं, अकेले और गुप्त में इसके विरुद्ध लड़ते रहते हैं। यह आम तौर पर इसलिए है क्योंकि इसे किसी प्रकार की "आत्मिक असफलता" समझा जाता है। एक कमज़ोरी जो किसी भी मसीही में नहीं होनी चाहिए। ऐसी एक समस्या जो यह संकेत देती है कि जिस प्रकार से उन्हें उनके विश्वास का जीवन जीना चाहिए था उसमें वे असफल रहे हैं। ऐसा एक रोग जिसके विषय में कुछ मसीही निष्कर्ष निकाल लेते हैं, "यदि उसमें थोड़ा अधिक विश्वास होता और वह परमेश्वर के वचन में विश्वास करता, तो उसके साथ ऐसा नहीं हुआ होता।"

एक और कारण कि क्यों यह एक ऐसी समस्या है जिसके विषय में कम बात की गई है और अधिकतर अनदेखा किया गया है कि बहुत कम लोग ही इसके विषय में कुछ समझते हैं। अधिकाँश लोग "बर्नआउट" शब्द को जानने लगे हैं और अस्पष्ट रूप से जानते हैं इसका क्या अर्थ हो सकता है। परन्तु बहुत कम ही निश्चित रूप से जानते हैं यह क्या है। मेरा व्यक्तिगत विश्वास है कि हर सेवक और मसीही कार्यकर्त्ता को इस घटना की दो मुख्य कारणों से एक सम्पूर्ण समझ होनी चाहिए। पहला कारण यह है कि वे इसके शिकार होने से बचने के लिए सब आवश्यक सावधानियाँ बरत सकते हैं। दूसरा अच्छा कारण यह है कि वे अपने साथी कार्यकर्त्ताओं को कुछ ठोस सहायता दे सकते हैं जो इस समस्या के शिकार हो रहे हैं।

मैं इस लेख को तीन संदर्शें से लिख रहा हूँ:

- व्यक्तिगत अनुभव
- दूसरों को सहानुभूतिक रूप से देखने से
- समस्या में रुचि के साथ खोज से

मुझे इस पर बल देने की आवश्यकता है कि मैं इस अध्ययन को चिकित्सा के संदर्श से नहीं लिख रहा हूँ। मैं ऐसा करने के योग्य नहीं हूँ, और न मुझे इन क्षेत्रों में कोई औपचारिक शिक्षा मिली है। बदले में मैं एक पास्टर और रखवाले के रूप में लिख रहा हूँ। मैं एक सेवक के रूप में साथी सेवकों को लिख रहा हूँ, उनको उनके भले के लिए जानकारी देना चाहता हूँ और उनकी सेवाओं को उनके लिए घनिष्ठ करना चाहता हूँ जिनकी वे सेवा करते हैं। मैं उन कइयों के लिए भी लिख रहा हूँ जो अत्यधिक थकान को अनुभव कर रहे और दुख उठा रहे हैं। विशेषकर परन्तु केवल यही एक कारण नहीं, कि जो देखभाल की सेवाओं में लगे हैं उन्होंने उनके व्यक्तिगत दुख को स्वयं बनाया है। मैं उस व्यक्ति के रूप में लिख रहा हूँ जिसने आप अत्यधिक थकान अनुभव की है और परिणामस्वरूप दूसरों के लिए अत्यन्त चिन्ता रखता है, विशेषकर वे जो इसके शिकार हैं। मैं उनके मार्ग पर कुछ संकेतक रखना चाहूँगा। कुछ चेतावनी के चिन्ह जो उन्हें खतरे से बचा कर ले जाएँगे। कुछ सकारात्मक संदेश जो आशा देंगे। कुछ सुझाव जो उनके सफर में उनको राहत देंगें और उन्हें सम्पूर्ण चंगाई के अनुभव में लाएँगे।

हाल के चिकित्सा के सर्वेक्षण से पता चलता है कि लोग डॉक्टरों के पास 90% तनाव सम्बंधित रोगों के लिए जाते हैं। आधुनिक खोज ने तनाव और कई शारीरिक रोगों के बीच सम्बंध बताया है। कई शोध-कर्त्ता विश्वास करते हैं कि हृदय की समस्याएँ, उच्च रक्तचाप, अवटुग्रन्थि, और कैन्सर भी तनाव के कारण हो सकते हैं। अत्यधिक थकान, जो तनाव से प्रेरित रोगों का सबसे सामान्य परिणाम, शीघ्रता के साथ उन्नीसवीं सदी की महामारी के नाम से जानी जा रही है। इस आधुनिक महामारी के सबसे अधिक शिकार व्यवसायी कार्यकारी और देखभाल उद्योग में काम करनेवाले लोग, अर्थात्, नर्सें, डॉक्टर, कल्याण कार्यकर्त्ता, सेवक, पास्टर और

कलीसिया के कार्यकर्त्ता हैं। मैं जानता हूँ कि बहुत सारे मसीही और सेवक हैं जो बोलेंगे कि मसीहियों को इस प्रकार के रोग से कभी भी पीड़ित नहीं होना चाहिए और यदि ऐसा होता है तो इसका अर्थ है कि वे प्रभु की सामर्थ्य में काम करने के बदले उनकी अपनी शक्ति में काम कर रहे हैं। मैं उनकी बात को निश्चित रूप से समझता हूँ परन्तु कहना चाहता हूँ कि तथ्य संकेत देते हैं कि परमेश्वर के कई सच्चे और ईमानदार सेवक बहुत सारी शारीरिक, भावात्मक और मानसिक शक्ति को खर्च करते हैं और अनजाने में अपने आप को थका देते हैं। कई मसीही कार्यकर्त्ता उनके काम में इतनी ईमानदारी और पूर्ण समर्पण के साथ उनके काम में लगे होते हैं और अपने आप को इस श्रेणी तक उँडेल देते हैं कि वे उनकी सारी प्राणाधार शक्तियों को खर्च कर देते हैं। ऐसे लोग उनका इतना समय अपने साथी मनुष्य की सेवा करने में लगा देते हैं कि वे विश्राम और स्वास्थ्यलाभ की उनकी आवश्यकता की उपेक्षा करते हैं। प्रेरित पौलुस भी गलातियों 6:9 में भले काम करने में साङस टूट जाने की बात करता है। कृपया ध्यान दें कि वह भला करने में थक जाने की बात नहीं कर रहा है, बल्कि भले कामों में लगे होने के कारण थक जाने की बात कर रहा है। वे उनके अनेक भले कामों के परिश्रम के फलस्वरूप पूरी तरह थकने और साहस टूट जाने के खतरों में थे।

अत्यधिक थकान की घटना का वर्णन करने के प्रयत्न में मैं ने अकसर गाड़ी का सादृश्य इस्तेमाल किया है। टंकी खाली है और टायरों में हवा नहीं है। न केवल बैटरी खाली है, परन्तु जो रसदृव्य चार्ज को रखता है वह भी खाली है। बैटरी को दोबारा चार्ज कर पाना अब सम्भव नहीं है। अब आवश्यक हो गया है कि जो रसदृव्य चार्ज को रखता है बदला जाए।

"बर्नआउट" अत्यधिक भावात्मक, तन्त्रिकीय और शारीरिक थकान के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। यह अपरिभाषिक शब्द है जो कई विभिन्न परन्तु एक प्रकार की दशाओं के लिए इस्तेमाल होता है। एक सबसे संगत रोगलक्षण शरीर, मन और आत्मा की लगभग सम्पूर्ण थकान है। एक स्थाई थकान जो मनुष्य के सम्पूर्ण अस्तित्व को प्रभावित करती है। एक ऐसी थकान जो जल्दी सोने, या रात भर अच्छी तरह सोने से दूर नहीं होती। यह एक ऐसी अवस्था में पहुँच चुकी है कि रातों को जल्दी सोने से यह ठीक नहीं हो पाती है। व्यक्ति एक स्थाई सुस्ती महसूस करता रहता है। उनमें सबसे सरल काम करने की भी शक्ति नहीं होती। उनकी रचनात्मकता पूरी तरह चली गई होती है, और वे साफ-साफ सोच नहीं पाते हैं। उनकी प्रेरणा और उपयोग नहीं के समान होते हैं। काम का विचार ही उन्हें थका देता और अशक्त कर देता है।

अत्यधिक थकान के विशेष कारण असंख्य हैं और रोगलक्षण हर व्यक्ति से भिन्न हो सकते हैं। यदि किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता हो तो रोगनिदान को प्रकट रूप से अधिक निश्चित होने की आवश्यकता है। इस संक्षिप्त अध्ययन के लिए हम विभिन्न प्रकार के रोगों से निपटने का प्रयत्न नहीं करेंगे परन्तु उन पर "अत्यधिक थकान" के सामान्य नाम के नीचे विचार करेंगे।

मैं ने पता लगाया है कि पास्टर तीन मुख्य कारणों से इस कपटी रोग के विशेषकर शिकार हो सकते हैं।

- अः लोगों की देखभाल करने के उनके काम की प्रकृति।
- आः कर्तव्यनिष्ठ सेवकों का भारी, स्वगृहीत काम का बोझ।
- इः सुरक्षा की एक झूठी भावना, यह मानकर चलना कि यह उनके साथ कभी नहीं हो सकता है।

1: अत्यधिक थकान के बाइबल के उदाहरण

हालाँकि कई मसीही विश्वास करते हैं कि एक परमेश्वर के बच्चे को तन्त्रिकीय थकान जैसे रोगों से कभी भी पीड़ित नहीं होना चाहिए। मेरा विश्वास है कि बाइबल में काफी प्रमाण हैं जिससे पता चलता है कि परमेश्वर के कुछ उत्तम सेवकों ने ऐसी परीक्षाओं को अनुभव किया था। कलीसिया का इतिहास भी पुष्टि करता है कि कुछ महान अगुवों ने भी इस रोग से विभिन्न प्रकार से दुख उठाए हैं।

क्या मूसा अत्यधिक थकान की सीमा पर था?

मूसा सम्भवतः एक ऐसे व्यक्ति का स्पष्ट उदाहरण है जो अत्यधिक थकान का रोगी बनने की ओर बढ़ रहा था जब उसके बुद्धिमान ससुर ने हस्तक्षेप किया और उसकी कुछ जिम्मेवारियों को प्रतिनिधान की प्रक्रिया के द्वारा दूसरों को सौंपने के लिए मनवा लिया। (निर्गमन 18:13-27)। यित्रों ने उसके दामाद के विषय में कई चीजों को देखा।

- आय. 13 वह देर तक काम करता था - सुबह से शाम तक। उस पर लोगों की समस्याओं का न्याय करने की भारी जिम्मेवारी थी।
- आय. 14 वह इस बोझ को अकेले उठाता था।
- आय. 16 वह लोगों की सब समस्याओं को निपटाने का प्रयत्न कर रहा था।
- आय. 18 मूसा अपने आप को एक ऐसे काम से थका रहा था जो उसके लिए बहुत अधिक था।
- आय. 18 लोगों की सेवा भी अच्छे से नहीं हो रही थी।

यित्रों ने मूसा को सलाह दी कि वह उचित अगुवों को नियुक्त करे और उसकी अधिकाँश जिम्मेवारी को उन्हें सौंप दे। इसके बाद मूसा की थकान के विषय कुछ नहीं कहा गया है और हम मान सकते हैं कि नई पद्धति ने उसे पूर्ण थकान से बचा लिया होगा।

एलिय्याह ने अत्यधिक थकान अनुभव की थी (1 राजा 19:1-8)

1 राजा 18 में, एलिय्याह कई उत्साही आत्मिक क्रियाओं में लगा हुआ था जिससे वह आत्मिक, मानसिक, और भावात्मक रूप से खाली और थका हुआ हो गया था।

आय. 20-40 उसने बाल के 450 नबियों का सामना किया और हराया।

आय. 41-45 उसने अकाल को मिटाने के लिए प्रार्थना द्वारा वर्षा लाई।

आय. 46 वह पंद्रह मील दौड़ता हुआ रथ से आगे निकल गया। हालाँकि, "यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर थी", फिर भी जब वह यिज्रेल पहुँचा वह थका हुआ था। याकूब हमें बताता है कि "एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था।" (याकूब 5:17)। हाल की घटनाओं ने उसे थका और कमज़ोर कर दिया था। जब ईजेबेल ने उसे धमकाया, वह अपनी जान बचाने भागा। अध्याय 19 में, हम अत्यधिक थकान के कई आदर्श रोगलक्षण पाते हैं।

अः जबाव और जिम्मेवारियों से भागना।

आय. 4 "परन्तु वह स्वयं जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया।"

संसार और इसकी समस्याओं से सम्पर्क तोड़ने और सब कुछ से दूर जाने की इच्छा तनाव और थकान का एक सामान्य लक्षण है। कहीं अकेले बैठने की प्रवृत्ति भी है, अकसर घुटनों में सिर रखकर बैठते हैं, और अकसर निराशा और उदासी के गड्डे में उतर जाते हैं। दुख की बात यह है कि आप जिम्मेवारियों से भागते हो फिर भी अपने आप को जंगल में पाते हो।

मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो अत्यधिक थकान अनुभव कर रहे थे जो बिस्तर में बाहर नहीं निकलते, और कई-कई हफ्तों तक वहीं रहते हैं। वे काम पर जाने या किसी भी प्रकार का काम करने से इन्कार करते हैं। वे उनके बिस्तर में रात और दिन रहते हैं, उस सुरक्षा में से बाहर निकलने से डरते हैं जो उन्हें वहाँ मिलती है। वे घुटनों में सिर छिपाकर बैठे रहते हैं जैसे कि अपनी माँ के गर्भ की शरण और सुरक्षा में लौटने का प्रयास कर रहे हों। उनके जीवन के उस में भाग जाने का प्रयास कर रहे हों जब उनकी कोई जिम्मेवारी और कोई तनाव नहीं था।

आः लोगों से दूर जाना।

आय. 3 "अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया।"

यहाँ हम लोगों से दूर चले जाने एकाकीपन खोजने की आदर्श प्रवृत्ति देखते हैं। शिकार प्रायः उसके प्रिय जनों की उपस्थिति सहन नहीं कर पाता है हालाँकि वे उसे समझने और प्रोत्साहित करने का प्रयत्न कर रहे होते हैं। वह घनिष्ठ और भरोसेमंद मित्रों की उपस्थिति भी सहन नहीं कर पाता है, और न ही उनकी जो उसके निकट और प्रिय हैं। वह दूसरे लोगों की संगति से निपट नहीं पाता है। वह प्रायः पाता है कि वह उस कमरे में जा नहीं सकता है जहाँ दूसरे बैठे हैं। वह बाहर सड़क पर या किसी दूसरे सार्वजनिक स्थान में जा नहीं सकता है। वह एक दुकान या होटल में जाने से डरता है, दूसरे लोगों के करीब जाने से डरता है।

इः हताश और निरुत्साहित।

आय. 3 "एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा, और यहूदा के बेर्शेबा को पहुँचा।"

जिस मनुष्य ने बाल के 450 नबियों का अकेले सामना किया था, अब एक अकेली स्त्री से भागता है जिसने उसे धमकी दी थी। उसे क्या हुआ था? उसने अपना हौसला खो दिया था। उसकी भीतरी शक्ति, धैय और साहस उसे छोड़ गए थे। जिस मनुष्य ने इतने सारे झूठे नबियों को सफलतापूर्वक चुनौती दी और हराया था, उसके पास एक स्त्री का सामना करने को साहस नहीं था।

ईः आत्मसम्मान की पूर्ण हानि।

आय. 4ब "हे यहोवा, बस है; अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूँ।"

अत्यधिक थकान का शिकार अक्सर आत्म मूल्य और भीतरी विश्वास की सम्पूर्ण हानि अनुभव करता है। उसके आत्म विश्वास और आत्म मूल्य की भावना निम्नतम हैं। उसका आत्म संदर्श बिलकुल नकारात्मक हो जाता है। वह अपने आप में या अपनी योग्यताओं में कोई गुण या मूल्य नहीं देखता है। यह नकारात्मक मूल्याँकन इतना शक्तिशाली होता है कि उसे जीने का कोई कारण नज़र नहीं आता है। उसे निश्चय होता है कि उसके जीवन का दोबारा कोई अर्थ नहीं होगा और परमेश्वर से माँगता है कि उसका जीवन ले ले।

उः गहरी, स्थाई उदासी अनुभव करना।

उसका रवैया, शारीरिक मुद्रा, शब्द और अभिव्यक्तियाँ, सब ऐसे व्यक्ति के विषय में बताते हैं जो बहुत उदास है। उसका दृष्टिकोण बिलकुल नकारात्मक है। उसके पास कुछ भी सकारात्मक कहने के लिए नहीं है। उसमें भविष्य का कोई भी पूर्वाभास नहीं है। कुछ भी आगे देखने के लिए नहीं। उसकी मनोदशा अन्धकारमय और राहत के बिना निराशाजनक है। डरावनी, दुर्बल करनेवाली उदासी अत्यधिक थकान का सबसे सामान्य और सबसे भयानक लक्षण है।

ऊः गहरी निराशा और आशा की हानि।

अचानक उसका जीवन बेकार लगता है। जीने में अब कोई कारण नहीं दिखता है। "काफी हुआ", वह पुकारता है। मैं अब जीवन का सामना नहीं कर सकता। निराशा का अर्थ सम्पूर्ण हानि या आशा की अनुपस्थिति है। एलिय्याह उदास और निरास है, आत्मा में इतना निम्न जितना हो सकता है।

एः एक कारूणिक मृत्यु की चाह।

आय. 4 "वहाँ उसने यह कह कर अपनी मृत्यु माँगी, "हे यहोवा, बस है; अब मेरा प्राण ले ले।"

कई मसीहियों को यह समझने में बड़ी कठिनाई होगी कि कैसे यह महान भविष्यद्वक्ता, विशाल महत्ता का एक आत्मिक भीमकाय, मरने की चाह कर सकता है। उन्होंने निराशा की उस गहराई को कभी भी अनुभव नहीं किया है जिसे उसने अनुभव किया था। उन्होंने उदासी के अन्धकार को कभी जाना नहीं है जिसके कारण एक व्यक्ति महसूस करता है कि जिस प्रकार का अस्तित्व वह अनुभव कर रहा है उससे मृत्यु बेहतर होगी। मृत्यु की इच्छा तब आती है जब मृत्यु की सम्भावना जीवन की सम्भावना से अधिक वांछनीय लगती है। यही हो सकता है जिसका उल्लेश दाऊद भजन 23:4 में करता है, जब वह "घोर अन्धकार से भरी हुई तराई" की बात करता है।

इस प्रकार की बीमारी की गम्भीरता को समझना कम से कम दो कारणों से महत्त्वपूर्ण है:

- ताकि आप इस प्रकार की दशा के शिकार होने से बच सकें।
- ताकि आप उन्हें सहानुभूति दिखा सकें जो ऐसे अन्धकार को अनुभव करते हैं।

ऐः उसकी अन्तिम पुनःप्रतिष्ठा

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि कहानी उसकी मृत्यु की इच्छा के साथ समाप्त नहीं होती। परमेश्वर बीच में आया और उसका छुटकारा और पुनःप्रतिष्ठा लाया। कृपया ध्यान दो कि परमेश्वर के नुसखे में एक लम्बी नींद और भरपेट भोजन था। दो बहुत स्वाभाविक इलाज़। (1 राजा 19:6)। अकसर ऐसा होता है कि स्वाभाविक इलाज़ सबसे सरल और उत्तम होते हैं।

क्या दाऊद भी एक शिकार था?

"हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?" (भजन 42:11)

दाऊद के लेखों की अधिकतर शक्तिशाली और रचनात्मक आकृति तब ही समझी जा सकती है यदि हम पहचानें कि वह सम्भवतः अत्यन्त भावात्मक सदमा, तन्त्रिकीय थकान, और परिणामी उदासी के दौरे अनुभव कर रहा था - अत्यधिक थकान के आदर्श लक्षण। बतशेबा के साथ उसकी दुखद घटना के बाद वह सम्भवतः मानसिक और भावात्मक थकान से पीड़ित था। (2 शमूएल 11:1-13)। यह समय था "जिस समय राजा लोग युद्ध करने निकला करते हैं", फिर भी दाऊद, एक प्रसिद्ध योद्धा घर में रह गया, सम्भवतः युद्ध की थकान महसूस कर रहा था। वह अपने मध्य वर्षो में भी था, और सम्भवतः मध्य जीवन के संकट अनुभव कर रहा था। वह अनिद्रारोग और समय पर नींद नहीं आने का शिकार था, यह अत्यदिक थकान का एक दूसरा सामान्य लक्षण है। यह सब जो आगे हुआ था उसकी सफाई के लिए नहीं है परन्तु यह उस दुखद घटना की कुछ सम्भव पृष्ठभूमि देता है और इसे दूसरों के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए।

प्राण की अन्धेरी रात

भजन 22 की सुस्पष्ट आकृति तब ही बेहतर समझी जा सकती है यदि हम पहचानें कि यह दाऊद के अत्यधिक थकान के अनुभव का एक दृश्य था। बहुत सारी आयतें तब ही समझ में आती हैं जब हम इस पृष्ठभूमि को मन में रखते हैं। नही तो वे मात्र बड़ी-बड़ी बातें लगती हैं। जबकि यह भजन दुख उठा रहे मसीहा का भविष्यसूचक है, हमें समझना चाहिए कि यह पहले तो दाऊद के अनुभव का विवरण है। इस प्रकार वह उसके दुखों के अँधकारमय समय में मसीहा का प्रतीक बनता है। असंख्य रचनात्मक,

शक्तिशाली, और भयानक आयतें हैं, परन्तु आरम्भ की पँक्तियों से भयानक नहीं, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है?" (भजन 22:1)। यह सोचने के लिए एक गंभीर विचार है कि यह आयत दाऊद और यीशु दोनों के अनुभव का वर्णन करती है। दोनों अन्धकार, उदासी और निराशा के एक ऐसे भयानक समय में से गुज़रे थे, कि उनको लगा था कि परमेश्वर उनको छोड़ गया है और उनके सबसे दुख के समय में उनसे दूर चला गया है। मानसिक और भावात्मक थकान की घाटी इतनी गहरी और इतनी अँधेरी होती है कि शिकार परमेश्वर की उपस्थिति अपने साथ अनुभव नहीं करता है।

परमेश्वर के असंख्य पुरुषों और स्त्रियों ने इसी प्रकार के मानसिक आघात अनुभव किए हैं। आगस्तीन, मार्टिन लूथर, और कई दूसरे आत्मिक भीमकाय मनुष्यों ने "प्राण की अँधेरी रात" के अनुभवों को लिखा है। यह एक घाटी के समान है जिसमें से कई गुज़रे हैं, जो बाद में प्रकाश और परिपक्वता के नए क्षेत्र में उभर आए हैं। सम्भवतः यही "घोर अन्धकार से भरी हुई तराई" थी जिसका जिक्र दाऊद भजन 23 में करता है। भजन 30:5 का उसका अनुभव "कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनन्द होता है" भी सम्भवतः इसी अनुभव की बात कर रहा था। निश्चय ही यह पवित्रशास्त्र और जो विचार यह बताता है, उस व्यक्ति के लिए बहुत प्रोत्साहन की बात हो सकती है जो ऐसी परीक्षा में से गुज़र रहा है। यह जानना कि ऐसा अन्धकार सदा बना नहीं रहेगा, परन्तु रात के समान, इसके बाद एक नया और महिमामय दिन आएगा।

नए नियम का अनुभव

कोई कहेगा, "यह सब सत्य हो सकता है परन्तु यह पुराने नियम के लोगों के साथ हुआ था। यदि वे नए नियम के सम्बंध के लाभ को जानते, तो उन्हें ऐसे दुख नहीं उठाने पड़ते थे।" आओ हम नए नियम में इपफ्रुदीतुस के अनुभव पर एक दृष्टि डालें। (फिलि. 2:25-30)।

<u>उसकी पृष्ठभूमि</u>

अः वह पौलुस का घनिष्ठ मित्र था - "मेरा भाई", पौलुस कहता है।
आः वह एक साथी कार्यकर्त्ता था - पौलुस का "सहकर्मी"।
इः "संगी योद्धा" - आत्मिक युद्ध में अनुभवी।
ईः वह पौलुस का मिश्नरी सहायक था।
उः कुछ प्रतिष्ठा, अनुभव, और परिपक्वता वाला एक मसीही अगुवा था।

<u>उसकी बीमारी की प्रकृति</u>

अः उसने अधिक काम किया था -- "मसीह के काम के लिए" आय. 30
आः कोई दूसरा कारण नहीं बताया गया है।
इः वह बीमार हो गया था यहाँ तक कि मरने पर था। (आय. 27)। "क्योंकि वह मसीह के काम के लिए अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मृत्यु के निकट आ गया था ताकि जो घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई उसे पूरा करे।" (आय. 30)

असली शारीरिक काम आपको थका सकता है परन्तु यह मृत्यु के निकट नहीं लाएगा। परन्तु जिम्मेवारी का तनाव, चिन्ता और बेचैनी और कई लोगों का काम करने का प्रयत्न निश्चय ही ला सकता है। इपफ्रुदीतुस प्रकट है कई लोगों का काम करने का प्रयत्न कर रहा था ताकि "जो घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई उसे पूरा करे।"

<u>उसका छुटकारा</u>

आय. 27. "परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की" - और पौलुस पर भी।

इपफ्रुदीतुस परमेश्वर के काम में दोबारा लग सका था। फिलिप्पी के विश्वासी उनकी जिम्मेवारी के लिए उठ खड़े हुए और पौलुस की सेवा करने लगे जैसे उन्हें पहले करना चाहिए था, जो इपफ्रुदीतुस के द्वारा उनके दान भेजना था। इस संकट का एक अच्छा परिणाम यह हुआ कि कई और लोग भी सेवा में लग गए। यह सदा एक परिणाम होगा।

2: अत्यधिक थकान के कुछ सामान्य लक्षण

अत्यधिक थकान तब होती है जब मानसिक और भावात्मक शक्तियाँ खर्च हो जाती हैं जिससे पीड़ित व्यक्ति जीवन और इसकी जिम्मेवारियों से निपट नहीं पाता है।

अत्यधिक थकान के कुछ लक्षण क्या हैं ? आपको कब पता लगेगा कि आप इसके शिकार होने के खतरे में हैं ? मैं कुछ सम्भव लक्षणों की एक सूची दूँगा जो वैसे तो किसी प्रकार से भी सम्पूर्ण नहीं है। आप उन में से कुछ या सब से पहचान कर सकते हो। यदि ऐसा हो तो आपको अपनी स्थिति की जाँच करनी और कुछ बचाव का कार्य करना पड़ेगा। यदि आप इस दशा की प्रारंभिक अवस्था में हैं तब किसी प्रकार की छुट्‌टी इस समस्या को ठीक कर सकती है। आपको सम्भवतः आपका जीवन और कार्यक्रम किसी प्रकार दोबारा संगठित करना होगा, जैसे कि अपना कुछ काम अपने सहयोगियों को सौंपना। यदि लक्षण अधिक अग्रवर्ती और गहरे स्थापित हो गए हैं, तब आपको सम्भवतः अधिक गंभीर कदम उठाने पड़ेंगे। यदि आप छुट्‌टि के लिए जाते हो, और पाते हो कि आप विश्राम नहीं पा रहे हो, तब यह एक संकेत होगा कि आप एक गंभीर समस्या की ओर बढ़ रहे हो और कुछ जिम्मेवार कदम उठाने की आवश्यकता है। प्रायः असंख्य चेतावनी के संकेत आते रहते हैं, जिनकी ओर यदि ध्यान दिया जाए, तब समस्या बड़ने से पहले उससे निपटने के लिए आसान से कदम उठाए जा सकते हैं। परन्तु, यदि अनदेखे किए जाएँ और उनको गढ़ बनने दिया जाए, तो समाधान कम आसान होता जाता है और दशा इलाज के लिए अधिकाधिक कठिन होती जाती है।
एक सादृश्य जिसे मैं कभी-कभी इस्तेमाल करता हूँ इस प्रकार है। कल्पना करो कि आप एक गुप अँधेरी रात के समय एक ऊबड़-खाबड़, अनजाने रास्ते पर चल रहे हो। आप अपने सामने कुछ भी नहीं देख सकते हो परन्तु आप उस भूमि को पार करने का निश्चय किए हुए हो। आप धीमे और सावधानी के साथ चलते हो, और किसी भी बाधा को भाँपने और दूर करने का प्रयत्न करते हो। परन्तु अपने प्रायसों के बावजूद, आप रास्ते में पड़ी टहनियों और पत्थरों से ठोकर खाते हो और थोड़ी बहुत चोटें पाते हो। परन्तु इसे चेतावनी और सम्भावित बाधा के रूप में लेने के बदले, आप मूर्खतापूर्ण चलते रहते हो और सुबह होने की प्रतीक्षा नहीं करते। आकिरकार आप एक गहरे, अँधेरे गड्‌डे में गिर पड़ते हो जिसमें से बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं है। अब आपको उस गड्‌डे में से निकलने के लिए कुछ सहायता लेनी पड़ेगी और इसमें कुछ समय भी लगेगा। लगने वाला समय भी कुछ हद तक अलग हो सकता है और जिस प्रकार का दर्द और निराशा आप अनुभव करोगे हर व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकती है। परन्तु सच्चाई यह है कि आप आसानी से निकल नहीं सकोगे। आप सम्भवतः अपने जीवन के कुछ सबसे अँधकारपूर्ण समयों में से गुज़रोगे, और अपने चाहनेवाले भी।

यदि आपने इस भयानक घटना को कभी भी देखा या अनुभव नहीं किया है तब आप सोचोगे कि मैं इसके परिणामों को बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा हूँ। परिणामस्वरूप, आप मेरी चेतावनियों को अनदेखा कर सकते हो, परन्तु मैं बल देना चाहता हूँ कि यह बीमारी बहुत असली है और बहुत डरावनी भी। यह कोई कल्पना नहीं है। यह गंभीर, सर्वनाशक और विनाशक है। वर्तमान में हज़ारों इसके विनाश को अनुभव कर रहे हैं और मेरा विश्वास है कि उन में से हर एक पछता रहा है कि उसने इन के लक्षणों को आरम्भ में पहचाना नहीं और अपने आप को इससे बचाने के लिए कुछ नहीं किया।

इसलिए यह आवश्यक है कि हम सामान्य लक्षणों के विषय में कुछ जानाकरी पाएँ ताकि उनको आरम्भ से पहचान सकें और इससे पहले वे जड़ पकड़ लें उनसे बचने का कोई उपाय कर सकें। मैं यहाँ संक्षेप में कुछ लक्षणों पर टिप्पणी करूँगा।

1: भवात्मक थकान, थकावट और उदासी।
2: व्यक्तित्वलोप। निम्न आत्म सम्मान।
3: रचनात्मकता, एकाग्रता और उत्पादकता की हानि।

प्रारंभिक लक्षणों में हो सकता है:

- मन और विचार बिना नियंत्रण के भागते रहते हैं।
- पेट मन्थन।
- शारीरिक तनाव।
- तेज हृदय की धड़कन।
- आतंक, घबराहट और उलझन महसूस करना।

पीड़ित व्यक्ति निम्नलिखित कुछ या सब भी अनुभव कर सकता है:

1: ऊँचे बेचैनी के स्तर। अत्यधिक चिन्तित।
2: निरन्तर थकान - लगभग पूर्ण थकान।
3: उदासीनता और भावशून्यता। जिम्मेवारी की कम भावना।
4: व्यर्थथता की भावना। आशाहीनता और निराशा।

5: रचनात्मकता और एकाग्रता की हानि। कम उत्पादकता।
6: डर। सब कुछ से बिना कारण डरना।
7: चिड़चिड़ापन। अपने साथ और दूसरों के साथ।
8: सम्बंधों में मनमुटाव। विशेषकर पत्नी/पति और परिवार के साथ।
9: उदासी। निरान्द, हतोत्साहित और दुखी।
10: नींद के तरीकों में अशान्त। अनिद्रारोग।
11: भूख और वजन में परिवर्तन। वजन में तेजी से कमी या बढ़ावा।
12: नकारात्मकता। पूर्ण नकारात्मक दृष्टिकोण।
13: परिदृश्य की हानि। तिल पहाड़ जैसे दिखते हैं।
14: एक बच्चे के समान रोने की इच्छा।
15: अनिर्णायकता। छोटे से फैसले भी करने की अयोग्यता।
16: सामाजिक अलगाव। अकेले होने की इच्छा।
17: निम्न आत्म सम्मान। आत्मविश्वास की हानि।
18: उच्चरक्तचाप। तनाव से भरा हुआ।
19: मनःकायिक लक्षण। उदा., "दिल का दौरा का दर्द"
20: बिस्तर में पड़े रहने की इच्छा। प्रायः घुटनों में सिर की स्थिति में।
21: असफलता की भावनाएँ। जीवन के काम की असफलता का डर।
22: अस्वीकरण की भावनाएँ।
23. विश्राम करने की अयोग्यता।
24: बाइबल पढ़ने की अयोग्यता। कुछ भी समझ नहीं आता।
25: परमेश्वर की उपस्थिति की भावना खोना। परमेश्वर को महसूस नहीं कर पाना।
26: मरने की इच्छा। मरने की वीभत्स इच्छा। आत्महत्या जैसी प्रवृत्तियाँ।

अगुवों से सम्बंधित कुछ सम्बद्ध समस्याएँ।

जैसे मैं ने इस घटना का पिछले कई वर्षो में निकट से अध्ययन किया है तो मैं ने इस दशा के कुछ उपफल पाए हैं जो केवल मसीही अगुवों के जीवनों में देखे जाते हैं। वे कुछ सम्बद्ध समस्याएँ हैं जिनमें विशेषकर मसीही अगुवे गिरते हैं और जो उनके लिए विशेष चिन्ता का विषय है। मैं उन में से सात का संक्षेप में वर्णन करूँगा।

अः वास्तविकता से मानसिक अलगाव।

प्रारंभ में तो यह एक बहुत नरम रूप में दिखेगी, अवास्तविकता की एक अस्पष्ट भावना या "यह असल में नहीं हो रहा है, मैं असल में यहाँ नहीं हूँ" भावना। अपना जीवन स्वपन जैसा लगता है, जैसे कि आप जीवन में से तैरते हुए जा रहे हो और वास्तविकता की भूमि पर पाँव रख नहीं रहे हो। यदि यह भावना बनी रहती है और खराब होती जाती है, तो यह "शरीर के बाहर" का सा अनुभव बन सकता है जिसमें आप को लगेगा कि आप उपस्थित नहीं है, और अपने जीवन को ऐसा देख रहे हो जैसे कि टीवी स्क्रीन पर देख रहे हो। आपको ऐसा लगेगा जैसे कि आप अपने जीवन में हिस्सेदार होने के बदले एक प्रेक्षक हो।

आः जिम्मेवारी की एक कम भावना।

अधिकतर वास्तविकता से अलगाव के परिणामस्वरूप, अकसर व्यक्तिगत जिम्मेवारी की भावना का कम होना होता है। आपका मन प्रकट है समझता है कि आपके वर्तमान तनाव आपकी कई जिम्मेवारियों का परिणाम हैं, और स्पष्ट रूप से उन जिम्मेवारियों को किसी प्रकार के शत्रु के रूप में देखता है जिनसे वह पीछे हटना और उनसे भागना चाहता है। यह उन जिम्मेवारियों की ओर एक नाराज़गी बनाता है जिन्होंने आपको लगता है दर्द दिया है। अवचेतन में आप उनकी ओर "मैं तुम्हारा कर्ज़दार नहीं हूँ" भावना रखते हो। यह अपनी जिम्मेवारियों को निभाने की ओर एक भीतरी विद्रोह और उनको अनदेखा करने की भावना पैदा करता है।
यह रवैया प्रायः पीड़ित व्यक्ति की प्राथमिकताओं को विकृत करता है। जबकि उनके मन का एक भाग पहचानता है कि करने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण चीजें हैं और उन्हें नहीं करने के कारण दोषी भी महसूस कर सकता है, दूसरा भाग है जो उन्हें पूरा करने में सम्मिलित होने से इन्कार करता है। एक सादृश्य जो इस प्रवृत्ति को चित्रित करता है एक व्यक्ति का है जिसकी मेज पर कागजातों का ढेर लगा हुआ है जिनका उत्तर देना है। परन्तु उन पत्रों से निपटने के बदले व्यक्ति घंटो तक मेज पर बैठ कर पेपर क्लिपों से

खेलता रहता या दराज की चीजों को ठीक करता रहता है। ऐसा कुछ भी करेगा जिससे उन विषयों से निपटना न पड़े जिन पर ध्यान देना आवश्यक है।

जिम्मेवारी की यह कम भावना भी बहुत खतरनाक है क्योंकि यह नैतिक जिम्मेवारी के क्षेत्र में आ सकती है। मसीही अगुवे की नैतिक सच्चाई के नमूने की ओर एक जिम्मेवारी है। सदगुण और सम्पूर्णता का एक आदर्श बनने की आवश्यकता का निरन्तर दबाव है। उसके मन का एक भाग इस आवश्यकता की वैधता पहचानता है, दूसरा भाग इसे मात्र एक दूसरी थोपी जा रही जिम्मेवारी के रूप में देखता है और इसकी माँगों से अप्रसन्न होता है। इसलिए पीड़ित व्यक्ति इस प्रत्यक्ष जिम्मेवारी की ओर कम झुकाव महसूस करता है। इस प्रकार वह उसकी नैतिक जिम्मेवारियों को अनदेखा करने की परीक्षा की ओर अधिक भेद्य और संवेदनशील बन जाता है।

इः एक अतिसक्रिय विवेक।

जिम्मेवारी की कम भावना के विषय में मेरी टिप्पणियों को मानना अजीब लग सकता है जब मैं उसके साथ अतिसक्रिय विवेक की बात भी कर रहा हूँ, परन्तु इस प्रकार के विरोधाभास वह मन सोच लेता है जो दबाव में है। यह तथ्य कि पीड़ित व्यक्ति उसकी जिम्मेवारियों का सामना और उनको पूरा नहीं कर रहा है, इसका अर्थ यह नहीं कि उसका विवेक निर्जीव हो गया है। अकसर इसका उलटा सच होता है और पीड़ित व्यक्ति जिम्मेवारी की कम भावना और एक अतिसक्रिय विवेक के द्वन्द्व में पड़ा रहता है। यह असमान परन्तु भयानक मिश्रण है जो उसमें अधिकाँश मानसिक खलबली और उदासी पैदा करता है। वह अकसर बड़े आतंक में रहता है जैसे वह अपने आप को अपने उच्च और कभी-कभी अतिरंजित विवेक के नियमों का उल्लंघन करते पाता है।

वर्षो से मसीही जीवन जीने और उसकी अगुआई ने उसे एक बहुत शक्तिशाली जानकारी दी है कि उसे कैसे जीना चाहिए। परन्तु उसका अभी का खण्डित मन, जो भारी जिम्मेवारियों के कारण टूटा हुआ है, उन जिम्मेवारियों को निभाने की आवश्यकता से भागना चाहता है जिन्हें उसका विवेक आदेश देता है। वह एक भयानक दुविधा का शिकार है। वह दो शक्तिशाली शक्तियों, उसका विवेक, और एक मन जो दबाव से राहत पाना चाहता है के बीच द्वन्द्व में फँसा हुआ है।

ईः दोष की एक शक्तिशाली भावना।

दोष एक ऐसी चीज है जिससे अधिकाँश मसीही बहुत परिचित हैं। कलीसिया का स्वभाव लोगों को उनके दोष की जानकारी देने की ओर पक्षपाती होता है। कलीसिया का पहला संदेश प्रायः होता है, "तुम एक दोषी पापी हो।" यह प्रकट है कि यह क्षमा, उद्धार, पुनःस्थापना और परमेश्वर के साथ सम्बंध अनुभव करने के लिए एक आवश्यक पूर्वाभास है। परन्तु दुर्भाग्यवश दोष पर बल, दी गई धार्मिकता पर बल से अधिक होता है, जिसका दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम यह होता है कि कई लोग एक गहरे भीतरी दोष की भावना पा लेते हैं। यह अकसर क्षमा और शुद्धीकरण में छिपा होता है, और प्रायः दोष मन के सचेत सतह के नीचे घात में रहता, और इसके शिकार पर दोष लगाने और सताने के अवसर में रहता है।

अत्यधिक थकान से पैदा हुए अवसर से मिलने वाली मानसिक और भावात्मक थकान अकसर इस प्रकार का मुख देती है और पीड़ित व्यक्ति एक ऐसे विवेक के हाथ में पड़ जाता है दोष दोष चिल्लाता रहता है। जो लोग उदास रहते हैं (अत्यधिक थकान का सबसे सामान्य लक्षण), प्रायः दोष के साथ निरन्तर युद्ध में लगे रहते हैं।

मूल रूप से दो प्रकार के दोष होते हैं - असली और काल्पनिकः

असली प्रकार का दोष किसी पाप या अपराध का परिणाम होता है जिसने पवित्र परमेश्वर को नाराज़ किया है। और पश्चाताप, क्षमा और शुद्धीकरण की ओर पहले कदम के रूप में पवित्र आत्मा व्यक्ति में दोष की एक भावना लाता है। यह परखा और विश्वस्त नुसखा है, जो पाप का और दोष का जिसे पाप लाया है एकमात्र इलाज़ है। यह बहुत सरल और अत्यन्त प्रभावशाली नुसखा है। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9)।

काल्पनिक दोष अधिक जटिल है और इसलिए निपटने के लिए अधिक कठिन है। अधिकाँश अत्यधिक थकान के पीड़ित व्यक्ति सच्चे दोष से नहीं निपट रहे हैं। उन्होंने न अपराध और न परमेश्वर को नाराज़ किया है, और न वह उन्हें दोष की भावना में लाने का प्रयत्न कर रहा है। वे दोष की भावनाओं से पीड़ित हैं। अधिकाँश मसीही उनकी प्रत्यक्ष त्रुटियों और असफलताओं के विषय में अति संवेदनशील होते हैं। वे हर चीज के विषय में दोषी महसूस करते रहते हैं। उनका उनके जीवन की ओर एक अत्यन्त नकारात्मक परिदृश्य है और वे असफलता की शक्तिशाली भावनाओं और परिणामी दोष से जूझते रहते हैं।

जबकि असली दोष से पाप स्वीकार, पश्चाताप और परमेश्वर की क्षमा स्वीकार करके शीघ्रता के साथ निपटा जा सकता है, काल्पनिक दोष के साथ उसी प्रकार नहीं निपटा जा सकता है। सबसे पहले तो दोष असली नहीं है, यह एक अशान्त मन की रचना है

जो इसके शिकार को दण्ड देने की दुष्ट इच्छा रखता है। तो ऐसी भावनाओं को कैसे कम किया जा सकता है? पीड़ित व्यक्ति को काल्पनिक दोष की शक्ति से कैसे मुक्त किया जा सकता है? समझने के द्वारा कि यह काल्पनिक **है**। यह असली **नहीं** है। कि आप ने पाप नहीं किया है। कि परमेश्वर आपको दण्ड देने पर तुला हुआ नहीं है।

आप अपने आप को अवचेतन से दण्ड दे रहे हो। आप अपनी बीमारी के कारण निराश और उदास हो। आप स्वस्थ नहीं होने के कारण दोषी महसूस करते हो। आपके मन में कुछ सनकी चीज आपको इतने मूर्ख होने के लिए दण्ड देना चाहती है कि आप बीमार बन गए हो और अपनी जिम्मेवारियों को निभा नहीं पा रहे हो। केवल आप स्वयं ही हो जो अपने आप को इस पीड़ा से छुड़ा सकते हो। परमेश्वर आपको क्षमा नहीं कर सकता है क्योंकि आप पहले ही क्षमा पाए हो। अब आपको स्वतंत्र होने के लिए अपने आप को क्षमा करना चाहिए।

उः आत्मिक अँधेरा - अन्धकार से भरी हुई तराई।

अत्यधिक थकान में पड़े एक मसीही अगुवे को इससे निपटना सबसे कठिन होता है। जब उसे परमेश्वर की उपस्थिति को अपने साथ सबसे अधिक महसूस करने की आवश्यकता होती है, वह नहीं कर पाता है। ऐसा निश्चय नहीं है कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया या उससे चला गया है, परन्तु सच्चाई यह है कि पीड़ित व्यक्ति की मानसिक, भावात्मक और आत्मिक शक्तियाँ इतनी कम हो गई होती हैं कि वह अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति महसूस नहीं कर पाता है। मैं जानता हूँ कि मेरे कुछ भाइयों के पास कुछ अच्छे कलीसियाई कारण होंगे कि क्योंकि यह नहीं हो सकता है। वे सम्भवतः कई बाइबल के वचन बताएँगे, जिनसे लगेगा कि क्यों ऐसा नहीं होना चाहिए, और निसंस्देह नहीं हो सकता है। मैं सम्भवतः उन वचनों से सहमत होऊँगा और उनसे प्रोत्साहन और शान्ति पाऊँगा। फिर भी मैं जानता हूँ कि ऐसा हो सकता है। मैं पहले बाइबल से जानता हूँ, पहले दाऊद के अनुभव से और बाद में यीशु के अनुभव से, जिसका वर्णन भजन 22:1 में है, " हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है?" मैं परमेश्वर के कुछ महान सेवकों के लेखों से भी जानता हूँ जो कलीसिया के इतिहास में हुए हैं जिन्होंने ऐसे अनुभवों के विषय में बताया है जो उनके जीवनों में घटे थे। अन्त में, मैं इसके विषय में कुछ व्यक्तिगत अनुभव से जानता हूँ।

न केवल ऐसे समय में परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करना कठिन होता है, परन्तु उन पहले के सबसे विश्वस्त और प्रमाणित आत्मिक शक्ति के साधनों से शान्ति और सहायता पाना भी कठिन होता है। अत्यधिक थकान में बाइबल को आपकी स्थिति में पूरी तरह असंगत कर देने की योग्यता होती है। बाइबल बदली नहीं है। हुआ यह है कि आपकी बोध की शक्तियाँ कम हो गई हैं और यहाँ तक कम हो गई हैं कि कुछ भी समझ नहीं आता है। ऐसे समयों में किसी भी चीज को पढ़ पाना या ध्यान लगा पाना आपके लिए कठिन ही नहीं परन्तु असम्भव भी हो सकता है कि उससे कुछ सहायता पाएँ। ऐसी पुस्तकें हैं जो आपके लिए काफी सहायक हो सकती हैं परन्तु उन पर ध्यान लगाने से कि कुछ लाभ का पा सकें, आपको गहरी उदासी में ले जाता है। जो चीज आपको आपका शरीर बताने का प्रयत्न कर रहा है यह है कि आपने विभिन्न चीजों पर बहुत ध्यान लगाया था और आपके मन को अब कुछ आराम की आवश्यकता है। बाइबल को पढ़ने में अपने आप को विवश करने के बदले, आपको यह करना चाहिए कि जिन पवित्रशास्त्र को पहले पढ़ा और कंठस्थ किया था उन्हें याद करने का प्रयत्न किया जाए। उन्हें अपने मन में लाओ और शान्ति से उनके विषय में सोचो। मेरा विश्वास है दाऊद ने यही किया होगा जब वह हमें भजन 77:10 में बताता है, "मैं ने कहा, यही तो मेरा दुख है, कि परमप्रधान का दाहिना हाथ बदल गया है। मैं याह के बड़े कामों की चर्चा करूँगा।"

आपको पता चलेगा कि प्रार्थना कर पाना भी असम्भव है। विशेषकर वे गंभीर और प्रायः तीव्र प्रकार की प्रार्थनाएँ जिन्हें करने की आपको आदत थी। यहाँ भी यह आपकी एकाग्रता की शक्तियाँ हैं जो कम हो गई हैं। मेरा विश्वास है कि इसका उत्तर "प्रार्थना" नहीं कर पाने के कारण दोष महसूस नहीं होने देना है, परन्तु परमेश्वर के साथ अनियमित और अनौपचारिक बातचीत में लगना है। परमेश्वर के साथ उसी प्रकार बात करो जैसे कि आप अपने किसी प्रिय मित्र से बात करते हों। उसके साथ अपनी बातचीत को धार्मिक और आत्मिक बनाने का प्रयत्न मत करो। इसे अपने हृदय का बोझ कम करने और अपनी परेशानियों, घबराहटों और डरों को उँडेलने के लिए इस्तेमाल करो। परमेश्वर को प्रभावित करने का प्रयत्न मत करो। अपने हृदय और मन को सब कुछ उसके हृदय में डालने दो। अपने डरों के विषय में उसको बताओ। अपने गहरे रहस्यों को उसे बताओ। आप उसे किसी भी चीज से चकित नहीं कर सकते हो। वह चाहता है आप अपने बोझ हलके करो, "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।"

ऊः कुछ अगुवे क्यों गिरते हैं।

यह दुखी करनेवाली सच्चाई है कि समय समय पर, और जितना हम चाहते उससे कहीं अधिक बार-बार, हम उन मसीही अगुवों के विषय में सुनते हैं जो "अनुग्रह से गिर पड़े हैं।" पुरुष और स्त्रियाँ जो मसीही समाजों और संस्थाओं के अगुवे हैं जो परमेश्वर के

लोगों की अगुआई करने और मसीही आदर्शों को दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं, फिर भी वे स्वयं परीक्षाओं के शिकार बन जाते हैं और उनके दबावों में आ जाते हैं। मेरा विश्वास है कि हम सब ने इसके विषय में गहराई से विचार किया है और सोचा है, "क्यों ?" प्रकट है कि एक से अधिक कारण हैं और इस प्रश्न का एक सामान्य उत्तर दे पाना असम्भव है। कुछ के लिए यह अनुशासनहीन कामुकता में लगने का मामला है। यह विभिन्न प्रकार की शक्तिशाली परीक्षाओं के सामने अपर्याप्त संयम का परिणाम है जो अगुआई के स्थान पर के व्यक्तियों पर प्रायः टूट पड़ती हैं।

परन्तु, मैं यह भी मानना चाहता हूँ कि कई लोग जो ऐसी परीक्षाओं के शिकार होते हैं उस समय बड़े दबाव में होते हैं और कुछ सीमा तक आत्मिक, मानसिक और भावात्मक थकान से पीड़ित हो सकते हैं। ऐसा कहने से मैं अपराधों और पापों की सफाई देने या जाने देने का प्रयत्न नहीं कर रहा हूँ। न ही मैं यह कह रहा हूँ कि यह बात दुराचार के हर मामले में सत्य है। परन्तु मैं यह बताते का प्रयत्न कर रहा हूँ कि यह कभी-कभी (सम्भावतः अकसर?) ऐसे व्यवहारों के पीछे कारण हो सकता है।

बाइबल सिखाती है कि मर्त्य मनुष्य स्वाभाविक रूप से भ्रष्ट है। मनुष्य का पतित स्वभाव भ्रष्टता का है। भ्रष्टता का सबसे सामान्य अर्थ है: "नैतिक भ्रष्टता और दुष्टता।" परन्तु भ्रष्टता का एक दूसरा अर्थ है: "सबसे निर्बल स्थान पर टूट सकता है", और यह मूल मानवीय स्वभाव की स्थिति को संक्षिप्त में वर्णन करता है। हर व्यक्ति एक जंजीर के समान है जिसमें कम से कम एक निर्बल स्थान है। यदि उस जंजीर पर बहुत दबाव और तनाव लगाया जाएगा तब यह टूट जाएगी और यह इसके सबसे निर्बल स्थान पर टूटेगी। मनुष्यों के साथ भी ऐसा ही है। जब एक व्यक्ति पर दीर्घ और अत्यधिक दबाव लगाया जाता है तब वह उसके सबसे निर्बल स्थान पर टूटने वाला है। वह स्थान उसकी तंत्रिका, उसका मन, उसका शरीर, या उसकी नैतिक शक्ति हो सकती है। सामान्य परिस्थितियों में यह व्यक्ति इन सब क्षेत्रों में उचित रूप से मजबूत है और अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखता है। परन्तु परम, संगत और कठोर दबाव से कुछ टूट जाता है। एक सुरक्षा वाल्व फूट जाता है।

तब व्यक्ति उसकी दबानुकूलित स्थिति से तात्कालिक राहत खोजेगा -- किसी प्रकार का ध्यानभंग जो उसे उसके दबाव के जीवन से एक सुखद छूट देगा। कुछ जो उनको उनके आग्रही दबाव से एक अस्थाई आराम देगा। विपथन एक शराब पीने का दौरा हो सकता है - उनके उदास विचारों और विकृत आत्मविश्लेषण को डुबाने का एक प्रयत्न। यह अशलील चित्रों में एक आकस्मिक रुचि या वेश्याओं के साथ अनुचित सम्बंध का रूप ले सकता है। सम्भवतः सबसे सामान्य विपथन एक विवाहेतर सम्बंध है जिसके अनेक कारण हो सकते हैं, जिनमें से मुख्य है असहनीय दबाव से राहत और विपथन पाने की आवश्यकता।

यह एक कारण हो सकता है कि क्यों कई प्रमुख अगुवे इस प्रकार की समस्याओं में पड़ जाते हैं। जितना ऊँचा उनका पार्श्वचित्र होगा उतना बड़ा दबाव होगा। जितनी बड़ी उनकी कलीसिया होगी, उतनी अधिक जिम्मेवारी और काम होगा। यह और अधिक कारण है कि क्यों ऐसे अगुवों को उनके सहयोगियों, संगी कार्यकर्त्ताओं और कलीसिया के सदस्यों की प्रार्थनाओं की आवश्यकता है। यह निसंस्देह एक कारण है कि क्यों मसीही अगुवे उनकी कलीसिया के सामान्य सदस्यों से अधिक भेद्य हैं। उनके पद की आतिरिक्त जिम्मेवारियाँ उन पर कितना अधिक दबाव डालती हैं। कितनी बार अगुवे को परीक्षाओं की पहुँच से परे और उन्मुक्त समझा जाता है, जबकि वास्तविकता में उसकी अगुआई की जिम्मेवारियाँ उसकी सहन-शक्ति के साधनों को कम कर देती हैं और उसे किसी भी परीक्षा के लिए अत्यन्त भेद्य बना देती हैं।

अनेक बार घायल योद्धा को एक पाखंडी समझा जाता है। उसने प्रचार कुछ किया था और पालन दूसरा किया था। अकसर समझा जाता है कि वह सारे समय एक बुरा व्यक्ति ही होगा जो अपनी बुराई को छिपाता रहा और अपने सहयोगियों को धोखा देता रहा था। परन्तु वह एक बुरा व्यक्ति नहीं था, परन्तु अच्छा था जो वश में आ गया। ऐसा जो कड़ा परिश्रम कर रहा था और कहीं अधिक दबाव में था जिसे वह समझा नहीं या स्वीकार नहीं किया था। अगुवा जिसे लगा था कि उसका कोई समकक्ष व्यक्ति नहीं है जिसे वह बतला सकता और इसलिए तनाव को अपने भीतर दबाए रखा था और दूसरों को बताने से डरता था। आखिरकार यह फूट ही गया।

यह आवश्यक है कि हम बहुत असली सम्भावना को पहचानें कि कई अगुवे जो परीक्षा में गिरे थे घायल योद्ध थे जिन्होंने कई वर्षो तक एक अच्छी लड़ाई लड़ी थी परन्तु अन्त में, शत्रु की नई चालों के सामने परास्त हो गए थे। जब तक कलीसिया इसे समझती नहीं है वह उसके व्यवहार का एक मात्र विधिवादी दृश्य लेगी और सोचेगी कि इसका समाधान उसे अनुशासित करना और फिर उसे बाहर कर देना है। जबकि किसी प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता होगी, परन्तु प्रमुख और तात्कालिक आवश्यकता चंगाई और पुनःस्थापना की है।

यह प्रेरित पौलुस के द्वारा पवित्रशास्त्र की एक स्पष्ट शिक्षा है। "हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।" (गलातियों 6:1-2)।

परमेश्वर पहचानता है कि जब कोई व्यक्ति एक अपराध करता है, तब उसके आत्मिक भाइयों को कुछ करने की आवश्यकता है। और यह कुछ व्यक्ति का एक विधिवादी नियंत्रण और अनुशासन नहीं है परन्तु एक नम्रता की आत्मा से उसे पुनःस्थापित करने का प्रयत्न है।

3: अत्यधिक थकान के सबसे अधिक प्रचलित कारण क्या हैं?

एक बार फिर मैं केवल संक्षिप्त टीका करूँगा और अपने आप को उन कारणों तक ही सीमित रखूँगा जो मसीही कार्यकर्त्ताओं के लिए सबसे सामान्य हैं:

अः दबाव और तनाव, बहुत अधिक दबाव का संकेत।

आः अत्यधिक परिश्रम। देर तक काम करना। अपर्याप्त छुट्टियाँ या अवकाश।

इः कम पूरी हुई अपेक्षाएँ।

ईः दूसरे लोगों की समस्याएँ और चिन्ताएँ लेना।

उः अगुआई की भारी जिम्मेवारियाँ।

ऊः बहुत कम विश्राम।

एः बीमारी के बाद उदासी। (चिकित्सिक जाँच करवाओ)

ऐः नकारात्मक भावनाएँ, निराशाएँ, आदि।

ओः भरोसेमंद और समझदार सहयोगियों की कमी जिनको बता सकें।

4: दबाव को सकारात्मक रूप से कैसे इस्तेमाल करें।

सब दबाव नकारात्मक और विनाशक नहीं है। एक सकारात्मक प्रकार का दबाव भी होता है जो संवेदनशीलता और प्रदर्शन को बढ़ाता है। इस दबाव को खिलाड़ी उनके लाभ के लिए इस्तेमाल करते हैं। यह दबाव है:

- चुनौती
- उत्तेजना
- सकारात्मक पूर्वाभास
- प्रेरण
- उपलब्धि

कुछ प्रकार के सकारात्मक दबाव हम में उत्तम गुण पैदा कर सकते हैं। परन्तु वे हमों भावात्मक साधनों को खाली कर सकते हैं और हमें भावात्मक ऊँचाई से वापस आने के लिए अपने आप को समय और अवसर देना चाहिए। एक मण्डली को प्रचार और सेवा करने में भी सकारात्मक दबाव का एक तत्त्व सम्मिलित होता है। कई प्रचारक उनके काम में भावात्मक रूप से सम्मिलित हो जाते हैं और कुछ भावात्मक "ऊँचाई" प्राप्त करते हैं। उन्हें ऐसे अनुभवों के बाद विश्राम करने और पाई हुई भावात्मक तनाव को उतारना सीखने की आवश्यकता है।

आपको यह भी समझने की आवश्यकता है कि लोगों की सेवा करने से कुछ आत्मिक शक्ति भी इस्तेमाल होती है। जब यीशु ने लहू बहने के रोग वाली स्त्री की सेवा की थी, तब उसने कहा था, "मैं ने जान लिया है कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है।" जब हम प्रार्थना और विश्वास से लोगों की सेवा करते हैं जो हमारे सामर्थ्य को खींचते हैं, हम अपने जीवन और शक्ति को देते हैं। इसके लिए कुछ आराम और स्वास्थ्यलाभ की जरूरत पड़ती है। इसे पहचानने और अपने भावात्मक साधनों को भरने के लिए उचित कदम उठाने में असफलता अन्त में गंभीर थकान में ले जा सकता है।

5: इन तनाव निकालनेवालों को इस्तेमाल करो।

असंख्य सरल परन्तु प्रभावशाली तरीके हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अत्यधिक थकान की सम्भावनाओं को कम कर सकता है। मैं इनको नीचे पाँच श्रेणियों में सूचीबद्ध करूँगा।

1. एक सही मानसिक रवैया अपनाना।

बाइबल स्पष्ट बताती है कि हम अपने मानसिक रवैये को चुन और निर्धारित कर सकते हैं। "जैसा मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" (फिलि. 2:5)। बाइबल यह भी सिखाती है कि हमारा मन, और जिन रवैयों को हम अपने मन पर अधिकार

करने देते हैं, का हमारे सम्पूर्ण स्वास्थ्य पर एक अत्यन्त शक्तिशाली प्रभाव है। यदि हम अपने रवैये को सही तरीके से चुनते हैं, तो हम अपने जीवन और नियति को काफी सीमा तक वस में कर सकते हैं।

"रवैया" शब्द मनुष्य के मन और भावनाओं से बहुत सामान्य रूप से जुड़ा हुआ है, और जिस तरीके से मनुष्य सोचता, कार्य करता, व्यवहार करता, जीवन की ओर प्रतिक्रिया करता बताता है। हम कभी-कभी कहते हैं, "उसका जीवन की ओर एक अदभुत रवैया है।"

परन्तु शब्द के कुछ दूसरे उपयोग भी हैं, जिनमें से एक उड़ान में हवाईजहाज के कोण को बताना है, यह उस समय विशेषकर महत्त्व का है जब जहाज उतरने की तैयारी कर रहा है। इसे इसकी अन्तिम पहुँच को सही रवैयों के साथ करना चाहिए। यह एक नाविक शब्द भी है, जिसे एक जलयात्रा के जहाज पर, पाल लगाने का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इससे हम एक सबक सीख सकते हैं कि नाविक उसकी नाव को जिस दिशा में चाहे ले जा सकता है, चाहे हवा किसी भी दिशा से क्यों न बह रही हो, जरूरी यह है कि वह पाल के रवैये को सही नियत करता है। पाल को सही तरीके से रखने से वह किसी भी वांछित लक्ष्य पर पहुँच सकता है, चाहे हवा विरोध में भी क्यों न हो।

उसी प्रकार हम भी जीवन और इसकी चुनौतियों की ओर मन का सही रवैया रखकर अपना स्वास्थ्य निर्धारित कर सकते हैं। इसे पाने के लिए यहाँ कुछ सरल विचार दिए गए हैं:

अः जो आपके मन में जाता है उस पर नियंत्रण रखो।

"इसलिए हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुवाहनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्‌गुण और प्रशंसा की बाते हैं उन पर ध्यान लगाया करो। जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।" फिलि. 4:8-9

सब चीजें जिन के विषय पौलुस हमें सोचने और मनन करने को कहता है, सकारात्मक, सम्पूर्ण और रचनात्मक हैं। जैसे हम अपने मन को ऐसी सकारात्मक चीजों पर ध्यान लगाने के लिए प्रशिक्षण देते हैं हम उन चीजों पर विचार करने की प्रवृत्ति को निकालते हैं जो नकारात्मक और अत्यन्त तनाव वालीं और विनाशक हैं।

आः मसीह के स्वभाव को अपने मन में फैसने दो। (फिलि. 2:5)

"जैसा मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" मसीह आपके भीतर अपने आत्मा के द्वारा रहता है, और उसके विचार और भावनाएँ आपके भीतर हैं। परन्तु, आपके अपने स्वाभाविक विचार और भावनाएँ भी हैं इसलिए आपको अपना मन उसके अधीन करना सीखना है। अपनी इन्द्रियों को अपने भीतर मसीह के मन के नियंत्रण में लाना सीखो। उसके विचार सोचना और उसके परिदृश्य से चीजों को देखना सीखो।

इः नम्रता और दीनता का रुख अपनाओ।

"हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझे से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" मत्ती 11:28-30

ईः अपने को एक सकारात्मक प्रकाश में देखो।

कोई भी जो मसीह में है सिद्ध नहीं है। सब में कुछ नकारात्मक विशेषताएँ और बहुत सारी सकारात्मक विशेषताएँ हैं। नकारात्मक पर बल मत दो। अपने सारे सकारात्मक गुणों की एक सूची बनाओ। उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दो। उनके लिए आनन्द मनाओ। उनका उच्चारण करो। दूसरों के लाभ और परमेश्वर की महिमा के लिए उन्हें इस्तेमाल करो। परमेश्वर आप से प्रेम करता है और उसका आपकी ओर एक सकारात्मक रवैया है, और आपका भी अपनी ओर एक सकारात्मक रवैया होना चाहिए नहीं तो आप उसका उलटा सोच रहे हो जो परमेश्वर सोचता है और आप परमेश्वर के विद्रोह में हो।

उः अपने संकट को परमेश्वर में भरोसा करने के एक अवसर के रूप में देखो।

"संकट" के लिए चीनी शब्द के दो भाग हैं। पहले का अर्थ खतरा है, और दूसरा अवसर का संकेत देता है। जब एक बड़ा संकट हमारे जीवन पर परछाई डालता है तो यह हमारा उत्साह भंग और नष्ट कर सकता है। जितना अधिक हम इसके बारे में नकारात्मक

तरीके से सोचेंगे, उतना अधिक यह हमारी शान्ति और विश्वास को कम करेगा। इसलिए हमें इसे परमेश्वर के लिए उसका उद्धार प्रकट करने के एक अवसर के रूप में देखने का निश्चय करना चाहिए।

ऊः अपने मुँह की रखवाली करो।

जानते हुए या बिना जाने, सब अपने आप से बातें करते हैं। बातचीत नकारात्मक औप विनाशक, या सकारात्मक और रचनात्मक हो सकती है। जब तक बातें व्यक्ति के मन में होती हैं वो सोच के तरीके हैं। वे काफी शक्तिशाली, लाभप्रद या हानिकर हो सकते हैं, परन्तु एक बार जब हमारे मुँह में शब्द बनते और होठों से बोले जाते हैं, वे और भी शक्ति पा लेते हैं। इसलिए हमें नकारात्मक विचारों और कथनों को बोलने से जानबूझकर बचना चाहिए।

मनोवैज्ञानिक इस प्रकार की बातचीत को सदा "अपने से बातें करना" कहते हैं, और सब व्यक्ति के जीवन पर इसकी विशाल शक्ति और प्रभाव को मानते हैं। इसका प्रभाव अत्यन्त शक्तिशाली, लाभप्रद या हानिकर, हो सकता है।

बाइबल कहती है कि, "जीभ के वश में जीवन और मृत्यु दोनों होते हैं।" (नीतिवचन 18:21)। "शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है, परन्तु उलट-फेर की बात से आत्मा दुखित होती है।" (नीतिवचन 15:4)। "बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।" (नीतिवचन 12:18)।

एः "किसी भी बात की चिन्ता मत करो।" (फिलि. 4:6)

चिन्ता कुछ भी प्राप्त नहीं करती है। चिन्ता से बचने का रहस्य 1 पतरस 5:7 में पाया जाता है -- "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।" एक बूढ़ी स्त्री ने जो 105 वर्ष की थी मुझे बताया, "दो चीजें हैं जिनके विषय में व्यक्ति को चिन्ता नहीं करनी चाहिए। पहली उन चीजों के विषय में है जिन्हें तुम बदल सकते हो, और दूसरी उन चीजों के विषय में है जिन्हें तुम बदल नहीं सकते हो।" जीवन का उसका दर्शन यह था कि उन चीजों के विषय में जिनके बारे में तुम कुछ कर सकते हो चिन्ता करना बेकार है। और उन चीजों के विषय में चिन्ता करने से क्या लाभ है जिनके बारे में तुम कुछ नहीं कर सकते? वैसे भी तुम्हारी चिन्ता उन्हें बदलेगी नहीं।

ऐः सब चीजों में नियंत्रण रखने का प्रयत्न करो।

"तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रकट हो।" (फिलि. 4:5)

नियंत्रण का अर्थ है: नियंत्रण या संयम इस्तेमाल करना। यह सिरों से बचना है। किसी भी प्रकार का असंयम खतरनाक होता है। वे जीवन के स्वास्थ्य को नष्ट करते और तनाव लाते हैं। हमें सदा सब चीजों में संयम और नियंत्रण को काम में लाना चाहिए। न ज्यादा काम करो और न ज्यादा खाओ। सब चीजों में एक सही सन्तुलन बनाए रखने का प्रयत्न करो।

2. अपने जीवन को नियंत्रण में लेना।

एक कारक जो लगता है तनाव और अत्यधिक थकान लाता है यह भावना है कि चीजें नियंत्रण के बाहर हैं। यह कई एक स्रोतो से पैदा होता है जो अपने में महत्त्वहीन लगते हैं, परन्तु वे मिलकर तब एक ऐसा उत्तेजक बनता है जो आपके कल्याण और विश्वास को काटता है।

अपने समय को नियंत्रण में लो।

यह भावना कि समय आपके हाथ से निकला जाता है और कि आपके पास सब कुछ जो आपको करना है करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है एक सामान्य समस्या है। यदि आप इसे वश में नहीं करते यह आतंक और निराशा फैला सकता है। इस समस्या को जीतने का प्रत्यक्ष तरीका, "अपने काम की योजना बनाना, और फिर योजना को काम में लाना" है। समय प्रबंध का एक सरल कार्यक्रम आपकी सहायता करेगा।

इसे करने का सबसे सरल तरीका अपने दिन निर्धारित करना है। पहले से निर्धारित करो उन कामों को जिनको निश्चित दिनों में करने का लक्ष्य बनाना चाहते हो। फिर एक-एक दिन की योजना बनाओ, उनको एक-एक घंटे के भागों में बाँटो और दिन को विभिन्न कामों में बाँट दो जिनको आपको करने की आवश्यकता है।

आपको अनपेक्षित लोगों के मिलने आने को कम करने के कुछ तरीके खोजने होंगे। लोग जो बिना नियोजित भेंट के मिलने आते हैं। फोन काल जो आपके काम के कार्यक्रम में विघ्न डालते हैं। आपात जैसे कुछ हस्तक्षेप अनिवार्य हैं। दूसरों को अच्छे प्रबंध द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

3. अपना संगठन कर लो

अव्यवस्था तनाव का एक प्रमुख कारण है। यह भावना कि सब कुछ अस्तव्यस्त और नियंत्रण से बाहर है सदा तनाव का एक कारण होता है। यह तब और अधिक गंभीर होता है जब आप पहले से ही तनाव और तन्त्रिका थकान में हैं। आपको लगता है आप कागजातों के समुद्र के नीचे डूबने वाले हैं।

इसका विषहर चीजों को जितना ठीक-ठाक और अच्छा संगठित रख सकते हैं रखना है। अपनी मेज और अपने आफिस की कभी-कभार सफाई करने के लिए समय निकालें।हर चीज के लिए जिसे आप अकसर खो देते हैं एक स्थान निर्धारित करें। हर चीज को जितनी व्यवस्थित रख सकते हैं रखने का प्रयत्न करो ताकि आपको पता हो सब कुछ कहाँ है।

अपनी प्राथमिकताओं को निर्धारित करो और उन पर ध्यान रखो।

हर व्यक्ति जिसकी असंख्य जिम्मेवारियाँ हैं उसे प्राथमिकताओं का क्रम निर्धारित करने और उसके मन में स्पष्ट रूप से स्थापित करने की आवश्यकता है। नही तो आप अपने आप को उन कामों के लिए परिश्रम करते पाओगे जिनकी प्राथमिकता निम्न है, और दूसरी चीजों को अनदेखा करोगे जो कहीं अधिक महत्त्व की हैं।

अपनी सारी जिम्मेवारियों और चीजों की एक सूची बनाओ जिन्हें आप पूरा करना चाहते हो। उन्हें पहले क्रम में लिखो। फिर सूची को देखो और प्राथमिकता का क्रम स्थापित करो। हर चीज को 1 से 15, या जो भी अँक लगाओ। एक बार जब आप ने महत्त्व और प्राथमिकता का क्रम निर्धारित कर लिया हो, सूची की हर चीज को लिए पर्याप्त समय निर्धारित करो। विश्राम के लिए और अपने परिवार के साथ समय बिताने जैसी चीजों को सूची में डालना मत भूलो। कुछ समय कुछ शौकों के लिए रखो जो आपको नई शक्ति और ताज़गी देंगे। अपने को अच्छी सेहत और मन को एक सकारात्मक दशा में रखना एक बहुत ऊँची प्राथमिकता होनी चाहिए।

4. विश्राम के लिए समय निकालना।

कलीसिया के इतिहास में एक जवान की कहानी है जो प्रेरित यूहन्ना से मिलने गया। जवान भेंट करनेवाले ने सम्मानित प्रेरित के विषय में बहुत कुछ सुन रखा था और पूरी अपेक्षा की थी कि महान मनुष्य प्रार्थना में, या पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने में, या किसी आत्मिक क्रिया में मगन होगा। बदले में यूहन्ना एक तोते के साथ खेल रहे थे। जवान ने इस पर कुछ चकित होकर और आलोचना के संकेत के साथ टिप्पणी की। बुद्धिमान बूढ़े प्रेरित ने उत्तर दिया, "जो धनुष हमेशा मुड़ा रहता है, शीघ्र इसकी शक्ति खो देगा", और सलाह दी कि जवान भी जीवन के तनावों से विश्राम पाने के कुछ मनबहलाव और तरीके खोजे।

अः अपने घर को विश्राम करने के एक स्थान के रूप में रखने का प्रयत्न करो।

सब को, विशेषकर जो लोक सेवा में हैं, विश्राम करने और अकेले होने के लिए एक स्थान की आवश्यकता है। इसके लिए प्रत्यक्ष और आदर्श स्थान अपना घर है। इसे करने के लिए प्रत्यक्ष लोग आपके परिवार वाले हैं क्योंकि उनको भी उनके जीवन की माँगों से कुछ विश्राम की आवश्यकता है। अगुवे को एक व्यस्त दिन के अन्त में विश्राम पाने के लिए किसी स्थान की आवश्यकता है। उसे कुछ लोग चाहिए जिनके साथ वह विश्राम पा सकता, सामान्य बातचीत कर सकता, और हँसी-मजाक कर सकता है। यदि सम्भव हो और आपके बजट में हो, तो अपने घर मैं कुछ साजो-सामान रखने का प्रयत्न करो जो आपको विश्राम पाने में सहायता करेंगे।

आः अपने घर को अपने आफिस या कलीसिया के एक विस्तार में मत बदलो।

आपका घर एक अलग स्थान होना चाहिए। एक स्थान जहाँ आप पास्टर या दूसरी अगुआई की जिम्मेवारियों से राहत पाने के लिए लौट सकते हैं।

दिन के अन्त में अपने साथ काम घर ले जाने के प्रलोभन का सामना करो। अपने घर को भीड़ का एक स्थान बनने मत दो। सब को कभी भी किसी भी समय अपने घर आने के लिए प्रोत्साहित मत करो। आपको अपनी जिम्मेवारियों से अवकाश की आवश्यकता है। आपकी पत्नी और बच्चों को भी लोगों के सूक्ष्म परीक्षण से अवकाश की आवश्यकता है।

इः अपने नित्यक्रम में कुछ विश्राम को सूचीबद्ध करो।

"उसने उनसे कहा, तुम आप अलग किसी एकान्त स्थान में चलकर थोड़ा विश्राम करो। क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे, और उन्हें उन्हें खाने का अवसर भी नहीं मिलता था। (मरकुस 6:31)।

किसी ने कहा है, "जब तक आप अलग जाकर थोड़ा विश्राम नहीं करोगे तो आप आखिरकार थकान के शिकार होगे।" यीशु सदा किसी एकान्त स्थान में अकेले प्रार्थना और विश्राम करने चले जाया करते थे और उसने उसके चेलों को भी ऐसा करने को कहा। यदि यीशु और उसके चेलों को विश्राम के लिए समय निकालने की आवश्यकता होती थी, हमें कितनी आवश्यकता नहीं होगी?
कई मसीहियों ने लगता है विश्राम करने की योग्यता खो दी है। यदि वे लगातार कुछ करते नहीं रहते तो वे दोषी महसूस करते हैं, और ऐसे लोग अपने आप को रखवाले नियुक्त कर लेते हैं यह निश्चित करने के लिए कि बाकी सब भी यदि वे लगातार किसी आत्मिक क्रिया में नहीं लगे हों तो दोषी महसूस करें।

ई: शारीरिक व्यायाम।

"क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है।" (1 तीमु. 4:अ)।
कुछ मसीही विश्वास करते हैं कि यह वचन बताता है कि शारीरिक व्यायाम किसी लाभ का नहीं है जबकि असल में यह कहता है कि यह लाभदायक है, परन्तु भक्ति की साधना की तुलना में थोड़ा ही लाभ का है जो अन्तकाल के लिए लाभदायक है। इसका थोड़ा लाभ होने का कारण है कि हमारा शरीर कुछ समय के लिए है, परन्तु हमारी आत्मा अनन्त है। दुर्भाग्यवश कई मसीही यह सोचते हैं कि शारीरिक व्यायाम आत्मिक नहीं है और कि क्योंकि वे मसीही हैं उनके शरीरों की वैसी ही आवश्यकताएँ नहीं हैं जैसी गैर-मसीहियों की हैं।
यह एक निर्विवाद तथ्य है कि नियमित व्यायाम स्वास्थ्य के उचित रखरखाव के लिए आवश्यक है। यह भी सत्य है कि यह आपके भावात्मक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। स्वस्थ लोग की, जो नियमित व्यायाम करते हैं, उन रोगों से जो तनाव लाते हैं पीड़ित होने की कम सम्भावना है। तेज चलना सबसे सरल और सम्भवतः सबसे अच्छे प्रकार का व्यायाम है। इसके लिए किसी विशेष प्रकार के साज-समान की आवश्यकता नहीं है और बड़ी सरलता के साथ आपकी जीवन-शैली और वादों में बैठाया जा सकता है।

उ: इस उजाड़नेवाले रोग का उपाय करना।

यदि इस अध्याय को पढ़ने के बाद आपको लगता है आपने अपनी दशा का पता लगा लिया है, तो आप क्या कर सकते हो?
1: जल्दी से अपने आप को मत बताओ कि आपको अत्यधिक थकान है यदि यह नहीं है। जब जो लोग कुछ थके हुए और निराश महसूस कर रहे होते हैं लक्षणों की ऐसी एक सूची पढ़ते हैं, तो वे कल्पना करने लगते हैं कि उनको यह रोग है। आपको पता होना चाहिए कि कोई भी जो देखभाल की क्रियाओं में लगा है कुछ सीमा तक थक और निराश हो सकता है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि उसको अत्यधिक थकान है या हो रही है। जब आप थोड़े से भी उदास होते हैं तो आप नकारात्मक सोच सकते हैं और इस मानसिक स्थिति में आपको लगेगा कि आपके लक्षण किसी गंभीर रोग का संकेत दे रहे हैं जो असल में नहीं है।
2: एक भरोसेमंद मित्र को बताओ। अपनी चिन्ताओं को किसी को जो आपके करीब है बताओ। उनसे कहो कि जो आपके साथ हो रहा है समझने में सहायता करें। एक ऐसा मित्र होना जिसके साथ आप अपना हृदय खोल सकते और बिलकुस सच्चे बन सकते, और जिसे आप अपने सारे डर बता सकते हो, एक बहुत बड़ी आशीष है। बताने के ऐसे समय बहुत विचेरक हो सकते हैं, अर्थात् आप किसी के साथ बातचीत के द्वारा अपनी बातें बताकर अपने शरीर से चीजों को निकाल सकते हो।
3: सलाह पाने के लिए एक साथी मसीही से बात करो। (आपको पता होना चाहिए कि बहुत से मसीही असल में उस समस्या को समझते नहीं हैं जिसका मैं ने वर्णन किया है। वे सम्भवतः आपकी सहायता नहीं कर पाएँगे या समझ भी नहीं पाएँगे। यदि ऐसा हुआ तो वे सहायक नहीं होंगे।) आदर्श स्थिति एक सच्चे सेवा के दल का भाग होना है, जिसमें सारे सदस्य भरोसेमंद मित्र और काम के सहयोगी हैं। अपने दल को व्यवसायी कार्यकारी समिति के समान काम मत करने दो। एक दूसरे के सच्चे मित्र रहो, और अपने बोझ और समस्याएँ और अपनी विजयें और जीतें बाँटते रहो। अनौपचारिक सहभागिता के समय भी हों जहाँ हर एक उसके हृदय की बातें बता सकता है। ऐसे वातावरण में "एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ।"
4: एक भरोसेमंद सेवक हो जो आपके साथ और आपके लिए प्रार्थना कर सके। उससे आपको याकूब 5:13-16 के अनुसार तेल लगाकर प्रार्थना करने को कहो। इन वचनों के उपदेश का पालन करो, एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो जिस से कि चंगे हो जाओ। एक भरोसेमंद और विश्वस्त मित्र से बात करना काफी राहत लाता है। इसे एक धार्मिक क्रिया में मत भ्रष्ट होने दो। यह एक असली और अर्थपूर्ण क्रिया हो। यह अनुभव सब की चंगाई के लिए हो सकता है, जो प्रार्थना कर रहे हैं उनके लिए और जिनके लिए प्रार्थना की जा रही है उनके लिए भी।
5: एक अवकाश या छुट्टि पाने का प्रयत्न करो। अपनी जिम्मेवारियों से कभी-कभी निकल जाओ। यदि आप एक असली छुट्टी नहीं ले सकते हो, तो एक साथी सेवक के साथ घर बदलने की योजना बनाओ। आदर्श रूप से जिसका घर समुद्र, नदी या झील किनारे है। या, यदि आप एक बड़े शहर में रहते हैं तो उस पास्टर के साथ घर बदलने की सोचो जिसका घर गाँव में है। यह दोनों परिवारों के लिए एक अच्छा परिवर्तन हो सकता है। यदि आप छुटिट ले पाते हैं, परन्तु इससे कोई स्वास्थ्यलाभ नहीं होता

बल्कि समस्या बढ़ती जाती है, तब तो आपको कोई विशेषज्ञ और योग्य सलाह लेनी होगी। संकेत यह मिल रहे हैं कि स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि इसे मात्र दृश्य परिवर्तन और विश्राम के द्वारा हल किया नहीं जा सकता है।

6: एक योग्य चिकित्सिक सलाह लो, विशेषकर तब जब आपको लगा है कि आपकी समस्या उससे कहीं गंभीर है जो पहले आपने सोचा था। यदि आप एक सामान्य डाक्टर के पास जाते हैं तब निश्चित कर लो कि उसे इन मामलों में ज्ञान और अनुभव है। सब स्थानीय डाक्टरों को नहीं होगा। आदर्श रूप से आपको निश्चित करना चाहिए कि डाक्टर जिसके पास आप जाते हैं एक मसीही है जो आपके विश्वास को और आपके काम को भी समझता है।

समय एक आवश्यक संघटक है।

इस घटना को देखकर मुझे निश्चय हो गया है कि विश्राम और समय चंगाई में सबसे महत्त्वपूर्ण संघटक है। प्रकट है कि अलौकिक चंगाई तत्काल हो सकती है और यह एक सुन्दर सम्भावना है। परन्तु मैं जानता हूँ यह सदा होता नहीं है इसलिए मैं उनको कुछ सहायता और प्रोत्साहन देना चाहता हूँ जिन्हें तत्काल चंगाई नहीं मिलती। उनके लिए समय निकालना एक अनिवार्य तत्त्व है और उस समय में कैसे बचे रहना है महत्त्वपूर्ण है। मेरा विश्वास है कि दो कारण हैं कि क्यों चंगाई आने में समय लगता है।

1: क्योंकि अत्यधिक थकान एक लम्बे समय के साथ आई है और ऐसी चीज तत्काल नहीं चले जाने वाली है।

2: क्योंकि जब चंगाई की प्रक्रिया एक समय लेकर आती है, तब पीड़ित व्यक्ति दोबारा इसका शिकार नहीं होगा। चंगाई का अनुभव भूलभुलैंया या जंगल में से निकलने जैसा है। एक बार जब आप ने बाहर निकलने का मार्ग पता लगा लिया है जो आवश्यकता होने पर दोबारा निकल सकते हो।

निर्णायक तत्त्व यह है कि मध्यवर्ती अवधि में कैसा बचा जाए और कैसे इसे कम से कम दर्द और तकलीफ के किया जाए। इन विचारों को मन में रखकर मैं बताना चाहता हूँ:

एक प्राणरक्षक नुसखा

विषय पर बहुत सारी पुस्तकों में खोज करने से, एक हज़ारों के लिए आशीष लाई है। लेखक पुस्तक के आरम्भ में एक बहुत मूल परन्तु शक्तिशाली कथन के साथ शुरू करता है। एक भावात्मक कथन, परन्तु जिसमें पीड़ित के लिए एक बहुत ही शक्तिशाली प्रोत्साहन है। एक घोषणा जो व्यक्ति की आत्मा में बात करती जान पड़ती है। यह कहता है: "यहाँ दी गई सलाह, यदि आप इसका पालन करेंगे, निश्चित रूप से आपको चंगा करेगी।"

हमें समझना है कि अत्यधिक थकान न तो रात भर में आ जाती है और न इसे तत्काल चंगा किया जा सकता है। यह कुछ ऐसी है जो कई वर्षो से अत्यधिक काम करते रहने से और बिना जाने तनाव और दबाव में पड़कर आई है। आप निसंस्देह एक गहरी निराशा अनुभव करेंगे जब आप को लगेगा कि आपकी चंगाई की कोई आशा नहीं है। आप ने दूसरों के विषय में सुना होगा वे चंगे हुए हैं और पहले से शक्तिशाली हो गए हैं, परन्तु आप कल्पना नहीं कर पा रहे हैं कि आप कैसे चंगा होंगे। आप चंगा होंगे। आप बेहतर होंगे, परन्तु कुछ समय तक आप अपनी चंगाई को महसूस करने की सुविधा का आनन्द नहीं ले सकेंगे। इसलिए नुसखा रक्षा-पेटी है जो सहायता पहुँचने तक आपको बचाए रखेगी।

<u>इस नुसखा के चार भाग हैं:</u>

1: इसका सामना करो।

भागने का प्रयत्न मत करो - आप इससे आगे नहीं निकल सकेंगे। एक बार जब इसने आप को पकड़ लिया है तो इससे भागने का प्रयत्न बेकार है। सम्भवतः एक समय था जब आप बचने के लिए कुछ कर सकते थे परन्तु वह समय अब चला गया है और आपको समझना है कि आप अत्यधिक थकान (बर्नआउट) के शिकार बन चुके हैं।

2: इसे स्वीकार करो।

इससे लड़ो मत। अकसर "क्यों?" पूछने का प्रलोभन होता है। यह क्यों हुआ है? यह मेरे साथ क्यों हुआ है? मैं ने क्या गलत किया है कि यह मेरे साथ हुआ है? मैं ने परमेश्वर को कैसे अप्रसन्न किया है कि यह मेरे साथ हुआ है? इस प्रकार के बहुत सारे प्रश्न मन में उठ सकते हैं जिनका कोई प्रत्यक्ष उत्तर नहीं है। मन की नकारात्मक अवस्था में जो प्रायः होती है स्वयं को दण्ड देने की एक प्रवृत्ति होती है। यह सहायता नहीं करता। असल में यह अकसर स्थिति को खराब करता है। कुछ चीजें होती हैं जिन्हें आपको पहचानना, स्वीकार करना और निपटना होता है, परन्तु यह अकसर ऐसा करने का सही समय नहीं होता। प्रत्यारोप की बहुत अधिक सम्भावना होती है जो असल में सही नहीं होती।

इसके होने के चाहे कोई भी कारण क्यों न हों, यह आपके साथ हुआ है। कितना भी आत्म निरीक्षण या आलोचना आपको आपकी समस्या से छुड़ाने वाला नहीं है। परन्तु आपकी मुक्ति आएगी हालाँकि इसे कुछ समय लगने वाला है, और उस समय के दौरान आपको जीवित रहना है और अपना मानसिक और भावात्मक सन्तुलन बनाए रखना है। आपको पता चलेगा कि यह नुसखा इसे करने का सबसे उत्तम तरीका सिद्ध होगा।

दो प्रमुख विषय जिनके ईर्द-गिर्द मसीहियत घूमती है पाप और क्षमा हैं। यीशु का काम क्षमा को मोल लेना और हर पापी को मुफ्त में देना था जो सच्चे हृदय से मन फिराता है। क्षमा और उद्धार सुसमाचार के दो प्रमुख विषय हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश कलीसिया ने उद्धार के बदले पाप पर अधिक बल दिया है। कई प्रचारक प्रेम, दया और क्षमा के लाभों से अधिक पाप और न्याय पर अधिक बल देते हैं। परिणामस्वरूप कई मसीही अवचेतन में पाप और असफलता से अभिज्ञ हो जाते हैं। मन की नकारात्मक दशा में जिसे अत्यधिक थकान लाता है असफलता मानसिकता में पड़ना और अपने को आत्म दण्ड में ले जाना सरल हो जाता है। आपको निश्चय करना है कि आप इस फँदे में न पड़ें। अपने विचारों को हमारे विश्वास के यशस्वी, सकारात्मक पहलुओं पर रहने दो। परमेश्वर के प्रेम, दया, और अनुग्रह पर बल दो। उसके समाप्त काम के आश्चर्य में विश्राम करो।

अत्यधिक थकान का एक सबसे सामान्य प्रभाव बाइबल अध्ययन करने या प्रार्थना करने की अस्थाई अयोग्यता है। इसे अपने को एक दोष यात्रा पर न ले जाने दो। परमेश्वर आपकी स्थिति को समझता है। आप उसके साथ एक अनौपचारिक और सरल तरीके से संगति कर सकते हो। उससे अपने हृदय से बातें करो। किसी भी समय अपना बोझ हल्का करो। उसकी क्षमा और शान्ति पाते रहो।

3: **तैरना।** (इसे करना सीखना असली जीवन रक्षक है)

इस शक्तिशाली नुसखे का यह रहस्य है। तैरना सीखो और यह इस संकटपूर्ण और दर्दपूर्ण समय में आपके दिनों और रातों में सारा अन्तर ला सकता है। "तैरना" एक उत्तम सादृश्य है जो आप पानी पर तैरना सीखने में भी करना सीखते हो। यह कुछ ऐसा है जिसका आपको अभ्यास करना है और एक बार जब आप इसके विशेषज्ञ हो जाओ किसी भी समय कर सकते हो। कोई आपको तैरना कैसे है का सिद्धान्त सिखा सकता है परन्तु इसे करना आपके ऊपर है। कोई भी इसे आपके लिए नहीं कर सकता है।

जिस प्रकार आप समुद्र पर तैरते हो, उसी प्रकार आपको तन्त्रिकीय लक्षणों के समुद्र पर विश्राम करना और तैरना सीखना है जो आपको नष्ट करते लग रहे हैं। इससे लड़ो मत या अपनी शक्ति मत लगाओ, जैसे कि आप एक शक्तिशाली लहर के विरुद्ध तैरने का प्रयत्न कर रहे हो। कुछ प्रसिद्ध समुद्र-तटों पर प्रायः एक शक्तिशाली लहर चल रही होती है जो तैरना उत्तेजक बनाती है परन्तु बहुत खतरनाक होती है और कई लोगों को डुबा देती है। एक खतरनाक तत्त्व "चीर" होते हैं जो बनते हैं। यह तब होता है जब एक आ रही लहर समुद्र की गर्त पर जोर से पड़ती है। गर्त पानी से भरता है जब इसका भार आ रही लहर से अधिक हो जाता है और फिर एक चीर बनता है और समुद्र में अपना मार्ग बनाता है। यदि आप कभी इन में से एक में फँस जाएँ तो इसके विरुद्ध लड़ना बेकार होगा। सबसे सुरक्षित चीज चीर को आपको उठा ले जाने दो। इससे लड़ने के बदले शान्त रहो और इस पर तैरो। यदि आप लड़ने का प्रयत्न करोगे, तो यह आपको थका और नष्ट कर सकता है। परन्तु यदि आप इस पर तैरोगे तो यह आपको काफी आगे तक ले जाएगा और फिर दोबारा, आपको साथ लिए, तट की ओर आने लगेगा।

गर्त में से तैरते निकल जाओ जो आपको नष्ट करने की धमकी दे रहा है। उस बिस्तर में से तैरते निकल जाओ जिसमें आप ने शरण ली है। किसी क्रिया में तैरते लग जाओ जो आपके मन को उदासी के विचारों के क्रम में से बाहर ले आएगा। किसी दुकान या होटेल में तैरते चले जाओ जहाँ जाने से आप डर रहे थे।

आपके लक्षण, समुद्र की लहरों के समान, आपको नष्ट करते नज़र आएँगे। आपको लगेगा आप उनकी दया पर निर्भर हैं परन्तु असल में आप विश्राम पाओगे। आप उन लहरों पर तैरोगे जो आपके अस्तित्व को धमकाती लग रही हैं। तनाव और डर से तैरते हुए निकल जाओ। अप्रिय सुझावों से तैरते निकल जाओ। तैरो, लड़ो मत।

4: **समय बीतने दो।**

सम्भवतः आपके शरीर की शक्ति कम होते काफी समय लगा था और चंगा होने के लिए भी समय लगेगा। इसलिए आपको दिन, सप्ताह और महिने नहीं गिनने हैं। आपको अपना मन समय के बीतने पर से हटा लेना है और केवल अपने को याद दिलाते रहना है कि आप परमेश्वर की सहायता से चंगे हो जाओगे, परन्तु इसमें प्रायः कुछ समय लगेगा।

आप सम्भवतः शीघ्र चंगा होने के लिए परेशान हो। आप निस्संदेह बहुत दोष भी अनुभव करोगे कि समय बीतता जा रहा है और आप कुछ प्राप्त नहीं कर पा रहे हो। आपको अपने को धकेलने की इतनी आदत थी कि आपको यह जानकर घोर व्यथा हो रही है कि समय दौड़ा जा रहा है और आप असल में किनारे कर दिए गए हो। परन्तु इन में से कुछ भी आपकी चंगाई में लाभ का नहीं है। इस सब में से एक सबक जो आपको सीखना है विश्राम करना सीखना है। यदि आप यह सबक इस समय नहीं सीखते तब आप

कभी नहीं सीखोगे और यह बिलकुल अत्यावश्यक है कि आप सीखो। जितना निश्चित कल सूर्य का निकलना है उतना ही निश्चित आप का चंगा होना है। "कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनन्द पहुँचेगा।" (भजन 30:5ब)

आपकी चंगाई में सहायता के लिए कुछ व्यावहारिक विषय।

जब एक व्यक्ति अत्यधिक थकान की वेदना में फँस गया है, उसे कुछ बहुत व्यावहारिक सहायता चाहिए। यह एक समय है जब बहुत सारे चलन से बाहर हुए मुहावरे और लापरवाह उत्तर पूर्ण रूप से अपर्याप्त प्रमाणित होते हैं और केवल व्यक्ति की परेशानियाँ बढ़ाते हैं। अन्तिम चीज जिसे वे किसी से सुनना चाहते हैं, है, "अब बस अपने आप पर अधिकार करो", या "आपको इसे अपने वश में करना होगा।" उन्हें कुछ सरल, व्यावहारिक, काम में आनेवाले निर्देश चाहिए। कुछ सिद्धान्त जिन्हें वे उनके मन और भावनाओं की परेशान दशा के बावजूद समझ सकते हैं। यहाँ कुछ ऐसे ही सुझाव हैं।

1: पहचानो कि यह किसी को भी हो सकता है, सबसे असंभावित व्यक्ति को भी, वह भी जिसके विषय में आप ने कल्पना भी नहीं की होगी कि वह तनाव के लिए छेद्य होगा।

2: यह परमेश्वर से न्याय या दण्ड के रूप में नहीं आया है। यह आपके ऊपर इसलिए नहीं आया है कि आपने पाप किया है और परिणामस्वरूप कोई भयानक दण्ड पाया है। यह प्रायः अति परिश्रम, बहुत अधिक जिम्मेवारी, बहुत अधिक तनाव के तत्त्वों, बहुत कम विश्राम और मनोरंजन का परिणाम होता है।

3: यदि कोई गुप्त पाप है जिसने आपको गहरे दोष में लाया है और तनाव का एक कारक हुआ है, तब इससे निश्चित रूप से मन फिराना और इसे ठीक किया जाना चाहिए क्योंकि दोष निस्संदेह एक शक्तिशाली तनाव का कारक है और निकाला जाना चाहिए।

4: इससे किसी प्रकार की लज्जा महसूस करने की आवश्यकता नहीं है वैसे ही जैसे आप किसी प्रकार की बीमारी से लज्जा महसूस नहीं करेंगे। यह एक बीमारी है जो तंत्रिकाओं और भावनाओं के क्षेत्र में होती है न कि शारीरिक भाव से। अधिकाँश बीमारियाँ वैसे भी इसी क्षेत्र में आरम्भ होती हैं जिन्हें मनोदैहिक रोग कहते हैं। समस्याएँ जो मन या भावनाओं में आरम्भ होती हैं और फिर शरीर में प्रकट होती हैं।

5: आपको निस्संदेह एक भरोसेमंद मित्र, विश्वस्त और सलाहकार की आवश्यकता होगी, जो आपके साथ इस कष्टकर समय में चल सकता है। इस व्यक्ति को खोजना सरल नहीं होगा क्योंकि कम लोगों को ही इस समस्या की कोई समझ है। आदर्श रूप से यह आपकी पत्नी के अलावा कोई दूसरा होना चाहिए, क्योंकि आपकी पत्नी प्रायः आपके साथ बहुत अधिक भावात्मक सम्बंध में होती है और निष्पक्ष नहीं हो सकती है और वैसे भी पूरी तरह समझ नहीं सकेगी क्या हो रहा है। यह आपकी पत्नी की आलोचना नहीं है। यह एक तथ्य है।

6: आपकी पत्नी और परिवार के सदस्यों को भी किसी योग्य परामर्श की आवस्यकता होगी। अपने प्रिय जन के साथ जीना जो अत्यधिक थकान से पीड़ित है आसान बात नहीं है। उन पर बी अनेक प्रकार के भावात्मक दबाव आते हैं और उनके प्रिय जन को गहरी उदासी में से गुज़रते हुए देखना भी अत्यन्त अभिघातज और थकानेवाला हो सकता है। कई विवाह इस अभिघातज कठिन परीक्षा के दबाव को सह नहीं सकेंगे।

7: सदा याद रखो कि पुरानी कहावत सच्ची है। "इलाज से रोक भली है।" कभी भी कल्पना मत करो, "यह मेरे साथ कभी नहीं हो सकता है।" इस सम्भावना से सचेत रहो कि यह उस किसी को भी हो सकता है जो चेतावनी नहीं सुनता और जो उनके अपने साधनों से अधिक अपने को घोर परिश्रम में धकेलता रहता है।

8: मेरा एक घनिष्ट मित्र जो एक सफल पास्टर है, जिसने अत्यधिक थकान को अनुभव किया और जीवित निकला है और जो पहले से कहीं अधिक बेहतर और शक्तिशाली व्यक्ति बना है, निम्नलिखित चार सिद्धान्त बताता है जिन्हें उसने अपने अनुभव से सीखा है। आओ मैं उन्हें आप को दे देता हूँ:

- परमेश्वर के साथ, न कि उसके लिए काम करो।

- लोगों से बेहद प्रेम करो परन्तु उनकी सारी समस्याओं को उठाने का प्रयत्न मत करो।
- जल्दी-जल्दी हिसाब चुकाओ। अपनी गलतियों को मानो और क्षमा पाओ।
- कृतज्ञता का रवैया विकसित करो। सब चीजों में धन्यवाद दो।

9: अपनी सारी चिन्ताओं को यीशु पर डालने का अभ्यास करो। आपको इसे नियमित करना होगा। जैसे ही कोई बोझ या चिन्ता आती है, इससे पहले यह आपके मन में बैठ जाए, प्रभु पर डाल दो। यह बोलना अकसर करने से सरल होता है। कई प्रचारक इसे सिखाते हैं परन्तु वे आप इसका पालन नहीं करते। इसके विषय में जानना पर्याप्त नहीं है, या दूसरों को सिखाना भी, आपको भी इसे करना है।

10. जब आप यीशु के पास आए हो, और अपनी चिन्ता उस पर डाल दी है, तब किसी दोष या दण्डाज्ञा की भावना के बिना उसके विश्राम को पाओ और आनन्द लो। कई अगुवे यदि वे उनके काम से अवकाश लेते हैं तो दोषी महसूस करते हैं। वे अपने आप को बिना राहत सारे समय काम करते रहने की आवश्यकता से दौड़ाते रहते हैं। याद रखो कि यीशु भी अकसर अलग जाकर विश्राम किया करते थे। और वह दूसरों को उपदेश देता है, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।" (मत्ती 11:28-30)।

11. विश्वास करो और स्वीकार करो कि आप चंगे हो जाओगे। ऐसा तब भी करो जब आपका मन चिल्ला रहा होता है कि आप कभी भी चंगे नहीं होने वाले हो और आप दोबारा कभी भी सामान्य नहीं होगे। जब आपकी भावनाएँ इतनी उदास हैं कि आपको लगता है वे कभी भी दोबारा उल्लसित नहीं होंगी, कि आप दोबारा कभी भी आनन्द के साथ गाओगे या आनन्द के साथ चिल्लाओगे नहीं। सम्भवतः आपको पता नहीं है कि लाखों लोग इस मार्ग पर गए हैं और वे चंगे हुए हैं और दोबारा अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द ले रहे हैं। आपके कुछ पहचान के लोग, जिनके विषय में आपको कभी संदेह नहीं हुआ होगा उन्होंने भी इसी प्रकार दुख उठाया है, पूरी तरह चंगे हुए हैं और एक बार फिर सामान्य जीवन अनुभव कर रहे और आनन्द ले रहे हैं।

12. परन्तु, आपकी चंगाई में समय लगेगा, और उस समय को बिना उत्तेजित और अधीर हुए बीतने देना अत्यन्त कठिन होगा। आप हर सम्भव कारण से शीघ्र चंगा होना चाहते हो परन्तु इस प्रकार की बीमारी बिरले ही शीघ्रता के साथ चंगी होती है. यदि आपने इसे आरम्भ में ही पहचाना हो और सकारात्मक और प्रभावशाली कार्य किया हो। यदि आप ने इसे काफी पहले नहीं पहचाना और अत्यधिक थकान से पूरी तरह प्रभावित हुए, तब तो यह निश्चित रूप से समय लेगा यदि आप एक चमत्कारी हस्तक्षेप पाते नहीं।

13. हर दिन जितनी बार हो सके परमेश्वर की स्तुति करो। कई बार ऐसा लगेगा कि आप इसे करना नहीं चाहते हैं। जब आपका मन आपको बताएगा कि परमेश्वर को स्तुति करने के लिए कुछ भी नहीं है और आपका भावात्मक स्तर इतना नीचा है कि किसी भी चीज में आनन्दित होना आपके लिए असम्भव है। हर विचार और भावना को अनदेखा करके परमेश्वर की स्तुति करो। बलपूर्वक अपनी स्तुति बोलो, चाहे आपको कैसा भी क्यों न लगता या महसूस होता हो। अपनी चंगाई और छुटकारे के लिए उसे विश्वास में धन्यवाद करो। राजा दाऊद ने उसकी गहरी उदासी और निराशा के अभिघातक अनुभवों के समय ऐसा ही किया था। भजन 42:11 में उसके शब्दों को सुनो, "हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।"

14. एक नियमित व्यायाम का नित्यक्रम स्थापित करो। कुछ लोग क्यों अत्यधिक थकान अनुभव करते हैं के कारण का एक भाग यह है क्योंकि वे स्वस्थ नहीं हैं। उन्होंने उनके शरीरों को स्वस्थ रखने की आवश्यकता की उपेक्षा की है और अस्वस्थ हो गए हैं। एक बार आप अत्यधिक थकान में हैं तब नियमित व्यायाम करने के लिए अपने को प्रेरित करना अधिक कठिन होगा परन्तु आपको इसे करने के लिए अपने को बलपूर्वक आग्रह करना होगा। आपको इसे धीरे-धीरे और धीरता के साथ करना होगा क्योंकि आपकी शक्ति के स्तर इतने कम होंगे कि आप शारीरिक व्यायाम नहीं करना चाहेंगे। चलना प्रायः सबसे उत्तम व्यायाम है। आपको आरम्भ में बहुत कम समय तक चलने से संतुष्ट होना पड़ेगा और फिर हर दिन या सप्ताह दूरी को बढ़ाना पड़ेगा। दूसरी ओर कुछ रोगी पाते हैं कि वे बिना अधिक प्रयत्न के मीलों चल सकते हैं और इससे वे सबसे अधिक विश्राम देने वाला अवकाश अनुभव करते हैं। तैरना भी एक उत्तम प्रकार का व्यायाम है और बहुत ताज़गी लाता है।

15. विश्राम और मनोरंजन के लिए समय निकालो। कई अगुवे महसूस करते हैं कि उनके पास विश्राम के लिए समय नहीं है। तो, यदि आपके पास नहीं है, तब आपको निकालना होगा। जब आप अपने काम और जिम्मेवारियों का कार्यक्रम बनाते हो, तो इसमें मनोरंजन और विश्राम के लिए भी समय बनाओ। मैं ने हाल में एक प्रचारक के विषय में सुना जिसने आखिरकार यह सबक सीख लिया था। वह अपने व्यस्त कार्यक्रम में समय नियत करने लगा जब वह कुछ भी नहीं करने का आनन्द लेगा। एक दिन उसके मित्र ने पूछा, "आप शुक्रवार के दिन क्या कर रहे हो ?" जिसके उत्तर में प्रचारक ने कहा, "मैं ने शुक्रवार के दिन कुछ भी नहीं करने की योजना बनाई है।" "अच्छा है", उसके मित्र ने कहा, "तब तुम आकर हमारी कलासिया में सेमिनार में बोल सकते हो।" "एक मिनट", प्रचारक ने कहा, "तुम समझे नहीं। मैं ने कहा मैं ने शुक्रवार के दिन कुछ भी नहीं करने का कार्यक्रम बनाया है, और मैं वही करूँगा -- कुछ भी नहीं!"

16. आपको एक बहुत छोटा शब्द बोलना सीखना होगा जो बहुत सारे प्रचारकों के लिए बहुत कठिन है। इस शब्द में केवल दो अक्षर हैं - नहीं। कई अगुवे ऐसा कहने में बहुत कठिनाई महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि उन्हें वह सब करना चाहिए जिसकी उनसे माँग की जाती है और विशेषकर जब यह "सेवा" है। उन्हें लगता है कि उन्हें लोग किसी भी समय रात या दिन बुला सकते हैं। वे हर फोन कॉल का उत्तर देने के लिए बाध्य महसूस करते हैं चाहे यह कहीं से भी आई हो। ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि सारा संसार उन पर निर्भर नहीं है। कुछ और लोग भी हैं जो कुछ काम कर सकते हैं। चाहे आप कितना परिश्रम भी क्यों न करें, आप सारे संसार का उद्धार नहीं कर सकते हैं।

17. परमेश्वर के साथ अपने समय को प्राथमिकता दो। आप अपने अत्यधिक थकान के अनुभव में पाओगे कि बाइबल का अध्ययन करना या गंभीरता के साथ प्रार्थना करना बहुत कठिन होता है। इसके विषय में अधिक निराश या दोषी महसूस करने की आवश्यकता नहीं है। मूल कारण यह है कि आपकी एकाग्रता की शक्तियाँ बहुत कम हो गई हैं और यदि असम्भव नहीं तो किसी भी चीज पर ध्यान लगा पाना बहुक कठिन होता है। परन्तु, इसका अर्थ यह नहीं कि आप परमेश्वर के साथ समय नहीं बिता सकते हैं। परन्तु आपको वे समय अधिक अनौपचारिक बनाने हैं। गंभीर बाइबल अध्ययन करने के बदले, केवल कुछ प्रेरणात्मक वचनों को पढ़ो। आप सम्भवतः भजनों को पढ़ना अधिक सरल पाओगे, विशेषकर सकारात्मक और प्रेरणा देने वाले। समझ लो कि परमेश्वर के साथ अनौपचारिक बातचीत भी प्रार्थना है। असल में, जब आप समस्याओं में से गुज़र रहे होते हो आपकी प्रार्थनाएँ अधिक सच्ची बन जाती हैं। बाइबल के कई लोगों ने इसे सच पाया है। बाइबल की सबसे गूढ़ और शक्तिशाली प्रार्थनाएँ परेशानी के समय पाई जाती हैं। वे संक्षिप्त और निश्चित थीं और उन्होंने एक बहुत सकारात्मक परिणाम पाए थे। आपको समझना चाहिए कि आपके भक्ति के समय भारी बाइबल के अध्ययन के समय नहीं होने चाहिए। वे परमेश्वर के साथ घनिष्ठ, अनौपचारिक और सच्चे परस्पर संगति के समय होने चाहिए। आप परमेश्वर को उस रूप में पा सकेंगे जिस में पहले देखा नहीं है।

18. अपने लक्ष्यों और प्राथमिकताओं का दोबारा मूल्याँकन करो। अत्यधिक थकान के अनुभव से कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सबक सीखे जा सकते हैं और सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण है कि आपको चीजों को उसी प्रकार करने में नहीं भागना है जैसे आप उन्हें पहले किया करते थे। आपको स्वीकार करना है कि आपके पिछले नित्यक्रम ने आप पर संकट लाया था और आपको उसी पुरानी पिसाई में लौटने से और समस्या को दोबारा लाने से सावधान रहना है। आपको अपने काम का मूल्याँकन करना चाहिए। अपनी पुरानी स्थिति का मूल्याँकन करो। देखो कि परमेश्वर क्या चाहता है आप बदलो और निश्चित करो कि आप वैसा ही करोगे। एक सबसे पहली चीज है कि आप परमेश्वर के साथ न कि उसके लिए काम करोगे। वह आप में और आप के द्वारा काम करना चाहता है। वह नहीं चाहता आप अपनी शक्ति में पिसते रहें - "प्रभु की सेवा करना।" इससे पहले आप अपने काम में लौट सको कुछ कठोर परिवर्तन लाने होंगे। प्राथमिकताओं का गंभीरता के साथ मूल्याँकन करना चाहिए। आपको पहली चीजें पहले करना सीखना है। आपको परमेश्वर से पता लगाना है जिस तरीके से वह चाहता है आप उसके लिए काम करें। इसका अर्थ आपके लिए एक बिलकुल नई दिशा हो सकती है। आप अपने आप को एक बिलकुल नई सेवा में लगे पा सकते हैं। आपको बदलने के लिए तैयार होना है। यदि परमेश्वर ने इस अत्यधिक थकान के अनुभव को आने दिया है, तब उसके पास आपको कहने के लिए कुछ बहुत गंभीर होगा। इसलिए जब आप उसे स्पष्ट रूप से सुनने के लिए चंगे हो गए हैं, तब आपको उसकी ओर गंभीरता के साथ ध्यान देना है जो वह कह रहा है। यदि आप उसे अपने जीवन में कुछ चीजों को बदलने नहीं देंगे तब आप पाएँगे कि आपको उसी लम्बे दर्दभरे अनुभव से दोबारा गुज़रना पड़ रहा है।

19. समझ लो कि जिस चीज में से आप गुज़रे हैं उसकी बदौलत आप एक शक्तिशाली और बेहतर व्यक्ति बन सकते हैं। अत्यधिक थकान एक परिशुद्ध करने वाला अनुभव हो सकता है। इसे आपके जीवन में से कई चीजों को निकालने के लिए

इस्तेमाल किया जा सकता है जो सम्भवतः अच्छी नहीं थीं। यह कई चीजों की ओर आपके रवैये को बदल सकता है, और आपको दूसरों की ओर अधिक समझदार और विचारशील बना सकता है। आप पहले से निश्चित रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति बनोगे, जीवन और लोगों के विषय में काफी अधिक चीजें समझ पाओगे।
कई लोगों ने यह पता लगाया है और मैं असंख्य लोगों को जानता हूँ जो अत्यधिक थकान के अनुभव के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए जीवित हैं क्योंकि इसने उन्हें एक बेहतर व्यक्ति बनाया है। कई लोगों ने उनकी चंगाई के बाद जीवन का भरपूर आनन्द लिया है, क्योंकि वे कई अन्तर्बाधाओं और तनावों से छुटकारा पाए थे जिन्होंने उनको बंदी बना रखा था।

20. आप निस्संदेह कई लोगों की सहायता कर सकोगे जिन्हें पहले समझे नहीं थे। अधिकाँश लोग दूसरों से जो तंत्रिकीय थकान से पीड़ित हैं स्वाभाविक रूप से अधीर होते हैं। यह इसलिए है क्योंकि उनके पास ऐसी समस्याओं की गंभीरता को समझने का कोई साधन नहीं है। यदि आप इन क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रशिक्षण पाए हैं, उदाहरण, एक मनोवैज्ञानिक या मनश्चिकित्सिक, कोई तरीका नहीं है कि आप ऐसे मामलों को समझ सको जब तक आप ने इसे पहले अनुभव नहीं किया है। जब तक आप में ऐसी समझ और सहानुभूति नहीं है कोई संयोग नहीं कि आप ऐसे किसी व्यक्ति की सहायता या प्रोत्साहित कर सकोगे। सम्भावना यह है कि आप अपने अयोग्य तरीके और समझ की कमी के द्वारा केवल उन्हें चोट पहुँचाओगे या परेशान करोगे।
एक बार जब आप चंगा हो रहे हो, आप सम्भवतः दूसरों की सहायता करना आरम्भ करना चाहोगे जो ऐसी ही समस्या में हैं। आप अब उनके लिए एक नई और गहरी तदनुभूति महसूस करोगे जिससे आप उनकी सहायता करना चाहोगे। परन्तु, आप को इसे करने में जल्दी से हाथ नहीं डालना है। आपको अपने को चंगा होने में पर्याप्त समय देना चाहिए, नहीं तो आप आवश्यक व्यक्तिगत शक्ति के बिना तदनुभूति से सेवा करोगे। आप अपने आप को अपनी आवश्यकता के कारण, उनकी आवश्यकता की सेवा करते पाओगे, और यह शीघ्रता के साथ आपकी अपनी शक्ति कम कर देगा।

21. आप परमेश्वर को और उसके नाम को महिमा लाने के लिए जीवित रहोगे। परमेश्वर कहता है: "और संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।" (भजन 50:15)। जब आप अपने संकट में फँसे होते हैं तब आप इतने निराश होते हैं कि आपको लगता है कि आप कभी भी कुछ प्राप्त नहीं कर सकेंगे। आपको लगेगा आपकी उपयोगिता और परमेश्वर के लिए आपकी सेवा समाप्त हो गई है, कि आप दोबारा उसके नाम को महिमा नहीं ला सकोगे। परन्तु ऊपर के वचन में परमेश्वर इसका उलटा कहता है और आपको अपना विश्वास उस पर रखना है जो परमेश्वर कहता है, और उस पर नहीं जो आप सोचते या महसूस करते हो।

अध्याय चौदह -- अगुवे का इनाम

"जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।" (1 पतरस 5:4)। 1 पतरस 5:1-11 पढ़ो। ये वचन विशेषकर कलीसिया के प्राचीनों (कलीसिया के अगुवों) को सम्भोदित किए गए हैं और इनामों के विषय का परिचय कराते हैं जिन्हें एक दिन हमें दिया जाएगा। इनामों को "मुकुट" कहा गया है, और इस में से कुछ मसीहियों ने अपने मन में "सोने के मुकुट पहने, स्वर्ग में इधर-उधर इठलाते हुए चलने" का चित्र बना रखा है।

मुझे पक्का नहीं है कि यह चित्र कितना सही या गलत है, परन्तु मुझे निश्चय है कि इन इनामों का उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष पर एक सोने के मुकुट का एक भड़कीला चित्र डालना नहीं है। असली उद्देश्य इससे कहीं अधिक व्यावहारिक और अर्थपूर्ण है। मुकुट पद के चिन्ह हैं, जो पहनने वाले के पद और अधिकार को प्रदर्शित करेंगे। उन्हें पहननेवाले के अह्म को बढ़ाने के लिए नहीं दिया गया है, और न ही उन्हें सचेत और कुछ मोहक व्यक्ति बनाना है। पद के बिल्ले उनको परमेश्वर के राज्य में अधिकार के साथ काम करने के योग्य बनाने के लिए हैं। जब परमेश्वर का राज्य आखिरकार पृथ्वी पर स्थापित और प्रकट होगा, "मुकुट पहने राजकुमार" शासक समाज के भाग होंगे। यीशु मसीह सब राजाओं का राजा और सब प्रभुओं का प्रभु होगा और परमप्रधान के सन्त उसके साथ पृथ्वी पर राज्य करेंगे। मुकुट की प्रकार उस अधिकार की मात्रा को बताएगी जिसे इस राज्य के ढाँचे के भीतर पाया गया होगा।

हमारी वर्तमान अगुआई की भूमिका और जिम्मेवारियों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पहलू हमें उसके मसीहा के साथ राज्य करने के लिए तैयार करना है। इस वर्तमान समय में हमारी अगुआई की भूमिका उस महान अनन्त उद्देश्य का एक छोटा सा पहलू ही है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें नियुक्त किया है, जिसके लिए वह हमें अभी तैयार कर रहा है। परमेश्वर ने हमें उसके अनन्त राज्य और उसकी अनन्त महिमा के लिए बुलाया है। हम इस वर्तमान सांसारिक भावना से, उस महान अनन्त उद्देश्य के लिए तैयार किए जा रहे हैं, जिसे परमेश्वर आने वाले युगों में पूरा करेगा। उसके राज्य का शासन सारी पृथ्वी में स्थापित और प्रकट होगा और मसीहा उन देशों पर सदा के लिए राज्य करेगा जो पृथ्वी पर बचे रहेंगे। "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" (प्रकाशित. 11:15)।
इसलिए अपने आप को स्मरण कराना महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर का राज्य, और इसमें हमारी भूमिका, दो चीजों में बताई गई है, परमेश्वर का अधिकार, और हमारा आज्ञापालन। ये दो सिद्धान्त हैं जिन्हें वह हमारे जीवनों में कार्य में लाने और प्रभावशाली करने का प्रयत्न कर रहा है। अन्त में हमारी अगुआई की भूमिका की "सफलता" उस मात्रा से मापी जाएगी जहाँ तक हम अपने जीवनों पर परमेश्वर के अधिकार की ओर आज्ञाकारी रहे हैं। हमारे इनाम इन प्राप्तियों के कारण नहीं पाए जाएँगे कि हम कितनी बड़ी कलीसिया के पास्टर थे, या कितनी मण्डलियाँ हम ने स्थापित की हैं, न ही कि अपने सम्प्रदाय या संस्था में हम ने कौन से कार्यकारी पद पाए हुए थे। हमारे इनाम की कसौटी हमारे आज्ञापालन और विश्वासयोग्यता से मापी जाएगी कि हम ने अपने जीवनों में परमेश्वर के दर्शन को कैसे पूरा करने का प्रयत्न किया था।

परमेश्वर "सफलता" को नहीं, विश्वासयोग्यता के इनाम देता है!
हम सब उन वरदानों के भण्डारी हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें दिया है और वह हमें हमारी विश्वासयोग्यता के अनुसार इनाम देगा जिसे हम ने अपने भण्डारीपन पर इस्तेमाल किया है। "मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझें। फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।" (1 कुरिं. 4:1-2)। "उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का भण्डारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।" (मत्ती 25:21)।

जिन वचनों की हम चर्चा कर रहे हैं:

1. प्राचीनों (अगुवों, पास्टरों) को सम्भोदित किया गया है
"तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्रचीन ... होकर उन्हें समझाता हूँ।" निम्नलिखित आयतों में (1-11) जिन विषयों से निपटा गया है विशेषकर अगुवों पर लागू होते हैं। उन्हें शिक्षा, परामर्श, ताड़ना, और आज्ञा दी गई है। उनको प्रतिज्ञा की गई है कि एक दिन, जब प्रधान रखवाला प्रकट होगा, तो वह उनको महिमा के मुकुट के साथ उसकी ओर उनकी विश्वासयोग्यता के लिए इनाम देगा, जिस इनाम को विश्वासयोग्य रखवालों के लिए रखा गया है।

2. मसीह के दुखों के गवाहों (सहभागियों) को सम्भोदित किया गया है
यह सत्य है कि जिन प्राचीनों को पतरस लिख रहा था यीशु के समय के थे और उन्होंने उसके दुखों को देखा और कुछ सीमा तक उनमें सहभागी भी हुए थे। हमारे आज के संसार में कोई भी "उसके दुखों का गवाह" नहीं है, परन्तु बहुत सारे हैं जो यीशु में उनके विश्वास के लिए दुख उठाते हैं। मेरा व्यक्तिगत विश्वास है कि हमारे विश्वास के इन आधुनिक और अज्ञात नायकों में से राज्य के शासक बनेंगे। भेदभाव, कैद, संतापन, और शहादत भी, के होते हुए भी मसीह और उसके राज्य की ओर उनकी विश्वासयोग्यता के कारण, वे उनके प्रभु और मसीहा के साथ राज्य करेंगे।
मसीह के दुखों के साथ पहचान के विषय में कुछ है जो विस्वासयोग्यता का एक जीवन लाता है जो उनके लिए अनिवार्य है जिन्हें राजा यीशु के साथ राज्य करने का सौभाग्य मिलेगा। इस प्रकार की निष्ठा जिसे कलीसिया के उन विश्वासियों और अगुवों में बारम्बार देखा जाता है जो संसार के उन भागों में हैं जहाँ भेदभाव और सताव सामान्य बात है। हालाँकि पश्चिम देशों में कलीसिया को एक प्रतिष्ठा प्राप्त है परन्तु मेरा विश्वास है कि उनमें से अधिकाँश जो अनन्त राज्य में अगुआई पाएँगे उन देशों से आएँगे जहाँ कलीसिया को तुच्छ, अपमान और सताया जाता है। दुखों की भट्ठी में, परमेश्वर ने उन्हें उसके राज्य के लिए तैयार किया है। संसार के कंगाल देशों के बहुत सारे मसीही बड़ा धन और इनाम पाएँगे जब प्रधान रखवाला प्रकट होगा।
मुझे लगता है कि इस प्रकार की समझ के साथ पौलुस ने अपनी सबसे बड़ी इच्छा प्रकट की थी -- मसीह को उसका सम्पूर्णता में जानना। ऐसे ज्ञान में मसीह के दुखों का ज्ञान भी सम्मिलित है जिसे उन दुखों में कुछ सहभागी होकर ही पाया जा सकता है। फिलि. 3:10, "ताकि मैं उसको और उसकी मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने को मर्म को जानूँ,

और उसकी मृत्यु की सामर्थ्य को प्राप्त करूँ। 2 तीमु. 2:12 "यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे।" ऐसे दुखों को विश्वासयोग्यता के साथ सहने के द्वारा आज्ञापालन का चरित्रबल पैदा होता है जिसकी उनमें आवश्यकता है जो मसीह के साथ राज्य करेंगे। यीशु के विषय में भी कहा गया था, "उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी।" (इब्रा. 5:8)

3. पास्टरों को:

अ: निरीक्षण / जिम्मेवारी स्वेच्छा से स्वीकार करनी चाहिए।

उसका अगुआई का काम लेना किसी व्यक्तिगत लाभ के कारण, चाहे आर्थिक लाभ, भावात्मक, सम्मान या मनोवैज्ञानिक, नहीं होना चाहिए। यह किसी प्रकार की बाध्यता के कारण भी नहीं होना चाहिए जो उसका सच्ची इच्छा के विरुद्ध हो। उसे मसीह का सेवक होने की इच्छा रखनी है, और ऐसे बुलावे में सम्मिलित सब जिम्मेवारियों और बलिदानों को स्वीकार करना है। उसे पहचानना है कि यह सबसे ऊँचा बुलावा है जिसे एक मनुष्य पा सकता है और इसमें सबसे ऊँचे और उत्तम अभिप्रायों से प्रवेश करना चाहिए।

आ: परमेश्वर के झुँड को सिखाना।

एक सबसे बड़ी जिम्मेवारी जिसे एक अगुवा अपना सकता है परमेश्वर के झुँड को सिखाना है। यह एक ऊँचा और पवित्र बुलावा है जिसे परमेश्वर ने हमें सौंपा है। इसे एक सबसे बड़े सौभाग्य और सबसे बड़ी जिम्मेवारी के रूप में देखना है जिसे एक मनुष्य पा सकता है। परमेश्वर के लोगों को सिखाने और उन्नत करने का काम उसके कार्यक्रम में इतने महत्त्व का है कि वह इसे किसी स्वर्गदूत को नहीं देगा, और केवल उन्हें ही देगा जिन्होंने उसके अनुग्रह और उद्धार को जाना है, और मसीह की देह के कल्याण और स्वास्थ्य के लिए उनके जीवन समर्पित किए हैं। हमारा अभिप्राय प्रचार करने या सिखाने की हमारी इच्छा नहीं होनी चाहिए, परन्तु हमारी गहरी इच्छा परमेश्वर के लोगों की उन्नति करना, स्थिर करना और आशीष देना होनी चाहिए।

इ: दीनता से कमर बाँधे रहना है।

आयत 6, "दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।" एक भक्त अगुवे में दीनता अनिवार्य है क्योंकि यह एक सच्ची स्वीकरण प्रकट करता है कि जो कुछ भी पूरा किया गया है परमेश्वर के अनुग्रह और सहायता से किया गया है। यदि हमारे परिश्रम और काम हमारी अपनी शक्ति और योग्यता से हैं तब तो हम ने कुछ भी परमेश्वर के लिए पूरा नहीं किया है। परमेश्वर का सच्चा काम केवल उसके द्वारा ही पूरा किया जा सकता है और हम, अधिक से अधिक, उसके साथ संगी मजदूर हैं।

ई: झुँड की उदाहरण द्वारा अगुआई करनी है।

परमेश्वर के लोगों को ऐसे अगुवे मिलने चाहिए जो परमेश्वर के राज्य के सच्चे उदाहरण और आदर्श हैं। प्रेरित नए नियम के विश्वासियों को उपदेश दे सके थे, "हमारे अनुयायी बनो जैसे हम मसीह के अनुयायी हैं।" जो अगुवे लोगों को मसीह के पीछे चलने और उसके समान बनने का उपदेश देते हैं, परन्तु आप सच्चे मसीह समान नहीं हैं, पाखण्डी हैं, और उनके बुलावे के योग्य नहीं हैं।

उ: एक दूसरे के दीनता से अधीन रहना चाहिए।

दूसरे अगुवों के अधीन रहने से सुरक्षा और रक्षा मिलती है। जिस दीनता के कारण एक व्यक्ति अधीन होता है, एक ऐसा तत्त्व है जो परमेश्वर का अनुग्रह पाता है, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। दीन अधीनता अभिमान निकाल देती है। यह हम में एक सकारात्मक काम भी करती है जो हमें राज्य की जिम्मेवारियों के योग्य बनाता है।

ऊ: "महिमा का मुकुट" मिलेगा। (विश्वासयोग्य, आज्ञाकारी पास्टरों को)

विश्वासयोग्य पास्टर उनके प्रभु को बड़ी महिमा और सम्मान लाते हैं। एक विश्वासयोग्य रखवाले के द्वारा परमेश्वर का नाम ऊँचा होता और महिमा पाता है। इसलिए वह प्रभु के लिए महिमा का मुकुट है और यही वह इनाम है जिसे वह अपने विश्वासी परिश्रम के लिए पाता है। पवित्रशास्त्र में असल में पाँच मुकुटों का वर्णन है, जिनमें से हर एक परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवा के लिए विशेष इनाम है। आओ हम उनको संक्षेप में देखें।

पवित्रशास्त्र के पाँच मुकुट:

जीवन का मुकुट। (याकूब 1:12-18)

परीक्षाओं और जाँचों को सहने और जीत लेने के लिए। "धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है।" इस मुकुट को पाने के तीन कारक हो सकते हैं:

- परीक्षाओं और जाँचों को सहना और जीत लेना।
- अनेक परीक्षाओं के बावजूद मसीह से प्रेम करना।
- मृत्यु तक विश्वासयोग्य बने रहना।

अविनाशी मुकुट। (1 कुरिं. 9:24-27)

सब चीजों में, परमेश्वर की महिमा के लिए, प्रवीणता और संयम पाने का प्रयत्न करना। "हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम रखता है; वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं जो मुरझाने का नहीं।" 1 कुरिं. 10:5-13 भी देखो।

आनन्द का मुकुट। (1 थिस्स. 2:19-20)

"भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न हो? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।" यह मनुष्यों को जीतनेवाले का मुकुट है। जिन मनुष्यों को उसने मसीह के लिए जीता है, उसका मुकुट हैं। जब मनुष्यों को जीतनेवाला स्वर्ग में प्रवेश करेगा और उन अनेक मनुष्यों को देखेगा जिनको मसीह में लाने का उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ था, वे उसके लिए सबसे बड़ा आनन्द और उसका "आनन्द का मुकुट" होंगे।

धर्म का मुकुट। (2 तीमु. 4:5-8)

"मेरे कूच का समय आ पहुँचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" पौलुस अपने जीवन के उस चरण में पहुँच गया है जहाँ उसे लगता है उसका मसीह के पास जाना निकट है। वह अपने जीवन पर विचार करता है जिसे उसने मसीह के साथ मुलाकात से आरम्भ किया था और इसका वर्णन करने के लिए तीन सादृश्य इस्तेमाल करता है।

- उसे एक अच्छी लड़ाई साहस के साथ लड़ी है।
- उसने अपनी लम्बी दौड़ विश्वासयोग्यता के साथ दौड़ी है।
- उसने सच्चे विवेक के साथ विश्वास की रखवाली की है।

ये तीन सादृश्य विभिन्न प्रकार से वर्णन करते हैं जिस प्रकार वह उसके जीवन पर परमेश्वर के बुलावे की ओर विश्वासयोग्य रहा था, और जिस तरीके से उसने उस बुलावे की जिम्मेवारियों को पूरा किया था। अपने जीवन के अन्त में वह अपनी विश्वासयोग्य सेवा के वर्षो की ओर देख सकता है जिन्हें उसने मसीह और उसकी कलीसिया की सेवा में लगाया था। वह बड़े विश्वास के साथ, उस इनाम की आशा भी रखता है जिसे वह उसकी विश्वासयोग्य सेवा की पहचान में पाएगा और जो परमेश्वर के राज्य में उसके पद और अधिकार का संकेत है।

महिमा का मुकुट। (1 पतरस 5:2-4)

यह रखवाले का मुकुट है। यह मसीह के सेवक के रूप में विश्वासयोग्य सेवा के लिए दिया जाता है। इस सेवा के विभिन्न पहलू जिन्हें पहचाना गया है, हैं:

- मसीह की देह में एक सच्चा प्राचीन होना।
- मसीह के दुखों में सहभागी हुआ होना।
- परमेश्वर के झुँड की विश्वासयोग्यता के साथ रखवाली की होना।
- परमेश्वर के लोगों के निरीक्षक के रूप में स्वेच्छा से सेवा की होना।
- झुँड पर अधिकार न जताना, परन्तु आदर्श बनकर अगुआई की होना।
- स्वार्थी लाभ के लिए अपने पद को इस्तेमाल न किया होना।

प्रत्यक्ष रूप से झुँड की रखवाली करने की कुछ विशेषताएँ हैं जो व्यक्ति को परमेश्वर के अनन्त राज्य में सेवा के लिए तैयार करते हैं, जैसे राजा दाऊद को भेड़ों की रखवाली का अनुभव था। इससे उसको इस्राएल पर उसके राज्य में सहायता मिली थी (2 शमूएल 7:8)। उन में से कुछ सिद्धान्त जो व्यक्ति को मसीह का एक सफल सेवक बनने में सहायता करते हैं, उसके साथ राज्य करने में भी तैयार करते हैं, जब देशों पर उसका राज्य स्थापित होगा। (प्रकाशित. 11:15)

4. विश्वासी भी इनाम पाएँगे।

जिन मुकुटों और इनामों के विषय में हम यहाँ संक्षेप में सीख रहे हैं केवल सेवकों या प्रचारकों के लिए ही नहीं रखे गए हैं, परन्तु वे उन अनेकों को भी मिलेंगे जो उन पदों में नहीं हैं परन्तु विभिन्न दूसरी भूमिकाओं में मसीह की सेवा कर रहे हैं। मुझे निश्चय है कि अनेक "मसीही व्यवसायी साझेदार" राज्य में पहचान और इनाम के हकदार होंगे और मसीह के राज्य के प्रशासन में एक आवश्यक भूमिका निभाएँगे। इसलिए यह आवश्यक है कि सामान्य विश्वासी समझ लें कि जो कुछ भी वे करते हैं "प्रभु के लिए" करते हैं, क्योंकि जैसे वे अपना काम करते हैं वे विभिन्न प्रकार के सिद्धान्त सिखते हैं जो उनकी परमेश्वर के राज्य में उनकी भूमिकाएँ निभाने में सहायता करेंगे। मत्ती 10:40-42। "जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा।" जो एक पास्टर / अगुवे को प्रार्थना, वफ़ादारी, प्रोत्साहन, सहयोग के साथ सहयोग देगा बदला पाएगा।

5. शैतान पर जय पाना, ऐसा न हो वह तुम पर जय पा ले।

संकटपूर्ण वास्तविकता यह है कि शैतान के लिए, धूर्त साधनों के द्वारा, परमेश्वर के कुछ सेवकों से उनके इनाम चुरा लेना सम्भव है। यह कुछ के लिए कितनी दुर्भाग्य की बात होगी जिन्होंने वर्षो से उसकी विश्वासयोग्य सेवा की और अन्त में शत्रु को उनसे उनके मिरास को चुराने दिया। इस भयानक सम्भवना से बचने के लिए पवित्रशास्त्र हमें चेतावनी देता है:

- अ: सब समय सचेत, जागते, और सतर्क रहो।
- आ: विश्वास में दृढ़ होकर शैतान का सामना करो।
- इ: दीन रहो और दीनता से ढँके रहो।
- ई: प्रभु में एक दूसरे के अधीन रहो।
- उ: अपनी सारी चिन्ताएँ प्रभु पर डाल दो।

6. सारे अनुग्रह का दाता।

जैसे हम ने इस गंभीर सच्चाई पर विचार किया है जो शैतान कर सकता है, तो क्या हमें उसे ऐसा करने देना है, हमें अपने आप को स्मरण दिलाना है कि परमेश्वर "सारे अनुग्रह का परमेश्वर" है, और कि उसका अनुग्रह हमें हर स्थिति में सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त है। वह "विश्वासयोग्य ईश्वर है, जो उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएँ मानते हैं उनके साथ हज़ार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता" है - (व्यवस्था. 7:9)। यह जानना प्रोत्साहित करनेवाली और तर्कसंगत बात है कि उसने उसकी वाचाओं को उसकी दया के साथ मिलाया है ताकि हमारी कमियों और कमज़ोरियों को ढाँप दे । हमारे विश्वास को इससे स्थिरता मिलती है कि उसकी वाचा की पूर्ति हमारी नहीं, उसकी विश्वासयोग्यता पर टिकी है।

7. परमेश्वर आपको सिद्ध और स्थिर करेगा।

हमें सदा स्मरण रखना है कि यह "परमेश्वर ही है जिसने तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।" (फिलि. 2:13)। सब कुछ जो हम अपने जीवनों में पूरा कर पाते हैं, व्यक्तिगत या सेवा में, सारे अनुग्रह के परमेश्वर के अदभुत अनुग्रह से है। आखिरकार जीवन और अगुआई में हमारी सफलता, हमारी योग्यताओं पर निर्भर नहीं, न हमारे विश्वास पर, या विश्वास की कमी पर, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह पर है।

जो अगुवे अन्त में परमेश्वर के दृष्टिकोण से सबसे अधिक सफल हैं, वे नहीं जो प्रतिभाशाली, करिश्मावाले, बड़ी उपलब्धियों वाले हैं, परन्तु वे जो पूरी तरह परमेश्वर की ओर समर्पित हैं जिससे वह उनके द्वारा अपना काम कर सकता है। इसे पूरा करने की प्रक्रिया में वह:

- आपको सिद्ध करेगा। परमेश्वर के दृष्टिकोण से सिद्धता, वह है जो सम्पूर्ण और परिपक्व है। जबकि वह आपकी अगुआई की भूमिका को प्रभावशाली और फलवन्त बना रहा है, आपके जीवन को भी ठीक करेगा। इस संदर्भ में इसका अर्थ है कि वह आपको पूरी तरह ठीक करेगा, या वह बनाएगा जो आपको बनना चाहिए।

- **आपको स्थिर करेगा।** वैसे स्थापित करेगा जैसे एक पेड़ स्थापित होता है जब उसकी जड़ें भूमि में गहराई तक जाती हैं।
- **आपको बलवन्त करेगा।** उसके ईश्वरीय सामर्थ्य के आने से शक्तिशाली होना।
- **आपको बसाएगा।** वह आपको एक दृढ़ और न हिलनेवाली नींव पर रखेगा।

प्रिय मित्रो, परमेश्वर ने आपको उसकी सेवा करने के लिए बुलाया है, परन्तु उसने उस बुलावे को पूरा करने के लिए आपको आपकी अपनी शक्ति या योग्यता पर नहीं छोड़ा है। जैसे अय्यूब के साथ था, "जो कुछ मेरे लिए उसने ठान लिया है, उसी को वह पूरा करेगा।" (अय्यूब 23:14)। जैसे वह उस काम को पूरा करने के लिए आपके द्वारा काम करता है, वह आपके भीतर आपके जीवन में अपनी अमानत को सिद्ध करने के लिए, और अपने राज्य में आपकी भूमिका के लिए आपको तैयार करने के लिए काम करेगा। जैसे परमेश्वर इस पर काम करता है हम एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें। आओ हम एक दूसरे को विश्वास और प्रार्थना द्वारा सहयोग दें ताकि वह उस अच्छे काम को पूरा करे जिसे उसने आप में और मुझ में आरम्भ किया, उसके अनन्त स्तुति, सम्मान, और महिमा के लिए।

एक अगुवे की हृदय सम्बंधी योग्यताएँ

मसीह की देह में अगुआई की प्रकृति, अगुआई के बुलावे और अगुआई के नाजुक महत्त्व के अलावा, अगुआई की योग्यता के मामले की और अधिक अध्ययन की आवश्यकता है।
क्या आप योग्य हैं ? क्या आप जीवन भर के एक सबसे बड़े साहस-कार्य के लिए तैयार होगे ? यह अधिकतर तो आपके ऊपर है। जबकि आपके विश्वास में बढ़ने में सहायता के लिए परमेश्वर वचनबद्ध है, फिर भी आपके सहयोग का स्तर वह कारक है जो एक योग्य हृदय की ओर ले जाता है। वह उन लोगों की खोज में है जिन पर वह भरोसा कर सकता है, ऐसे लोग जो कलीसिया के लिए उसके हृदय के प्रेम और चिन्ता में भागी होते हैं।
यह अध्ययन अगुआई की हृदय सम्बंधी योग्यताओं के विषय में है जो हर मसीही में होनीं चाहिए: एक पिता का हृदय और एक सेवक का हृदय। यदि आपका बुलावा एक शासकीय सेवा के लिए है, तब वे आपकी पूर्वापेक्षाएँ और आपकी सेवा के कार्य की नींव हैं। एक मण्डली सम्बंधि सेवा में, वे "कार्य-प्रणाली", आपकी सभा की आत्मा हैं। वे हृदय की योग्यताएँ हैं जिन पर हम सब मसीहियों के रूप में पूरे डील-डौल तक पहुँचने के लिए निर्भर होते हैं।

"हृदय" शब्द की परभाषा
जब परमेश्वर उसके सेवकों को उनके हृदय उसे देने को कहता है तब उसका अर्थ क्या है ? हृदय का सामान्य अर्थ हो सकता है (शारीरिक मर्मअंग के परे): एक व्यक्ति की भावनाएँ। उदाहरणार्थ, जब एक व्यक्ति एक स्त्री को कहता है कि वह उससे "उसके सारे हृदय से" प्रेम करता है, तो उसका सामान्य अर्थ है तीव्र भावनाओं के साथ।

इब्रानी अर्थ। परन्तु, प्राचीन इब्री सोचविचार में, "हृदय" के अर्थ में न केवल एक व्यक्ति की भावनाएँ सम्मिलित थीं, बल्कि उसका आत्मिक, मानसिक और शारीरिक जीवन भी था। इब्री मनुष्य को एक सम्पूर्ण व्यक्ति के रूप में देखते थे और "हृदय" को उस संदर्भ में देखा जाता था। हृदय के लिए इब्रानी शब्द है "labab" जिसका सामान्य अर्थ है: मध्य में, अन्तरतम, या किसी चीज के गुप्त अंग। बाइबल "समुद्र के मध्य में" (निर्गमन 15:8), "पृथ्वी के भीतर" (मत्ती 12:40) जैसे वाक्याँश इस्तेमाल करती है। इसलिए इब्रानी में, "हृदय" शब्द का अर्थ होता है, मनुष्य की इकट्ठी शक्तियों का आधार और उसके व्यक्तिगत जीवन का केन्द्र। हृदय वह सिंहासन है जिस पर जीवन आप बैठता है। इसे सेवा के साथ जोड़ने पर, जब प्रभु एक व्यक्ति से उसका हृदय माँगता है, तब वह चाहता है कि वह व्यक्ति उसके अस्तित्व के मर्म से प्रभु के काम में लग जाए।

यूनानी अर्थ। अँगरेजी बाइबल में, एक सबसे सामान्य यूनानी शब्द जिसे "हृदय" अनुवाद किया गया है "kardia" शब्द है। सामान्य अर्थ में, "kardia" आत्मिक और शारीरिक जीवन दोनों के केन्द्र और आधार का संकेत देता है। इसमें प्राण और मन दोनों का अर्थ है। "kardia" को अकसर मानवीय विचारों, उत्साह, इच्छाओं, अभिलाषाओं, स्नेह, उद्देश्यों और प्रयासों के रूप में मन की बात करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। कुछ यूनानी विद्वान् विश्वास करते हैं कि यह यूनानी शब्द (नए नियम में 250 बार इस्तेमाल किया गया है) एक व्यक्ति के व्यक्तित्व और भीतरी जीवन और चरित्र की बात करता है। इन अध्ययनों से हम "हृदय" शब्द की एक सामान्य परिभाषा निकाल सकते हैं: एक व्यक्ति के शरीर, मन, भावनाओं, व्यक्तित्व, चरित्र और आत्मा का मर्म (मुख्य भाग)। जब प्रभु उसके अगुवों को कहता है कि वे उसे उनके हृदय दें, तब, वह उनके जीवन माँग रहा है।

हृदय का महत्त्व
शारीरिक रूप से, हृदय शरीर का एक सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। इसके बिना, शरीर के विभिन्न अंग, प्रक्रियाएँ और कार्य बंद हो जाएँगे, और जीवन का अंत होगा। हम शारीरिक हृदय और आत्मिक हृदय में कई समान्तर निकाल सकते हैं, जिससे अगुवों के आत्मिक जीवन और कार्यों में इसके अत्यन्त महत्त्व को देखा जा सकता है।

समान्तर:

शारीरिक हृदय	**आत्मिक हृदय**
शारीरिक हृदय एक व्यक्ति की छाती के लगभग मध्य में होता है।	आत्मिक हृदय (या आत्मा का हृदय) एक अगुवे के विचारों, शब्दों, कार्यों और सेवा के मध्य में होना चाहिए, और इसे उसके जीवन की हर चीज को प्रेरित करना चाहिए।

हर शारीरिक हृदय लगभगइसके मालिक की बंद मुट्ठी के आकार का होता है।	हर अगुवे का आत्मिक हृदय असल में उतना ही बड़ा है जितने उसके हाथों के काम उसे दिखाते हैं।
एक शारीरिक हृदय का लहू उन विभिन्न पौषकों से बना होता है जो इसके मालिक के भोजन में होते हैं।	एक अगुवे के आत्मिक हृदय में जीवन उससे बनता है जो वह उसके मन और अनुभव से खाता है। सबसे शुद्ध जीवन परमेश्वर का वचन "खाने" से मिलता है।
एक शारीरिक हृदय का पम्प करने की प्रणाली एक पाने/छोड़ने के तरीके पर आधारित है। लहू हृदय के दूसरे भाग से पाया जाता है।	एक अगुवे से आत्मिक जीवन का उमड़ना उसके अपने परमेश्वर के प्रेम और क्षमा के पाने पर आधारित है, और फिर यह उसके चारों ओर के लोगों तक पहुँचता है।
शारीरिक हृदय, यदि यह ठीक ढंग से काम कर रहा है तो, शरीर के एक अंग से दूसरे अंगों तक लहू पम्प करता है।	एक अगुवे का आत्मिक हृदय, यदि यह ठीक ढंग से काम कर रहा है तो, पवित्र आत्मा का जीवन मसीह की सारी देह में फैलाता है।
शारीरिक हृदय, शरीर को इसकी अशुद्धताओं से शुद्ध करने के लिए, लहू को सारे शरीर में पम्प करता है।	एक अगुवे का आत्मिक हृदय, मसीह की देह को निरन्तर शुद्ध करने के लिए, यीशु मसीह के लहू की सामर्थ्य को जानता है और प्रचार करता है।
एक स्वस्थ शारीरिक हृदय, इसके मालिक के सचेत प्रयास के बिना, अपने आप से धड़कता है।	एक अगुवे का स्वस्थ आत्मिक हृदय, बिना किसी सचेत प्रयास या झूठे दिखावे के, परमेश्वर के प्रेम, आनन्द और शान्ति को स्वाभाविक रूप से और अपने आप से दिखाता है।
शारीरिक हृदय एक अधिक चर्बी वाले भोजन और अधिक वजनवाले शरीर के कारण किसी प्रकार की हृदय की बीमारी और दौरे का जल्द शिकार हो सकते हैं।	एक अगुवे का आत्मिक हृदय आत्मिक बीमारी का जल्द शिकार हो सकता है जब वह परमेश्वर के वचन की बड़ी-बड़ी सच्चाइयाँ लेता है परन्तु उन का पालन नहीं करता और उनके उसके और दूसरों के जीवन का सक्रिय भाग नहीं बनाता।
शारीरिक हृदय जो शराब का सेवन करता है, बीमारी और दौरे का जल्द शिकार हो सकता है।	एक अगुवे का आत्मिक हृदय जब वह इस संसार के सुखों और चिन्ताओं में दिलचस्पी लेता है तो आत्मिक बीमारी का शिकार हो सकता है।
शारीरिक हृदय उस शरीर में अधिक बीमारी और दौरा का शिकार हो सकता है जो व्यायाम नहीं करता।	एक अगुवे का आत्मिक हृदय अधिक आत्मिक बीमारी का शिकार हो सकता है जो परमेश्वर की इच्छा कम पूरी करता है, जैसा परमेश्वर के वचन में दिया गया है।
शारीरिक हृदय उतना अधिक बीमारी और दौरे का शिकार होगा जितना अधिक इसका मालिक तनाव और दवाब लेगा।	एक अगुवे का आत्मिक हृदय उतना अधिक आत्मिक बीमारी का शिकार होगा जितना अधिक वह अधिक तनाव का जीवन जीएगा जब वह अपनी सारी चिन्ताएँ प्रभु के हाथों में नहीं डालेगा।
शारीरिक हृदय उतना अधिक बीमारी और दौरे का शिकार होगा जितना जन्म के समय	एक अगुवे का आत्मिक हृदय उतना अधिक आत्मिक बीमारी का शिकार होगा जितनी अधिक आत्मिक बीमारियाँ उसमें

इसके माता-पिता से हृदय रोग पाया होगा।

हैं जिनसे उसने आत्मिक नए जन्म के समय सच्चाई से मन नहीं फिराया है।

ये सब शारीरिक समान्तर परमेश्वर की अगुआई के जीवन में आत्मिक हृदय के महत्त्व को स्पष्ट रूप से दिखाते हैं।

हृदय की रखवाली करना

बाइबल के अनुसार, एक अगुवे के पास उसके हृदय की रखवाली करने के कम से कम तीन कारण हैं। पहला कारण है कि उसका हृदय उसके सारे रवैयों और कार्यों का स्रोत है। हम इसे निम्नलिखित आयतों में देखते हैं:

नीतिवचन 4:23

- "सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।"

फिलिप्पियों 4:7

- "तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।"

इन वचनों में, अगुवे को उसके हृदय की रखवाली उसी प्रकार करने को कहा गया है जिस प्रकार एक सिपाही शहर के द्वार की करता है। अगुवे को उसके स्नेहों पर ध्यान देना चाहिए, जिससे वह बाहरी मूल्यों को रोक सके। उसे एक संतरी के समान सर्तक और अनुशासित होना है जिससे वह एक शिविर या किले के भीतर अपने राजा की रखवाली कर सके।

एक अगुवे के लिए अपने हृदय की रखवाली करने का दूसरा कारण यह है क्योंकि यह उस सब का स्रोत है जिससे वह सेवा करता या बोलता है। हम इसे मत्ती 12:34-35 में देखते हैं।

- "क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।"

हर अगुवा अपने ही हृदय के भण्डार की रखवाली का अधिकारी है, जो भली या बुरी चीजों से भरा है। इसी भण्डार से अगुवा भली या बुरी चीजें प्रभु के लोगों के खुले भण्डारों में डालता है। पुराना नियम इसके कुछ सुन्दर उदाहरण देता है। इस्राएल के इतिहास में, लोगों के लाभ और रक्षा के लिए धान, दाखरस, तेल या हथियारों के कई भण्डार बनाए होते थे। सुलेमान और हिजकिय्याह दोनों उनके भण्डारों पर बहुत गर्व करते थे। (1 राजा 9:19; 2 इतिहास 32:28)। उसी प्रकार, हर अगुवे को अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या वह उसके हृदय की चीजों पर गर्व करता है। उन में से उसे प्रभु के लोगों को पोषण देना और रक्षा करनी है। सुलेमान ने इस्राएल की रक्षा के लिए धान, दाखरस, तेल और हथियार जमा किए थे। आज, आत्मिक अगुवे को उसके हृदय में परमेश्वर का वचन, प्रभु का आनन्द, आत्मा का अभिषेक और परमेश्वर का सारा हथियार जमा करके रखना है। (इफिसियों 6:13-17)

एक अगुवे के लिए उसके हृदय की रखवाली करने का तीसरा कारण यह है कि वह इसे अपने आप को या परमेश्वर के लोगों को अशुद्ध करने से रोक सके। आप इसे यीशु के शब्दों में देख सकते हो। 'तब उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, "तुम सब मेरी सुनो, और समझो। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। [यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।]" जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उससे पूछा। उसने उनसे कहा, "क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं संझते हो कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती हैं और संडास से निकल जाती हैं?" यह कहकर उसने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। फिर उसने कहा, "जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरे बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।"' (मरकुस 7:14-23)। प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि एक अगुवे का अरक्षित हृदय बहुत सारी बुरी चीजों का स्रोत बन जाता है: अशुद्ध और बुरे विचार, व्यभिचार, कत्ल, चोरी, लालच, खतरनाक और विनाशकारी दुष्टता, असंयमित और अश्लील आचरण, बुरी आँख, एक निन्दात्मक मुँह जो निन्दा करता और दुर्भावपूर्ण गलत बातें बोलता है, एक हृदय जो परमेश्वर और मनुष्य की ओर अभिमान से उठा हुआ है, और मूर्खता से उतावला प्रेम।

यह कलीसिया के लिए बहुत दुखद बात है कि इसके इतिहास में समय समय पर, इसके कुछ बहुत प्रभावशाली अगुवों ने इस सूची को उनका कार्यक्रम बनाया है। कहाँ गड़बड़ हुई? अगुवों और उनके चेलों ने उनके हृदयों को अरक्षित छोड़ दिया है। परमेश्वर के झुण्ड की रखवाली करने के बदले, ये अगुवे उन में सबसे आगे हैं जो "भेड़ों के समान भटक गए थे"। एक सुख से दूसरे का आनन्द लेने में, वे कलीसिया के लिए परमेश्वर की इच्छा को भूल गए हैं।

हृदय के गुण

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक अगुवे के हृदय के गुण परमेश्वर के लिए बड़े महत्त्व के हैं। परमेश्वर उसके अगुवों के हृदय निरन्तर परखता (व्यवस्थाविवरण 8:2), जाँचता (यिर्मयाह 17:10), और विचारता (नीतिवचन 21:2) है। प्रभु के सामने शुद्ध हृदय बनाए रखने की जिम्मेवारी अगुवे की है। (याकूब 4:8)।

आपके हृदय की स्थिति कैसी है? यह अधिकतर, प्रभु, लोगों और आपके आस-पास की घटनाओं की ओर आपकी प्रतिक्रिया से निर्धारित होगा। जब तुम किसी के जीवन में एक बड़ी आवश्यकता को देखते हो, तो क्या तुम्हारा हृदय सहायता करना चाहता है? या क्या तुम्हारा हृदय कठोर है जो कहता है, "इसे तो नहीं किया जा सकता है?" जब प्रभु तुम्हारा सामना तुम्हारे पाप के साथ करता है, तब क्या तुम्हारा हृदय कोमल होता है? या क्या तुम्हारा हृदय पाखण्डी होता है जो कहता है, "प्रभु, कृपया, अभी नहीं। मैं इस समय कुछ जरूरी काम कर रहा हूँ। क्या हम इसे बाद में नहीं कर सकते?" जब आप एक अच्छे संदेश में एक प्रेरणात्मक वचन सुनते हो, तो क्या तुम्हारा हृदय उसे अपने पास रखता है ताकि बाद में सप्ताह के बीच उस का पालन किया जाए? या क्या तुम्हारा दोहरा हृदय है जो, एक नया विचार पाने का आनन्द तो लेता है, परन्तु उसे कार्य में लाने में असफल रहता है?

नीचे दिए गए "आत्मिक हृदय के गुणों" के चार्ट में हृदय के गुणों की एक सूची है, जिसके साथ बाइबल के वचन और हर गुण के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू दिए गए हैं। अपने हृदय की स्थिति का मूल्याँकन करने के लिए यह एक उत्तम औज़ार है। आत्मा और वचन के द्वारा, परमेश्वर इसे आपकी आत्मा में किसी हानिकर स्थिति का पता लगाने और ठीक करने की सहायता में इस्तेमाल कर सकता है। यदि आप कलीसिया के एक अगुवे हैं या बनने की इच्छा रखते हैं, तो इसे आपके "आत्मिक पाठ्यक्रम" का एक हिस्सा होना चाहिए। उसके अतिरिक्त, कोई इस सूची को पढ़ कर और प्रार्थना करके लाभ उठा सकता है। सकारात्मक गुणों की सूची परमेश्वर के वचन से एक आसवित प्रेरणात्मक संदेश है।

आत्मिक हृदय के गुण

सकारात्मक

शोकित हृदय......उत्पत्ति 6:6
इच्छुक हृदय......निर्गमन 25:2
उत्तेजित हृदय......निर्गमन 35:21
बुद्धिमान हृदय......निर्गमन 35:35
दूसरा हृदय......1 शमूएल 10:9
सिद्ध हृदय......1 इतिहास 12:38
कोमल हृदय......2 इतिहास 34:27
उदास हृदय......नहेम्याह 2:2-12
विश्वासयोग्य हृदय......नहेम्याह 9:8
नरम हृदय......अय्यूब 23:16
सच्चा हृदय......अय्यूब 33:13
भाईचारा वाला हृदय......भजन 44:4
मोम का हृदय......भजन 22:14
शुद्ध हृदय......भजन 24:4
टूटा हुआ हृदय......भजन 34:18
धड़कता हृदय......भजन 38:10
कमज़ोर हृदय......भजन 40:12
घोषित करनेवाला हृदय......भजन 45:1
स्थिर हृदय......भजन 57:7
जीवित हृदय......भजन 69:32
दृढ़ हृदय......भजन 112:8
समझदार हृदय......नीतिवचन 2:2

नकारात्मक

बुरा हृदय......उत्पत्ति 6:5
कठोर हृदय......निर्गमन 4:21
धोखा खाया हुआ हृदय......व्यवस्था. 11:16
नहीं-समझ पानेवाला हृदय......व्यवस्था. 29:4
अभिमानी हृदय......2 इतिहास 32:35
अक्खड़ हृदय......एस्तेर 7:5
पाखण्डी हृदय......अय्यूब 8:14
अहंकार से भरा हृदय......व्यवस्था. 8:14
दृढ़, कड़ा हृदय......अय्यूब 41:24
पापी हृदय......भजन 41:6
दुष्ट हृदय......भजन 58:2
भूल करनेवाला हृदय......भजन 95:10
अभिमानी हृदय......भजन 101:5
मोटा और चर्बीला हृदय......भजन 119:70
निर्जन हृदय......भजन 143:4
तिरस्कार करनेवाला हृदय......नीतिवचन 5:12
छल करनेवाला हृदय......नीतिवचन 12:20
कटु हृदय......नीतिवचन 14:10
धर्म-त्यागी हृदय......नीतिवचन 14:14
मूर्ख हृदय......नीतिवचन 15:7
मनुष्य का हृदय......नीतिवचन 15:11
घिनौना हृदय......नीतिवचन 26:25

याद रखनेवाला हृदय......नीतिवचन 4:4, 21
शान्त हृदय......नीतिवचन 14:30
आनन्दित हृदय......नीतिवचन 17:22
नया हृदय......यहेजकेल 18:31/36:26
मांस का हृदय......यहेजकेल 11:19
उद्देश्यपूर्ण हृदय......यानिय्येल 1:8
विचारनेवाला हृदय......लूका 2:19
क्षमाशील हृदय......मत्ती 18:35
निर्दोष हृदय......1 थिस्स. 3:13
लहू छिड़का हृदय......इब्रानियों 10:22
पालन-पोषण किया हृदय......याकूब 5:5
पवित्र हृदय......1 पतरस 1:22
आश्वासित हृदय......1 यूहन्ना 3:19
ईमानदार, अच्छा हृदय......लूका 8:15
उत्तेजक हृदय......लूका 24:25-32
एक हृदय......प्रेरितों 2:46
एक हृदय......प्रेरितों 4:32
खुला हृदय......प्रेरितों 16:14
आज्ञाकारी हृदय......रोमियों 6:17
खतना हुआ हृदय......रोमियों 2:29
विश्वासी हृदय......रोमियों 10:9-10
दृढ़ हृदय......1 कुरिन्थियों 7:37
बड़ा हृदय......2 कुरिन्थियों 6:11
परवाह करनेवाला हृदय......2 कुरिं. 8:16
गीत गाता हृदय......इफिसियों 5:19
दृढ़ हृदय......इब्रानियों 13:9

दोहरा हृदय......याकूब 1:8
घायल हृदय......भजन 109:22
बुरा हृदय......मत्ती 15:19
विद्रोही हृदय......यिर्मयाह 5:23
घमण्डी हृदय......यशायाह 9:9
धोखेबाज हृदय......यिर्मयाह 17:9
व्यभिचारी हृदय......यहेजकेल 6:9
पत्थर का हृदय......यहेजकेल 11:19
कमज़ोर हृदय......यहेजकेल 16:30
द्वेषपूर्ण हृदय......यहेजकेल 25:15
दुखी हृदय......यहेजकेल 27:31
पशु सा हृदय......यानिय्येल 4:16
बटा हुआ हृदय......होशे 10:2
मोटा हृदय......मत्ती 13:15
उदास हृदय......नीतिवचन 31:6
विवाद करनेवाला हृदय......मरकुस 2:6-8
डाह, संघर्ष करनेवाला हृदय......याकूब 3:14
हठी हृदय......भजन 81:12
अशान्त हृदय......यूहन्ना 14:1
खतनारहित हृदय......प्रेरितों 7:51
काला हृदय......रोमियों 1:21
कठोर, पश्चातापहीन हृदय......रोमियों 2:5
दुखी हृदय......2 कुरिन्थियों 2:4
अन्धा हृदय......इफिसियों 4:18
न पहचाननेवाला हृदय......इब्रानियों 3:10
बुरा हृदय......इब्रानियों 3:12
दोष देनेवाला हृदय......1 यूहन्ना 3:20
अभिभूत हुआ हृदय......भजन 61:2
पाप का अभ्यस्त हृदय......2 पतरस 2:14

अगुवा और एक पिता का हृदय

यूनानी अर्थः "क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हज़ार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं।" (1 कुरिन्थियों 4:15)। मूल यूनानी भाषा में, सिखानेवाला शब्द का अर्थ हैः "एक लड़का अगुवा, निजी शिक्षक, मार्गदर्शक, संरक्षक या सेवक जिसका काम बच्चों को स्कूल ले जाना था।" यूनानी और रोमियों में, एक सिखानेवाला भरोसेमंद सेवक या भण्डारी भी होता था जिसकी जिम्मेवारी समाज के उच्च श्रेणी में लड़कों के जीवनों और नैतिक की देखरेख करना होता था। लड़के जब तक पुरुषत्व तक नहीं पहुँचते थे बिना सिखानेवाले के घर से बाहर कदम नहीं रखते थे। शब्द में कठोरता का विचार भी सम्मिलित होता था; एक सिखानेवाला जवान लड़कों में उचित आचार-शास्त्र का कठोर नियन्त्रक और लागू करनेवाला होता था।
पवित्रशास्त्र में आयत 'सिखानेवाला' शब्द एक शक्तिशाली विरोध के रूप में प्रस्तुत करता है। पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखता है कि उनके कई शिक्षक या सिखानेवाले थे (जो उन्हें स्वेच्छा से कड़ी शिक्षाएँ और कड़े नियम देते थे) परन्तु अधिक पिता नहीं थे। सिखानेवाला शब्द में शिक्षा के लिए विद्यार्थी-शिक्षक का अर्थ है, जबकि पिता शब्द में पिता-पुत्र का प्रेम का एक सम्बंध है। नीतिवचन की पुस्तक पिता-पुत्र के इस सम्बंध के विचार पर बनी है। पिता की जीवन की बुद्धि, ज्ञान और समझ एक स्नेही पिता-पुत्र सम्बंध में पुत्र को दी जाती है।

इब्रानी अर्थः अधिकतर नीतिवचन में पिता की आवाज है जो पुत्र से बात कर रहा है। यह एक पिता के हृदय के रवैये को चित्रित करता है:

- "हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा" (1:8)
- "हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाएँ, तो उनकी बात न मानना" (1:10)
- "तो हे मेरे पुत्र, तू उनके संग मार्ग में न चलना" (1:15)
- "हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे" (2:1)
- "हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना" (3:1)
- "हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना" (3:11)
- "हे मेरे पुत्र, ये बातें तेरी दृष्टि से ओट न होने पाएँ" (3:21)
- "हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा"
- "हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान" (6:20)

आज की कलीसिया

जैसा पौलुस के समय था, वैसा ही आज भी है, कि कलीसिया में दस हज़ार सिखानेवाले तो हैं, परन्तु लगभग उतने पिता नहीं हैं। कलीसिया में कई विद्वान् और पेशावर सेवक तो हैं परन्तु लगभग उतने आत्मिक पिता नहीं हैं। आज की कलीसिया में कई विद्वान् और पेशावर सेवक वाग्मितापूर्ण, प्रभावशाली उपदेश दे सकते हैं जो हमारे मनों और विचारों को छूएँगे। परन्तु पिता कहाँ हैं ? आज के कुछ धार्मिक कालेज और सेमीनरियाँ शिक्षकों के बहुमात्र-उत्पादन में लगे हुए हैं। परन्तु आत्मिक पिता बनाने का प्रयास कौन कर रहा है ?

क्या कलीसिया वक्ताओं, शिक्षकों और सिखानेवालों की अगुआई को इससे आत्मिक आशीषें चुराने देगी जो केवल आत्मिक पिता ही ला सकते हैं ? संसार को हज़ारों विद्वानों की सेवा प्राप्त है, परन्तु कलीसिया अभी भी सच्चे आत्मिक पिताओं की सेवा को पुकार रही है। कलीसिया को अशिक्षितों को प्रभु के मार्गो की शिक्षा देने के लिए कम्प्यूटर समान पुरुषों की आवश्कता नहीं है जिनके मन बाइबल के शुष्क ज्ञान से भरे हुए हैं। उसे सच्चे आत्मिक पिताओं की आवश्यकता है जो उसे प्रभु के मार्गो में ले जा सकते हैं। कलीसिया को ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है जिनके हृदय प्रभु के लोगों के लिए और जरूरतमंदों के लिए तरस से भरे हैं।

एक कम्प्यूटर बिना प्रेम, दया या सहानुभूति के जानकारी देता है। एक अगुवे में यदि एक पिता का हृदय नहीं है तो वह उतना ही प्रेम, दया या सहानुभूति दिखाएगा। कलीसिया को बाइबल के ज्ञान या शिक्षा से कुछ अधिक की आवश्यकता है। उसे उसके आत्मिक पिताओं के हृदय और जीवन की आवश्यकता है। परन्तु आत्मिक जीवन एक कालेज की कक्षा में पुस्तकों से नही सिखाया जा सकता है। आत्मिक जीवन विश्वास में परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के साथ एक करीबी सम्बंध में, और सच्चे पिताओं के आत्मिक उदाहरण से सीखा जा सकता है।

यीशु का पिता का हृदय

आओ हम सबसे पहले एक पिता के हृदय के गुण सब अगुवों के अन्तिम उदाहरण, प्रभु यीशु मसीह के जीवन में देखें। यीशु पृथ्वी पर स्वर्गीय पिता के हृदय की सम्पूर्ण खोज था। उसके शब्द, उसके तरीके और उसके कार्य सब ने पिता के हृदय को प्रकट किया था। इसलिए, यीशु ने कहा, "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30) और "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा ... पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है" (यूहन्ना 14:9स, 10स)। निम्नलिखित सूची यीशु मसीह में जो परमेश्वर के सब अगुवों का उदाहरण है, पिता के हृदय के कुछ रवैये दिखाती है।

तरस	"जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया" (मत्ती 9:35-36)
दिलचस्पी	एक फरीसी ने मसीह के एक चेले को पूछा, "तुम्हारा गुरू महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है ?" यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, "वैद्य भले चंगों के लिए नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है।" (मत्ती 9:11-13)
इच्छा	एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, "हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ, और कहा, "मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।"
दीनता	यीशु ने हमें दीनता की एक नई परिभाषा दी है: "जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती 18:3; फिलिप्पियों 2:5-10 भी देखो)
स्नेह	"मरियम ने उत्तम भाग चुना है", यीशु ने मार्था को यह समझाते हुए कहा कि क्यों उसे अपने सुननेवाले स्थान

	को छोड़कर सेवा करने में नहीं लगना चाहिए। (लूका 10:38-42; यूहन्ना 12:1-8 भी देखो)
क्षमा	यीशु ने हमें क्षमा की भी एक नई परिभाषा दी। क्रूस पर: "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका 23:34)। उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त में: "वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।" (लूका 15:20) पाप में फँसी वेश्या को: "मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।" (यूहन्ना 8:11)
टूटापन	यीशु ने पृथ्वी पर आने में अपने सारे स्वर्गीय अधिकार को त्याग दिया था, और सब अगुवों के लिए टूटेपन का आदर्श था। "यीशु आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ...यीशु रोया।" (यूहन्ना 11:33-36)। "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! कितनी बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुम ने न चाहा।" (मत्ती 23:37)
आत्म-बलिदान	यीशु ने हमें दिखाया कि अन्तिम कीमत कैसे देनी है। "मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ।" (यूहन्ना 10:15)
सेवा	यीशु ने हमें यह भी दिखाया कि कोई भी सेवा महत्त्वहीन या बिना प्रतिष्ठा के नहीं होती। ""यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोने चाहिए।" (यूहन्ना 13:14)

पिता जैसी कोमलता

1 थिस्सलुनीकियों 2:7 में, पौलुस कहता है, "परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई।" यूनानी भाषा में "कोमल" शब्द का अर्थ है: स्नेही होना, नरम या दयालु। यूनानी लेखक इस शब्द को रो रहे बच्चों वाली नर्स या कठिन शिष्यों वाली शिक्षिका के लिए इस्तेमाल करते थे। शब्द एक धाय का वर्णन भी करती है।

कोमलता एक और गुण है जो एक पिता के हृदय में पाया जाता है। कोमलता वह स्नेही, पिता का स्पर्श है जिसे उनके विकास के समय सब बच्चों को पाना चाहिए। इस कोमलता के बिना, बच्चे असन्तुलित रहेंगे। बाइबल उन सब से कोमलता की माँग करती है जो प्रभु के घर में जिम्मेवारी लेते हैं। कोमलता के बिना, एक शक्तिशाली अगुवा परमेश्वर के लोगों को चोट पहुँचाएगा।

कोमलता के विषय में निम्नलिखित वचनों की सूची हर अगुवे को उसके जीवन में कोमलता के गुण को बनाने दे सकते हैं।

2 तीमुथियुस 2:24	प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल...हो।" पौलुस ने अपने चेले तीमुथियुस को कहा था।
तीतुस 3:2	किसी को बदनाम न करें, झगड़ालू न हों; पर कोमल स्वभाव के हों।"
याकूब 3:17	"पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल।"
2 कुरिन्थियों 10:1	"मैं पौलुस तुम को मसीह की नम्रता और कोमलता के कारण समझाता हूँ।"
गलातियों 5:22	"पर आत्मा का फल ... धीरज, कृपा, भलाई...।"

प्रभु के घर के एक आत्मिक पिता को कोमलता बढ़ानी चाहिए। यह हृदय का रवैया अगुवे को कलीसिया के संवेदनशील और कठिन विषयों को परमेश्वर के लोगों को आत्मिक रूप से बिना चोट पहुँचाए या स्थाई रूप से नाराज़ किए सिखाने में सहायता करेगा। कोमलता के कारण लोग सुनेंगे और उन गम्भीर शिक्षाओं की ओर प्रतिक्रिया करेंगे जिन्हें अगुवा देना चाहता है।

पालक पिता

1 थिस्स. 2:7 कहता है, "परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई।" नए नियम के यूनानी भाषा में, एक "नर्स" बच्चों को अच्छी-अच्छी चीजें खिला कर मोटा कर देती है। यह शब्द एक माँ के लिए है जो दूध छुड़ाने से पहले बच्चे का पालन-पोषण करती है। यह एक माँ का वर्णन करता है जो अपने छोटे बच्चों की बड़ी दिलचस्पी के साथ और कोमलता के साथ देखभाल करती है।

इस वचन के संदर्भ में, प्रेरित पौलुस एक कलीसिया से बात कर रहा है जिसे उसने सुसमाचार में जन्म दिया था। अगले वचन (1 थिस्स. 2:8) में, पौलुस एक पिता के हृदय का कार्य करने की बात करता है। उसने कहा, "और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्रिय हो गए थे।" प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को न केवल सुसमाचार, बल्कि उसका अपना जीवन और शक्ति भी दी थी। जो पौलुस ने इन मसीहियों को दिया था उसे एक माँ की भावनाओं में जो अपने बच्चे को पालती है देखा जा सकता है। यह एक "पालक पिता" की, पुल्लिंग भाव में, सच्ची तस्वीर है, क्योंकि यह न केवल पौलुस के विषय में है, बल्कि हर अगुवे के विषय में भी है।

प्रेरितों 13:18 हमें बताता है कि किस प्रकार प्रभु ने पुराने नियम में इस्राएल के लोगों का पालन-पोषण किया था। यह वचन कहता है, "वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा।" उसी प्रकार व्यवस्थाविवरण 1:31 कहता है, "फिर तुम ने जंगल में भी देखा कि जिस रीति कोई पुरुष अपने पुत्र को उठाए चलता है, उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हम को इस स्थान पर पहुँचाने तक, उस सारे मार्ग में जिससे हम आए हैं, उठाए रहा।" "उठाए चलने" के लिए इब्रानी शब्द का अर्थ है: बनाना, सहारा, पालक (माता-पिता के रूप में), पालन-पोषण करना या सब बर्तावों में दृढ़ या विश्वास बनाना। गिनती 11:12 मूसा की इसी भाव में बात करता है। मूसा इस्राएलियों के लिए एक पालक पिता था (यशायाह 40:11 और 49:23 भी देखो)।

इस्राएल ने प्रभु को नाराज़ करने के लिए कितना कुछ किया, फिर भी वह उनके साथ धैर्यवान रहा और उनकी देखभाल की। वह लोगों के लिए एक पालक पिता था। मूसा भी इस्राएल के लिए एक पालक पिता था। एक नर्स होने का यह गुण इस्राएल के लोगों के सारे अनुभवों के दौरान मूसा के जीवन में भरा गया था। मूसा इस्राएल के स्थान पर एक बेहतर देश का सौदा नहीं करना चाहता था, हालाँकि प्रभु ने ही प्रस्ताव रखा था। मूस ने कभी भी प्रभु से उनका कठोरता के साथ न्याय करने को नहीं कहा। वह एक सच्चा पिता-पालक था। ऐसा ही हर अगुवे के साथ भी हो!

पिता जैसा पालन-पोषण करना

पौलुस कहता है कि उसने थिस्सलुनीकियों के साथ वैसा ही बर्ताव किया "जिस तरह एक माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है।" "पालन-पोषण" के लिए यूनानी शब्द का अर्थ है: प्राण डालना, सेना और पोषण करना, कोमल प्रेम के साथ सँजोए रखना, कोमल प्रेम के साथ देखभाल करना, और दया दिखाना। पुराने नियम का यूनानी अनुवाद इस शब्द का इस्तेमाल एक पक्षी का इसके बच्चे पर अपने पंख फैलाकर देखभाल करने का वर्णन करने के लिए करता है। (व्यवस्था. 22:6 और मत्ती 23:37 देखो)।

परमेश्वर के परिवार में एक आत्मिक पिता झुण्ड के छोटे या कमज़ोर पर उसके रक्षात्मक और स्नेही पंख फैलाता है, जबकि वे अभी भी घोंसले में हैं, और गिद्धों से उनकी रक्षा करता है। अगुआई के काम में यह पिता के हृदय की एक और अभिव्यक्ति है। (उदाहरणार्थ, 1 थिस्स. 2:8,11; फिलिप्पियों 2:22; 1 तीमुथियुस 3:1; इफिसियों 5:29 देखो)। हम अगुआई को बड़ों को सम्भालना, चतुराई से काम करना समझते हैं। परन्तु परमेश्वर अगुआई को बच्चों का पोषण करना, देखभाल करना, नम्र होना, सेवा करना, सिखाना और प्रेम करना कहता है।

कृषिकर्म का उदाहरण

एक छोटे पौधे की कोमल देखभाल और पोषण करना ताकि यह उचित तरीके से बढ़कर एक स्वस्थ पेड़ बन जाए, कोमलता, उपचार और पोसना शब्दों का एक और सुन्दर उदाहरण है। पौधे उनके जीवनों में कई प्रकार की बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। वे वनस्पति बीमारियों, कीड़ों, वातावरण में परिवर्तन, या मात्र लापरवाही से हानि उठाते हैं। कुछ पौधे दूसरों से अधिक नाजुक होते हैं। कुछ लापरवाही से बहुत हानि पाएँगे, जबकि दूसरे इसके कारण बढ़ते नज़र आएँगे। परन्तु एक पुराना मजबूत पेड़ भी लापरवाही या वातावरण में परिवर्तन के कारण प्रभावित हो सकता है।

एक पौधे की दिखावट और वृद्धि इसके स्वास्थ्य की दशा का संकेत देते हैं। बीमारी और कमज़ोर स्वास्थ्य की प्रारम्भिक अवस्थाएँ बड़ी सूक्ष्म हो सकती हैं। जब तक माली करीबी सम्बंध के द्वारा पौधे को जानता नहीं है, उसे तब तक समस्या का पता नहीं चलेगा जब तक विनाशकारी लक्ष्य दिखाई नहीं देंगे। बहुत पत्ते झड़ने और मुरझाने की अवस्था वह समय नहीं है जब माली खराब स्वास्थ्य के कारणों का पता लगाने लगेगा। दुर्भाग्यवश, इस प्रकार की आपाती सहायता अकसर परमेश्वर के लोगों के बगीचे में पाई जाती है।

उसके पौधों को आपात की स्थिति में पहुँचने से रोकने के लिए, माली को पौधे की आवश्यकता को आरम्भिक अवस्थाओं में ही पता लगाना चाहिए। ऐसा करने से माली अपने पौधे को-और सम्भवतः इसके पास-पास के दूसरों को भी मरने से बचा सकेगा। किसान को उसके बगीचे के स्वास्थ्य को निश्चित करने के लिए निरोधक उपाय करना चाहिए।

किसी पौधे की समस्या में गलत चिकित्सा करना फिजूलखर्च होगा। और यदि तथाकथित इलाज़ बहुत शक्तिशाली हो तब भी पौधे न बच सकेंगे। एक विवेकी पिता के समान, किसान को उसके पौधों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चौकन्ने रहना चाहिए। कुछ पौधों को नई डण्डियों में लगाना होगा। दूसरों पौधों की हण्डियों को बदलना खतरनाक हो सकता है। कुछ पौधों को परिपक्वता में पहुँचने के लिए उनकी जड़ों को अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। दूसरों के लिए उनकी जड़ों को छाँटना और छोटी हण्डियों में रखा जाना चाहिए। आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं, और व्यवहार बागबानी काम नहीं करती है। कुछ पौधे बाहर से बहुत सुन्दर दिखाई देते हैं, परन्तु मिट्टी के नीचे जड़ें सड़ी हुई हो सकती हैं। आश्चर्य की बात है, परन्तु अधिक पानी देने से ऐसा हो सकता है। एक किसान बहुत अधिक धूप में रखकर उसके पौधों को मार सकता है। हर पौधे को पानी और धूप की भिन्न मात्रा चाहिए होती है। हर पौधे की इसकी प्रकृति और परिपक्वता के स्तर के अनुसार आवश्यकता पूरी करने में एक बुद्धिमान और अनुभवी किसान की जरूरत पड़ती है।

जो कुछ भी पौधों के कृषिकर्म के स्वाभावित तत्त्वों के विषय में कहा जा सकता है प्रभु के लोगों की अगुआई के विषय में भी कहा जा सकता है। एक पिता समान मसीही अगुवा परमेश्वर के लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं और परिपक्वता के स्तारों का पता लगाएगा और सेवा करेगा। यह योग्यता एक पिता के प्रेम के कोमल, स्नेही और पालक हृदय का फल है। "आत्मिक कृषिकर्म" पर निम्नलिखित चार्ट कृषिकर्म और आत्मिक अगुआई के बीच समान्तर को चित्रित करता है।

आत्मिक कृषिकर्म सिद्धान्त	
बुद्धिमान और अनुभवी किसान पौधों को देता है:	पिता समान हृदय वाला अगुवा परमेश्वर के लोगों को देता है:
धूप	परमेश्वर के वचन का प्रकाश
पानी	परमेश्वर के आत्मा का पानी
खेती	सेवा के लिए प्रशिक्षण
छँटाई	पिता जैसा अनुशासन
उचित वातावरण	परमेश्वर की उपस्थिति का कलीसिया का वातावरण
नई हण्डी और मिट्टी	मसीह में नई जीवनशैली
बीमारियों का इलाज़	समस्याओं के लिए सहायता और सलाह
बीमारियों का आरम्भ में पता लगाना	किसी भी समस्या का आरम्भित अवस्था में पता लगाना
वृद्धि के लिए स्थान	सेवा में बढ़ने और प्रयोग करने का स्थान

आत्मिक कृषिकर्म उपयोग

एक आत्मिक किसान, जिसमें पिता का हृदय है, परमेश्वर के लोगों की देखभाल में निम्नलिखित चीजों का अभ्यास करेगा:

- सन्तुलित मसीही विकास के लिए आत्मिक पोषण देगा।
- प्रभु के लोगों के साथ कोमलता के साथ व्यवहार करेगा।
- परमेश्वर के लोगों की आवश्यकताओं को उनके विकास की हर अवस्था में पता लगाएगा।
- प्रभु के लोगों के साथ सम्बंध में नम्र और प्रेमी होगा।
- परमेश्वर के लोगों की आत्मिक, भावात्मक, शारीरिक या मानसिक आवश्यकताओं पर नियमित ध्यान देगा।

पिता समान पोषण और चेतावनी

इफिसियों 6:4 पिता समान पोषण और चेतावनी का रवैया प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करता है: "हे बच्चेवालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो।"

इस अध्याय में, प्रेरित पौलुस परिवार के पालन-पोषण के बारे में बात कर रहा है। वह सिद्धान्त देता है जिन पर चल कर पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण कर सकता है। जिन रवैयों और सिद्धान्तों की एक स्वाभाविक पिता को उसके स्वाभाविक बच्चों का पालन-पोषण करने में आवश्यकता होती है वही हैं जिनकी एक आत्मिक पिता को उसके आत्मिक बच्चों का पालन-पोषण करने में आवश्यकता होती है। प्रभु के घर को इसके बच्चों का सन्तुलित रूप से पालन-पोषण करने के लिए इन मार्गदर्शकों की आवश्यकता है। पौलुस ने इस सन्तुलन को चित्रित करने के लिए दो शब्द, "शिक्षा" और "चेतावनी" इस्तेमाल किए हैं।

"शिक्षा या पालन-पोषण" के लिए यूनानी शब्द उससे एक बिलकुल भिन्न अर्थ लाता है जो हम अपनी भाषा में पाते हैं। नए नियम की यूनानी भाषा में, "पालन-पोषण" का अर्थ है: एक बच्चे का विकास सिखाते हुए करना, उसके विकास की विभिन्न अवस्थाओं में उसको सहयोग और प्रोत्साहन देना। इसका अर्थ था: एक बच्चे को प्रशिक्षण, अनुशासन या सुधार द्वारा सिखाना। पालन-पोषण करने का अर्थ बच्चे में चरित्र बनाने के उद्देश्य से दण्ड देना था। शब्द में बच्चों को प्रशिक्षण देने और सिखाने का विचार था, उनके मन और/या आचार को शब्दों और कार्यों के साथ सुधार और फटकार द्वारा बनाना था।

शिक्षा "शिक्षा" शब्द बाइबल में विभिन्न तरीकों से अनुवाद किया गया है, जिन में से मुख्य हैं: समझाना, ताड़ना देना, शिक्षा देना। (2 तीमुथियुस 3:16; 1 तीमुथियुस 1:20; 2 तीमुथियुस 2:25; इब्रानियों 12:5; प्रेरितों 7:22 और प्रकाशितवाक्य 3:19 देखो)। यीशु उसकी शिक्षाओं में पालन-पोषण का हृदय का रवैया चित्रित करता है। प्रभु यीशु सब लोगों के लिए सच्चे प्रेम और दया का व्यक्ति था। परन्तु इससे वह लोगों से सच्चाई बोलने से रुकता नहीं था जिससे कभी-कभी कई लोग नाराज़ होते थे। वह न केवल पाखण्डी धार्मिक अगुवों को नाराज करता था, बल्कि अपने चेलों को भी करता था। (उदाहरण के लिए, मत्ती 15:12; मरकुस 14:27

और यूहन्ना 6:60-62 देखो)। नए नियम में, शिक्षा का अर्थ कोमलता के साथ सयानेपन में लाना नहीं है, परन्तु कड़ी शिक्षा है जो एक बच्चे को प्रभु में सयाना होने के लिए चाहिए।

इफिसियों 6:4 में, पौलुस बच्चों के लिए एक पिता के प्रेम की बात नहीं कर रहा है, हालाँकि यह आयत में अनुपस्थित नहीं है। पौलुस उसके बच्चों को सिखाने की एक पिता की जिम्मेवारी की बात कर रहा है। पौलुस पिताओं को एक महत्त्वपूर्व आदेश दे रहा है: "यदि वे उनके बच्चों को ठीक ढंग से बड़ा करना चाहते हैं, तो उनके पास उन्हें एक बहुत दृढ़ तरीके से सिखाने के लिए "हृदय और हाथ" होना चाहिए।"

एक आत्मिक पिता की सेवा में एक शक्तिशाली तरीके से सिखाना सम्मिलित है। एक सच्चे आत्मिक पिता को उसके आत्मिक बच्चों को मजबूती के साथ सुधारने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे बच्चे का चरित्र शिक्षा के द्वारा बनाना चाहिए जो कभी-कभार उनके लिए कड़ी और दुखद परन्तु फिर भी आवश्यक हो सकती है। "शिक्षा" शब्द जिसे पौलुस ने इफिसियों 6:4 में इस्तेमाल किया है एक नरम शब्द नहीं है जैसा कई लोग सोचते हैं। आज के समय, कलीसिया को ऐसे आत्मिक पिताओं की आवश्यकता है जिनके पास इसे अनुशासन, सुधार और ताड़ना के द्वारा पालन-पोषण करने का साहस हो।

चेतावनी इफिसियों 6:4 में अनुवाद किया गया "चेतावनी" शब्द का अर्थ है: हल्की फटकार, चेतावनी और उपदेश (प्रभु की ओर से) के द्वारा किसी चीज की ओर ध्यान खींचना। अक्षरशः इसका अर्थ है: मन में डालना। शब्द में सम्मिलित है, बोलकर प्रोत्साहन द्वारा प्रशिक्षण देना, या, यदि आवश्यक हो तो, बोलकर फटकारना और विरोध प्रकट करना। यूनानी शब्द जिसका चेतावनी अनुवाद किया गया है, "noutheto" है। निम्नलिखित वचनों की सूची विभिन्न तरीके दिखाती है जिनमें नया नियम इस शब्द का अनुवाद करता है:

- प्रेरितों 20:31 - "रात दिन आँसू बहा-बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।"
- रोमियों 15:14 - "एक दूसरे को चिता सको।"
- 1 कुरिन्थियों 4:14 - "अपने प्रिय बालक जानकर तुम्हें चिताता हूँ।"
- कुलुस्सियों 3:16 - "सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ।"
- 1 थिस्स. 5:12 - "और तुम्हें शिक्षा देते हैं।"
-

"चेतावनी" एक शक्तिशाली अनुशासनिक शब्द है जो एक आत्मिक पिता का एक बहुत महत्त्वपूर्ण रवैये का वर्णन करता है: एक आत्मिक पिता को बच्चे के मन में उन शिक्षाओं को डालना चाहिए जिनके बारे में वह जानता है बच्चे के आत्मिक विकास और एक लाभप्रद भविष्य के लिए आवश्यक हैं। इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए लगातार उपदेश और मजबूत प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

प्रभु में सब आत्मिक पिताओं को चेतावनी देने का फैसला करना चाहिए। परमेश्वर के लोगों को परिपक्वता तक पहुँचने के लिए कभी-कभार कड़ी फटकार की आवश्यकता होती है। आज के कई शिक्षक वही सिखाना पसन्द करते हैं जो सुखद है, और इससे लोग वापस आते रहते हैं। इसकी सदा लोगों को आवश्यकता नहीं होती। एक आत्मिक पिता को परमेश्वर के लोगों की निश्चित आवश्यकताओं का पता लगाना चाहिए। मजबूत उपदेश और शिक्षा के द्वारा, इसे उन्हें देना चाहिए।

एक सन्तुलित पिता का हृदय

हर अगुवे को एक आत्मिक पिता के हृदय के रवैयों को जिन्हें इस अध्ययन में बताया गया है सन्तुलित करना चाहिए। शिक्षा और चेतावनी को कोमलता, पोषण और स्नेह के साथ सन्तुलन में रखना चाहिए। शिक्षा और चेतावनी कड़े शब्द हैं जो परमेश्वर के लोगों के सुधार और अनुशासन की एक अगुवे की सेवा का वर्णन करते हैं। उनकी आवश्यकता है, परन्तु वे अपने में अपूर्ण हैं। प्रभु के लोग उस अगुवे की ओर प्रतिक्रिया नहीं दिखाएँगे जो केवल फटकार और चेतावनी देता है, जिसने एक तरफा अनुशासन के साथ अपने हृदय को कठोर कर लिया है। परमेश्वर के अगुवों को परमेश्वर के लोगों के साथ रोना चाहिए। उन्हें प्राभावशाली तरीके से सेवा करने के लिए उनके बोझों और भारी हृदयों को महसूस करना चाहिए। कोमलता, प्रेम, दया और स्नेह अनुशासन के साथ होने चाहिए।

प्रेरित पौलुस का जीवन इन सब रवैयों को दिखाता है। उसकी शक्तिशाली सेवा केवल फटकार, ताड़ना और अनुशासन की सेवा नहीं थी। उसमें कोमलता, प्रेम, दया और कृपा का हृदय भी था। नीचे इस सन्तुलन को उसकी सेवा में काम कर रहे पिता के रवैयों में दिखाया गया है। एक सिक्के की दो भुजाओं के समान, सूची का हर सन्तुलित रवैया मिलकर एक सम्पूर्ण को बनाएगा।

शिक्षा और चेतावनी देना	प्रेम और स्नेह देना
* अनुशासन	* जिम्मेवारी
"मैं ने ऐसे को शैतान के हाथ में सौंपने का फैसला किया है" (1 कुरिन्थियों 5:1-8)	"मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ" (1 कुरिन्थियों 4:15)
* फटकार	* प्रेम
"मैं तुम्हें नहीं सराहता" (1 कुरिन्थियों 11:17)	"इसलिए कि तुम उस बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे तुम से है" (2 कुरिन्थियों 2:4)
* ताड़ना	* सम्बंध
"उस पत्री से तुम्हें शोक तो हुआ" (2 कुरिन्थियों 7:8)	"मैं अपने बच्चे जानकर तुम से कहता हूँ" (2 कुरिन्थियों 6:11-13)
* सुधार	* कोमलता
"यदि मैं फिर आऊँगा तो फिर न छोडूँगा" (2 कुरिन्थियों 13:1-2)	"मैं, पौलुस तुम को मसीह की नम्रता और कोमलता के कारण समझाता हूँ" (2 कुरिन्थियों 10:1)
* स्पष्टवाद	* मेलमिलाप
"हे निर्बुद्धि गलातियों, किस ने तुम्हें मोह लिया है" (गलातियों 3:1-3)	"नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालो...तुम एक दूसरे का भार उठाओ" (गलातियों 6:1-2)
* जिम्मेवारी	* दया
"परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है" (फिलिप्पियों 1:24)	"और अब भी रो रो कर कहता हूँ" (फिलिप्पियों 3:18)

नीचे दिया गया एक सन्तुलन का उदाहरण अनुशासन और प्रेम का सन्तुलन चित्रित करता है जिसे हर अगुवे को उसकी सेवा में बनाए रखना चाहिए। यदि यह सन्तुलन विकसित किया जाता है तो एक अगुवे के जीवन के ये दोनों महत्त्वपूर्ण पहलू कलीसिया की वृद्धि के सन्तुलन को बनाए रखेंगे।

एक सन्तुलित पिता का हृदय

1.	पोषण	1.	प्रेम
2.	ताड़ना	2.	कोमलता
3.	शिक्षा	3.	पोषण
4.	सुधार	4.	क्षमा
5.	फटकार	5.	धीरज
6.	अधिकार	6.	उपचार
7.	फटकार	7.	कृपा
8.	चेतावनी	8.	स्तुति
9.	सच्चाई	9.	दया
10.	निर्णय	10.	न्याय

एक आत्मिक पिता का हृदय सामान्यतः बूढ़े लोगों में दिखता है। इसके गुणों को बढ़ाने के लिए समय और अनुभव लगता है। एक जवान एक पिता के हृदय को उसके जीवन में कुछ रवैयों और सिद्धान्तों को बढ़ा कर पा सकता है।
हमारे समय में, कई समूह एक अगुवे की शैक्षिक और सामाजिक तैयारी पर बल देते हैं। परन्तु बाइबल एक अगुवे के चरित्र और रवैये सम्बंधि तैयारी पर बहुत अधिक बल देती है। सेवा के लिए एक व्यक्ति के हृदय को तैयार किए बिना उसकी बुद्धि को तैयार करना सम्भव है। जो व्यक्ति परमेश्वर के लोगों को आत्मिक रूप से तैयार करना चाहता है एक आत्मिक पिता के हृदय के रवैये विकसित करने के लिए परमेश्वर की सहायता माँगेगा।

अगुवा और एक सेवक का हृदय

एक अगुवे के विषय में अधिकाँश लोग कहेंगे, ऐसा व्यक्ति है जो निर्देश देता, प्रबंध करता, संगठन करता, फैसले करता, जिम्मेवारियाँ सौंपता, और भविष्य की योजना बनाता है। इस परिभाषा में सच्ची अगुआई की एक सबसे मूल-भूत अंश की कमी है: एक अगुवा वह है जो सेवा करता है। परमेश्वर के लोगों के अगुवे में, एक सेवक के, भीतरी रवैये और प्रेरणाएँ, और बाहरी सेवा होनी चाहिए।

इब्रानी अर्थ पुराना नियम कई इब्रानी शब्दों को "सेवक" अनुवाद करता है। उन में से हर एक एक सेवक के हृदय के विषय में सच्चाई का कुछ-कुछ अंश पेश करते हैं।

"Ebed" सेवक के लिए हमारा पहला इब्रानी शब्द; "ebed", का सामान्यतः अर्थ है: एक दास या एक सेवक। इसे कई स्थानों पर उपयोग किया गया है, जिनमें से सब अगुआई की सेवा की परिभाषा में अच्छी तरह लागू होते हैं। "Ebed" एक ऐसे व्यक्ति के लिए लागू होता है जो पूर्ण रूप से दूसरे के अधिकार में है (उत्पत्ति 24:1-67)। परमेश्वर के लोगों का अगुवा पूर्ण रूप से प्रभु यीशु मसीह के, और उनके जिनकी सेवा के लिए उसे बुलाया गया है अधिकार में होना चाहिए। एक व्यक्ति जो एक मालिक के लिए काम करता है "ebed" कहा जाता है (व्यवस्था. 15:12-18)। उसी प्रकार, एक अगुवे को उसके मालिक प्रभु यीशु मसीह के लिए काम करना चाहिए। उसका सारा काम परिश्रम के रूप में मसीह को, और उनको चढ़ाया जाता है जिनकी सेवा के लिए उसे बुलाया गया है। यह शब्द एक दास के लिए भी लागू होता है जिसने अपने मालिक की सेवा करने के लिए अपने सारे अधिकार त्याग दिए हैं (व्यवस्था. 15:12-18)। एक कलीसिया के अगुवे को अपने सारे अधिकार प्रभु यीशु मसीह को, और उनको जिनकी सेवा के लिए उसे बुलाया गया है दे देने चाहिए। एक "ebed" एक राजा की सेवा में एक दास भी होता है (1 राजा 1:9-47)। एक मसीही अगुवे को प्रभु यीशु मसीह का, जो पृथ्वी के सब राजाओं पर राजा है, एक प्रेम-दास होना चाहिए। अन्त में, यह शब्द उस व्यक्ति के लिए भी लागू होता है जो मन्दिर में सेवा करता है (1 शमूएल 3:9)। एक मसीही अगुवे को परमेश्वर की आराधना के द्वारा, और परमेश्वर के लोगों की उसकी सेवा के द्वारा परमेश्वर के सच्चे मन्दिर, कलीसिया की सेवा करनी चाहिए। ("ebed" के अतिरिक्त अध्ययन के लिए, उत्पत्ति 26:15-24 और 32:4-5; गिनती 12:7; व्यवस्ताविवरण 7:8; यहोशू 1:1-2,13,15 और 24:29; 1 शमूएल 3:9-10 और 29:3; यशायाह 20:3 और 49:3; यिर्मयाह 33:22; योएल 2:29; जकर्याह 1:6 और 3:8 भी देखो)।

"Abad" सेवक के लिए एक और इब्रानी शब्द, "abad", का सामान्यतः अर्थ है काम करना और (किसी भी भाव में) सेवा करना। इस शब्द के विविध प्रकार के इस्तेमाल हैं जिससे कलीसिया की अगुआई को परिभाषा देने में सहायता मिलती है। एक व्यक्ति जो खेत जोतता है एक "abad" है (उत्पत्ति 2:5; 3:23)। परमेश्वर के लोगों के अगुवे को उनके हृदयों की बंजर भूमि को तोड़ने में काम करना चाहिए ताकि वे परमेश्वर के वचन के बीज पा सकें। यह शब्द उस व्यक्ति के लिए भी लागू होता है जो एक बगीचे को छाँटता या रखवाली करता है (उत्पत्ति 2:15)। कलीसिया के अगुवे को परमेश्वर की दाख की बारी, यीशु मसीह की कलीसिया को छाँटना और रखवाली करना है। "Abad" नाम एक याजक के लिए भी है जो लोगों की सेवा करता है (गिनती 18:7,23)। एक मसीही को उनकी सेवा में जिनकी सेवा के लिए पुरमेश्वर ने उसे बुलाया है अपना जीवन दे देना चाहिए। ("Abad" के अतिरिक्त अध्ययन के लिए, निर्गमन 23:25; व्यवस्था. 4-19,28; यहोशू 22:5,27; 1 शमूएल 12:14,20; भजन 22:20 और 72:1; योएल 2:22-23; यिर्मयाह 34:14; यहेजकेल 29:20 और 36:9; मलाकी 3:18 देखो)।

"Sakiyr" सेवक के लिए तीसरा इब्रानी शब्द, "sakiyr", का सामान्यतः अर्थ है: एक व्यक्ति जो मजदूरी के लिए दिन या वर्ष के हिसाब से काम करता है। कलीसिया की अगुआई की शर्तों को निश्चित करने के लिए इस शब्द के विविध प्रकार के इस्तेमाल हैं। "Sakiyr" एक सेवक के रूप में उसके मालिक के परिवार के साथ फसह नहीं खा सकता था (निर्गमन 12:3-45)। कलीसिया के अगुवे को "वैतनिक व्यावसायिकता" के रवैये को त्याग देना चाहिए। सच्चे फसह के मेम्ने, यीशु मसीह, में से खाने के लिए उसे विश्वास से प्रभु के साथ प्रेम-दास का सम्बंध बनाना है, न कि एक वैतनिक सेवक होना है। मजदूर एक प्रेम-दास नहीं था (लैव्यव्यवस्था 25:39-42)। एक मसीही अगुवे को उसके जीवन में एक ऐसे स्थान में आना है जहाँ वह कर्मकाण्डवाद के धर्म को जो उसके अधिकारों की रक्षा करता है त्यागता है। उसे यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध में आना है, जहाँ उसका सम्पूर्ण जीवन मसीह के बदले दिया गया है। एक "sakiyr" की कीमत आधी भी नहीं थी जो एक प्रेम-दास की थी (व्यवस्था. 15:18)। एक अगुवे को स्पष्ट अनुभव होना चाहिए कि जो सेवा और कार्य परमेश्वर के लिए प्रेम से प्रेरित नहीं हैं उनकी कीमत उससे आधी भी नहीं है जो परमेश्वर के लिए प्रेम से प्रेरित हैं। एक "sakiyr" एक प्रवासी भी हो सकता था जिसे घर में दास के रूप में लिया जाता था (लैव्यव्यवस्था 25:6)। कलीसिया के अगुवे को पहचानना है कि पहले वह एक भटक रहा अजनबी था जब प्रभु यीशु मसीह ने उसे अपने लहू से खरीदा और परमेश्वर के घर में स्थापित किया। (दूसरे वचन जो "sakiyr" शब्द इस्तेमाल करते हैं: निर्गमन 22:14-15; लैव्यव्यवस्था 19:13 और 22:10 और 25:40, 50, 53)

"Sharath" सेवक के लिए चौथा इब्रानी शब्द, "sharath", का अर्थ ऐसा व्यक्ति है जो नौकर के और तुच्छ काम काम करता है। एक याजक जो अपने याजकीय पद पर काम करता है "sharath" कहलाता है (निर्गमन 28:35-43)। कलीसिया के अगुवे को एक सेवक-याजक का अपना काम पूरा करने के लिए प्रतीयमानतः तुच्छ काम करने चाहिए। यह शब्द उस याजक के लिए भी है जो वाचा के सन्दूक के सामने निरन्तर सेवा करता है (1 इतिहास 16:37)। एक अगुवा सेवा के लिए सामर्थ्य पाते रहने के लिए स्तुति और आराधना के साथ प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करने का जिम्मेवार है। यहोशू मूसा के लिए "sharath" था (निर्गमन 24:13; गिनती 11:28)। परमेश्वर के लोगों के अगुवे के पास तब ही अधिकार होगा जब वह उचित अधिकार के अधीन होगा, और अपने ऊपर वालों की एक सेवक के हृदय के साथ सेवा करेगा।

यूनानी अर्थ नया नियम सेवक के लिए एक यूनानी शब्द, "doulos" इस्तेमाल करता है, जो हमें एक सेवक के हृदय की एक बहुत अच्छी तस्वीर देता है। सामान्यतः "doulos" का अर्थ बन्धन होता है, परन्तु अधिकतर उस सेवक के लिए इस्तेमाल होता है जिसने अपने आप को स्वेच्छा से, किसी कानूनी इकरारनामे के द्वारा, एक मालिक के साथ जोड़ लिया है। प्रेरित पौलुस अपने कई पत्रों में अपना परिचय कराने के लिए इस शब्द को इस्तेमाल करता है:

रोमियों 1:1	"पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है"
फिलिप्पियों 1:1	"मसीह यीशु के दास पौलुस"
तीतुस 1:1	"पौलुस की ओर से जो परमेश्वर का दास"

प्रेम-सेवक

पुराना नियम इस विचार के लिए व्यवस्थाविवरण 15:1-23 में इब्री पृष्ठभूमि देता है। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, जब एक मालिक के लिए एक सेवक को छः वर्ष की सेवा के बाद छोड़ने का समय आता था, सेवक के पास दो विकल्प होते थे। सेवक अपनी स्वतन्त्रता को मालिक पर बिना किसी आभार के ले सकता था। या वह अपने मालिक के घर एक प्रेम-सेवक के रूप में रह सकता था। यदि वह एक प्रेम-सेवक के रूप में अपने मालिक के यहाँ रहने का निर्णय करता, तब वह दूसरे दासों से जो एक कर्ज चुकाने के लिए या किसी दूसरे कानूनी बन्धन में काम करते थे से अधिक मूल्यवान् होता था। जो सेवक प्रेम-दास बनता था, सारंश में, अपने मालिक से कहता, "क्योंकि आपके दास के रूप में मैं खुशहाल हूँ, और क्योंकि मैं आपसे और आपके घराने से प्रेम करता हूँ, मैं आपके लिए अपने गहरे प्रेम के आधार पर सदा के लिए सेवा करूँगा।"

पौलुस प्रभु यीशु मसीह का इस प्रकार का सेवक था। वह, कलीसिया के किसी भी अगुवे के समान, यीशु मसीह के लहू की कीमत के द्वारा खरीदा गया था। वह जानता था कि वह, "भाड़े के लिए" सोच के द्वारा, अपना कर्ज कभी भी नहीं चुका सकता था। उसमें कुछ और नहीं परन्तु एक सम्बंध की लालसा थी जहाँ उसका काम और सेवा केवल उत्सुकता और प्रेम से प्रेरित थे।

परमेश्वर के राज्य में सबसे प्रभावशाली अगुवे वही हैं जो प्रभु की सेवा उससे प्रेम करने की इच्छा से ही करते हैं। ऐसे अगुवे रुपये-पैसे, नाम, पद, अधिकार या स्वार्थी लाभ के लिए सेवा नहीं करते, हालाँकि उनकी सेवा देर तक दबाव और बलिदान से भरी होती है। सेवक के हृदय वाला एक अगुवा, जो प्रभु के साथ अपने व्यक्तिगत सम्बंध में सुरक्षित है और जिसे अपने को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है, ईमानदारी से सेवा कर सकता है जिसमें व्यक्तिगत लाभ या प्रसिद्धि की कोई इच्छा नहीं होती।

एक अगुवे का हृदय

प्रभावशाली अगुआई के लिए दस सिद्धान्त / शर्तें

1.	पुरूषार्थ	परमेश्वर पहले मनुष्य को बनाता है फिर उसकी सेवा को बनाता है।
2.	सेवा	सामर्थ्य और प्रमाणन, अभिषेक, फलवन्त, सकारात्मक।
3.	संदेश	सन्तुलित, बाइबल का, प्रेम में सच्चाई बोलना।
4.	परिपक्वता	अच्छे सम्बंध, चरित्र, विश्वासयोग्यता, स्वीकृत।
5.	विवाह	उसका विवाह मसीह और कलीसिया को प्रतिबिम्बित करे।
6.	तरीके	धर्मी, नैतिक, सच्चा, पूर्णांक, खरा।
7.	आचरण	निस्वार्थ, दयालु, धैर्यवान, विवेकी।
8.	रुपया-पैसा	रुपये-पैसे / धन का लोभ भ्रष्ट करता है।
9.	आचार-शास्त्र	परिश्रमी, शुद्ध और पारदर्शी सम्बंध।
10.	अभिप्राय	सेवा करना या अधिकार जमाना? परमेश्वर या अभिलाषा के लिए?

एक अगुवे का सच्चा हृदय है:

- अपने अधीनस्थों के लिए जिम्मेवारी की एक बड़ी भावना।
- एक नम्र आत्मा के साथ लोगों की अगुआई करना।
- अपने लोगों के लिए बहुत प्रेम और चिन्ता।
- उनकी गलतियों और असफलताओं को उनके साथ और उनके लिए ले चलना (निर्गमन. 32:32)।
- उनका सेवक होने और उनके लिए अपना प्राण दे देने की उत्सुकता।
- यीशु के पीछे चलना और दूसरों को भी उसी प्रकार अपने पीछे चलने के लिए चुनौती देना।

अगुआई

- का अर्थ यह नहीं कि तुम्हारा प्रभु के साथ बेहतर सम्बंध है।
- पहले पहचानी जाए, फिर स्वीकार की जाए और अन्त में ग्रहण की जाए।
- लोगों से माँगी नहीं जाए, परन्तु परमेश्वर और लोगों द्वारा दी जाए।
- दूसरों पर दमन और तानाशाही द्वारा मालिक बनना नहीं है।
- दूसरों को आज्ञापालन के लिए उपद्रव और चालाकी से विवश करना नहीं है।
- असली नहीं है जब डर से मानी जाती है।

- **अधिकार**
  जब एक अगुवे के जीवन में परमेश्वर के अधिकार की कमी होती है, तब वह असुरक्षित होगा और एक अगुवा बने रहने के लिए चालाकी के द्वारा नियंत्रण रखने की कोशिश करेगा।

- **प्रेम**
  एक अगुवे के लिए बहुत जरूरी है। जब वह अपने आप से प्रेम नहीं कर सकता है, तब वह फलस्वरूप दूसरों से वैसे प्रेम नहीं कर सकता जैसा उसे करना चाहिए।

- **परिणाम**
  इसका परिणाम यह होगा कि अनेक ऐसे अगुवे से डरेंगे, क्योंकि वह आवश्यक प्रेम, स्वीकृति, रक्षा, और सुरक्षा नहीं देता जो उचित आत्मिक विकास के लिए चाहिए।

- जैसा चरवाहा है, वैसी ही भेड़ें होंगी। जब ये भेड़ें अगुवे बनती हैं, तो वे भी उसी प्रकार अगुआई करती हैं जैसे उनकी की गई थी, क्योंकि उनके लिए कोई दूसरा उदाहरण नहीं था। समझो कि किस प्रकार पीढ़ी से पीढ़ी स्त्रियों, बच्चों, देशों और

जनजातियों ने प्रबल अगुवों के हाथों दुख सहा है जिन्होंने परमेश्वर द्वारा दिए उनके अधिकार का दुरूपयोग किया है। हमें सीखना है कि जिस प्रकार यीशु लोगों की अगुआई करता है और जैसा चाहता है हम दूसरों की अगुआई करें।

अगुआई के लिए कसौटीः

1. एक अगुवे को उसकी सुरक्षा अगुवे के उसके पद में पाने के बदले प्रभु के साथ सम्बंध में पानी चाहिए, नहीं तो वह उसकी अगुआई की आलोचना को उचित रूप से सम्भाल नहीं सकेगा।
2. एक अगुवे को उसके लोगों और उनके विचारों की ओर खुला मन बनाना चाहिए, तब भी जब वह सहमत नहीं होता, उसे उन्हें गम्भीरता से लेना चाहिए।
3. एक अगुवे को उसकी सीमाओं को समझना चाहिए, और उनकी ओर कृतज्ञता का रवैया रखना चाहिए जो उसमें नए और ताज़ा विचार जोड़ते हैं, ताकि वह उनके साथ बुद्धिमान फैसले कर सके।
4. एक अगुवे को समझना चाहिए कि परमेश्वर एक बच्चे के द्वारा भी उससे बात कर सकता है, और उसे उनके द्वारा परमेश्वर का वचन और अधिकार ग्रहण करना चाहिए।
5. एक अगुवे को समझना चाहिए कि उसके लोग उसके लक्ष्यों से सदा अधिक महत्त्व के हैं। उसे लक्ष्यों के विषय में सोचने के बदले लोगों के विषय में सोचना सीखना है, क्योंकि उसका लक्ष्य लोग हैं।
6. एक अगुवे को इससे पहले वह उनसे आज्ञापालन की माँग करता है जो उसकी अगुआई के अधीन हैं, अपने आप से जिम्मेवारी, प्रेम करने, सहायता करने, सेवा करने के रवैये की माँग करे।
7. एक अगुवे को इससे पहले वह दूसरों को प्रचार करता है जिसकी वह उनसे अपेक्षा करता है, पहले अपने को प्रचार करे जिसकी परमेश्वर उससे अपेक्षा करता है। जो वह प्रचार करता है उसे उसको करना है।
8. एक अगुवे को उसके लोगों को प्रभु में बढ़ने के लिए अवसर और चुनौतियाँ उत्पन्न करनी हैं। इससे उनको जिम्मेवारी और आत्म-सम्मान बनाने, और मसीह की सिद्धता में बढ़ने में सहायता मिलेगी।
9. एक अगुवे को लोगों को उस पर निर्भर होने के बदले परमेश्वर पर निर्भर होना सिखाना चाहिए। अन्त में उसे अपने आप को अतिरिक्त बनाना चाहिए।
10. एक अगुवे को लोगों के साथ सम्बंध स्थापित करना चाहिए। उसे, अपने अगुवे के पद के कारण, लोगों और अगुआई के बीच अन्तर नहीं बनाना चाहिए। उसे लोगों का मूल्य समझना चाहिए।

अन्त में: जब हम अगुआई के इन गुणों को बना लेंगे, तब लोगों को हमारे अधिकार को ग्रहण करने में बहुत आसानी होगी। वे हमारे पीछे चलना चाहेंगे, क्योंकि वे हम में मसीह को देखते हैं।

एक अगुवे के आत्म-मूल्याँकन के लिए प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्न अगुवे या सम्भावित अगुवे को उसके अपने चरित्र के विकास का मूल्याँकन करने का साधन प्रदान करेंगे। परमेश्वर मेरी अगुआई में क्या देखना चाहता है? एक सन्तुलित अगुवा होने के लिए मुझ में क्या गुण होने चाहिए? क्या मैं एक आत्मिक व्यक्ति हूँ? जैसे आप ईमानदारी के साथ निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करोगे, आप अगुआई के गुणों के अपने विकास का मूल्याँकन कर सकोगे।

क्या मैं पवित्र आत्मा के साथ घनिष्ठ सहभागिता में रहता हूँ?
क्या मैं बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार करता हूँ?
क्या मैं परमेश्वर के लोगों से प्रेम करता हूँ?
क्या मेरा एक निश्चित स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर के लोगों के साथ सम्बंध है?
क्या मैं स्वेच्छा से अधिकार के अधीन होता हूँ?
क्या मैं पापी और धर्मत्यागी से प्रेम करता हूँ?
क्या मैं अपने सारे हृदय से परमेश्वर की सच्ची आराधना करता हूँ?
क्या मेरा प्राभावशाली प्रार्थना का जीवन है?
क्या मेरा दबाव की स्थितियों में परिपक्व रवैया है?
क्या मैं दूसरे व्यक्ति को उसकी ओर कटुता अनुभव किए बिना वह काम समाप्त करने देता हूँ जो मैं ने आरम्भ किया है?
क्या मैं आलोचना सुनता और स्वीकार करता हूँ?
क्या मैं स्वीकार करता हूँ जब जिस काम के लिए मैं बेहतर योग्य हूँ दूसरे को दिया जाता है?
क्या मैं खुश होता हूँ जब कोई दूसरा गलती करता है?
क्या मैं दूसरे लोगों के विचारों को आने देता हूँ, या क्या मुझे अपने दृष्टिकोण के लिए सदा विवाद करना पड़ता है?
क्या अशांति के समयों में मेरे भीतर शान्ति होती है?
क्या मैं उसे क्षमा करता हूँ जो जानबूझकर मुझ पर ध्यान नहीं देता है?
क्या मैं अपने क्रोध को वश में रखता हूँ?
क्या मैं दीर्घकालिक लक्ष्यों को पाने के लिए वर्तमान के कुछ सुखों को जाने देता हूँ?
क्या मैं उस काम को समाप्त करता हूँ जिसे आरम्भ किया है?
क्या मैं दूसरों को अपने से अधिक महत्त्व देता हूँ?
क्या मैं बिना किसी कटुता के अप्रिय घटनाओं का सामना करता हूँ?
क्या मैं जब गलत होता हूँ स्वेच्छा से स्वीकार करता हूँ?
क्या मैं अपनी प्रतिज्ञाओं और वादों को पूरा करता हूँ?
क्या मैं अपनी जीभ पर लगाम रखता हूँ जब ऐसा करना उचित है?
क्या मैं उन चीजों को स्वीकार करता और शान्ति से रहता हूँ जिन्हें मैं बदल नहीं सकता हूँ?

सहयोगियों का मूल्याँकन करना

निम्नलिखित सूची कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण चरित्र के गुणों को बताती है जिन्हें एक चरवाहे को उनमें खोजना है जिन्हें वह सहयोगी होने के लिए चुनता है:

अखण्डता	एक रहस्य को रखता है
वैसा ही आत्मा और बोझ है	बलिदान का आत्मा
विश्वासयोग्यता	कलीसिया की पगार नहीं लेता
कलीसिया की ओर वचनबद्धता	सांसारिक नौकरी में सफल
सही अभिप्राय	बाइबल के सिद्धान्तों के साथ संगत जीवन जीता है
एक चरवाहे का हृदय	इस संसार के ईश्वरों के चक्कर में नहीं है
स्थिरता	अच्छी आदतें
लोगों के साथ मिलजुलकर रहने की योग्यता	वचन पर चलनेवाला

फैसले करने में विचार-विमर्श	शिक्षणीय आत्मा
दूसरे लोगों का प्रेमी और पसन्द	परमेश्वर के घर के लिए प्रेम
निरंकुश नहीं	सुधार और बदलाव स्वीकार करता है
अनुग्रहकारी	दूसरों को सहयोग देनेवाला, प्रतियोगी नहीं
पक्षपाती नहीं	आज्ञाकारी आत्मा
एक सेवक का हृदय	दीन हृदय
दस्तंदाज नहीं	पारदर्शी, खुला और ईमानदार स्वभाव

हर अगुवा इन रवैयों और गुणों को अपने जीवन में विकसित करने का प्रयास करे।

एक सच्चे मसीही अगुवे की योग्यताएँ

जब परमेश्वर हमें चुनता, बुलाता, अलग करता और भेजता है, बहुत सारी चीजें हैं जो वह हम से चाहता है। कारण? परमेश्वर के राज्य में अगुवा होना एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। हम या तो अपनी शिक्षा और व्यवहार से यीशु का नाम संसार की दृष्टि में ऊँचा कर सकते और महिमा दे सकते हैं, या इसकी निन्दा और अपमान कर सकते हैं। और मसीह में हमारे चेले उदाहरण के लिए हमारी ओर देखते हैं। इब्रानियों 13:7 कहता है: "जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो।" आओ हम इस प्रकार जीएँ, कि पौलुस के समान कह सकें: "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।" (1 कुरिं. 11:1)।
जो सूची नीचे दी गई है उसका ध्यानपूर्वक अध्ययन करो, **उसके अनुसार निरन्तर प्रार्थना करो** और अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करो कि वह इसे आपके जीवन और बुलावे का अंग बना दे। "जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।" (2 तीमु. 1:9)। याद रहे कि जो हमें बुलाता है "वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है।" (भजन 103:14)। इसके बावजूद - या सम्भवत: इसके परिणामस्वरूप - उसकी आशीष और अभिषेक हम पर आ सकते हैं। "पर उसने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" (2 कुरिं. 12:9)। आओ हम तीन उदाहरणों को देखें। मेरा विश्वास है परमेश्वर ने हमें इनको हमारे प्रोत्साहन के लिए दिया है।

गिदोन शत्रु से इतना डरता था कि वह गेहूँ झाड़ने के लिए दाखरस के कुण्ड में छिपा हुआ था। परन्तु, हालाँकि वह डरा हुआ था, प्रभु ने उससे बात की और कहा, "हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।" (न्यायियों 6:11-12)। "तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा, 'अपनी इसी शक्ति पर जा और तू इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा। क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा?' उसने कहा, 'हे मेरे प्रभु, विनती सुन, मैं इस्राएल को कैसे छुड़ाऊँ? देख, मेरा कुल मनश्शे में सब से कंगाल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सब से छोटा हूँ।' यहोवा ने उससे कहा, 'निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा; इसलिए तू मिद्यानियों को ऐसा मार लेगा जैसा एक मनुष्य को।'" (न्यायियों 6:14-16)।

यिर्मयाह "तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, 'गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैं ने तेरा अभिषेक किया; मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया।' तब मैं ने कहा, 'हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना भी न जानता, क्योंकि मैं लड़का ही हूँ।' परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, 'मत कह कि मैं लड़का हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँ वहाँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ वही तू कहेगा। तू उनके मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिए मैं तेरे संग हूँ', यहोवा की यही वाणी है।"

पौलुस यह जानना प्रोत्साहन की बात है कि हमारे विश्वास के इस प्रेरित ने भी उसकी सेवा अपनी कमज़ोरी समझते हुए आरम्भ की थी। "मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा।" (1 कुरिं. 2:3)।

परमेश्वर के हृदय के अनुसार एक अगुवे के लिए परमेश्वर की योग्यताएँ:

1. जब परमेश्वर नेतृत्व करता है उसे आज्ञाकारी होना चाहिए (प्रेरितों 16:9, 10)।

2. उसे अपने जीवन पर परमेश्वर के बुलावे की ओर मसीह यीशु में सामर्थ्य और अनुग्रह के द्वारा विश्वासयोग्य होना चाहिए (रोमियों 15:17-19; 1 तीमु. 1:12)। "...अपनी सेवा को पूरा कर" (2 तीमु. 4:5)। यदि परमेश्वर के किसी दूसरे सेवक के जीवन पर आपसे बड़ा अभिषेक है तो छोटा महसूस मत करो। जो हो वही रहो। याद रखो कि लोगों के जीवनों पर अभिषेक उनके जीवनों के बुलावे के कारण भिन्न हो सकता है। परमेश्वर को आपकी पवित्र आत्मा के अधीन आपके चरित्र और योग्यताओं के साथ आवश्यकता है।
   यदि कोई दूसरा आपसे "बड़ा" काम कर रहा है तो निराश मत हो जाओ। हम परमेश्वर के राज्य में प्रतियोगी नहीं हैं। परमेश्वर विश्वासयोग्यता में रुचि रखता है। आप जो करते हैं वह नहीं, परन्तु आप कितने दिल से करते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया, अलग किया और भेजा है वह मायने रखता है।

3. उसे सिखाने के योग्य होना चाहिए (1 तीमु. 3:2)

4. उसे ईमानदारी से चलना और सेवा करनी चाहिए। "सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता..." (तीतुस 2:7)। दूसरे शब्दों में आपको खराई में चलना और सेवा करनी चाहिए।
अपने भेंट समयों और वादों पर बने रहकर वचन के पक्के बनो। उन्हें डायरी में लिख लो। अधिक काम ले लेने से सावधान रहो और जिन्हें पूरा नहीं कर सकते हो इन्कार करना सीखो। यदि आपने किसी काम के लिए दोहरा समय दे दिया है तो कई सप्ताह पहले ही रद्द कर दो। यदि नहीं करोगे तो यह परमेश्वर के सेवक के रूप में आपके अच्छे नाम को बदनाम करेगा।

5. उसे जोश और परिश्रम से भरा होना चाहिए। "...मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया..." (1 कुरिं. 15:10, 2 कुरिं. 10:12-16)।

6. उसे उनके लिए सहनशीलता का उदाहरण होना चाहिए जो यीशु के नए चेले बने हैं (1 तीमु. 1:16)।

7. उसे निर्दोष (आचरण में) होना चाहिए (1 तीमु. 3:2 और तीतुस 1:7)। "इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो" (इफि. 5:15)। दूसरे शब्दों में जागते रहो, और बुद्धिमान बनो ताकि तुम दूसरों के ठोकर का कारण न बनो। 2 तीमु. 2:16 और तीतुस 3:9 हमें अशुद्ध बकवाद से बचे रहने की चेतावनी देते हैं।

8. उसे संयमी और शांत होना चाहिए। "...संयमी, सुशील, सभ्य..." (1 तीमु. 3:2; तीतुस 1:8)।

9. उसे आदरणीय, सभ्य और सुशील होना चाहिए (1 तीमु. 3:2)। उदाहरणार्थ, जब आप कहीं दूसरे स्थान पर सेवा कर रहे हैं और लोगों के साथ रहते हो तो अपना बिस्तर स्वयं बनाओ और एक सेवक के समान, कमरा साफ करने में हाथ बटाओ।

10. उसे दीन, उपकारी, आज्ञाकारी, नम्र, विनीत और उदार होना चाहिए। "तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो।" (फिलि. 4:5)। जब हम सबसे छोटा होने के लिए निरन्तर तैयार रहते हैं, तब परमेश्वर हमें अपने समय में ऊँचा करेगा (1 पतरस 5:6)।

11. उसका बाहरवालों में अच्छा नाम होना चाहिए जिससे वह किसी प्रकार की बदनामी से बचा रहेगा और शैतान के फँदे में नहीं फँसेगा (1 तीमु.3:7)। "अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।" (1 पतरस 2:12)। उसी के साथ पौलुस हमें कुलुस्सियों 4:5 में ऐसा बुद्धिमानी के साथ करने को कहता है।

12. उसे दयावान व्यक्ति होना चाहिए, या जैसा इब्रानियों 5:2 कहता है: "वह अज्ञानों और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है, इसलिए कि वह आप भी निबर्लता से घिरा है।" पौलुस 2 कुरिन्थियों 11:29 में कहता है, "किसकी निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता? किसके ठोकर खाने से मेरा जी नहीं दुखता?"

13. उसे सबका सेवक होना है और सबके साथ सम्बंध बना सकने योग्य होना है ताकि वह उन्हें मसीह के लिए जीतने में प्रभावशाली हो (1 कुरिं. 9:19-23)। कुछ सुसमाचार के सेवकों ने अपने कपड़े और जीवनशैली को बदल कर उन लोगों और जनजातियों जैसा बना लिया था जिनके बीच वे सुसमाचार की सेवा कर रहे थे। ऐसा करने से वे उन्हें मसीह के लिए जीतने में उन मिशन संस्थाओं से अधिक प्रभावशाली हुए जो उसी क्षेत्र में काम कर रही थीं।

14. उसे भलाई का चाहनेवाला होना चाहिए (तीतुस 1:8)।

15. उसे आत्मा से भरा होना चाहिए (प्रेरितों 1:8; 2 कुरिं. 6:6) और उसे मिले आत्मा के वरदानों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उन्हें प्रेम में उनके लाभ के लिए इस्तेमाल करना चाहिए जिनके बीच वह सेवा करता है (2 तीमु. 1:6; 1 तीमु. 4:14; 1 कुरिं. 14:12)।

16. उसे न्यायी और खरा (तीतुस 1:8) और पक्षपात रहित होना चाहिए (1 तीमु. 5:21)। तीतुस 3:10-11 हमें फूट के खतरों के विरुद्ध चेतावनी देता है: "किसी पाखंडी को एक दो बार समझा-बुझाकर उससे अलग रह, यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है।"

17. उसे शुद्ध मन से प्रेम करना चाहिए (1 तीमु. 1:5; 2 कुरिं. 6:6)। "हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।" (1 यूहन्ना 3:18)। "सब से श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है।" (1 पतरस 4:8)। "हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाब होता है।" (1 यूहन्ना 3:21)।

18. उसका विवेक अच्छा होना चाहिए (1 तीमु. 1:5)।

19. उसे पवित्र होना चाहिए और पवित्र जीवन जीना चाहिए (तीतुस 1:8; कुलु. 1:22)। "...भक्ति की साधना कर" (1 तीमु. 4:7)। "क्योंकि परमेश्वर का यह अनुग्रह प्रगट हुआ है...और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएँ।" (तीतुस 2:11-12)।
यहाँ एक चेतावनी है: पवित्र जीवन जीने के लिए संघर्ष करने और विधिवादिता में पड़ने में थोड़ा ही अन्तर है। आप आत्मा की योग्यताओं के द्वारा, और विधिवादी हुए बिना व्यवस्था की माँगों को पूरा कर सकते हो। आप अपने आप को - और उनको भी जिन पर परमेश्वर ने आपको नियुक्त किया है - बचा सकते हो, यदि इस प्रकार पवित्रता के लिए संघर्ष करने के बदले, यीशु मसीह के समान होने का प्रयास करो। यह दिलचस्प बात है कि लूका 1:74-75 में जकर्याह की भविष्यद्वाणी यह अन्तर दिखाती है: "...उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उसकी सेवा करते रहें।" पवित्र जीवन जीने में विधिवाद का प्रयास न्याय का डर लाता है। आत्मा के सामने समर्पित होने से आई पवित्रता डर नहीं लाती है। कुंजी समर्पण है!

20. उसे प्रार्थना, मनन और वचन पढ़ने और अध्ययन करने में अधिक समय बिताना चाहिए (प्रेरितों 6:4; 2 तीमु. 2:7)। "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमु. 2:15)।

21. उसे परमेश्वर के वचन का प्रचार करना चाहिए और, एक पास्टर के रूप में, झुण्ड की स्वेच्छा से - न कि इसलिए कि प्रभु चाहता है - रखवाली करनी चाहिए (1 पतरस 5:2)। "यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।" (1 कुरिं. 9:17)। जब हम पास्टरों और उनकी जिम्मेवारियों के विषय में निम्नलिखित वचनों को पढ़ते हैं, तो स्पष्ट होता है कि उनकी परमेश्वर के सामने एक गंभीर और विस्मयकारी जिम्मेवारी है: यहेजकेल 34; यशा. 40:11; 42:19; 56:9-12; यिर्मयाह 22; 23:1-4; 50:6-7, 17, 19-20, 44-45; जक. 10:1-3; 11:4-5, 15-17; 9:16 और यूहन्ना 10:11-18।

22. उसे निरन्तर प्रार्थना करनी है कि वह केवल एक चरवाहा ही न हो जो वचन को ठीक रीति से काम में लाता है और जो भेड़ों को उनका भोजन सही समय पर देता है, परन्तु उससे बढ़कर वह विश्वासियों के लिए एक आत्मिक पिता होगा। (फिलि. 2:22 और 1 कुरिं. 4:15)।

23. उसे परमेश्वर का वचन समय और असमय प्रचार करना चाहिए और सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना देना, डाँटना और समझाना है।" (2 तीमु. 4:2)। "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।" (2 तीमु. 3:16-17)।

24. उसे वह होना चाहिए जो "विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे..." (तीतुस 1:9)। या, जैसा पौलुस तीमुथियुस को कहता है: "अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।" (1 तीमु. 4:16)।

25. उस में यीशु मसीह के अनुग्रह (1 तीमु. 1:14) से कपटरहित विश्वास होना चाहिए (1 तीमु. 1:5)।

26. उसे प्रभु के लिए और अपने परिश्रम के लिए निन्दा सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। (1 तीमु. 4:10 और 2 कुरिं. 6:8)। उसे परीक्षाओं, दुखों और सतावों में भी दृढ़ बने रहना चाहिए (2 कुरिं. 11:23-33; 2 तीमु. 2:9-10; 2 तीमु. 2:3) और अपना जीवन अपने लिए कीमती नहीं जानना चाहिए। उसे प्रभु और दूसरों के लिए अपना जीवन दे देने के लिए तैयार रहना है (प्रेरितों 20:22-24; 2 कुरिं. 6:9)। "पिता इसलिए मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ।" (यूहन्ना 10:17)।

27. 2 कुरिन्थियों 6:1, 3-10 बाकी का सार अच्छी तरह पेश करता है: "हम जो परमेश्वर के सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं कि उसका अनुग्रह जो तुम पर हुआ, उसे व्यर्थ न जाने दो.... हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए। परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से, कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से, पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से, सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ्य से, धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने-बाएँ हाथों में हैं, आदर और निरादर से, दुर्नाम और सुनाम से। यद्यपि

भरमानेवालों जैसे मालूम होते हैं तौभी सच्चे हैं; अनजानों के सृदश हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के समान हैं और देखो जीवित हैं; मारखानेवालों के सृदश हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते; शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं; कंगालों के समान हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं।" इसका कारण यह है कि "जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे।" (2 तीमु. 3:12)।

28. उसे एक ही पत्नी का पति होना चाहिए, अर्थात् बहुविवाही नहीं होना चाहिए (तीतुस 1:6)। पति और पत्नी के बीच अच्छी बातचीत पर परिश्रम करना सराहनीय होगा। परन्तु एक अगुवा, जैसा पौलुस था, अविवाहित हो सकता है (1 कुरिं. 7:7-8)।

29. उसे ऐसा होना चाहिए जो अपने परिवार का अच्छा प्रबंध करता है। यूनानी कहता है, "सामने खड़ा होना (पद में), प्रधान होना, सभापति होना, नेतृत्व करना, प्रबंध करना। "अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो" (1 तीमु. 3:4)। तीतुस 1:6 और 1 तीमु. 3:4-5 पर नज़र डालना भी दिलचस्प होगा जहाँ परमेश्वर की प्रतिबन्धित प्रतिज्ञाओं के प्रकाश में अब्राहम ने अपने घराने का प्रबंध कैसे किया था पता चलता है (उत्प. 18:17-19)। "अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबंध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?" (1 तीमु. 3:4)। उत्पत्ति 18:17-19 "तब यहोवा ने कहा, 'यह जो मैं करता हूँ उसे अब्राहम से छिपा रखूँ? अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएंगी। क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें; ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करे।'" यदि हम आय. 18 को देखें, तो यह - परमेश्वर के दर्शन और विश्वासयोग्यता - एक निश्चित प्रतिज्ञा के अनुसार था। फिर भी, यदि हम आय. 19 देखें तो यह प्रतिबन्धित था (जैसे परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाएँ हैं!) कि अब्राहम प्रभु के भय में अपने घराने को कैसे सिखाता है और कैसे वह अपने उदाहरण से नेतृत्व करेगा। याद रहे - जैसा आय. 17 संकेत देती है - अब्राहम परमेश्वर का मित्र था, और इस सम्बंध को ही उसे अपने बच्चों को सिखाना था, शब्दों के द्वारा और कार्यों के द्वारा भी। उसे एक ऐसा पिता होना था जिसकी ओर वे देख सकते थे और जिसका वे आदर कर सकते थे, परन्तु इसके साथ-साथ जिसके साथ वे मित्रता रख सकते थे, और उनके हृदय की बातें उसे बता सकते थे (आय. 17, 20-33 की तुना करो)।

30. उसे अतिथि-सत्कार करनेवाला होना चाहिए, या जैसे यूनानी कहता है, अजनबियों से प्रेम करनेवाला (1 तीमु. 3:2; तीतुस 1:8)। उसमें उसका घर बिना किसी प्रतिबन्धों के खोलने की इच्छा होनी चाहिए। "बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो।" (1 पतरस 4:9)।

31. परन्तु ये सब अगुआई के गुण बेकार होंगे यदि वे प्रकाशितवाक्य 2:2-5 के अनुसार काम में नहीं लाए जाते हैं: "मैं तेरे काम और तेरे परिश्रम, और तेरे धीरज को जानता हूँ; और यह भी कि तू बुरे लोगों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया है। तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिए दुख उठाते उठाते थका नहीं। पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू ने अपना पहला-सा प्रेम छोड़ दिया है। इसलिए स्मरण कर तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा और पहले के समान काम कर। यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा।" हर प्रकार से परिश्रम करना और दुख उठाना परमेश्वर के लिए काफी नहीं है। सबसे पहले वह चाहता है हम पहले-से काम करें - सबसे पहले परमेश्वर के लिए प्रेम के कारण किए जा रहे काम। जरा सोचो आप अपनी पत्नी/पति के साथ कैसा व्यवहार करते हो - कैसे आप उस व्यक्ति के लिए काफी कुछ नहीं कर पाए, और कैसे सब कुछ जो आपने किया और कहा उस व्यक्ति पर केन्द्रित था। यदि हम अपने पहले-से प्रेम में काम नहीं करेंगे तो वह हमारे दीवट को इसके स्थान से हटा देगा (अर्थात् हमारे जीवनों का अभिषेक और सेवाएं जो दूसरों को प्रकाश देती हैं)।

मैं यूहन्ना 21:15 का वेस्ट के उत्तम अनुवाद के साथ समाप्त करूँगा: "क्या तुम में तुम्हारे लिए मेरे मूल्य के कारण मेरे लिए प्रेम है, एक भक्तिपूर्ण प्रेम जो तुम्हें मेरे लिए अपने आप को बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है?"

मसीह के अधीन अगुआई

जिम्मेवारियाँ और योग्यताएँ

नोटः निर्गमन 18:13-26; प्रेरितों 20:17-38; 1 तीमु. 3:2-7; तीतुस 1:5-9; याकूब 3:1, 13-18; 1 पतरस 5:1-10।
विशिष्ट उदाहरणः मूसा, दाऊद, नहेम्याह, पौलुस।

अ. अगुआई की जिम्मेवारियाँ

1. <u>उनकी सेवा की पद्धति।</u> अगुवों को परमेश्वर बुलाता हैः

(अ) बोझों को कँधा देकर लोगों की सेवा करने के लिए (यशा. 32:1-2; इब्रा. 13:17; प्रेरितों 20:28)
(आ) प्रारंभ करने के लिए (यूहन्ना 10:4; नहेम्याह 2:11-16; फिलि. 4:9)
(इ) मार्गदर्शन देने के लिए (भजन 23:3; 2 शमूएल 5:2; तीतुस 2:1-3)
(ई) प्रशिक्षण देने के लिए (2 तीमु. 2:2; 1 पतरस 5:3; 2 तिस्स. 3:9; 1 तीमु. 4:12)
(उ) झगड़े निपटाने के लिए (निर्गमन 18:21-22; याकूब 3:1, 18)
(ऊ) अनुशासित करने के लिए (तीतुस 3:10-11; 1 तीमु. 5:19-20; 1 थिस्स. 5:12-14)

जब हम सांसारिक समाज में भी शासकीय अधिकारियों के अधीन होते हैं हम मसीह के नियम को पूरा कर रहे होते हैं (रोमियों 13:1-7)।

2. <u>उनके परिमाण की सीमा।</u> यह परमेश्वर हर एक के लिए निर्धारित करता है।

(अ) परमेश्वर परिमाण के अनुसार वरदान (रोमियों 12:3,6) और सेवा (इफि. 4:7, 11) देता है। वरदान इसके साथ इसके कार्य के लिए अधिकार लाता है।

(आ) वह क्षेत्र भी निर्धारित करता है जिसमें अगुवे को अपनी सेवा करनी है (2 कुरिं. 10:13-16)। इसके लिए परमेश्वर के सामने और साथी अगुवों के सामने सच्चे मूल्याँकन की आवश्यकता होती है। हालाँकि पौलुस की प्रेरिताई कुरिन्थुस तक थी परन्तु उसे स्वर्ग से साइप्रस में कलीसियाएं स्थापित करने की अनुमति नहीं मिली हुई थी जहाँ बरनबास काम कर रहा था (प्रेरितों 15:39)। और जब वह यरूशलेम में आया वहाँ की कलीसिया की अगुआई के अधीन हुआ (प्रेरितों 21:17-26)।

मूसा के अधीन प्राचीनों को इस्राएलियों के निश्चित समूहों पर निश्चित काम दिया गया था (निर्गमन 18:21)।

परमेश्वरत्व में पद का समानाधिकार है (फिलि. 2:6)। फिर भी, परमेश्वर अधिकार के एक क्रम में काम करता है। पिता ने पुत्र को भेजा (1 यूहन्ना 4:14), और पिता और पुत्र ने आत्मा को भेजा (यूहन्ना 14:16; प्रेरितों 2:33) जो "अपनी ओर से" नहीं बोलता है (यूहन्ना 16:13)। कुछ चीजें हैं जिन्हें "पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है" (प्रेरितों 1:7) जो पुत्र के क्षेत्र के परिमाण में नहीं हैं (मत्ती 24:36)। परमेश्वर के राज्य के स्थानीय प्रदर्शन अनन्त परमेश्वर के राजकीय वंश के तरीकों को प्रतिबिम्बित करेंगे। न ही आधुनिक कैरिस्मैटिक धुनें न ही प्रचीन परम्पराओं का कोई स्थान है!

आ. अगुआई की योग्यताएँ

1. एक ईश्वरीय नियुक्ति

इच्छा सिक्के की एक फलक ही है (1 तीमु. 3:1)। जिम्मेवारी लेने की उत्सुकता "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" होनी चाहिए (1 पतरस 5:1-2; भजन 75:6-7)। जब परमेश्वर अगुआई के लिए किसी पर हाथ रखता है तब वह उसे जीवन के स्कूल में प्रशिक्षण देता हैः मूसा ने जंगल में भेड़ें चराई, और दाऊद ने, इससे पहले "पिछड़े हुए" उसके नेतृत्व में आए, अदुल्लाम की गुफा में अपने डरों से निपटा था। <u>बुलावे के साथ अधिकार का अभिषेक आता है।</u>

2. व्यावहारिक योग्यताएँ

(अ) **मन की स्पष्टता**। "संयमी" (1 तीमु. 3:2)। एक अगुवे को निष्पक्ष दृष्टि से सोचने योग्य होना चाहिए, और दुचत्ता नहीं होना चाहिए। उसमें एकाग्रता की शक्तियाँ होती हैं, और एक बार जब उसने अपनी चिन्ताओं को परमेश्वर को दे दिया है, उन्हें मन से निकाल सकता है। (प्रेरितों 16:9, 25)।

(आ) **दर्शन**। परमेश्वर पौलुस को सीधे स्वर्ग से दर्शन दिया था (प्रेरितों 26:16-19) और तीमुथियुस को अप्रत्यक्ष रूप से (2 तीमु. 2:2)। एक सच्चे अगुवे के पास परम लक्ष्य होते हैं जो इतने बड़े होते हैं कि उनके लिए अपना सारा जीवन लगा दे। और वह उस परम के मार्ग में लोगों के लिए मध्यवर्ती लक्ष्य निर्धारित कर सकता है (1 कुरिं. 16:1-11; 2 कुरिं. 8:10-11)। वह व्यक्तियों में सम्भावनाओं को "देख" सकता है और उनकी योग्यताओं को काम में ला सकता है (2 तीमु. 2:2)।

(इ) **बुद्धि**। (याकूब 3:1, 17; प्रेरितों 6:3)। आत्मा का यह वरदान एक अगुवे को सब चीजों में संयम देता है और उसे असंय और सनक से बचा रखता है। वह अपने समय के इस्तेमाल में प्राथमिकताओं का अंदाज़ा लगा सकता है (नहे. 6:3; प्रेरितों 6:7)। वह जानता है कब तेजी से कार्य करना है और कब बस्तक्षेप करने से पहले समस्याओं को सर चढ़ने देना है। कितना भी बाइबल का ज्ञान इस संघटक का स्थान नहीं ले सकता है।

(ई) **सिखाने की योग्यता**। (1 तीमु. 3:2; तीतुस 1:9)। उसमें एक शिक्षक का वरदान होना अवश्य नहीं, परन्तु उसमें किसी भी विषय पर उसके विचारों को स्पष्टता से बताने की कुछ मूल योग्यता होनी चाहिए।

(उ) **अधिकार सौंपने की योग्यता**। (नहे. 7:1-3; इफि. 4:11-12; निर्ग. 18:13-26)। एक आत्मिक अगुवा लोगों को इस्तेमाल और धौंस जमाता नहीं है; वह उन्हें बढ़ाता और कार्य में उनके सच्चे अस्तित्व और और कार्य में उनकी पूर्ति उनकी पूर्ति में विकास करता है।

3. ठोस चरित्र। जिसमें ऐसी विशेषताएँ हैं:

(1) **भक्ति**। वह परमेश्वर का भय खाता है (निर्ग. 18:21), और विश्वास की स्पष्ट समझ रखता है (तीतुस 1:7-9)। वह विश्वास और प्रार्थना का व्यक्ति है (याकूब 5:14-18)। वह आत्म-धर्माभिमानी न हो (गला. 6:1)। वह स्वीकार करता है कि सारा अधिकार परमेश्वर से आता है (रोमि. 13:1) और वह परमेश्वर की इच्छा से न कि अपनी राय से अगुआई करता है। इसलिए वह परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के दूसरे लोगों के साथ संगति में रहता है, और अपना अधिकार स्थापित करने का प्रयत्न नहीं करता।

(2) **अखंडता**। वह पाखंड रहित है (याकूब 3:17)। और विशेषकर रुपयों-पैसों में भरोसेमंद है (1 पतरस 5:2; निर्गमन 18:21; 1 तीमु. 3:3)। जब उसने पाप किया हो वह मामलों को ईमानदारी और सम्मानजनक तरीके से निपटाता है (भजन 51:4)।

(3) **शुद्धता**। (याकूब 3:17)। उसके सम्बंध निन्दा से परे हैं (1 तीमु. 3:2)।

(4) **शान्ति**। (याकूब 3:17; 1 पत. 5:7))। उसे झुण्ड को दोपहर के समय विश्राम देना आता है (श्रेष्ठगीत 1:7), और संकट में हृदय की शान्ति रखने में प्रेरणा दे सकता है (2 इतिहास 32:7-8; नहेम्याह 4:14)। वह उच्च अधिकारियों के साथ नरम है (निर्गमन 7:1-2)।

(5) **मित्रता**। उसमें एक बचानेवाली विनोद-वृत्ति है, मिलनसार है और तर्क किया जा सकता है (याकूब 3:17)। वह अधीनस्थ कर्मचारियों को निश्चिन्त कर देता है, और अतिथि-सत्कार करता है (1 तीमु. 3:2); दूसरों से सहायता और सलाह पाने के लिए तैयार रहता है (1 शमू. 25:32-35)। तुम्हें लगेगा 'वह हम में से एक है' (निर्गमन 18:21; 2 शमू. 5:1-3)।

(6) **दीनता**। (1 कुरिं. 15:9) एक सेवक का पेटबन्द (1 पतरस 5:5; मरकुस 10:43-44)।

(7) **दया**। (याकूब 3:17; 1 पतरस 5:3)। वह, पश्चाताप के अधार पर, खुल कर क्षमा कर देता है (लूका 17:3-4)। परन्तु वह विद्रोह के आगे झुकता नहीं है; उदा. मूसा, मरियम के लिए प्रार्थना के विपरीत, फरौन के साथ (गनती 12:1-15)।

(8) **निष्पक्षता**। मेल करानेवाले के रूप में (याकूब 3:17-18) वह दोनों पक्षों की दलीलों को बिना डर या पक्षपात के सुन सकता है।

(9) **अधीनता**, जो प्रभु में उसके ऊपर हैं उनकी ओर और उनके साथ सहयोग। (मत्ती 8:9)।

(10) **धैर्य**। (1 तीमु. 3:3) विशेषकर निर्बलों के साथ (रोमियों 15:1; यशायाह 40:11)। निष्क्रियता या भाग्यवाद नहीं, परन्तु सहनशक्ति, शक्ति को रोक कर रखना।

(11) **अन्याय पर क्रोध**। लोगों की ओर अन्याय और परमेश्वर का अपमान के लिए (निर्गमन 32:19-20)। परन्तु नाराज़गी और व्यक्तिगत वैर-भाव के बिना। (गिनती 20:10-12)।

(12) **परिश्रमिता और आत्मानुशासन**। (1 तीमु. 3:2), विशेषकर अपनी जीभ के इस्तेमाल में (याकूब 3:1-2)।

(13) **साहस** अपने विश्वास की दृढ़ धारणाओं पर चलने के लिए (नहेम्याह 6:10-11)। "मैं यहाँ हूँ", मार्टिन लूथर ने कहा, "मैं कुछ और नहीं कर सकता। परमेश्वर मेरी सहायता करे।" सावधानी और कायरता जोखिम नहीं उठा सकते हैं, न ही निराशा और बगावत से निपट सकते हैं (1 शमू. 30:6), न ही शैतान के दबावों का सामना कर सकते हैं (1 पत. 5:9)।

(14) **संगति और निर्णायकता**। (2 कुरिं. 1:15-24)।

(15) **नम्यता**। (फिलि. 4:5)। वह हर नई चुनौती का सामना एक खुले मन से कर सकता है, जानता है कि परमेश्वर के पास एक भिन्न योजना हो सकती है हालाँकि वातावरण परिचित है (2 शमू. 5:17-25)।

(16) **आदर**, न केवल कलीसिया की दृष्टि में (1 तीमु. 3:2), परन्तु संसार की दृष्टि में भी (आय. 7)। "सनकी" योग्य नहीं होंगे। वह अपने घर का अच्छा प्रबंध करता है (1 तीमु. 3:4-5), उसकी पत्नी और बच्चे उसका आदर करते हैं। उससे बढ़कर, वह लोगों में विश्वास प्रेरित करता है, और लोगों को अप्रिय काम करने में ले चलता है (नहे. 2:17-18)। वह शक्ति उपयोग किए बिना निष्ठा पा लेता है (फिले. 8-14, 21)।

(17) **अनुभव** जीवन का सामान्य रूप से और मसीह में जीवन का (1 तीमु. 3:6)।

(18) **विकास के लिए क्षमता** (फिलि. 3:12-14; 2 कुरिं. 10:15-16; रोमियों 15:23-24)। वह एक स्थान पर पहुँच कर थम नहीं गया है। एक चरवाहे को बाड़ों पर से कूदना और पर्वतों को फाँदना नहीं है, परन्तु झुण्ड से कुछ कदम आगे चलना है। एक चरवाहे के पास सब कुछ नहीं है जिसकी झुण्ड को आवश्यकता है, परन्तु उसे देखना है कि उन्हें सब मिल जाए।

(19) **प्रेरणा**। वह एक "एकपहिया ठेला" नहीं है जिसे धक्का देने की जरूरत है, परन्तु स्वतः चालक है (1 पतरस 5:2)।

(20) **यर्थाथवाद**। उदा. नहेम्याह 4:9 - "हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की…और…दिन रात के पहरुए ठहरा दिए।"

मसीही अगुआई की विशेषताएँ – आत्म-मूल्याँकन प्रश्नावली

एक मसीही अगुवे में कई अच्छी विशेषताएँ होनी चाहिए जिनका बाइबल में बल दिया गया है। इन विशेषताओं में आत्मा के नौ फल हैं जिनकी सूची गलातियों 5:22-23 में है जो हैं: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम। इन नौ आत्मिक विशेषताओं के अतिरिक्त, अगुवों में कई दूसरी विशेषताएँ भी होनी चाहिए, जैसे कि, बुद्धि, परिश्रम, निश्चय, सच्चाई, निर्भीकता, रचनात्मकता, आदि। मसीही अगुवे में कई दूसरी निपुणताएँ और योग्यताएँ भी होने चाहिए, जैसे कि: अनुशासित करने की योग्यता, सिखाने की योग्यता, बोलने की योग्यता, नैदानिक निपुणताएँ, समस्या निपटाने की निपुणताएँ, निर्णय लेने की निपुणताएँ, सामाजिक निपुणताएँ, आदि। अन्त में, उनकी अच्छी गवाही, वचन का अच्छा ज्ञान, दूसरों को प्रभावित करने की सामर्थ्य, दूसरों की सेवा करने की इच्छा, दूसरों के लिए सच्ची चिन्ता होनी चाहिए। जबकि व्यवसायी अगुआई की विशेषताओं और मसीही अगुआई की विशेषताओं में करीबी समान्तर है, परन्तु दूसरा अधिक यथार्थ, गहरा और श्रेष्ठ है। व्यवसायी अगुआई की विशेषताएँ मसीही अगुआई की विशेषताओं के घटिया अनुकल्प, छिछले और घटिया हैं। यह जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि एक अच्छा मसीही अगुवा बनना क्या होता है। एक मसीही अगुवे को उसके गुण और कमज़ोरियों को जानना चाहिए और उसकी कमज़ोरियों के क्षेत्रों में बढ़ना चाहिए। सबसे पहले, अगुवों को इन अगुआई की विशेषताओं को जानना चाहिए; दूसरा, उन्हें इन विशेषताओं में विश्वास करना चाहिए; तीसरा और अन्तिम, उन्हें इन विशेषताओं को बढ़ाने का प्रयास करना है। व्यवसायी और मसीही अगुआई की विशेषताओं के बीच समान्तर नीचे चित्रित किए गए हैं।

व्यवसायी बनाम मसीही अगुआई की विशेषताएँ और योग्यताएँ	
व्यवसायी अगुआई के विशेषताएँ और योग्यताएँ	**मसीही अगुआई के विशेषताएँ और योग्यताएँ**
आत्म विश्वास	विश्वास
प्रमाणित उच्चमान	अच्छी गवाही
सहानुभूति	करुणाा
भावात्मक स्थिरता	शान्ति
धैर्य	सहनशीलता
उत्साह	आनन्द
शिष्ट होना	कोमलता
न्यायसंगति	भलाई
आत्मसंयम	संयम
बहस नहीं करना	विनम्रता
मिलनसार	प्रेम
लक्ष्य की ओर अभिमुख होना	परमेश्वर की इच्छा पूरी करना
समस्या हल करने की योग्यता	बुद्धिमानी
अधीनस्थ कर्मचारियों का विकास करना	अनुशासन
बुद्धि	परमेश्वर के वचन का ज्ञान
करिश्मा	पवित्र आत्मा से भरे होना
गतिशीलता	यात्रा करने की इच्छा
आदेश देने की योग्यता	सिखाने की योग्यता
जोखिम लेना	बलिदान
उदाहरण रखना	एक जीवित उदाहरण होना
बोलने की योग्यता	बोलने में प्रभावपूर्ण और जोरदार होना
व्यवहार बदलने की सामर्थ्य	जीवन परिवर्तित करने की सामर्थ्य
सुनने की योग्यताएँ	मन और विचारों को समझना
एक अच्छा प्रेक्षक होना	रुचि और दिलचस्पी के साथ देखना

दूसरों की आवश्यकताओं की ओर संवेदनशील	दूसरों की सहायता करने की सच्ची दिलचस्पी
निडर	एक शेर के समान साहसी
सुधार लाना	भले कामों से भरा हुआ होना
फुरतीला होना	परिश्रमी
परिणाम अभिमुख होना	सफलतापूर्वक काम समाप्त करने की योग्यता
खुलापन	सुस्पष्ट होना
सहायता के लिए तैयार	सेवा के लिए तैयार
विचारशील होना	निस्वार्थ होना
दूसरों की रुचि प्रेरित करना	मनोहर होना
ईमानदारी	सच्चाई
दूरदर्शिता	दर्शन
कल्पना	स्वप्न
नए ढंग से काम करना	नचनात्मक
आलोचना या निन्दा नहीं करना	दूसरों के आत्म-रूप को पुनःस्थापित करना और बनाना
अनदेखा करना	क्षमा करना

अगुआई विशेषताओं और योग्यताओं का आत्म-मूल्याँकन

अपनी अगुआई की विशेषताओं और योग्यताओं के गुणों और कमज़ोरियों को जानने के लिए, हम एक आत्म-मूल्याँकन प्रश्नावली इस्तेमाल कर सकते हैं। अगुवों को अगुआई की बीस विशेषताओं और योग्यताओं पर मूल्याँकन किया जाएगा। हर विशेषता के नीचे पाँच वक्तव्य अ से उ तक दिए गए हैं। वक्त्व्य 'अ' सबसे उत्तम है, जबकि वक्तव्य 'उ' सबसे खराब स्थिति है जिसमें कोई हो सकता है। इस मूल्याँकन का उद्देश्य व्यक्ति की पता लगाने में सहायता करना है कि उनकी वर्तमान स्थिति क्या है और उन्हें उस में कितना बढ़ना है। हर वक्तव्य वर्णात्मक है। इसे हास्य के भाव से बात को प्रभावशाली तरीके से चित्रित करने के लिए लिखा गया है। 'अ' वाले वक्तव्य एक वचन के आधार पर हैं। वृद्धि सदा प्रगतीशील होती है। यदि एक व्यक्ति किसी विशेषता में तीसरे स्तर पर है तो उसे पता चलेगा कि उसे उस गुण में पक्का होने के लिए दो स्तर और चढ़ने होंगे। यह आत्म-मूल्याँकन और आत्मि-विकास के लिए एक बहुत ही उपयोगी और व्यावहारिक साधन है।

आत्म-मूल्याँकन प्रश्नावली

(अपनी अगुआई की विशेषताओं और योग्यताओं का मूल्याँकन करो)

1. **विश्वास**
   - अ. विश्वास करनेवाले के लिए सब चीजें सम्भव हैं।
   - आ. विश्वास करनेवाले के लिए कई चीजें सम्भव हैं।
   - इ. विश्वास करनेवाले के लिए कुछ चीजें सम्भव हैं।
   - ई. कोई किसी भी चीज के लिए निश्चित नहीं हो सकता।
   - उ. विश्वास क्या है ?

2. **दया**
   - अ. मैं कोमल हृदय का हूँ।
   - आ. मेरे हृदय में सब के लिए एक कोमल स्थान है।
   - इ. निर्भर करता है।
   - ई. मैं आसानी से प्रभावित नहीं होता।
   - उ. मेरा हृदय पत्थर का है।

3. **शान्ति**

अ. पूर्ण शान्ति रखो और कुछ भी समस्या नहीं होगी।
आ. शान्त और नरम, तब भी जब समस्या है।
इ. साधारणतः शान्त और नरम।
ई. सब समय चिन्ता करने के लिए कुछ होता है।
उ. चिन्ता करने के लिए समस्या खोजो।

4. आनन्द

अ. दुखों में आनन्द मनाओ।
आ. किसी भी स्थिति में मुस्करा सकता हूँ।
इ. तब ही मुस्करा सकता हूँ जब सब ठीक होता है।
ई. सामान्यतः दुखी दिखता हूँ।
उ. सदा दुखी दिखता हूँ और कुछ नहीं कर सकता।

5. बुद्धि

अ. मैं शीघ्र ही समस्या का पता लगाकर हल कर सकता हूँ।
आ. मैं अधिकाँश समस्याओं से निपट सकता हूँ।
इ. मैं समस्याएँ हल करने में काफी अच्छा हूँ।
ई. मैं नहीं जानता समस्या क्या है।
उ. मेरे पास निपटने के लिए अपनी समस्याएँ हैं।

6. चेला बनाने की योग्यता

अ. मैं चेला बनाने में पौलुस जैसा हूँ और मेरे कई चेले हैं।
आ. मैं ने कुछ को चेला बनाया है और मेरे कुछ चेले हैं।
इ. मैं कुछ लोगों को चेला बनाने का इच्छुक हूँ।
ई. कोई भी मेरे पीछे आना नहीं चाहता।
उ. मुझे आवश्यकता है कोई मुझे चेला बनाए।

7. परमेश्वर के वचन का ज्ञान

अ. मैं आगे से और पीछे से वचन बोल सकता हूँ।
आ. मुझे वचन का एक अच्छा ज्ञान है।
इ. मुझे वचन का सन्तोषजनक ज्ञान है।
ई. मुझे वचन और अधिक पढ़ना चाहिए।
उ. क्या वचन को जानने का कोई सरल तरीका है ?

8. पवित्र आत्मा से भरे होना

अ. मेरे पास पवित्र आत्मा का दोगुणा अभिषेक है।
आ. मेरे पास पवित्र आत्मा के एक ही अभिषेक है।
इ. मुझे लगता है मेरे पास पवित्र आत्मा है।
ई. मेरा अपना अच्छा आत्मा है।
उ. मेरी समस्या शराब की आत्मा से छुटकारा पाना है।

9. यात्रा करने का इच्छुक

अ. मैं भू-पर्यटक बनना चाहता हूँ।
आ. मैं कुछ देशों में जाना चाहूँगा।
इ. मैं अपने देश की सीमाओं के भीतर यात्रा करना चाहूँगा।
ई. मैं वहीं रहना चाहता हूँ जहाँ प्रभु ने मुझे रखा है।

उ. मुझे यात्रा से घृणा है।

10. शिक्षा देने की योग्यता

अ. मैं जन्मजात शिक्षक हूँ और शिक्षा देना मेरी प्राकृतिक प्रतिभा है।
आ. मुझे शिक्षा देना अच्छा लगता है और इसके लिए मेरे पास धैर्य है।
इ. यदि अवसर मिले तो मैं शिक्षा देना चाहूँगा।
ई. शिक्षा देना एक बहुत ही कठिन काम है।
उ. शिक्षा देना अन्तिम काम है जो मैं करना चाहूँगा।

11. बलिदान

अ. मैं अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण देने के लिए तैयार हूँ।
आ. मैं अपने जीवन को जोखिम में नहीं डालूँगा, परन्तु उनकी सुरक्षा के लिए सब कुछ करूँगा।
इ. मेरी जिम्मेवारी मेरी भेड़ों को पोषण देना ही है।
ई. मैं अपनी भेड़ों को वश में रखना चाहूँगा।
उ. मैं अपनी भेड़ों को खाना चाहता हूँ।

12. एक जीवित उदाहरण होना

अ. मेरे पीछे चलो जैसे मैं मसीह के पीछे चलता हूँ।
आ. मैं सिद्ध उदाहरण नहीं हूँ।
इ. मैं कइयों से बेहतर हूँ।
ई. मेरे पीछे चलोगे तो जोखिम में पड़ सकते हो।
उ. यदि मेरे साथ खाई में गिरना चाहते हो तो मेरे पीछे आ जाओ।

13. अधिकार और सामर्थ्य के साथ बोलना

अ. जब मैं बोलने के लिए अपना मुँह खोलता हूँ, लोग मेरी बुद्धि से चकित होते हैं।
आ. मैं एक सामर्थी वक्ता हूँ।
इ. मैं बोलने में जोरदार और प्रभावपूर्ण हूँ।
ई. मुझे कोई भी सुनना नहीं चाहता है।
उ. मेरी समस्या है मुझे बोलने के लिए अपने को विवश करना पड़ता है।

14. जीवन परिवर्तित करने की योग्यता

अ. यदि कोई मुझ से एक बार मिलेगा तो उसका जीवन फिर वैसा नहीं रहेगा।
आ. मेरे जीवन ने कई लोगों पर बहुत प्रभाव डाला है।
इ. मैं दूसरों को कुछ हद तक प्रभावित कर सकता हूँ।
ई. मैं दूसरों से आसानी से प्रभावित हो जाता हूँ।
उ. मेरी समस्या अपना जीवन बदलना है।

15. दूसरों की आवश्यकताओं की ओर वास्तविक चिन्ता

अ. जब दूसरे भूखे हैं मैं अपना भोजन नहीं खा सकता हूँ।
आ. मैं अपना भोजन दूसरों के साथ बाँटने का इच्छुक हूँ।
इ. मेरे भोजन करने के बाद, यदि कुछ बचेगा तो मैं दूसरों को दूँगा।
ई. मुझे उनके लिए दुख होता है जिनके पास कुछ भी खाने को नहीं है।
उ. सब को खाना खिलाना मेरी जिम्मेवारी नहीं है।

16. निडरता

अ. मैं एक शेर के समान निडर हूँ।

आ. मैं तब निडर हूँ जब शेर पिंजरे में है।
इ. मैं शेरों से डरता हूँ चाहे वे कहीं भी क्यों न हों।
ई. सच बोलूँ तो मैं चूज़ा हूँ।
उ. मैं चूज़ों से डरता हूँ।

17. भले कामों से भरा होना

अ. भले कामों में, मैं मदर टेरेसा से दूसरे स्थान पर हूँ।
आ. मैं ने बहुत सारे भले काम किए हैं।
इ. मैं भले कामों में विश्वास रखता हूँ और जो कर सकता हूँ कर रहा हूँ।
ई. मैं कोई ज्यादा काम नहीं कर सकता हूँ।
उ. सच बोलूँ तो, यदि मुझे काम से छुट्टी दे दी जाए तो अच्छा होगा।

18. परिश्रम

अ. मैं बैल के समान काम करता हूँ।
आ. मैं परिश्रम करता हूँ परन्तु बैल के समान नहीं।
इ. मैं संघवादी बैल हूँ और मैं दिन भर का काम करता हूँ।
ई. मैं बैल पर सवारी करना चाहूँगा।
उ. मैं बैल को काम पर लगाना चाहूँगा।

19. काम समाप्त करने की योग्यता

अ. मैं जब तक काम समाप्त न कर लूँ सो नहीं सकता।
आ. मैं सो सकता हूँ, परन्तु नींद में काम से स्वप्न देखता हूँ।
इ. मैं काम समाप्त करूँगा परन्तु अपनी नींद में विध्न नहीं चाहता हूँ।
ई. अपने काम पर सोने की मेरी आदत है।
उ. मेरी समस्या काम आरम्भ करने के लिए जागना है।

20. स्वप्न देखना

अ. मैं यूसुफ के समान स्वप्न देखता हूँ।
आ. मैं काफी कल्पनाशील हूँ और बहुत नए विचार पाता हूँ।
इ. मेरे पास कुछ अच्छे विचार हैं।
ई. मैं विचार उधार लेने में अच्छा हूँ।
उ. एक विचार क्या होता है?

अंक बनाने की प्रणाली				
'अ' की संख्या	X	5 अंक	=	________________ अंक
'आ' की संख्या	X	4 अंक	=	________________ अंक
'इ' की संख्या	X	3 अंक	=	________________ अंक
'ई' की संख्या	X	2 अंक	=	________________ अंक
'उ' की संख्या	X	1 अंक	=	________________ अंक
		कुल जोड़	=	________________ अंक

व्याख्या		
90 - 100 अंक	=	उत्तम अगुवा
80 - 89 अंक	=	अच्छा अगुवा
60 - 79 अंक	=	साधारण अगुवा
40 - 59 अंक	=	घटिया अगुवा
20 - 39 अंक	=	एक अगुवा होने के योग्य नहीं
0 - 19 अंक	=	एक अगुवा होने के लिए खतरा

इस शिक्षा में दी गईं अगुआई की सूचियाँ किसी भी प्रकार से सम्पूर्ण नहीं हैं। और भी कई अगुआई की विशेषताएँ हैं। अगुवे में एक उच्च श्रेणी की उपलब्धि अभिमुखीकरण, निपुणता, योग्यता, आत्म-विश्वास, भावात्मक स्थिरता, नए ढंग से काम करनेवाला, मित्रभाव, अपने अधीनस्थ कर्मचारियों में भरोसा और विश्वास, सहानुभूति, अखंडता, पहल-शक्ति और अनुकूलनीयता होनी चाहिए। यदि अगुवे में सही विशेषताएँ और योग्यताएं होंगी तब वह उसके दायित्व को अच्छे से पूरा कर सकेगा।

आत्मिक अगुआई

"उसी को परमेश्वर ने ... उच्च कर दिया..." (प्रेरितों 5:31)।

अ. आत्मिक अगुवों की आवश्यकता बहुत क्यों है

- वे परमेश्वर के लिए पहल करते हैं	:	न्यायियों 5:2; 2 इतिहास 14:2-4
- वे परमेश्वर का निर्देशन पाते और बताते हैं	:	निर्ग. 25:22; व्यवस्था. 5:5
- वे परमेश्वर के लोगों के लिए आगे जाते हैं	:	व्यव. 10:11; 2 इतिहास 34:31-33
- वे दूसरों को पीछे चलने के लिए प्रेरित करते हैं	:	नहे. 2:17-18; 1 इतिहास 12:16
- वे उनके चेलों की परवाह करते हैं	:	इब्रा. 13:17; 1 थिस्स. 2:11
- वे उनके चेलों की आवश्यकताओं को परमेश्वर के पास ले जाते हैं	:	गिनती 27:5; 1 शमू. 12:23
- वे उनके चेलों की प्रगति में सहायता करते हैं	:	1 राजा 11:28; 2 कुरिं. 13:9-10
- वे उनके चेलों को अगुवे बनने में प्रशिक्षण देते हैं	:	मरकुस 1:17; 2 तीमु. 2:2

आ. स्वाभाविक और आत्मिक अगुआई की तुलना

स्वाभाविक	आत्मिक
अभिलाषा	दीनता
आत्मनिर्भरता	परमेश्वर पर निर्भरता
मानवीय बुद्धि के अनुसार करना	परमेश्वर का निर्देश खोजना
आशावाद	विश्वास
सेवा करवाने की इच्छा	सेवा करने की इच्छा
विशेष सुविधाएँ	सेवा के विशेष अवसर
व्यक्तित्व की शक्ति	भक्ति
सफलता का स्तर	विश्वासयोग्यता का स्तर

इ. एक अगुवे के लिए बाइबल की प्रिय तस्वीर

चरवाहा:

- परमेश्वर : उत्प. 49:24; भजन 23; 78:52; 80:1; 95:7; यशायाह 40:11; यहेज. 34:11-22
- यीशु : मीका 5:4; यूहन्ना 10:1-18, 26-28; 1 पत. 2:25; इब्रा. 13:20; प्रकाशित. 7:17
- बाइबल के दूसरे अगुवे : 2 शमू. 7:7; भजन 77:20; 78:70-72; यूहन्ना 21:15; प्रेरितों 20:28 (इसके अतिरिक्त, गिनती 27:17; यिर्म. 3:15; 23:1-4; यहेज. 34:2-10; जकर्याह 10:3)

ई. अगुआई की जिम्मेवारियों को निभाने के लिए परमेश्वर का प्रबंध

- उसका बुलावा: 1 कुरिं. 1:26-28; रोमियों 11:29
- उसका अनुग्रह: 2 कुरिं. 3:5; 1 कुरिं. 15:10
- उसका सामर्थ्य: कुलु. 1:29; फिलि. 4:13
- उसकी बुद्धि: याकूब 1:5; 1 कुरिं. 1:30
- उसका मार्गदर्शन: यूहन्ना 14:26; यिर्म. 33:3
- उसकी शान्ति: 1 कुरिं. 14:33; फिलि. 4:7

उ. आत्मिक अगुआई संकट में

असुरक्षाएँ: उदा., डर, संदेह, निराशा

दबावः उदा., एकाकीपन, व्यस्तता, प्राथमिकताओं का दबाव, आर्थिक व्यवस्था की कमी
परीक्षाएँः उदा., अभिमान, ईर्ष्या, लालच, अभिलाषा, सुविधाओं की दुरुपयोग
आक्रमणः उदा., आलोचना, इलज़ाम, अस्वीकरण, शैतानी सताव

ऊ. आत्मिक अगुवों के लिए रक्षोपाय

- यीशु से प्रेम : यूहन्ना 21:15-17
- दीनता : याकूब 4:6
- परमेश्वर का वचन : भजन 119:105
- परमेश्वर को खोजना : 2 इतिहास 17:3-5; 12:14
- एक साफ विवेक : तीतुस 1:19; प्रेरितों 24:16
- परमेश्वर का अभिषेक : 1 यूहन्ना 2:27-28
- प्रार्थना का सहारा : 2 कुरिं. 1:11; 1 थिस्स. 5:25
- भक्त सलाह : नीतिवचन 11:14; निर्गमन 18:17-24

ए. आत्मिक अगुवे बनते हैं पैदा नहीं होते

अगुआई की सम्भावित प्रवृत्ति को उचित रूप से विकसित होने के लिए विशेषकर शिक्षणीयता, अनुशासन और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। (नीतिवचन 12:24)

एक अधिक सीमित अगुआई की प्रवृत्ति के साथ भी, एक व्यक्ति पवित्र आत्मा की सहायता से, परमेश्वर का एक प्रभावशाली अगुवा बन सकता है। (1 शमूएल 2:7)

ऐ. प्रभावशाली अगुआई के तीन स्तम्भ

- एक भक्त जीवन जीना
- व्यावहारिक सेवकपन
- सेवकपन के लिए एक उदाहरण रखना

अतिरिक्त विचार के लिएः

प्रभु यीशु की अगुआई के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की गई विविध अभिव्यक्तियों पर विचार करो। (उदा., यशा. 9:6; प्रकाशित. 1:5; 17:14; प्रेरितों 5:31; 1 पतरस 5:4; इब्रा. 6:20; 12:2)

बुद्धिमान अगुवे

एक बुद्धिमान अगुवा अपनी बात बिना दोहराए साफ-साफ बताता है, वह उसे प्रमाणित करने का प्रयत्न नहीं करता; नहीं तो इससे बहस हो जाएगी, और यह इसकी शक्ति और उद्देश्य खो देगी।

एक बुद्धिमान अगुवा झगड़े से बचता है, चाहे मामला कुछ भी क्यों हो, वह जानता है कि झगड़े से सत्य खो जाता है, और समस्याएँ कभी भी हल नहीं होतीं, बल्कि अधिक जटिल हो जाती हैं।

एक बुद्धिमान अगुवा जानता है कि शैतान की एक सबसे बड़ी चाल हमारे मन में यह विचार डालना है कि हम परमेश्वर में जो हैं उससे अधिक हैं, और अपने आप को इस छल से उचित अनुमान द्वारा बचा लेता है जो केवल पवित्र आत्मा से आता है।

एक बुद्धिमान अगुवे की आलोचना अकसर अत्यन्त सावधानी, सही अभिप्रायों और एक मधुर रवैये से की जाती है, बुद्धिमान और अच्छे और स्पष्ट शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं, गलती का प्रकटिकरण होता है, और स्थिति के सुधार के लिए उत्तर होता है। इस प्रकार यह रचनात्मक होती है।

एक बुद्धिमान अगुवा उसके विरोधियों के आक्रमण के स्तरों का, और उनके बल का पता लगाता है और इस खोज के बाद सावधानी और बुद्धिमानी के साथ आगे बढ़ता है।

एक बुद्धिमान अगुवा काऊन्सलिंग में उसकी सहायता में सब प्रकार से उदार होता है, क्योंकि वह एक स्नेही और बड़े हृदयवाला व्यक्ति है।

सम्बद्ध अगुवे धीमे होने पर दोष और अधिक करने पर तनाव को चुनने में फँस जाते हैं। उन में से केवल बुद्धिमान ही सन्तुलन और सुरक्षा जिसकी आवश्यकता है पा लेता है।

एक अगुवा एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो दूसरों को परमेश्वर के उद्देश्यों में ले चलने के लिए जानकार है और ईश्वरीय बुद्धि से सम्पन्न है।

एक बुद्धिमान अगुवा अपने अधीनस्थों से फीडबैक को प्रोत्साहन देता है और बड़ी दिलचस्पी और उचित मूल्याँकन के साथ उसे लेता है। ऐसा योगदान अत्यन्त मूल्यवान हो सकता है और सब का समय बचा सकता है।

धन्य है वह अगुवा जिसकी बुद्धि नरमपन्थियों और कठोरपन्थियों के बीच झगड़े में, किसी भी पक्ष से प्रभावित हुए बिना, मध्यस्थता में सहायता करती है, क्योंकि वह मार्ग में उन्नति करता जाएगा।

एक बुद्धिमान अगुवे को स्वार्थी लाभ के लिए न्यायसंगत तर्क के नियमों का उल्लंघन नहीं करना है, नहीं तो, यह उसे समझ के विरुद्ध अभ्यारोपण होगा।

चुनौतीः भविष्यद्वक्ता प्रार्थना कर रहा है

यह ए. डब्ल्यू. टोज़र की प्रार्थना है - जिसे देशों का गवाह होने के लिए बुलाया गया था। अपने अभिषेक के दिन उसने प्रभु को यह कहा। जब ऐल्डरों और सेवकों ने प्रार्थना की और उस पर हाथ रखे, उसके बाद वह अपने उद्धारकर्त्ता से एकान्त में मिलने के लिए चला गया, उससे दूर जहाँ उसके शुभचिन्तक भाई उसे ले जा सकते थे।

और उसने कहा:

हे प्रभु, मैं ने तेरी आवाज सुनी और मैं डर गया। तू ने मुझे एक गंभीर और संकटपूर्ण घड़ी में एक विस्मयकारी काम के लिए बुलाया है। तू सब देशों और पृथ्वी और स्वर्ग को भी हिलाने वाला है, ताकि जो चीजें हिलाई नहीं जा सकती हैं बनी रहें।

हे प्रभु, मेरे प्रभु, तू ने मुझे तेरा सेवक बनने का सम्मान देने की कृपा की है। कोई मनुष्य इस सम्मान को अपने आप नहीं ले सकता, जब तक हारून के समान परमेश्वर की ओर से बुलाया न जाए। तू ने मुझे उन के लिए अपना दूत ठहराया है जो हृदय के हठी और ऊँचा सुननेवाले हैं। उन्हों ने तुझे, मालिक को अस्वीकार किया है, और सम्भव नहीं कि वे मुझे, सेवक को स्वीकार करेंगे।

मेरे परमेश्वर, मैं अपनी कमज़ोरी या काम के लिए अपनी अनुपुक्तता के कारण दुखी होकर समय व्यर्थ नहीं गँवाऊँगा। जिम्मेवारी मेरी नहीं तेरी है। तू ने कहा है, मैं तुझे जानता हूँ - मैं ने तुझे नियुक्त किया है - मैं ने तुझे पवित्र किया है, और तू ने यह भी कहा हैः तुम उन सब के पास जाओगे जिन के पास मैं तुझे भेजूँगा, और जो जो मैं आज्ञा दूँ, उसे तू बोलेगा। मैं कौन हूँ कि तेरे साथ विवाद करूँ या तेरे परम चुनाव पर संदेह प्रकट करूँ? फैलसा मेरा नहीं, तेरा है। ऐसा ही हो, प्रभु। मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।

हे भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के परमेश्वर, मैं भली-भाँति जानता हूँ कि जब तक मैं सेरा सम्मान करूँगा तू मेरा सम्मान करेगा। इसलिए मेरे सारे जीवन भर और परिश्रमों में तेरा सम्मान करने की शपथ लेने में मेरी सहायता कर। फिर चाहे लाभ हो या हानि, जीवन मिले या मृत्यु, जब तक जीवित रहूँ उस शपथ को रख सकूँ।

हे परमेश्वर, अब समय है कि तू कार्य करे, क्योंकि शत्रु तेरे चरागाहों में घुस चुका है और भेड़ें फाड़ी गई और तितर-बितर हुई हैं। और झूठे चरवाहे भरपूर हैं जो खतरे का इन्कार करते और संकटों पर हँसते हैं जो तेरे झुण्ड पर आए हुए हैं। भेड़ें इन भाड़े के टट्टुओं के धोखे में आई हैं और हृदयस्पर्शी वफादारी के साथ उनके पीछे चलती हैं जबकि भेड़िए मारने और नष्ट करने के लिए निकट हो रहे हैं। मैं विनती करता हूँ, शत्रु का पता लगाने के लिए मुझे तेज आँखें दे; सच्चे में से झूठे मित्र का पता लगाने के लिए समझ दे। देखने के लिए मुझे दृष्टि और जो देखता हूँ उसे विश्वासयोग्यता के साथ बताने के लिए साहस दे। मेरी आवाज को अपनी आवाज जैसी इतनी बना दे कि बीमार भेड़ें भी इसे पहचान लें और तेरे पीछे चलें।

प्रभु यीशु, मैं आत्मिक तैयारी के लिए तेरे पास आता हूँ; अपना हाथ मुझ पर रख। नए नियम के भविष्यद्वक्ता के तेल से मेरा अभिषेक कर। ऐसा न हो कि मैं एक धार्मिक शास्त्री बन जाऊँ और इस प्रकार अपने भविष्यद्वक्ता के बुलावे को खो दूँ। उस शाप से मुझे बचा ले जो आज के याजकवर्ग पर पड़ा हुआ है, समझौते का, नकल का, व्यावसायिकता का शाप। एक कलीसिया का इसकी संख्या, इसकी लोकप्रियता या इसके दान-दशमाँस से न्याय करने की भूल से बचा।

मुझे याद रखने में सहायता कर कि मैं एक भविष्यद्वक्ता हूँ - न एक प्रोत्साहक, न एक धार्मिक प्रबंधक, परन्तु एक भविष्यद्वक्ता! मुझे भीड़ का गुलाम कभी न बनने दे। मेरे प्राण को सांसारिक अभिलाषाओं से चंगा कर और प्रसिद्धि की ललक से मुझे छुड़ा। चीजों की गुलामी से मुझे बचा। घर के चारों ओर व्यर्थ घूम कर मुझे समय बर्बाद न करने दे। हे परमेश्वर, अपना भय मुझ में डाल दे, और मुझे प्रार्थना के स्थान में ले चल जहाँ मैं प्रधानों और अधिकारियों और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से संघर्ष करूँ। मुझे अधिक भोजन करने और देर से सोने से छुटकारा दे। मुझे संयम सिखा ताकि मैं यीशु मसीह का एक अच्छा सिपाही बन सकूँ।

मैं इस जीवन में परिश्रम और छोटे इनाम स्वीकार करता हूँ। मैं आसान स्थान की माँग नहीं करता। मैं उन छोटे-छोटे तरीकों की ओर आँखें बंद कर लूँगा जो जीवन को आसान बनाते हैं। यदि दूसरे सरल मार्ग खोजेंगे, तो मैं उनका न्याय किए बिना कठिन मार्ग लेने का प्रयत्न करूँगा। मैं विरोध की अपेक्षा करूँगा और जब आएगी तो इसे चुप रहकर लेने का प्रयत्न करूँगा। यदि, जैसा तेरे सेवकों के साथ कभी-कभी होता है, तेरे दयालु लोग मुझ पर कृतज्ञ दान डालेंगे, तब मेरे साथ रहना और मुझे उस विनाश से बचाना जो अकसर इसके साथ आता है। जो कुछ मुझे मिलेगा उसे इस प्रकार इस्तेमाल करना सिखा कि यह न तो मेरे प्राण को चोट पहुँचाए और न ही मेरे आत्मिक सामर्थ्य को कम करे।

और, यदि तेरे अनुमत पूर्वप्रबन्ध में, तेरी कलीसिया से मुझे सम्मान मिले, तो उस घड़ी मुझे भूलने न दे कि मैं तेरी छोटी से छोटी दया के योग्य भी नहीं हूँ, और यदि लोग मुझे वैसे ही जानते जैसे मैं अपने आप को जानता हूँ तो वे यह सम्मान मुझे न देते या उन्हें देते जो मुझ से पाने के अधिक योग्य हैं।

और अब, हे स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं अपने बाकी के दिन तुझे समर्पित करता हूँ; तेरी इच्छा के अनुसार, उन्हें कम या अधिक होने दे। मुझे महान या गरीब और दीनों की सेवा करने दे; यह फैसला मेरा नहीं है, और यदि प्रभावित कर भी सकता तो नहीं करूँगा। मैं तेरी इच्छा पूरी करने के लिए तेरा सेवक हूँ। यह इच्छा मेरे लिए पद या धन या प्रसिद्धि से कीमती है, और मैं इसे पृथ्वी या स्वर्ग की सब चीजों से पहले चुनता हूँ।

हालाँकि तू ने मुझे चुना है और एक ऊँचे और पवित्र बुलावे से सम्मानित किया है, मुझे कभी भी न भूलने दे कि मैं धूल और राख का मनुष्य हूँ, एक मनुष्य जिसमें सब स्वाभिक दोष और आवेग हैं जो मनुष्यजाति को कष्ट देते हैं। इसलिए, हे मेरे प्रभु और उद्धारकर्त्ता, मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझे मुझ से बचा और उन सब चोटों से भी बचा जो मैं अपने आप को पहुँचा सकता हूँ जबकि मैं दूसरों के लिए आशीष बनने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

मुझे अपने पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से भर, और मैं तेरी सामर्थ्य में जाऊँगा और केवल तेरी धार्मिकता का प्रचार करूँगा। जब तक मेरी स्वाभाविक शक्तियाँ साथ देंगी मैं तेरे उद्धार करनेवाले प्रेम का संदेश फैलाऊँगा।

फिर, प्रिय प्रभु, जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ और इतना थक जाऊँ कि आगे बढ़ न सकूँ, तब मेरे लिए ऊपर एक स्थान तैयार कर, और अपने सन्तों के साथ अनन्त महिमा में मेरी गिनती भी कर। आमीन।

आत्म अगुआई का महत्त्व (1 शमूएल 30:6)

निम्नलिखित बातें आत्म अगुआई के विषय पर हैं जिन पर कुछ अगुवे उनका 50% समय बिताते हैं ताकि कि वे आवेशित और केन्द्रित रहें। प्रभु यीशु भी सामर्थ्य पाने और केन्द्रित रहने के लिए एकान्त में चले जाया करते थे। एक अगुवा यदि वह लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहता है तो उसकी बैटरी कभी भी खाली नहीं होनी चाहिए। याद रखो: "जो यहोवा की बाट जोहते हैं वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे..." (यशायाह 40:28-31)।

<u>नीचे दी बातों के प्रकाश में अपने आप का, अपने विकास का और सेवा का मूल्याँकन करते रहो:</u>

1) **क्या परमेश्वर से मेरा बुलावा स्पष्ट है?**
आप कहाँ हो उसका मूल्याँकन करने के लिए अपने आप से यह प्रश्न करो! अपना बुलावे का पता लगाने लिए जिम्मेवारी लो और इससे आश्वस्त रहो।

2) **क्या (भविष्य के लिए) मेरा दर्शन स्पष्ट है?**
कम से कम वर्ष में दो बार अपने अगुवों के साथ दर्शन पर विचार-विमर्श करो। आप तब ही दूसरों की अगुआई कर सकते हो जब आप अपने मन में स्पष्ट हो और जानते हो कहाँ जा रहे हो!

3) **क्या मेरे जोश / उत्साह / उत्तेजना का स्तर वास्तव में ऊँचा है?**
(बिजली के बल्ब से तुलना करो: कुछ की क्षमता: 25वाट, 60वाट, 100वाट, 150वाट की होती है - लोग आवेशित अगुवे के पीछे चलेंगे)। परमेश्वर के लिए अपने जोश और अपने दर्शन को ऊँचा रखो।

4) **क्या मेरा चरित्र पूर्ण रूप से मसीह को समर्पित है और क्या यह साफ है? (अखंडता का विषय!)**
यदि आप चरित्र / अखंडता खो देंगे तो अगुआई खो देंगे। अपने वचन पर बने रहो: सच्चे रहो।

5) **क्या मेरा अभिमान वश में है?** 1 पतरस 5:5। परमेश्वर केवल दीन को ही अनुग्रह देता है। क्या मैं प्रभु में अपने स्थान और निर्भरता को जानता हूँ?

6) **क्या मैं अपने डरों के नियंत्रण में हूँ?** असफलता का डर, परिवर्तन का डर।

7) **क्या मेरे मनोवैज्ञानिक या भावात्मक घाव मेरी अगुआई में बाधा डाल रहे हैं?**
बचपन के दाग, आदि जो दूसरों पर भरोसा करना या छोड़ने में बाधा डालेंगा।

8) **क्या मेरे कान पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट के लिए खुले हैं?**
अगुआई वास्तव में आत्मा में काम करना है। याकूब 1:5-8। परमेश्वर की बुद्धि खोजना सीखो।

9) **क्या मेरी गति / कार्यक्रम बनाए रखे जा सकते हैं?** क्या मैं उस चाल / स्तर और तीव्रता के साथ जीवन जी और सेवा कर सकता हूँ जिससे इस समय कर रहा हूँ?
अधिक वादे, अधिक काम मत ले लो। जिस चाल से आप परमेश्वर का काम कर रहे हो उसे अपने भीतर परमेश्वर का काम नष्ट करने मत दो!

10) **क्या मेरे आत्मिक वरदान और योग्यताएँ प्रगति कर रहे हैं?**
अपने आत्मिक वरदानों और योग्यताओं को जानों और उनके अच्छे भण्डारी बनो। मत्ती 25 - अपने वरदानों और योग्यताओं का पता लगाओ और उन्हें उनके चरम बिन्दु तक इस्तेमाल करो और बढ़ाओ।

11) **क्या परमेश्वर के लिए मेरा हृदय बड़ा हो रहा है?** क्या मैं परमेश्वर को जानने और प्रेम करने में बढ़ रहा हूँ?

12) **क्या लोगों को प्रेम करने की आपकी क्षमता बढ़ रही है?**
प्रेम परमेश्वर के राज्य में सर्वोच्च मूल्य का है, और हमारे जीवनों में भी होना चाहिए। परमेश्वर का खज़ाना लोग हैं। परमेश्वर के खज़ाने की रखवाली करो!

कामः कृपया तीन प्रमुख वरदानओं / योग्यताओं / सेवाओं का पता लगाओ जिनके लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया, नियुक्त किया और अभिषेक किया है।

पौलुस की अगुआई के सिद्धान्त (दूसरा कुरिन्थियों पर आधारित)

हर अगुवा इस सूची को यह पता लगाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है कि क्या वह आदर्श अगुवा, पौलुस, के सामने खरा उतर रहा है। हम हर अगुवे को प्रोत्साहित करते हैं कि वह इन बातों को उसकी अपनी समझ और सेवा के लिए फैला सकता है। <u>इन अगुआई के सिद्धान्तों के मार्गदर्शन के अनुसार, अगुवों को:</u>

1. उसी स्थान में सेवा करनी चाहिए जिस स्थान के लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है (2 कुरिं. 1:1; गलातियों 1:1; प्रेरितों 13:2)।
2. जो संकट में हैं उनको उसी सान्त्वना के साथ शान्ति देनी चाहिए जो उन्होंने प्रभु से पाई है (2 कुरिं. 1:4-6)।
3. प्रार्थना पर निर्भर होना चाहिए (1:11)।
4. संसार के साथ व्यवहार में और कलीसिया के साथ व्यवहार में ईमानदारी के लोग होना चाहिए (1:12; प्रेरितों 6:3; 1 तीमुथियुस 3:7)।
5. दूसरों की दिलचस्पी अपने हृदय में रखनी चाहिए (1:13-23 और 7:12)।
6. आत्मा से अभिषिक्त रहना चाहिए (1:21-22)।
7. दूसरे विश्वासियों पर अधिकार रखने में रुचि नहीं रखनी चाहिए (1:24; लूका 22:24-27)।
8. क्षमा के सिद्धान्त को काम में लाना चाहिए, जिससे शैतान का परमेश्वर के लोगों पर दाँव न चले (2:10-11)।
9. मसीह में जयवन्त रहना चाहिए (2:14)।
10. प्रभु के लिए सुगन्ध होना चाहिए (2:15)।
11. उनकी पर्याप्ति परमेश्वर में पानी चाहिए (3:5)।
12. स्मरण रखना है कि उन्हें स्वयं प्रभु ने योग्य सेवक बनाया है (3:6)।
13. स्पष्ट (खुली, निडर, विश्वस्त, खरी, मुक्त, स्पष्टवादी) बोलचाल इस्तेमाल करनी चाहिए।
14. महिमा में अंश अंश करके बदलते जाना है (3:18)।
15. प्रभु की महिमा (4:1-2) को इन बातों को करके प्रकट करना है:
    - लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दो;
    - चतुराई से न चलो;
    - परमेश्वर के वचन में मिलावट न करो;
    - उनके जीवनों में सच्चाई को प्रकट करो;
    - परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते जाओ।
16. परमेश्वर के सामर्थ्य से और न कि मनुष्य की शक्ति से वचन की सेवा करो (4:7; 1 कुरिं. 2:1-5)।
17. स्मरण रहे कि धन मिट्टी के (मानवीय) बरतनों में है (4:7)।
18. दुख भोगना है, परन्तु उनसे कुचले नहीं जाना है (4:8)।
19. निरुपाय तो हो परन्तु निराश मत हो (4:8)
20. सताए तो जाओ, पर त्यागे महसूस न करो (4:8)।
21. निराशा से गिराए तो जाओ, पर नष्ट न हो जाओ (4:9; 2 तीमुथियुस 2:3-4; भजन 116:10)।
22. प्रभु के सामने उनकी सेवा को पूरा करने के लिए दृढ़ रहना है (4:1, 10)।
23. लोगों को मसीह के पास लाना है, अपने पास नहीं (4:5)।
24. प्रभु की चीजों के लिए दर्शन रखना है (5:7-9)।
25. वह प्रेरणा रखनी है जो प्रभु को स्वीकार्य हो (5:9)।
26. स्मरण रखना है कि उनका उनके कार्यों के लिए अभी और भविष्य में न्याय होगा (5:10)।
27. उनके जीवन इस प्रकार जीने हैं कि प्रभु के लोग प्रोत्साहित हों (5:11-13)।
28. परमेश्वर के प्रेम से ऐसा प्रेरित होना है कि भेड़ों के लिए अपना प्राण दे दें (5:14)।
29. परमेश्वर के लोगों को उस प्रकार देखना है जैसा परमेश्वर उन्हें देखता है (5-16-17)।
30. मेल-मिलाप की सेवा करनी है (5:18)।
31. एक प्रत्यक्ष रूप से प्रभु के राजदूत होना है (5:20)।
32. किसी भी प्रकार से ठोकर का कारण नहीं बनना है, कि सेवा पर कोई दोष न आए (6:1-3)।
33. बड़ी-बड़ी परीक्षाओं के बीच धैर्य दिखाते हुए उनकी सेवाओं को प्रमाणित करना है (6-4-5):

- दुख में
- आवश्यकताओं में
- संकटों में
- कोड़े खाने में
- कैद में
- हुल्लड़ में
- परिश्रम में
- जागते रहने में
- उपवास में

34. उनकी सेवाओं को (6:6-8) इन विशेषताओं से प्रमाणित करना है:
    - पवित्रता से
    - ज्ञान से
    - धीरज से
    - क-पालुता से
    - पवित्र आत्मा से
    - सच्चे प्रेम से
    - सत्य के वचन से
    - परमेश्वर की सामर्थ्य से
    - धर्मिकता के हथियारों से
    - आदर और निरादर से
    - दुर्नाम और सुनाम से
35. उनकी सेवाओं को (6:8-10) इनको सहते हुए प्रमाणित करना है:
    - भरमानेवाले फिर भी सच्चे
    - अनजान फिर भी प्रसिद्ध
    - मर रहे फिर भी जीवित
    - मार खाते फिर भी मरते नहीं
    - शोक करते फिर भी सदा आनन्दित
    - गरीब फिर भी बहुतों को अमीर बनाते
    - पास कुछ भी नहीं फिर भी सब कुछ रखते
36. उनसे खुल कर बातें करनी हैं जिनकी वे सेवा करते हैं और उनकी ओर उनके हृदय बड़े करने हैं (6:11)।
37. शरीर और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करना और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करना चाहिए (2 कुरिं. 7:1)।
38. ईमानदार और सच्चे होना चाहिए ताकि किसी को दोष लगाने का अवसर न मिले ((7:2)।
39. दोष मत लगाओ, बल्कि सम्बंध और प्रेम के माध्यमों के द्वारा प्रभु के लोगों की उन्नति करो (7:3)।
40. अपने आप को लोगों को और लोगों के लिए देना है (7:3)।
41. उसे अनुभव करना है जिसे लोग अनुभव कर रहे हैं (7:3)।
42. परमेश्वर के लोगों की ओर खुले होना चाहिए (7:2-4)।
43. परमेश्वर के लोगों के साथ अनुभव बाँटने के लिए खुले होना चाहिए (7:2-4)।
44. परमेश्वर के लोगों को शान्ति देनी चाहिए, और बदले में शान्ति पानी चाहिए (7:5-7)।
45. अपने आप को दीन व्यक्ति समझना चाहिए (7:6)।
46. उनके परिश्रम के फल से शान्ति पानी चाहिए, जो लोगों का उनकी शिक्षा और ताड़ना की ओर सकारात्मक उत्तर है (7:5-7)।
47. झुण्ड की एक पिता समान ताड़ना करो, उन्हें परमेश्वर-भक्ति के शोक में न कि सांसारिक शोक में लाओ, प्रेम में सुधार जीवन लाता है, परन्तु किसी दूसरे प्रकार से सुधार मृत्यु लाती है (7:8-13)।
48. लोगों में स्नेही ताड़ना के द्वारा भक्तिपूर्ण शोक लाना चाहिए (7:11), जो लाता है:
    - भेड़ की चाल में सावधानी

- अपने को निदोर्ष सिद्ध करना (भले कामों के लिए पश्चाताप)
- बुराई के लिए रोष
- परमेश्वर का भय
- परमेश्वर के लिए तीव्र इच्छा
- परमेश्वर के लिए जोश
- अगुवों को शान्ति

49. झुण्ड के लिए देखभाल और चिन्ता दिखानी चाहिए, चाहे यह ताड़ना के द्वारा ही क्यों न दिखानी पड़े (7:12)।
50. भेड़ों को भले काम करने के लिए उपदेश दो चाहे वे उन्हें पहले ही भले काम करता देख रहे हों (7:13)।
51. स्मरण रहे कि जब वे देह पर सत्य प्रकट करते हैं, तब देह उस सत्य को दूसरों पर प्रकट करेगी (7:14)।
52. लोगों से और परमेश्वर से शान्ति पाने के लिए खुले रहना चाहिए (7:6, 13)।
53. भेड़ों में और अपने आप में भी भरोसा होना चाहिए, परन्तु मुख्य रूप से परमेश्वर में भरोसा होना चाहिए (7:16)।
54. परीक्षाओं में आनन्द के साथ बने रहना चाहिए (8:2)।
55. बलिदान करने के लिए तैयार होना चाहिए (8:4)।
56. परमेश्वर के हाथ में दे देने के लिए तैयार रहना चाहिए (8:6)।
57. प्रेम और परिश्रम में उपदेश देना चाहिए (8:7)।
58. सेवा के लिए तैयार होना चाहिए, और उसे भाईचारे के प्रेम में दिखाना चाहिए (8:9)।
59. परस्पर सहायता सम्मिलित करनी चाहिए (8:14)।
60. समझदारी की सलाह देने के योग्य होना चाहिए (8:14)।
61. उनके भण्डार के लिए परमेश्वर की ओर देखना चाहिए, हालाँकि परमेश्वर आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई विभिन्न साधन इस्तेमाल कर सकता है (8:15)।
62. कृतज्ञ होना चाहिए (8:16)।
63. प्रभु के लिए उत्साही होना चाहिए (8:17)।
64. सच्चे और निर्दोष होना चाहिए (8:20)।
65. परमेश्वर और मनुष्य की दृष्टि में ईमानदार होना चाहिए (8:21)।
66. अच्छे दूत होना चाहिए (8:23)।
67. समझना है कि वे अकेले नहीं है, परन्तु विश्वास में उनके पिता भी हैं (8:23)।
68. लोगों को उनका विश्वास और सेवा दिखाने के लिए चुनौती देनी चाहिए (8:24)।
69. ऐसे हृदय होने चाहिए जो प्रेम में उत्पन्न हुए हैं (8:24)।
70. प्रभु के लोगों को सिखाने के लिए अकसर दोहराई इस्तेमाल करनी चाहिए (9:1)।
71. प्रभु के लोगों में एक सकारात्मक केन्द्रबिन्दु को प्रोत्साहन देना चाहिए (9:2)।
72. लोगों को कभी-कभी उनके ही शब्द स्मरण दिलाने चाहिए (9:3-4)।
73. दान नियमित रूप से इकट्ठा करना चाहिए, इससे पहले देनेवाले इसका लालच करने लगें (9:5)।
74. प्रभु से पाना चाहिए (7:6-11)।
75. लोगों को स्मरण दिलाना चाहिए कि देना पानेवालों और देनेवालों दोनों को आशीष देता है (9:13)।
76. लोगों को सिखाना चाहिए कि देना परमेश्वर की आत्मिक बलिदानों के साथ स्तुति करने के समान है (9:12)।
77. उनके लोगों में भली बातों का घमण्ड करना चाहिए ताकि लोग इसके अनुसार जीने का प्रयत्न करेंगे (9:13-14)।
78. आत्मा के साहस में न कि शरीर के साहस में (जो अगुवे को लोगों से बड़ा दिखाता है) काम करना चाहिए (10:2-3)।
79. भीतरी विद्रोह और अवज्ञा की जड़ों का पता लगाना है, न कि बाहरी रूप को देखना है (10:5-7)।
80. अधिकार झुण्ड की उन्नति के लिए, न कि उनके विनाश के लिए इस्तेमाल करना चाहिए (10:8)।
81. जो वे बोलते हैं उसे जीना चाहिए, न कि दूसरों से अपनी तुलना करनी चाहिए (10:12)।
82. उस सीमा में रहकर काम करना चाहिए जो परमेश्वर ने उनके लिए ठहराई है, न कि लोगों को प्रभावित करने के लिए धार्मिक शब्दावली इस्तेमाल करनी है (10:13-14)।
83. उन्हें सिद्धता में लाना चाहिए जो उनके अधीन हैं, जैसे वे आप भी प्रभु में बढ़ रहे हैं (10:15-16)।
84. उसी में घमण्ड करना चाहिए जो प्रभु ने उन्हें दिया है, न कि उनके अपने हृदयों के ज्ञान में घमण्ड करना चाहिए (10:17-18)।
85. सदा उनकी रक्षा करनी चाहिए जो उनकी देखरेख में हैं, और भाड़े के टट्टुओं के समान भाग नहीं जाना चाहिए (11:1-3)।

86. सदा सेवक का आत्मा दिखाना चाहिए और उन पर बोझ नहीं बनना है जिनकी वे सेवा करते हैं (11:5-9)।
87. जब हो सके अपनी आवश्यकताएँ स्वयं पूरी करनी चाहिए, और सदा लोग पूरी करें इसकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए (11:7-9)।
88. झुण्ड को झूठी सेवाओं के विरुद्ध चेतावनी देनी चाहिए, शैतान की चालों की ओर सर्तक रहना चाहिए (11:12-15)।
89. सदा प्रभु के प्रेम से प्रेरित रहना चाहिए (11:11)।
90. केवल उनकी निर्बलताओं पर घमण्ड करना चाहिए और अपने आप को दूसरी सेवाओं से बड़ा नहीं बनाना चाहिए (11:21-22, 30-33 और 12:5)।
91. दूसरे लोगों से अधिक जीवन में सताव के साथ दुख उठाना चाहिए (11:23-29)।
92. सदा उनके पद की जिम्मेवारियों को उठाना चाहिए, और काम से बचने के लिए उन्हें दूसरों को नहीं दे देनी चाहिए (11:28-29)।
93. प्रभु के सामने शुद्ध विवेक बनाए रखना चाहिए (11:31)।
94. बड़े-बड़े प्रकटीकरणों के समय दीन रहना चाहिए (12:1-4)।
95. उनके जीवनों में परमेश्वर के बर्तावों के उद्देश्य को समझना चाहिए (12:5-7)।
96. स्मरण रखना चाहिए कि उन्हें उनकी निर्बलताओं में अनुग्रह दिया गया है (12:8-9)।
97. उनकी निर्बलताओं में सन्तुष्ट होना चाहिए (12:10)।
98. उनकी निर्बलताओं में परमेश्वर की सामर्थ्य को पहचानना चाहिए (12:9)।
99. उनकी कमियों को देखना चाहिए, फिर भी अपने आप को वैसे देखना है जैसा परमेश्वर देखता है (12:11)।
100. अपने आप को बढ़कर नहीं समझना चाहिए, या झूठी दीनता नहीं रखनी है (12:11)।
101. मानना है जब वे गलत होते हैं (12:13)।
102. भेड़ों के लिए बलिदान का जीवन जीना चाहिए (12:14)।
103. वापस पाने की अपेक्षा के बिना देना चाहिए (12:15)।
104. प्रभु और उसके लोगों के सामने खराई से चलना चाहिए (12:18)।
105. उनके जीवनों पर परमेश्वर के बुलावे के विषय में रक्षात्मक महसूस नहीं करना चाहिए (12:19)।
106. लोगों के पापों पर शोक करने योग्य होना चाहिए (12:21)।
107. जो चीजें वे कहते हैं उनमें दो या तीन गवाहों का समर्थन होना चाहिए (13:1)।
108. आत्मिक अधिकार इस्तेमाल करना और कलीसिया में अनुशासन बनाए रखना चाहिए (13:2)।
109. उनमें परमेश्वर का सामर्थ्य होना चाहिए (13:4)।
110. प्रभु के सामने अपने आप को परखना चाहिए (13:5)।
111. प्रभु में उनकी स्थिति को जानना चाहिए (13:6)।
112. बुराई को छोड़ना चाहिए (13:7)।
113. स्वार्थी नहीं, परन्तु मसीह की देह के लिए शुद्ध प्रेम रखना चाहिए (13:9)।
114. मसीह की देह की उन्नति करनी चाहिए जो प्रेम, शान्ति, मेल और एकता उत्पन्न करेगा (13:11)।

पौलुस से अगुआई के विषय में गहरी जानकारी - अन्य प्रकार की योग्यताएँ

"यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो, वरन् कोमल हो, और न झगड़ालू, और न धन का लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो...फिर वह नया चेला न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान का दण्ड पाए और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो।" (1 तीमुथियुस 3:2-7)।

एक मित्र ने एक बार मुझे कहा, "क्या अपनी कमियों को दो छोटी टाँगों पर इधर-उधर भागते देखना दीन करनेवाली बात नहीं!" इस टिप्पणी ने मुझे स्मरण कराया कि जब हम आत्मिक सिद्धान्तों को "इधर-उधर भागते" देखते हैं तब वे सिद्धान्तों के रूप में बोले जाने से अधिक स्पष्ट होते हैं। प्रेरित पौलुस ने अगुआई के सिद्धान्तों को रूप दिया था जिनका उसने उसके पत्रों में वर्णन भी किया है। उसके जीवन को देखने से, हम अगुआई को अधिक स्पष्टता से देख सकते हैं।

एक महान अगुवे का नाम वर्षों में बढ़ता है। निश्चय ही पौलुस की नैतिक और आत्मिक महानता जितना अधिक उसने अध्ययन किया और विश्लेषण किया प्रत्यक्ष होती गई थी। यह मात्र विडम्बना और एक चमत्कार ही है कि परमेश्वर ने प्रारम्भिक कलीसिया के एक सबसे आक्रामक विरोधी को लिया और उसे इसका सबसे विशिष्ट अगुवा बना दिया। पौलुस उस प्रमुख भूमिका के लिए जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था अद्वितीय तरीके से सज्जित था। पौलुस निश्चय ही एक सबसे बहुमुखी अगुवा था जिसे कलीसिया ने जाना है। उसकी बहुमुखी प्रतिमा इस बात में प्रकट होती है कि वह कितनी सरलता के साथ विविध प्रकार के लोगों के अनुकूल बन जाता था। पौलुस राजनेता और सिपाही, बड़े और बच्चे, राजा और राजकीय अधिकारी सबसे बात कर सकता था। वह तत्त्व-ज्ञानियों, धर्मवैज्ञानियों, और सांसारिक मूतिपूजकों के साथ वाद-विवाद करने में निश्चिन्त था। पौलुस को पुराने नियम की उत्तम समझ थी। उसने प्रभावशाली गमलीएल के अधीन शिक्षा पाई थी, और एक विद्यार्थी के रूप में वह अद्वितीय था। वह अपनी गवाही में लिखता है: "अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिए बहुत उत्साही था।" (गलातियों 1:14)।

हर प्रकार से एक स्वाभाविक अगुवा, पौलुस का हृदय और मन जब यीशु मसीह ने ले लिया था, वह एक महान आत्मिक अगुवा बन गया। पौलुस में असीम, मसीह-केन्द्रित अभिलाषा थी। मसीह के लिए उसका सर्वोच्च प्रेम और मसीह के संदेश को बताने का दायित्व उसके जीवन के शक्तिशाली प्रेरक थे (रोमियों 1:14; 2 कुरिन्थियों 5:14)। उसके वास्तविक मिशनरी जोश ने उसे सब संस्कृतिक और जातीय बाधाओं को पार करने में सहायता की। सब उसकी चिन्ता थे। एक व्यक्ति की अमीरी या गरीबी, उसकी सामाजिक स्थिति या बुद्धि पौलुस की उसके लिए चिन्ता में कोई बदलाव नहीं करती थी। अपनी शिक्षाओं और अनुभवों के अतिरिक्त, पौलुस को पवित्र आत्मा का प्रकाश और प्रेरणा भी उपलब्ध थे। अगुआई की विशेषताएँ जिनकी पौलुस ने तब शिक्षा दी थी आज भी उतने ही उपयुक्त हैं। हम उन्हें पुराने समझकर फेंक नहीं सकते या मात्र विकल्प जानकर छोड़ नहीं सकते। इस अध्याय के आरम्भ में दिया 1 तीमुथियुस का वचन आत्मिक अगुआई की विशेषताओं को बताता है। आओ इस पर एक बार और दृष्टि डालें, और इसके विभिन्न अंशों पर विचार करें।

सामाजिक योग्यताएँ

कलीसिया में सम्बंधों के विषय में, अगुवे को निर्दोष होना है। यदि उसके विरुद्ध कोई आरोप लाया जाता है तो यह ठहरेगा नहीं, क्योंकि उसका जीवन निन्दा या गलत करने के अभ्यारोपण का आधार नहीं देगा। उसके विरोधी को बदनामी, अफवाह, या गपशप करने को कुछ नहीं मिलेगा।

कलीसिया के बाहर सम्बंधों के विषय में, अगुवे का अच्छा नाम होना चाहिए। लेखक एक एल्डर को जानता है जो एक व्यवसायी भी था और प्रभु के दिन प्रचार किया करता था। उसके कर्मचारी कहते थे कि वे सोमवार को उसके चिड़चिड़ेपन को देखकर बता सकते थे उसने कौन से रविवार प्रचार किया है। बाहरवाले स्पष्ट देख सकते हैं कि कब हमारे जीवन हमारी गवाही से मेल नहीं खा रहे। हम इस प्रकार के खण्डन का उदाहरण देकर लोगों को मसीह में नहीं ला सकते हैं।

बाहरवाले आलोचना करेंगे; फिर भी वे मसीही चरित्र के ऊँचे आदर्शों का सम्मान करते हैं। जब एक मसीही अगुवा जिसके जीवन में ऊँचे आदर्श हैं बाहरवालों के सामने एक पवित्र और आनन्द से भरा जीवन जीता है, तब वे भी वैसे ही अनुभव को पाना चाहेंगे। एक एल्डर के चरित्र को अविश्वासी का सम्मान पाना चाहिए, उसमें विश्वास प्रेरित करना चाहिए, और उसमें प्रेरणा उत्पन्न करनी चाहिए। उदाहरण नियम से अधिक शक्तिशाली होता है।

नैतिक योग्यताएँ

नैतिक सिद्धान्तों पर, जो सब मसीहियों के लिए हैं निरन्तर, सूक्ष्म आक्रमण हो रहा है, विशेषकर यौन सम्बंधों पर। मसीही अगुवे को इस अत्यावश्यक और अकसर अलोकप्रिय विषय में निर्दोष होना चाहिए। एक विवाहित साथी की ओर विश्वासयोग्यता बाइबल का मानदण्ड है। आत्मिक अगुवे को अविवाद्य नौतिकता का व्यक्ति होना चाहिए।

आत्मिक अगुवे को संयमी, अर्थात् शराबी नहीं होना चाहिए। शराबी होने का अर्थ अस्तव्यस्त व्यक्तिगत जीवन दिखाना है। शरीब पीना कहीं भी कलंक है, और अधिक है जब यह एक मसीही को पकड़ लेता है। एक अगुवा छिपकर नहीं पी सकता है जो उसकी सार्वजनिक गवाही को नष्ट करे।

मानसिक विशेषताएँ

एक अगुवे को बुद्धिमान, अर्थात् पक्के विवेक वाला व्यक्ति होना चाहिए। यह सिद्धान्त सन्तुलित मन की अवस्था का वर्णन करता है जो अभ्यस्त आत्म-संयम से मिलता है - भीतरी चरित्र जो प्रतिदिन के आत्मानुशासन से आता है। कुछ इस विशेषता को "विवेक की पेटी और आवेश की लगाम" कहते हैं। प्राचीन यूनानी, जो इस विशेषता की कीमत जानते थे, इसे एक अनुशासित मन कहते थे तो आकस्मिक प्रेरणा या चरम में चले नहीं जाता है। उदाहरणार्थ, यूनानियों के लिए साहस उतावलेपन और कायरता के बीच "सुनहरा मध्यम" था; शुद्धता छद्मलज्जा और अनैतिकता के बीच मध्यम थी। उसी प्रकार, मसीही अगुवा जिसमें विवेकी मन है अपने व्यक्तित्व, आदतों, और आवेशों के हर अंश पर नियंत्रण रखता है।

जहाँ तक व्यवहार की बात है, अगुवे को प्रतिष्ठित होना चाहिए। एक सुव्यवस्थित जीवन एक सुव्यवस्थित मन का फल है। अगुवे के जीवन को परमेश्वर की सुन्दरता और सुव्यवस्था प्रतिबिम्बित करनी चाहिए।

फिर अगुवे को शिक्षा देने के लिए तैयार होना चाहिए। एक अगुवे में इस इच्छा, इस चिनगारी पर निगाह रखो। यह दूसरों को आत्मिक जीवन के अर्थ को समझाने में सहायता करने के अवसर पैदा करता है। अगुवा आत्मा का आनन्द महसूस करता है और चाहता है कि दूसरे भी परमेशवर को जानें। इसके अतिरिक्त, अपने अधीन वालों को शिक्षा देने की अगुवे की जिम्मेवारी को एक निर्दोष जीवन से सहयोग मिलना चाहिए।

शिक्षा देना एक परिश्रम है, और इसे करने में समय, तैयारी, अध्ययन, और प्रार्थना लगती है। जैसे किसी ने शोक प्रकट किया है: "ओह, हमारे बीच शिक्षकों के लिए; जो अगुवे हृदयों को पढ़ सकते और लोगों की आवश्यकताओं में सत्य को लगा सकते हैं, वैसे ही जैसे एक अच्छा डाक्टर मरीजों को पढ़ सकता और उनके रोगों में इलाज़ लगा सकता है। प्राण के रोग हैं जो खुले और अस्पष्ट, अतिपाती और पुराने, सतही और गहरे हैं जिन्हें यीशु का सत्य चंगा कर सकता है। परन्तु यह हर आवश्यकता के लिए एक ही सत्य नहीं है, जैसा हर रोग के लिए एक ही इलाज़ है। इसी कारण से हमें बाइबल का परिश्रम के साथ अध्ययन करना और आत्मा के निरन्तर और सामर्थी प्रकाश के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।"

जॉन वेस्ली में यह वरदान थे। वह बुद्धि के तुच्छ प्रदर्शन में कभी नहीं लगा और सदा पवित्रशास्त्र के ज्ञान को बढ़ाने और लोगों में आत्मिक जाग्रती लाने के प्रयत्न में लगा रहता था। वह बुद्धिमान था और अंगरेजी भाषा पर उसे प्रभुता थी। एक विशिष्ठ प्रचारक ने कहा है कि उसे ऐसे किसी उपदेश के बारे में पता नहीं है जिसमें वेस्ली से अधिक सामान्य और क्लासिकी के प्राचीन उच्च साहित्य का प्रमाण मिलता है। फिर भी वह "एक पुस्तक का" व्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध था। पवित्रशास्त्र पर केन्द्रित एक आत्मिक अगुवे की पवित्र बुद्धि का यह एक उच्च उदाहरण है।

व्यक्तित्व की योग्यताएँ

यदि आप एक समस्या को हल करने के बदले झगड़ा मोल लेते हो तो कलीसिया की अगुआई के विषय में मत सोचो। मसीही अगुवे को मिलनसार और कोमल, न कि विवादों का प्रेमी होना चाहिए। अगुवा वह है जो सुधारता है और "न्याय के अन्याय को ठीक करता है।" अरस्तू ने सिखाया कि अगुवा वह होना चाहिए जो "बुराई के बदले अच्चाई को याद रखता है, और जो भला किया है उसके बदले जो भला पाया है उसे याद रखता है।" अगुवे को सक्रिय रूप से विचारशील, निष्क्रिय नहीं और निश्चित रूप से गैर-मिलनसार नहीं, परन्तु प्रकृति में शान्त, सदा शान्त समाधान खोजना, और विस्फोटक स्थिति को शान्त करने योग्य होना चाहिए।

फिर अगुवे को अतिथि-सत्कार करनेवाला होना चाहिए। सेवा को कभी भी कष्टप्रद भार के रूप में नहीं, परन्तु जो सेवा का सौभाग्य देती है देखा जाना चाहिए। या जैसा किसी ने कहा है: "कि अध्यक्ष को अतिथि-सत्कार करनेवाला होना चाहिए, ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के सेवकों को अपने घर में खुशी से और सब समय स्वागत करता है।"

जब पौलुस ने तीमुथियुस को यह पत्र लिखा था, उस समय सरायें कम, गन्दी, और अनैतिक वातावरण के लिए प्रसद्धि थीं। मसीहियों से मिलने जाना अतिथि-सत्कार पर निर्भर होता था।

लालच और इसका जुड़वाँ, धन का लोभ, व्यक्ति को सेवा के लिए अयोग्य ठहराते हैं। सेवा के काम में आर्थिक इनाम अगुवे के मन में नहीं प्रवेश कर सकता है। अगुवे को काम कम परिश्रमिक के साथ उतना ही स्वीकार करना चाहिए जितना बड़े परिश्रमिक के साथ करना चाहिए।

घरेलू योग्यताएँ

मसीही अगुवा जो विवाहित है, वह "अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो" (1 तीमुथियुस 3:4)। हम एक कठोर, अप्रसन्नमुख कुलपति जो हँसी की ओर उन्मुक्त और भाव की ओर अभेद्य है स्वीकार नहीं कर सकते हैं। परन्तु पौलुस एक सुव्यवस्थित घर का अनुरोध करता है जहाँ परस्पर आदर और सहयोग देनेवाला मेल-मिलाप का वातावरण है। अपने घर को व्यवस्थित रखने में असफलता ने अनेक सेवकों और मिशनरियों को उनकी सम्पूर्ण सम्भावना तक पहुँचने से रोके रखा है।

इस लक्ष्य तक पहुँचने में, पत्नी को अगुवे की आत्मिक आकांक्षाओं में पूरी तरह भागी होना चाहिए और आवश्यक बलिदानों में भाग लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। कई प्रतिभाशाली अगुवे असहयोगी पत्नी के कारण अपनी सम्पूर्ण सम्भावना तक और आत्मिक प्रभावकारिता तक नहीं पहुँच सके हैं। घर में एक परोपकारी और सुखी अनुशासन के बिना, क्या एक मसीही सेवक से एक सेवा का प्रबंध करने की अपेक्षा की जा सकती है? क्या अतिथि-सत्कार किया जा सकता है यदि बच्चे बिना नियंत्रण जी रहे हों? क्या दूसरे परिवारों की सेवा की जा सकती है जब अपना ही परिवार अव्यवस्था में है?

परिपक्वता

आत्मिक परिपक्वता अच्छी अगुआई के लिए अनिवार्य है। एक नए विश्वासी या चेले को अगुआई में नहीं धकेला जाना चाहिए। एक पौधे को भी जड़ पकड़ने और बड़ा होने में समय लगता है, और प्रक्रिया को तेज नहीं किया जा सकता है। बीच जो नीचे जड़ बनानी है इससे पहले वह फल ला सके। नए चेलों में "नीरस जीवन की भरपूरता" होती है परन्तु वे "अभी क्रूस के द्वारा छाँटे नहीं गए हैं।" 1 तीमुथियुस 3:10 में, डीकनों की योग्यताओं के विषय में बात करते हुए, पौलुस कहता है, वे "पहले परखे जाएँ।"

इफिसुस की कलीसिया जब तीमुथियुस इसका पास्टर बना था एक दशक पुरानी थी। इस कलीसिया में गुणी शिक्षकों की एक विशिष्ट मंडली थी, इसलिए वहाँ परिपक्व अनुभव वाले अनेक पुरुष थे; इसलिए पौलुस आग्रह करता है कि नया सेवक परिपक्व हो - दूसरों जितनी उम्र का नहीं परन्तु उनके समान आत्मिक रूप से अनुभवी और फलवन्त। पौलुस आग्रह नहीं करता कि क्रेते में नई कलीसिया की अनुआई के लिए परिपक्वता एक विशेषता होनी चाहिए (तीतुस 1:5-9), जहाँ अभी तक परिपक्व सदस्य नहीं थे। कलीसिया को बनाने की प्रारंभिक अवस्थाओं में, हम परिपक्वता पर बल नहीं दे सकते, परन्तु हमें हर सम्भव ध्यान रखना होगा कि जो काम कर रहे हैं चरित्र में स्थिर, दृष्टिकोण में आत्मिक हों, और पद के अभिलाषी न हों।

पौलुस चेतावनी देता है कि एक व्यक्ति जो अगुआई के लिए तैयार नहीं है, परन्तु डाल दिया जाता है "अभिमान करके शैतान का दण्ड पाए और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो।" (1 तीमुथियुस 3:6)। एक नए विश्वासी में अभी वह आत्मिक स्थिरता नहीं है जो लोगों की समझदारी के साथ अगुआई करने में मूलभूत होती है। उन्हें मुख्य पद देना नासमझी होगा जो आशाजनक निपुणता दिखाते हैं, ऐसा न हो यह उन्हें बिगाड़ दे। कलीसिया और इसके असफल मिशन की कहानी असफल अगुवों के उदाहरणों से भरी हुई है जिन्हें बहुत जल्द नियुक्त कर दिया गया था। एक नया चेला जिसे दूसरों पर अचानक अधिकारी बना दिया जाता है गर्वित अह्म के संकट का सामना करता है। बदले में, होनहार विश्वासी को दीन और कम महत्त्व के स्थानों में सेवा करने का अवसर दिया जाना चाहिए जिससे उसके स्वाभाविक और आत्मिक वरदान विकसित होंगे। उसे शीघ्रता से आगे नहीं बढ़ाना चाहिए, ऐसा न हो अभिमान से फूल जाए। न ही उसका दमन करना है, ऐसा न हो वह निराश हो जाए।

पौलुस ने अपनी पहली मिश्नरी यात्रा में एल्डर नियुक्त नहीं किए थे। वह कभी-कभी बाद के समय की प्रतीक्षा करता था जब आत्मिक विकास के प्रश्न हल हो गए होते थे (14:23)। तीमुथियुस ने पौलुस की पहली यात्रा के दौरान उद्धार पाया था, परन्तु उसे दूसरी यात्रा तक नियुक्त नहीं किया गया था।

परिपक्वता को एक उदार आत्मा और विस्तृत दर्शन में दिखाया गया है। पौलुस की मसीह के साथ मुलाकात ने उसे एक संकीर्ण कट्टर से एक बड़े हृदयवाला अगुवा बना दिया था। अन्तर्निवासी मसीह ने दूसरे के लिए उसके उत्साह को बढ़ा दिया, संसार का उसका दृष्य बड़ा किया, और उसके दृढ़ निश्चयों को गहरा कर दिया।

मसीही कलीसिया में अगुआई की ऊपर दी माँगों के महत्त्व को संसार में भी पहचाना गया है। एक अविश्वासी ने क्षेत्र कमाण्डर का वर्णन किया है: "उसे बुद्धिमानी से संयमी, सन्तुलित, मिताहारी, परिश्रम में दृढ़, समझदार, धन का प्रेमी नहीं, न जवान न बूढ़ा, यदि सम्भव हो तो एक परिवार का पिता, बोलने में योग्य और सुनाम वाला होना चाहिए।" यदि संसार इसके अगुवों से ऐसे स्तर की माँग करता है तो जीवित परमेश्वर की कलीसिया को इसके अगुवों को अधिक सावधानी के साथ चुनना चाहिए।

पश्च-लेख

स्वेच्छा से जिम्मेवारी लेना एक अगुवे का चिन्ह है। यहोशू एक ऐसा ही व्यक्ति था। वह सारे इतिहास के एक सबसे महान अगुवे, मूसा के पीछे चलने से हिचका नहीं। यहोशू के पास मूसा से अधिक अपर्याप्तता की सफाई देने के कारण थे, परन्तु उसने मूसा के पाप को दोहराया नहीं। बदले में, उसने जो काम उसे दिया गया उसे तत्परता के साथ ले लिया और काम करने लगा। जब एलिय्याह को उठा लिया गया, तब एलीशा उसका स्थान लेने से हिचका नहीं। उसने गिर रही चादर के अधिकार को ले लिया और व्यक्तिक अधिकार वाला अगुवा बन गया। हर मामले में ये अगुवे उनके बुलावे में ईश्वरीय आश्वासन पाए थे। एक बार जब यह मामला तय हो जाता है, तब किसी को भी वह करने के लिए हिचकना नहीं है जिसे परमेश्वर ने उसके सामने रखा है।

एक विख्यात बिशप एक अलग युग में रहता था, परन्तु जीवन के उसके नियम आज भी उपयुक्त हैं:

- दिन के मुख्य काम प्रार्थना और बाइबल अध्ययन समाप्त करके उत्सुकता के साथ आरम्भ करो।
- अपनी व्यस्तता या समय की कमी पर कुड़कुड़ाओ मत, परन्तु अपने चारों ओर समय मोल लो।
- कभी भी कुड़कुड़ाओ मत जब पत्र लाए जाते हैं।
- काम के विषय में बढ़ा-चढ़ाकर मत बताओ जैसे कि इसके बोझ से तकलीफ में हो, परन्तु सब जिम्मेवारियों को स्वतन्त्रता और प्रसन्नता के साथ निभाओ।
- कभी भी बहुत काम या तुच्छ अनुभवों की शिकायत मत करो।
- सामना या निन्दा से पहले, व्यक्ति के लिए परमेश्वर से प्रेम की माँग करो। तथ्यों को जानो; अपने निर्णय में उदार बनो। अन्यथा, आपकी अच्छी नियत वाली निन्दा कितनी प्रभावहीन, कितनी नासमझ या सम्भवतः उत्तेजक हो सकती है।
- सब कुछ जो सुनते हो उसका विश्वास मत करो; गपशप मत फैलाओ।
- पिछली सेवा के लिए प्रशंसा, कृतज्ञता, सम्मान, या आदर मत खोजो।
- शिकायत करने से बचो जब आपकी सलाह नहीं ली जाती है, या सलाह ली जाने पर, काम में नहीं लाई जाती।
- कभी भी किसी दूसरे के विपरीत अपने आप को अनुकूल स्थान पर मत रखने दो।
- अपनी आवश्यकताओं और चिन्ता के विषयों पर बातचीत मत लाते रहो।
- न उपकार, न सहानुभूतियाँ खोजो; कोमलता की माँग मत करो, परन्तु जो आता है स्वीकार करो।
- दोष सहो; इसे न बाँटो या न अंतरित करो।
- परमेश्वर का धन्यवाद करो जब आपके काम या विचारों का श्रेय दूसरे को दिया जाता है।

बाइबल के आत्मिक अधिकार को समझना

अध्याय एक - राज्य का अधिकार

हम ज्योति और अन्धकार के बीच सबसे बड़े संघर्ष के समय में आ पहुँचे हैं जिसे संसार ने पहले कभी देखा है। यह युगों का युद्ध है। यह डरने का समय नहीं है। हम उस झंडे के नीचे खड़े हैं जो पहले ही जीत चुका है। क्रूस परमेश्वर की सामर्थ्य है, और उसकी सामर्थ्य पृथ्वी पर प्रकट होने वाली है जैसी पहले कभी नहीं हुई है। यह परम वचनबद्धता लेने का समय है कि क्रूस के बैरियों के सामने से कभी पीछे नहीं हटेंगे। यीशु मसीह का क्रूस इसके सारे शत्रुओं पर विजयी होगा, और हम उस समय पर पहुँच रहे हैं जब इसे प्रकट किया जाएगा।
प्रभु ने कहा था, "कटनी जगत का अन्त है" (मत्ती 13:39)। यह फसल उस सब की कटनी है जो बोया गया है, भला और बुरा दोनों। सबसे यशस्वी और सामर्थी कलीसिया शीघ्र ही सबसे गहरे अन्धकार का सामना करेगी। विभिन्न प्रकार के धार्मिक समूह और शिक्षाएँ और नए धर्म की शक्तियाँ रचनात्मक तरीके से बढ़ रही हैं, परन्तु प्रभु ने अपनी कलीसिया को इस दुष्ट आक्रमण का सामना करने के लिए बिना सामर्थ्य के नहीं छोड़ा है। "जब शत्रु महानद के समान चढ़ाई करेगा तब यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा" (यशायाह 59:19)। जैसे शैतानी अलौकिक शक्तियाँ बढ़ रही हैं, कलीसिया को दी गई अलौकिक सामर्थ्य और भी बढ़ रही है। सांसारिक धर्मों को मसीही अगुवों के विषय में अलौकिक प्रकटीकरण मिलने लगे हैं ताकि वे उन पर क्रमबद्ध आक्रमण कर सकें। प्रभु शत्रु की युक्तियों का पता लगाने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा कर रहा है ताकि इससे पहले शत्रु अपनी योजनाओं को साकार कर सके कलीसिया उस पर धावा बोल दे। यह अधिक बारम्बार हो रहा है और जो इस सेवा के लिए खुले हैं उन्हें युद्ध में महत्त्वपूर्ण लाभ मिलता है।

हमें शत्रु की ओर आँखें बंद करके नहीं बैठना है। प्रभु आक्रमण के लिए एक सेना खड़ी कर रहा है, जो शत्रु के गढ़ों पर परमेश्वर की ओर से सामर्थी हथियारों के द्वारा आक्रमण करेंगे। हमें सांसारिक धर्मों के सामने काँपना नहीं है, बल्कि उन्हें फसल के रूप में देखना है। परन्तु जैसे हम इस युग की समाप्ति की ओर बढ़ेंगे, ज्योति और अन्धकार के बीच संघर्ष अधिक अलौकिक होता जाएगा। अलौकिक निष्क्रियता का समय समाप्त हो गया है। यदि हम परमेश्वर के आत्मा के सामर्थ्य को नहीं जानते तो हम दुष्ट की शक्ति के अधीन होते जाएँगे। जो उनके डर या सिद्धान्तों के कारण परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ्य से दूर रहे हैं, अपने आप को और उनके बच्चों को दुष्ट की अलौकिक शक्ति का शिकार होता पाएँगे। हमें युद्ध की प्रकृति को समझना है, और जीतने के लिए लड़ना है। हम उस समय में आ पहुँचे हैं जब शैतान और उसकी दुष्ट सेना को स्वर्ग से निकाला जा रहा है और बड़े रोष के साथ पृथ्वी पर आ रहे हैं। वे ठीक तरीके से नहीं लड़ेंगे और वे मानवीय शर्तों के अनुसार नहीं लड़ेंगे - वे उनकी सारी शक्ति के साथ लड़ेंगे। कलीसिया को भी इस युद्ध में प्रभावशाली तरीके से लड़ने के लिए सारी सामर्थ्य को लेना है जो प्रभु ने उसको दी है।

मनुष्यों को अलौकिक में चलने के लिए बनाया गया था

मनुष्यों को परमेश्वर के साथ जो आत्मा है संगति करने के लिए बनाया गया था। जो उसकी आराधना करते हैं केवल आत्मा और सच्चाई में ही उसकी आराधना कर सकते हैं। क्योंकि मनुष्य की सृष्टि का उद्देश्य परमेश्वर के साथ जो आत्मा है संगति करना है, और आत्मा में उसकी आराधना करना है, इसलिए उसके भीतर एक शून्यस्थान है जो उसे आत्मिक और अलौकिक की ओर खींचता है। यदि यह सत्य के आत्मा द्वारा नहीं भरता तब हम भ्रम की आत्मा द्वारा धोखा खाएंगे। मनुष्य का आत्मिक शून्यस्थान भरेगा। जैसे किसी ने कहा, "यदि तुम एक मनुष्य को भोजन नहीं दोगे, तो वह ज़हर निगल लेगा।" यदि हम मनुष्यों को परमेश्वर के साथ सही अलौकिक सम्बंध से रोक देंगे तब वे दुष्ट अलौकिक सामर्थ्य के दमन या प्रलोभन का शिकार बन जाएँगे।

परीक्षा

परमेश्वर मनुष्यों को लुभाता नहीं है, परन्तु वह उन्हें परखता है। परीक्षाएँ पदोन्नति के लिए होती हैं। जैसे आपको परीक्षा में सफल होने पर स्कूल की अगली कक्षा में भेजा जाता है, उसी प्रकार हमारे जीवनों में परमेश्वर परीक्षाएं भेजता है ताकि वह हम पर अधिक आत्मिक अधिकार के लिए भरोसा कर सके। परीक्षाएं प्रभु के लिए नहीं हैं। वह पहले से जानता है हमारे हृदय में क्या है। वे हमारे लिए हैं। परीक्षाएँ केवल हमारे हृदयों में क्या है प्रकट करने के लिए नहीं हैं, बल्कि हमारे हृदयों को बदलने के लिए हैं। परीक्षाएँ हमें मालिक के इस्तेमाल के योग्य पात्र बनाती हैं। एक प्रमुख परीक्षा जिसमें हर उस व्यक्ति को सफल होना है जिसे सच्चे आत्मिक अधिकार में चलने के लिए बुलाया गया है अस्वीकरण की परीक्षा है।

अस्वीकरण परीक्षा स्वयं प्रभु के लिए सबसे कठिन परीक्षा रही होगी। न केवल उसने अपने लगभग सब चेलों का परित्याग सहा, बल्कि उसे पिता द्वारा त्यागा जाना भी सहना पड़ा था जब उसने संसार के पापों को उठाया था। जिसे अधिकार के सबसे ऊँचे पद के लिए बुलाया गया था सबसे कठिन अस्वीकरण परीक्षा सहनी पड़ी थी। यह इसलिए है क्योंकि **अधिकार मूल रूप से है कि हम दूसरे लोगों, और प्रभु के साथ कैसे सम्बंध बनाते हैं, जब हमें सामर्थ्य और प्रभाव दिया गया है।** यह परीक्षा उन्हें जो सच्चे रहेंगे क्योंकि उनके हृदय सच्चे हैं उनसे अलग करेगी जो तब तक आज्ञाकारी रहते हैं जब तक ऐसा करना सुविधाजनक है। जितने अधिक अधिकार में हमें चलने के लिए बुलाया जाएगा, उतनी बड़ी यह परीक्षा हमारे जीवन में होगी।

सारा अधिकार, सामर्थ्य और राज्य प्रभु यीशु को दिया गया है, क्योंकि वह पूर्ण रूप से आज्ञाकारी था। हमें उतना अधिकार, सामर्थ्य और राज्य सौंपा जाएगा जितने हम आज्ञाकारी हैं। यीशु की सच्ची सेवा सामर्थ्य की सेवा है। वह "आरम्भ से करता और सिखाता रहा" (प्रेरितों 1:1)। हमें उसके समान होने और उन कामों को करने के लिए बुलाया गया है जिन्हें उसने किया है। हमें यह करने के लिए सामर्थ्य चाहिए। यह सामर्थ्य सौंपे जाने के लिए हमें विश्वासयोग्य सिद्ध होना होगा। हमें सत्य को मानुष्य की स्वीकृति या प्रशंसा से अधिक प्रेम करना होगा। हमें इसे अपने जीवनों से भी अधिक प्रेम करना होगा। सामर्थ्य में एक भ्रष्ट करनेवाली शक्ति होती है। अकसर कहा गया है, "अधिकार भ्रष्ट करता है, परम अधिकार पूर्णतया तरह भ्रष्ट करता है।" इसमें सच्चाई है, और इसीलिए इससे पहले हमें असली अधिकार सौंपा जाए, हमें पूरी तरह परखा जाना अवश्य है।
इस समय संसार के धर्मों के द्वारा भी नकली सामर्थ्य दिखाया जा रहा है। वे अलौकिक अनुभवों पर बल देते हैं जिनका आरम्भ शैतानी है, और वे बाइबल के अनुभवों का प्रतिरूप दिखाते हैं। वे उस सामर्थ्य की नकल करते हैं जिसमें परमेश्वर के लोगों को चलने के लिए बुलाया गया है। निस्संदेह, नकली रुपया इसीलिए है क्योंकि असली रुपया है। शैतान इसे अपने कारणों से इस्तेमाल कर रहा है परन्तु प्रभु इसे उनकी परीक्षा के लिए इस्तेमाल होने दे रहा है जिन्हें उसकी अन्तिम दिन की सेवा करनी है। शैतानी कार्य की बढ़ती इसीलिए है क्योंकि असली भी बढ़ रहा है। यह कलीसिया को उलझन में डालने के लिए है ताकि वह असली वरदानों और अनुभवों को अस्वीकार करे। शैतान जानता है कि ये वरदान इस अन्तिम घड़ी में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कितने प्रभावशाली हैं। शैतान इन शैतानी कार्यों के द्वारा उन मसीहियों को बहकाने का प्रयत्न कर रहा है जिन्हें अधिकार में चलने के लिए बुलाया गया है, परन्तु जिन्हें कलीसिया अस्वीकार करती या गलत समझती है और जो पवित्र आत्मा के सामर्थ्य को जानते या समझते नहीं। जो अस्वीकरण परीक्षा में अच्छा नहीं करते शत्रु द्वारा बहकाए जाने के खतरे में हैं।

अस्वीकरण परमेश्वर के हर पुरुष और स्त्री को आता है। वह अपने सेवकों पर इसे आने देता है ताकि वे उसके साथ पूर्ण रूप से सम्बंध बना सकें। सबसे महान और पवित्र मनुष्य जो कभी इस पृथ्वी पर चला है निरन्तर अस्वीकार किया गया, निन्दा किया गया, झूठ बोला गया, और अन्त में अपने मित्रों द्वारा विश्वासघात किया, इन्कार किया और त्यागा गया था। जैसे उसने समझाया, चेले गुरू से बड़े नहीं होते; यदि यह उसके साथ हुआ है तो हमारे साथ भी होगा। परन्तु यह अवसर हमारा है! सबसे बड़े अन्याय के द्वारा सबसे बड़ा प्रेम दिखाया जा सकता है। हम में से कितने हैं जिन्हें यदि पता होता कि अगले दिन हमारे सब प्रिय मित्र कहने वाले हैं कि वह हमें जानते ही नहीं, अन्तिम शाम उनके साथ बिताना चाहेंगे? उसने उनके पाँव भी धोए। यीशु ने अपनों से उनके व्यवहार के बावजूद प्रेम किया। वह तब भी विश्वासयोग्य रहा जब वे नहीं रहे। हमें तब ही परमेश्वर के प्रेम में बढ़ने का सबसे बड़ा अवसर मिलता है जब हम अस्वीकार किए या दुर्व्यवहार किए जाते हैं। यीशु ने पिता से उन्हें क्षमा करने को कहा जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था। स्तिफनुस ने वह क्षमा उनके लिए माँगी जिन्होंने उस पर पत्थरवाह किया था।

परमेश्वर प्रेम है और जो उसके आत्मा से सेवा करेंगे प्रेम में सेवा करेंगे। जितना बड़ा प्रेम होगा, उतना बड़ा सामर्थ्य हमें सौंपा जा सकता है। परमेश्वर हमें हमारे अपने बुरे अभिप्रायों से अलग करने और उसके प्रेम में बढ़ने का हमें अवसर देने के लिए हमारे जीवनों में अस्वीकरण भेजता है। यदि हम अस्वीकरण महसूस करें जब लोग हमें अस्वीकार करते हैं तब हम इस संसार के लिए मरे नहीं हैं - मरे हुए मनुष्य के लिए अस्वीकरण महसूस करना असम्भव है! (वह चुभन महसूस नहीं करेगा!) अस्वीकरण सच्ची सेवा के साथ आता है और अस्वीकरण सच्ची सेवा में सेवा करने का एक सबसे बड़ा अवसर भी है, जो है परमेश्वर का सच्चा प्रेम दिखाना। बिना नाराज़ हुए अस्वीकरण को सम्भलने की योग्यता आत्मिक परिपक्वता का सबसे बड़ा प्रदर्शन है, जो है मसीह समान होना।

कई जिनको परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ता होने के लिए बुलाया गया था शत्रु ने बहका लिआ है, क्योंकि उन्होंने बाकी की मसीह की देह की सुरक्षा और आवरक लेने से इन्कार किया। उन्होंने कलीसिया के आवरक को अकसर अस्वीकार किया है क्योंकि कलीसिया की अगुआई ने उन्हें गलत समझा और कभी-कभी अस्वीकार भी किया। एक बार फिर, प्रभु इस गलतफहमी को आने देता है क्योंकि अस्वीकरण और अधिकार के साथ उचित रूप से निपटना सीखना किसी के लिए भी जो विस्मयकारी सामर्थ्य और अधिकार इस्तेमाल करने वाला है अत्यावश्यक है। जिसे कलीसिया में आजकल "आत्माओं की परख" कहा जाता है उसका

अधिकाँश असल में संदेह है, जो अकसर ईर्ष्या या अपने क्षेत्र को सुरक्षित रखने से प्रेरित होता है। यही कारण है कि क्यों इतने सारे अच्छे और सच्चे सेवकों पर दूसरे मसीही कीचड़ उछालते हैं। प्रेम के अलावा कुछ भी हमारे परखने को बिगाड़ सकता है, इसी कारण से पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा, "तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए" (फिलिप्पियों 1:9)।

परमेश्वर प्रेम है, और यदि हम उसकी ओर से बोलनेवाले हैं तो हमें उसके प्रेम में बने रहना होगा। उसका प्रेम कभी-कभी कठोर होता है; कभी-कभी उसका प्रेम अनुशासन लाता है, परन्तु यह फिर भी उसका प्रेम है। परमेश्वर का न्याय भी उसके प्रेम का प्रदर्शन है। हमारे पास उन्हीं क्षेत्रों में सच्चा आत्मिक अधिकार होगा जहाँ उसने हमें अपना प्रेम दिया है। केवल तब ही जब हम उसके प्रेम की बुनियाद से सेवा करेंगे हमारी सेवा सच्ची होगी।

रोमियों 11:29 कहता है: "क्योंकि परमेश्वर के वरदान और बुलाहट अटल हैं।" प्रभु विश्वासयोग्य होता है तब भी जब हम विश्वासघाती होते हैं। जब प्रभु एक वरदान देता है तो वह इसे वापस नहीं लेगा, चाहे हम विश्वासघाती हो जाएँ या इसका दुरूपयोग करें। इसी लिए जिन पुरुषों के पास चंगाई या चमत्कार के वरदान होते हैं, पाप में गिरने या भ्रष्ट होने पर भी वरदान काम करते रहते हैं। यही बात आत्मा के भविष्यसूचक वरदानों के विषय में भी सत्य है। इसी कारण से यह संकटपूर्ण है कि हम एक सेवा का निर्णय वरदान से नहीं, परन्तु फल से करें। इसलिए जो सामर्थ्य और प्रकटीकरण के वरदानों में काम करते हैं और अस्वीकरण या विद्रोह से पीड़ित हैं, परमेश्वर के वरदान को परमेश्वर के काम में फूट और क्षति ला सकते हैं। यह एक गतिशील है जिसे समझना कठिन हो सकता है, परन्तु प्रभु की विश्वासयोग्यता के कारण आवश्यक है।

पुराने नियम में यदि एक याजक के शरीर में कुकरी होती थी तो वह सेवा नहीं कर सकता था (लैव्यव्यवस्था 21:20 देखो)। एक कुकरी एक कच्चा घाव है। कुकरी वाले व्यक्ति को कोई भी छू नहीं सकता था। यही हमारे लिए भी सत्य है; जब हम में कच्चे आत्मिक घाव होते हैं तब दूसरे हमारे निकट नहीं आ पाते हैं और हम सच्ची सेवा नहीं कर सकते हैं। हम में से अधिकाँश ने उनको देखा है जो उनके अस्वीकरण, कटुता या किसी दूसरे कच्चे घाव से प्रचार, भविष्यद्वाणी या सेवा करते हैं - यह उनकी सेवा की भ्रष्टता है। जब तक हम बिना चोट खाए अस्वीकरण और दूसरे अन्यायों को सम्भाल नहीं पाते, हम सच्चे याजकपन के लिए तैयार नहीं हैं जो सब सच्ची सेवा की नींव है।

आत्मिक अधिकार की नींव

पौलुस ने तीमुथियुस को समझाया: "आज्ञा का सारंश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो" (1 तीमुथियुस 1:5)। पौलुस ने कुरिन्थियों को उपदेश दिया कि "आत्मिक वरदानों की धुन में रहो" (1 कुरिन्थियों 14:1), परन्तु उसने उन्हें कभी नहीं कहा कि वे वरदानों को उनका अन्तिम लक्ष्य बना लें। हमें आत्मा के वरदानों और सामर्थ्य की आवश्यकता है, और कलीसिया को उनकी उससे कहीं अधिक आवश्यकता जितना वह अभी जानती है। फिर भी, हमें उनकी चोट खाए लोगों की सेवा के लिए आवश्यकता है, केवल अपनी सेवाएँ स्थापित करने के लिए नहीं, या बड़े बड़े सम्मेलन करने के लिए नहीं। जब हम लक्ष्य खो देते हैं, जो है प्रेम, एक शुद्ध हृदय, एक भला विवेक, और एक सच्चा विश्वास, तब हम ने अपना मार्ग खो दिया है।

आत्मा के सारे वरदान, और भविष्यद्वाणी भी, विश्वास के द्वारा काम करते हैं, और विश्वास प्रेम के द्वारा काम करता है (गलातियों 5:6 देखो)। सच्चा विश्वास केवल भरोसा नहीं है कि परमेश्वर कुछ चीजें कर **सकता है**, यह जानना भी है कि वह उन्हें **क्यों** करना चाहता है। डर विश्वास का उलटा है, परन्तु "प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" (1 यूहन्ना 4:18)। प्रेम उस सब को दूर कर देता है जो हमारे द्वारा, और हम में परमेश्वर के काम में बाधा डालता है। प्रेम वह नींव है जिस पर आत्मिक अधिकार, और उसके द्वारा, आत्मा के वरदान काम करते हैं। वरदानों को खोजना व्यर्थ होगा जब तक बनाने के लिए एक नींव न हो। नींव की शक्ति सामर्थ्य के स्तर को निर्धारित करेगी जो हमें सौंपा जा सकता है।

वरदान परमेश्वर का प्रेम हैं

यह एक सामान्य कहावत बन गई है कि हमें वरदानों को नहीं, परन्तु देनेवाले को खोजना चाहिए। यह अच्छा लगता है, परन्तु यह परमेश्वर के वचन के विरुद्ध है जो हमें उपदेश देता है कि "प्रेम का अनुसरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो" (1 कुरिन्थियों 14:1)। आत्मा के वरदान और प्रेम परस्पर निवारक नहीं हैं। हमें सबसे पहले प्रेम और आत्मा के फल का पीछा करना चाहिए, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमें वरदानों का पीछा नहीं रहना चाहिए - हमें दोनों का पीछा करना चाहिए।

परमेश्वर पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा अपना प्रेम हमें दिखाता है। हमें वरदानों की "धुन में रहना" चाहिए, और ऐसा इसलिए करना चाहिए क्योंकि हम प्रेम करते हैं। यीशु ने बीमारों को चंगा किया क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था और नहीं चाहता था कि वे बेकार में दुख उठाएँ। उसने ज्ञान के वचन दिए क्योंकि वह लोगों से प्रेम करता था और उन्हें इस सच्चाई से प्रभावित करना चाहता

था कि परमेश्वर उन्हें जानता है। आत्मा के वरदानों ने यीशु को, उसके प्रेम के साथ, कुछ करने की, केवल कुछ महसूस करने की ही नहीं, योग्यता दी। प्रभु ने वरदान कलीसिया को इसलिए दिए ताकि हम जरूरतमंद लोगों की सेवा करने के उसके प्रेम और इच्छा के विस्तार हों। यीशु ने उसके कुछ बड़े बड़े चमत्कार गुमनामी में किए थे, और फिर वह चंगे हुओं से कहता कि वे किसी को न बताएँ, परन्तु मन्दिर में जाएँ और परमेश्वर को धन्यवाद बलि चढ़ाएँ। यीशु ने आत्मा के वरदानों को लोगों को प्रभावित करने के लिए इस्तेमाल नहीं किया, परन्तु उनसे प्रेम करने के लिए, और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया।
यदि यीशु परमेश्वर के सामर्थ्य से लोगों को प्रभावित करना चाहता तब वह उन्हें स्वर्ग से एक चिन्ह दिखा सकता था जैसा यहूदियों ने माँग की थी। स्वर्ग से एक चिन्ह की माँग में, यहूदी एक चमत्कार की माँग नहीं कर रहे थे, परन्तु वे उसे आकाश में कुछ करने को कह रहे थे, यहोशू के समान सूर्य को रोकना, या यशायाह के समान परछाई को पीछे लौटाना। प्रभु ऐसा बड़ी सरलता के साथ कर सकता था, और यदि वह अपनी सामर्थ्य के द्वारा लोगों को प्रभावित करना चाहे तो आज भी कर सकता है। अपने सामर्थ्य के द्वारा लोगों को प्रभावित करना आत्मा के वरदानों का मुख्य कारण नहीं है - लोगों के लिए प्रेम उनका मुख्य कारण है।
शैतान ने यीशु को उकसाने का प्रयत्न किया था कि वह परमेश्वर के सामर्थ्य को स्वार्थी कारणों से, या बताने के लिए कि वह कौन है इस्तेमाल करे। सच्चाई तो यह है कि जो सामर्थ्य दिया गया था बताने के लिए था कि वह कौन है, परन्तु यह निर्णायक था कि वह ऐसा अपने आप से न करे, परन्तु पिता को करने दे। यीशु का सारा ध्यान पिता की महिमा करने पर लगा था, और पिता का सारा ध्यान अपने पुत्र की महिमा करने पर लगा था - दोनों में से कोई भी अपनी महिमा करने का प्रयत्न नहीं कर रहा था।

प्रभु अपनी अलौकिक सामर्थ्य उसके वचन को और जिन्हें उसने भेजा है उनको सत्य सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल करता है, परन्तु हमें ऐसा करने के लिए उस पर भरोसा करना है। जब कभी हम अपनी सेवाओं को प्रमाणित करने के लिए वरदानों की खोज करते हैं, हम अनुग्रह से गिरने के जोखिम में हैं। हमें यीशु की गवाही देने और उसके नाम को महान करने में अपने आप को देना है, और हमारी सेवाओं की पुष्टिकरण पूरी तरह उस पर छोड़ देना है।

कई लोग एक चमत्कार खोजते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि चमत्कार किस प्रकार अविश्वासी रिश्तेदारों और मित्रों को प्रभावित करेंगे। यह सत्य है कि कुछ चमत्कार अविश्वासियों को प्रभावित करेंगे, परन्तु अधिकाँश प्रभावित नहीं होंगे, चाहे वे कितने ही प्रभावशाली क्यों न हो। यीशु के लाज़र को मरे हुओं में से जीवित करने के बाद भी यहूदी उसे और अधिक मारना चाहते थे। जब अविश्वासी चमत्कारों द्वारा प्रभावित हों तो अच्छा ही है, परन्तु यदि हम केवल लोगों को प्रभावित करने के लिए चमत्कार या सामर्थ्य खोजते हैं तो हम बात को समझे नहीं हैं। मैं ने बिरले ही प्रभु को एक बड़ा चमत्कार करते देखा है जब मुख्य अभिप्राय यही था।

सच्ची परिपक्वता प्रेम है

हम अस्वीकरण और हलतफहमी द्वारा परखे जाते हैं ताकि हम अस्वीकरण को जीत सकें। यदि हमें परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना है, तो हमें परिपक्वता के उस स्तर पर आना होगा जहाँ "मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है" (2 कुरिन्थियों 5:14)। प्रेम हमारे साथ किए गुए अपराधों को हिसाब में नहीं लेता है और न ही अस्वीकरण से प्रेरित होता है, जो हमें बदला लेने या प्रमाणित करने में ले जाता है।
जो आत्मिक वरदान प्रेम द्वारा प्रेरित नहीं हैं वे "ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ" हैं (1 कुरिन्थियों 13:1)। आत्मा के वरदान जो प्रेम में आधारित नहीं हैं अकसर कोलाहलपूर्ण हैं। वे धूमधाम और कृत्रिम उत्तेजना से आते हैं, और आत्मोन्नति पर आधारित होते हैं। एक ठनठनाता पीतल या झंझनाती झाँझ भी एक असली तुरही की आवाज सुनने नहीं देंगे। परन्तु जो मसीह के प्रेम के वश में है केवल एक धुन में लगा होगा कि किस प्रकार उसे महिमा पाते और आराधना होते देखे।
सच्चा प्रेम सहनशील और धैर्यवान है। कलीसिया को परिपक्वता और मसीह की आज्ञापालन में लाने का एक स्थान अवश्य है। यह भविष्यसूचक सेवा का मूल काम है, परन्तु इसे प्रेम में, न कि अधीरता या अनुदारता में किया जाना चाहिए। हमें कभी-कभी देखना चाहिए कि पाँच, दस, पंद्रह वर्ष पहले हम कहाँ थे। क्या हम उनके साथ अधीर हो रहे हैं जो उन्हीं स्तरों पर हैं जहाँ हम उस समय थे? क्या हम लोगों को उस से कम अनुग्रह दे रहे हैं जो प्रभु ने हमें दिया था?
अधिकाँश कलीसिया अपरिपक्व है क्योंकि इसे अपरिपक्व होना चाहिए! एक दो वर्ष का बच्चा अपरिपक्व है और उसे होना ही चाहिए। दो वर्ष के बच्चे को गतिया (डाइपर) पहना बिलकुल स्वीकार्य है। परन्तु यदि एक पंद्रह वर्ष वाला भी पहनता है तो कुछ समस्या है। मेरे दो वर्ष के बेटे को उन चीजों को करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए जो मेरा सात वर्ष का बेटा कर सकता है; उससे ऐसी परिपक्वता की अपेक्षा करना उसे परेशान करेगा, और असल में उसके विकास में रुकावट आ सकती है। मैं चाहता हूँ वह अपनी उम्र के अनुसार सीखे और परिपक्व हो, परन्तु मुझे उससे अधिक की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें कलीसिया के साथ भी

वैसा ही धैर्य रखना चाहिए। हमें पता लगाना चाहिए लोग कहाँ हैं और उचित शिक्षा और परिपक्वता में लाना चाहिए जो उसके अनुकूल है।

हर सेवा को जो कलीसिया को सज्जित करने में लगी हुई है सावधान रहना है कि कलीसिया पर व्यक्तिगत अपेक्षाएँ न डाले, बल्कि प्रभु को उसकी अपेक्षाओं के लिए खोजे। जो सेवक पिछले अस्वीकरणों से गुज़रे हैं और उनसे चंगाई नहीं पाई है, अकसर अगला काम इस दृढ़ता के साथ लेते हैं कि वे अपने आप को प्रमाणित करेंगे। इससे उनके ऊपर और उनके झुण्ड पर अवास्तविक दबाव आ सकता है, जो अधिक असफलताओं में चला जा सकता है। यह एक दुश्चक्र बन जाता है जिसके पीछे घायल लोगों की एक लम्बी कतार रह जाती है और एक सेवा भी जो या तो बहुत कटु हा या बहुत असुरक्षित है कि कार्य नहीं कर पाती। और, जब हम जानते हैं कि हमें हमारा आदेश ऊपर से मिला है, और कि पिता हमें जानता है, तब वास्तव में कोई अन्तर नहीं पड़ता दूसरे हमारे विषय में क्या सोचते हैं। यह स्वतन्त्रता किसी भी सेवक के लिए मूलभूत है। जब हम प्रभु के जूए के अलावा कोई दूसरा जूआ उठाए हुए हैं तो सेवा नहीं कर सकते हैं। हमें अपने आप को मनुष्यों की अपेक्षाओं को वश में नहीं करने देना है, अपनी अपेक्षाओं को भी नहीं करने देना है, केवल प्रभु की अपेक्षाएँ ही हमें वश में करें। वह हम से उसकी अपेक्षा नहीं करेगा जिसे करने की उसने हमें सामर्थ्य नहीं दी है।

यीशु ने सबसे बड़ा अस्वीकरण जिसे संसार ने जाना है या जानेगा अनुभव किया था। उसे उसी संसार ने अस्वीकार किया जिसे उसने आप बनाया था। वह प्रेम में, पीड़ितों को चंगा और छुटकारा देते आया, और उसने कभी भी पाप नहीं किया। फिर भी, उसने सबसे क्रूर और अपमानजनक मौत सही, और इसे उनके लिए ही सहा जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया। उसने सबसे बड़ी बुराई और सबसे बड़े अन्याय को लेकर क्षमा करने और उद्धार करने के अवसर में बदल दिया। प्रभु ने उन्हें भी वही आज्ञा दी जो उसके पीछे चले हैं - हमें उसी के समान अपने क्रूस हर दिन उठाने हैं। यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारे पास बुराई को भलाई से जीत लेने की सामर्थ्य होगी। हर बुराई जो की जाती है उसमें भलाई के द्वारा सन्तुलित करने की सामर्थ्य होती है जो मनुष्यों को उन में की बुराई से छुड़ाएगा। मसीह के सेवकों के रूप हमें अस्वीकार किया जाएगा, परन्तु हमें हर अस्वीकरण को परमेश्वर का प्रेम दिखाने के अवसर में बदल देना है।

चंगा करने का अधिकार

हम प्रभु के चोट खाने से चंगे हुए हैं। वही सिद्धान्त हमारे लिए भी सत्य है। उसी स्थान पर जहाँ हम चोट खाते हैं चंगा करने का अधिकार भी पाते हैं। यदि हमारे साथ दुर्व्यवहार हुआ है तो चंगाई पाने के बाद हम दूसरों को चंगा करने का अधिकार पाते जो वैसे ही चोट खाए हैं। जब हम चंगाई पाते हैं हम उस चीज में संवेदनशील रहेंगे। यह संवेदनशीलता बुद्धि बन जाती है ताकि हम उन्हें तुरन्त पहचान सकें जो हमारे समान दुख उठाते हैं। यह संवेदनशीलता हमें उस दया में सेवा भी करने देती है जो सच्ची सेवा के लिए अत्यावश्यक है।

इसी कारण से प्रभु ने हमें हमारे जीवनों में घाव आने दिए हैं - ताकि वह हमें उन स्थानों में चंगा करने का अधिकार दे सके। इसी लिए जब पौलुस के अधिकार पर संदेह प्रकट किया गया उसने अपने घावों और दुखों की बात की। अपनी परीक्षाओं को व्यर्थ न होने दो! वे असल में सोने से भी कीमती हैं। एकमात्र चंगाई की भला क्या कीमत लगाई जा सकती है? एक स्थान है जहाँ लोग प्रभु के प्रेम और दया को अस्वीकार करते हैं, अर्थात् वे सहायता से परे हो चुके हैं। यह यहूदा के साथ हुआ था। इस स्थान पर, परमेश्वर की दया का स्थान न्याय ले लेता है। परन्तु हमें समझना है कि "दया न्याय पर जयवन्त होती है" (याकूब 2:13)।

लोगों के साथ प्रभु का धैर्य अकसर उससे अधिक है जो हम निर्णय करने से पहले सहते हैं। जैसे लगभग हर माता-पिता दूसरे बच्चों के बदले अपने बच्चों के साथ अधिक धैर्य रखते हैं, प्रभु भी मनुष्यों के साथ अधिक धैर्य रखता है क्योंकि वे उसके बच्चे हैं। उसने उनके लिए उसके पुत्र को दुख उठाने और मरने भेजा क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। यदि परमेश्वर के पुत्र ने हमारी खातिर क्रूरता और अन्याय को सहा, तो हमें उसके इस महान उद्धार को देने के लिए कितना दुख उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए?

अध्याय दो - नकली आत्मिक अधिकार

जादू-टोना को जीतना एक मुख्य युद्ध है जिसका सामना लगभग सब को जो सेवा में हैं करना होगा। कई तो इस शक्ति के विषय में जो उनके विरुद्ध काम कर रही है जानते भी नहीं हैं, और इसलिए वे इससे अनावश्यक चोटें खाते हैं। बाइबल में इस युद्ध का एक सबसे महत्त्वपूर्ण मानवीकरण एलिय्याह और ईजेबेल - सर्वोत्कृष्ट नबी बनाम परम डायन - के संघर्ष में मिलता है। यह युद्ध

उनके लिए जिन्हें सेवा में बुलाया गया है इतना निर्णायक है कि इसका परिणाम तय करेगा कि वे उनके बुलावे को पूरा कर पाएँगे या नहीं। एलिय्याह ने भी इस युद्ध में ईजेबेल के साथ ऐसी बाधा सही कि उसे अपना अभिषेक दूसरे को देना पड़ा, और बाद में एलीशा को उन बहुत सारे कामों को समाप्त करना पड़ा जिन्हें परमेश्वर ने एलिय्याह को दिया था। उसने फिर भी बहुत कुछ पूरा किया और एक सबसे बड़ा भविष्यद्वक्ता था, जिसे आग के रथ में होकर स्वर्ग जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। फिर भी, उसने वह सब पूरा नहीं किया जो उसे करने को दिया गया था। हम ने चाहे कितना भी क्यों न किया हो, ईजेबेल की आत्मा हमें हमारे काम से रोकने के लिए हमारे विरुद्ध आएगी।

हम व्यर्थ में शत्रु की बड़ाई नहीं करना चाहते, और न ही बाइबल शत्रु से डरना सिखाती है, परन्तु हमें उसकी चालों को जानना और समझना चाहिए, नहीं हो हम उनके द्वारा हार सकते हैं। ईजेबेल की आत्मा उसका एक सबसे शक्तिशाली हथियार उनके विरुद्ध है जो आत्मिक अधिकार में चलते हैं, और यदि हम उस शक्ति का महत्त्व नहीं समझते तो यह हमें एक सबसे अनुपयुक्त समय पर भारी चोट पहुँचा सकती है। एलिय्याह के सबसे बड़ी विजय के तुरन्त बाद, जब उसने निडरता के साथ झूठे नबियों का सामना किया और सैकड़ों को घात किया था, इस एक स्त्री, ईजेबेल, ने कहा कि उस देख लेगी और एलिय्याह अपनी जान बचाकर भागता है। फिर उस पर ऐसी उदासी छा जाती है कि वह जीवित नहीं रहना चाहता। जो ईजेबेल की शक्ति को कम समझते हैं भयानक धक्का खाएँगे, और सम्भवतः भारी हार भी। मैं ने स्वयं इस भयानक छल-कपट द्वारा कई कलीसियाओं को नष्ट होते, और परमेश्वर के कई महान पुरुषों को तबाह होते देखा है।

जादू-टोना हाल के वर्षों में सारे संसार भर में फैल गया है। इस गति का एक स्पष्ट लक्ष्य बाइबल की मसीहियत को मन्द करना, वश में करना और नष्ट करना है। कई मसीहियों पर इस समय भी उनसे आक्रमण हो रहे हैं जो जादू-टोना करते हैं। इन आक्रमणों की प्रकृति को समझना और उन्हें कैसे हराना है जानना न केवल भविष्यद्वक्ताओं के लिए, वरन् सब विश्वासियों के लिए आवश्यक हो गया है। परन्तु जैसे एलिय्याह अपने समय में था, भविष्यद्वक्ता निस्संदेह इस युद्ध में आगे होंगे।

युद्ध में हमारी श्रेष्ठता

हमें शत्रु की युक्तियों से अनजान नहीं रहना है (2 कुरिन्थियों 2:11 देखो), बल्कि "सचेत हो और जागते रहो; क्योंकि हमारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर...उसका सामना करो" (1 पतरस 5:8-9)। शैतान की युक्तियों को समझने से युद्ध में हमें श्रेष्ठता मिलती है। प्रभु की ओर होने से अन्तिम विजय का आश्वासन मिलता है। कलीसिया जीतेगी और सुसमाचार आखिरकार विजयी होगा। हमारे सामने मामला यह है कि क्या यह हमारे द्वारा होगा, या क्या यह हमारे उत्तराधिकारी होंगे जो इस अन्तिम युद्ध को देखेंगे?

कलीसिया का सारा युग आत्मिक युद्ध का युग रहा है और जैसे जैसे अन्त निकट आ रहा है यह तेज होता जा रहा है। अब शैतान को स्वर्ग से निकाला और पृथ्वी पर फेंका जा रहा है जहाँ वह बड़े क्रोध के साथ आ रहा है। फिर भी, हमें डरने की कोई बात नहीं - जो हम में है वह उस से जो संसार में है बड़ा है। वह जो परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटा है उसमें मसीही विरोधी से अधिक सामर्थ्य है। परन्तु उसी प्रकार जैसे सबसे बड़ी विश्व शक्ति भी यदि शत्रु के आक्रमण को पहचानती नहीं छेद्य हो सकती है, हम भी छेद्य हैं यदि शैतान की युक्तियों को पहचानते नहीं। केवल एक ही तरीके से वह हमें हरा सकता है, हमारी अपनी आज्ञानता या आत्मसंतोष के कारण। जैसे हम मसीह में अपनी स्थिति बनाए रखते हैं, परमेश्वर के सारे हथियार पहनते और जागते रहते हैं, हम न केवल खड़े रहेंगे बल्कि अधोलोक के फाटकों पर विजयी भी होंगे।

जादू-टोना क्या है?

जादू-टोना मूल रूप से नकली आत्मिक अधिकार है; यह एक दुष्ट आत्मा को दूसरों पर शासन करने, चालाकी से प्रभावित करने या वश में करने में इस्तेमाल करना है। प्रेरित पौलुस ने जादू-टोना को शरीर का काम बताया है (गलातियों 5:20 देखो)। वैसे तो इसका आरम्भ पापी स्वभाव में नहीं है परन्तु यह अकसर शैतानी शक्ति में विकृत हो जाता है। जब दूसरों को प्रभावित करने के लिए भावात्मक दबाव इस्तेमाल करते हैं यह जादू-टोना का मूल प्रकार होता है। जब चाहे परमेश्वर के काम के लिए ही कृत्रिम उत्तेजना इस्तेमाल करते हैं, यह जादू-टोना है। जब व्यवसायी एक सौदा करने में दबाव डालने की चीजों को खोजते हैं, यह भी जादू-टोना हो सकता है। कई छलयोजनाएँ जिन्हें बिक्री युक्तियों के रूप में पेश किया जाता है जादू-टोना की मूल प्रकार है। यह एक कारण है कि क्यों न्यू एज मूवमेंट पेशावरों में प्रचलित हो रही है - वे इसी शक्ति को पहचानते हैं।

नकली आत्मिक अधिकार के विरुद्ध मूल सुरक्षा सच्चे आत्मिक अधिकार में चलना है। जादू-टोना को जीतना सरल है, परन्तु आसान नहीं है। यह परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने और उसका जूआ अपने ऊपर लेने जितना सरल है। इसी लिए प्रेरित पौलुस ने कलीसिया को चेतावनी दी, "परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन

उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 11:3)। हम मसीह की ओर भक्ति की सीधाई से बहकाए जा सकते हैं। जिसे हम "कैरिसमेटिक जादू-टोना" कहते हैं (यह किसी गति या लोगों के समूह के विषय में नहीं है), अकसर स्वार्थी आभिलाषा के द्वारा एक कलीसिया या सेवा में प्रवेश करता है। यह हमें, बनाने के लिए प्रयत्न करने पर विवश करता है, जिससे हम परमेश्वर के विश्राम से भटक जाते हैं, और अपने ऊपर ऐसे जूए ले लेते हैं जो उसके नहीं हैं।

परमेश्वर जो कुछ करने के लिए हमें देता है उसके लिए सामर्थ्य भी देता है। जो हम अपनी शक्ति से आरम्भ करते हैं अपनी शक्ति से बनाए रखना पड़ता है, जो दबाव, छलयोजना और नियंत्रण में ले जाता है। यदि हम जादू-टोना के प्रभाव से छूटना चाहते हैं तो हमें अपने जीवन सत्य पर बनाने होंगे और हमारे कामों को पूरे करने के लिए प्रभु पर भरोसा करना होगा।

अधिकार का सच्चा आधार

लिखा गया है कि यीशु दाऊद के सिंहासन पर बैठा है। यह निस्संदेह एक रूपक है क्योंकि यीशु उस सिंहासन पर नहीं बैठा है जिस पर दाऊद बैठा था। दाऊद ने सच्चे आत्मिक अधिकार की एक स्थान स्थापित किया था जिसमें से अन्त में परमेश्वर का राज्य निकला था। दाऊद ने आत्मिक अधिकार के लिए वह किया जो अब्राहम ने विश्वास के लिए किया था। दाऊद ने सच्चे अधिकार का आधार कैसे स्थापित किया था? उसने अपने लिए अधिकार लेने या प्रभाव खोजने से इन्कार किया, और जिस पद के लिए उसे चुना गया था उसमें उसे स्थापित करने के लिए पूरी तरह परमेश्वर पर भरोसा किया। दाऊद ने पहचाने जाने या प्रभाव पाने के लिए अपना हाथ नहीं उठाया, और न ही हमें उठाना है यदि हम सच्चे आत्मिक अधिकार में चलने वाले हैं।

कोई भी अधिकार या प्रभाव जिसे हम अपनी छलयोजना या आत्म-प्रदर्शन के द्वारा पाते हैं हमारे लिए ठोकर का कारण होगा, और परमेश्वर से एक सच्चा आदेश और अधिकार पाने की हमारी योग्यता में रुकावट डालेगा। यदि हम दाऊद के समान सच्चे आत्मिक अधिकार में चलने वाले हैं तो हमें पूरी तरह प्रभु पर भरोसा करना होगा कि वह हमें इसमें और अपने समय में स्थापित करे। जैसे पतरस ने उपदेश दिया है, "इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।" (1 पतरस 5:6)। हमारे बुलावे और सच्ची सेवा में चलने की सम्भावना के लिए समय से पहले प्रभाव या अधिकार खोजने से अधिक विध्वंसक और कुछ नहीं सकता है। अकाल सफलता एक सबसे खतरनाक बात है जो हमारे साथ घट सकती है। हालाँकि दाऊद को कई वर्ष पहले राजा होने के लिए बुलाया और अभिषेक किया गया था, वह पद पाने के लिए पूर्ण रूप से धैर्यवान था। दाऊद ने अपने आप को राजा नहीं कहा, उसने परमेश्वर को कहने दिया, और उसने धैर्य के साथ प्रतीक्षा की जब लोगों ने परमेश्वर की इच्छा को पहचाना। इसके विपरीत ईजेबेल "अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है" (प्रकाशित. 2:20)। हमें उस किसी से भी सावधान रहना है जो सेवा में अपनी पहचान बनाने की खोज में है।

जब प्रभु पदोन्नति करता है, तब वह अधिकार चलाने के लिए अनुग्रह और बुद्धि भी देता है। इससे बड़ी सुरक्षा और कोई नहीं कि परमेश्वर हमें जानता है और उसने हमारी सेवा स्थापित की है। जब हम एक स्थान बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं जिसे हम ने आत्म-प्रदर्शन या छलयोजना से पाया है तो यह शीघ्रता के साथ असुरक्षा लाता है, और यह ही मसीह की देह में प्रचलित क्षेत्रीय रक्षा और फूट की सम्भवतः मुख्य जड़ है। सच्चे आत्मिक अधिकार में स्थापित होना एक किला है जिस में शत्रु घुस नहीं सकता है। पौलुस ने समझाया कि, "शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा" (रोमियों 16:20)। जब हम जानते हैं कि हमें परमेश्वर ने स्थापित किया है तब हम में एक शान्ति होती है जो शत्रु को पूर्ण रूप से कुचल देती है। जिन्होंने अपने आप को अधिकार, या प्रभाव के स्थान पर रखा है शान्ति नहीं पाते। जितना अधिक हमारा गैर-कानूनी प्रभाव बढ़ेगा, उतना अधिक संघर्ष और छलयोजना इसे बनाए रखने के लिए लगेंगे। जो कुछ हम छलयोजना, कृत्रिम उत्तेजना या प्राण की शक्ति के द्वारा करते हैं, चाहे हमारे लक्ष्य कितने भी अच्छे या आत्मिक क्यों न हो, जादू-टोना के नकली आत्मिक अधिकार में किए जाते हैं और अन्त में असफल ही होंगे।

इसलिए, जादू-टोना के प्रभाव से छुटकारा पाने का पहला सिद्धान्त, उन सब तरीकों से मन फिराना है जिन्हें हम ने इस्तेमाल किया है। शैतान शैतान को नहीं निकाल सकता है। जादू-टोना का हमारे जीवनों में एक खुला द्वार होगा, यदि हम इसे एक स्थान पाने के लिए छलयोजना या नियंत्रण द्वारा इस्तेमाल कर रहे हैं।

हम इन तरीकों को कलीसिया बनाने के प्रयास के न्यायसंगत तर्क के रूप में इस्तेमाल कर रहे होंगे, परन्तु परमेश्वर को धोखा नहीं दिया जा सकता है और न ही शत्रु को। जिसे परमेश्वर बना रहा है उसे मनुष्य की शक्ति या बल से नहीं परन्तु उसके आत्मा से बनाया जाता है। जो कुछ भी हम किसी दूसरे साधन से बनाते हैं क्रूस का अपमान है और उसका विरोध करेगा जो आत्मा बना रहा है। शरीर आत्मा के विरुद्ध युद्ध करता है, चाहे हम शरीर को कितना भी अच्छा दिखाने का प्रयत्न क्यों न करें।

परख का वरदान

आत्माओं की परख का वरदान पवित्र आत्मा का एक मुख्य वरदान है जो हमें कलीसिया में प्रभाव के आत्मिक स्रोत का पता लगाने में योग्य करता है। जिसे हम आजकल "परखना" कहते हैं असल में संदेह है जो पवित्र आत्मा से अधिक आत्म-सुरक्षा के क्षेत्रीय आत्मा में आधारित है। यह इसलिए है क्योंकि अधिकाँश अधिकार जो आजकल कलीसिया में इस्तेमाल किया जाता है नकली है, जिसके कारण जो इसे इस्तेमाल करते हैं उनके साथ संघर्ष करते और उनसे डरते हैं जिन्हें वे वश में नहीं कर पाते।

सच्ची आत्मिक परख प्रेम में आधारित है जो है, "धीरजवन्त, कृपालु, डाह नहीं करता, अपनी बड़ाई नहीं करता, फूलता नहीं, अनरीति नहीं चलता, भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता, सब बातें सह लेता, सब बातों की प्रतीति करता, सब बातों की आशा रखता, सब बातों में धीरज रखता" (1 कुरिन्थियों 13:4-7)। कई सोचते हैं कि "सब बातों की प्रतीति करने, सब बातों की आशा रखने और सब बातों में धीरज रखने" में तत्परता परख से अधिक भोलेपन में ले जाएगा, परन्तु असल में इसका उलटा सही है। जब तक हम परमेश्वर की आँखों से नहीं देख रहे हैं हम स्पष्ट नहीं देख रहे और जो हम देख रहे उसका सही अर्थ नहीं निकाल सकेंगे। सच्ची परख केवल परमेश्वर के प्रेम से काम करती है। परमेश्वर के प्रेम को अपवित्र दया से उलझाना नहीं है जो उन चीजों को मंजूरी देता है जिनको परमेश्वर नामंजूर करता है। परमेश्वर का प्रेम पूर्ण रूप से शुद्ध है और शुद्ध और अशुद्ध में सरलता के साथ पता लगा लेता है, और यह सदा इसे सही कारणों से करता है। असुरक्षा, आत्म-सुरक्षा, कच्चे घाव, अ-क्षमा, कटुता, आदि उलझाएँगे और सच्ची आत्मिक परख को व्यर्थ करेंगे।

आत्मिक परिपक्वता

यदि हम आत्मा में, और सच्चे आत्मिक अधिकार में या एक सच्ची सेवा में चलना चाहते हैं, तो जैसा प्रभु ने किया था, अपने सतानेवालों को क्षमा करके, अस्वीकरण और गलतफहमी को जीत लेना सीखना होगा।
यदि हमें परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना है, तो हमें परिपक्वता के स्तर पर आना होगा जहाँ "मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है" (2 कुरिन्थियों 5:14)। प्रेम हमारे साथ गलत की गई चीजों का हिसाब नहीं रखता और न ही यह अस्वीकरण से प्रेरित होता है, जो हमें अपने आप को प्रमाणित करने के लिए बदले में ले जाता है, और सच्चे अधिकार में चलने से गिरा देता है।

आत्म-पदोन्नति भावी कहने में ले जाता है

अपने वरदान का अधिक समर्थन एक निश्चित चिन्ह है कि व्यक्ति की सेवा में दूसरी स्पष्ट समस्याएं हो सकती हैं, चाहे वरदान असली हो भी। एक भविष्यद्वक्ता जो अपने आप को बढ़ावा देता है प्रकटीकरण और बावी कहने के बीच की रेखा को पार कर जाएगा। सच्चा प्रकटीकरण उनको ही मिलता है जो प्रभु की ओर समर्पित और आज्ञाकारी हैं, इसके लिए संघर्ष करने से नहीं मिलता।

भविष्यसूचक अनुभव व्यक्ति की परिपक्वता या महत्त्व का प्रमाण नहीं देते। परिपक्व भविष्यद्वक्ता अनुभवों के बदले प्रभु के साथ सम्बंध और घनिष्टता खोजने में लगे रहेंगे। जो अनुभव पाने की खोज में रहते हैं उन्हें पाने में सफल होंगे परन्तु गलत स्रोत से पाएँगे। प्रकटीकरण एक सच्चे भविष्यद्वक्ता को बिना संघर्ष मिलेगा। एक सेब का पेड़ चिन्ता में नहीं रहता कि एक दिन में वह कितने सेब उत्पन्न करेगा; यदि यह असली सेब का पेड़ है तो सेब उगेंगे ही। परन्तु हमें खोजने और संघर्ष करने में अन्तर पता होना चाहिए। आत्मा के वरदानों को खोजना सही है, परन्तु इसका अर्थ नहीं कि हमें उनके लिए संघर्ष करना चाहिए। सच्चे खोजी, झुँझलाए हुए नहीं, परन्तु शान्त होंगे। मैं ने 25 वर्ष प्रार्थना की कि मैं पौलुस के समान तीसरे स्वर्ग में उठा लिया जाऊँ, तब मुझे उस स्तर पर पहुँचने के अनुभव होने लगे। हम विश्वास और धीरज के साथ प्रतिज्ञाओं को पाते हैं (इब्रानियों 6:12 देखो)। सच्चा विश्वास धीरज द्वारा दिखाई देता है (यशायाह 28:16)। विश्वास खोजता है, परन्तु यह परमेश्वर की बुद्धि में भरोसा करता और विश्राम करता है।

हर प्रभाव जिसे हम आत्म-पदोन्नति के द्वारा पाते हैं एक दिन हमारे लिए फँदा बन जाएगा। सारा रुपया या दूसरे साधन जिन्हें हम आत्म-पदोन्नति के द्वारा इकट्ठा करते हैं, असल में हमारी में जिसके लिए हमें बुलाया गया है ठोकर का कारण बनेंगे ।
जो कुछ भी संघर्ष और आत्म-पदोन्नति के द्वारा प्राप्त किया गया है इनके द्वारा ही चलाया रखना पड़ेगा, जो हमें उस स्थान पर सेवा करने से रोके रखेगा जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है, और यह उन्हें भी गुमराह करेगा जो भोलेपन से हमारे पीछे चलेंगे। छलयोजना और कृत्रिम उत्तेजना घातक शत्रु हैं, न केवल भविष्यद्वाणी की सेवा के, परन्तु हर सच्ची सेवा के भी। कोई भी जो सच्ची सेवा और सच्चे आत्मिक अधिकार को समझता है, थोड़ा सा भी प्रभाव नहीं लेना चाहेगा जिसे परमेश्वर ने नहीं दिया है।

मनुष्य का डर जादू-टोना में ले जाता है

राजा शाऊल एक अच्छा उदाहरण है कि कैसे एक व्यक्ति जिसके पास एक सच्ची सेवा और परमेश्वर से अभिषेक था, आत्मिक अधिकार, या जादू-टोना के नकली में गिर सकता है। जब उसे बलिदान चढ़ाने से पहले शमूएल की प्रतीक्षा करने को कहा गया था, वह दबाव में आ गया और समय से पहले बलिदान चढ़ा दिया। उसने कहा, "जब मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर-उधर हो चले हैं...और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठा हुए हैं" (1 शमूएल 13:11)। इसी स्थान पर कई मार्ग से गिर पड़ते हैं; जब हम परमेश्वर का भय खाने से अधिक लोगों से या परिस्थितियों से डरने लगते हैं, हम सच्चे अधिकार में चलने से गिर पड़ेंगे। जब हम परमेश्वर छोड़ जाएगा डरने से अधिक लोग छोड़ जाएँगे डरते हैं, तब हम सच्चे विश्वास से भटक गए हैं।

रेखा पार करना

यह ध्यान देने योग्य बात है कि शाऊल ने परमेश्वर को उन बलिदानों को चढ़ाकर अपराध किया जिन्हें चढ़ाने के योग्य वह न था। शाऊल बिन्यामीन के, न कि लेवी के वंश का था। जादू-टोना हमें इसी प्रकार, हमें हमारे निर्धारित अधिकार के क्षेत्र के परे जानेपर विवश करके, ठोकर खिलाता है। प्रेरित पौलुस ने बताया कि वह उस अधिकार के क्षेत्र के पर जाने का साहस नहीं कर सकता था जो क्षेत्र कुरिन्थुस तक जाता था। यह सीमा परमेश्वर ने उस समय उस पर रखी हुई थी, जो प्रत्यक्ष रूप से बाद में हटाई गई थी, परन्तु पौलुस ने ध्यान दिया था कि इसे पार न करे। जब हम उसके पार जाते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है तब हम उसके अनुग्रह के पार चले जाते हैं, और हम शत्रु के सरल निशाना बनते हैं। यदि शैतान आपको रोक नहीं सकेगा, तब वह आपको बहुत आगे धकेलने का प्रयास करेगा।
1980 के दशक में कुछ "महा-सेवाओं" के पतन का कारण यही था, परन्तु यह असंख्य छोटी सेवाओं का भी अन्त था जो उनके साथ बने रहने का प्रयास कर रही थीं। यह विश्वास के कुछ विकृत विचारों का अनिवार्य परिणाम था जो उस समय बढ़ाया जा रहा था। सच्चा विश्वास सदा बड़ा और बेहतर होने में ही दिखाई नहीं देता है, बल्कि कभी-कभी समाप्त करने में दिखता है, उसे भी जो परमेश्वर की एक प्रतिज्ञा थी, जैसे अब्राहम इसहाक को बलि करने लिए तैयार हुआ था।

यदि आपको 500 का अगुवा होने के लिए बुलाया गया है, और आप अपनी कलीसिया की उपस्थिति प्रोत्साहन और अच्छे बिक्रीकारी के द्वारा बढ़ा लेते हो, परन्तु यदि आप 5000 तक भी बढ़ जाते हो, फिर भी एक दिन आएगा जब कलीसिया विभाजित होगी और आप वापस वहीं पहुँच जाएँगे जिसके लिए आपके पास अभिषेक है। दिन आएगा जब किसी प्रकार की कृत्रिम उत्तेजना और प्राण की शक्ति भी आपके काम को उससे अदिक रख नहीं पाएँगे जिसके लिए आप के पास अनुग्रह है। जितना आपके पास अनुग्रह है उससे परे बनाए रखने का एक ही तरीका है कि आप, किसी श्रेणी तक, एक पंथ बन जाएँ।
जो असल में आत्मिक अधिकार को समझते हैं वे परमेश्वर के अनुग्रह की गहरी जानकारी रखते होंगे। उनका सबसे बड़ा डर उसके अनुग्रह से भटकना होगा। याकूब और पतरस दोनों इसे समझते थे, इसीलिए उन दोनों ने कहा, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है" (याकूब 4:6; 1 पतरस 5:5 भी देखो)। यह अभिमान है जो हमें उससे परे जाने पर विवश करता है जो करने के लिए परमेश्वर ने हमें नहीं बुलाया है। इस अभिमान का अन्तिम किस्म "मुझे-संसार-को-बचाना-होगा" मानसिकता है। हम जब मनुष्यों की आवश्यकताओं को देखते हैं तो एक असली दया अनुभव कर सकते हैं, परन्तु यह केवल मानवीय दया ही हो सकती है, और इसने हमें उस में चलने को बहका लिया है जिसमें प्रभु यीशु ने भी कहा वह नहीं चला है।

घातक फँदा

क्योंकि जादू-टोना मूल रूप से मनुष्य के भय में जमा हुआ है, और "मनुष्य का भय एक फँदा" (नीतिवचन 29:25), तो जो जादू-टोना में काम करते हैं फँसे हुए हैं - डर एक फँदा है। जितना बड़ा काम या सेवा जिसे हम ने कृत्रिम उत्तेजना, छलयोजना या नियंत्रण द्वारा बनाया होगा, उतना हम उस किसी से डरेंगे जिसे हम छल से वश में नहीं कर सकते हैं। जो इस घातक फँदे में फँसे हैं, वे उनसे डरेंगे जो सबसे अधिक सच्चे अभिषेक और अधिकार में चलते हैं, क्योंकि वे छलयोजना या नियंत्रण आत्माओं से बहुत कम प्रभावित होते हैं।

इसी कारण से शाऊल दाऊद पर क्रुद्ध हो गया था और उसे नष्ट करना चाहता था, हालाँकि दाऊद उस समय "मात्र एक कीड़ा" ही था। जैसे छलयोजना और नियंत्रण हमारे हृदयों में प्रभुता करते हैं, वैसे ही संविभ्रम भी करता है। जो इस घातक फँदे में फँसे हैं वे उनको निकालने या नष्ट करने की आग में भस्म होते जाते हैं जो उनके नियंत्रण के लिए खतरा हैं। जो उनका अधिकार, पहचान, या सुरक्षा मनुष्यों से पाते हैं, शाऊल के समान, डाइन के घर पहुँच जाएँगे। इसीलिए शमूएल ने शाऊल को चेतावनी दी थी कि,

"बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान है" (1 शमूएल 15:23)। जब जो आत्मिक अधिकार में है पवित्र आत्मा से विरुद्ध विद्रोह करता है, तो शून्यस्थान जादू-टोना के नकली आत्मिक अधिकार से भर जाएगा। यह कृत्रिम उत्तेजना और प्राण की शक्ति पर सरल भरोसे से आरम्भ हो सकता है, परन्तु यदि मन न फिराया गया हो तो सबसे शैतानी किस्म के हठ और विद्रोह में चला जाएगा, जैसा हम राजा शाऊल के उदाहरण में देखते हैं। शाऊल ने सच्चे याजकों का वध किया, उनको सताया जिनके हृदय सच्चाई से प्रभु के खोजी थे, और अपने जीवन की अन्तिम रात एक डाइन के घर बिताई जो उसके जीवन का जिस दिशा में वह जा रहा था स्वाभाविक परिणाम था।
आत्मिक अधिकार एक खतरनाक पेशा है। यदि हम, दाऊद के समान, बुद्धिमान हैं तो हम अधिकार का स्थान नहीं खोजेंगे, और तब तक लेंगे भी नहीं जब तक निश्चय न हो जाए कि यह प्रभु है जो दे रहा है। शैतान सबको उसी प्रलोभन से ललचाता है जिससे उसने प्रभु यीशु को ललचाया था; यदि हम उसके और उसके तरीकों के सामने झुक जाएँगे तो वह हमें राज्यों पर अधिकार देगा। परमेश्वर ने भी हमें राज्यों पर शासन करने के लिए बुलाया है, परन्तु उसका तरीका क्रूस को जाता है और तब ही प्राप्त हो सकता है जब हम सब के सेवक बनते हैं। शैतान का प्रलोभन हमें वह करने के लिए शीघ्र और सरल तरीका देना है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है।

सच्चे अधिकार की जिम्मेवारी

एक सबसे बारंबार होनेवाला बात जिसे दाऊद के जीवन में देखते हैं "उसने प्रभु से पूछा" है। कुछ बार जब दाऊद ने एक मुख्य फैसला बिना प्रभु से पूछे किया था, परिणाम विध्वंसक थे। यह केवल दाऊद ही नहीं था जिसने इस अहंकार के परिणाम भुगते थे, परन्तु उसके अधीन लोगों ने भी भुगते थे। जितना ऊँचा अधिकार का स्थान होगा उतना ही खतरनाक यह होगा, और अधिक लोग प्रतीयमानत: नागण्य फैसलों से प्रभावित होंगे। जब आदम गिरा था अरबों लोग प्रभावित हुए थे। अधिकार के साथ बहुत असली जिम्मेवारी आती है। केवल सबसे बुरा, भ्रष्ट व्यक्ति ही स्वार्थी कारणों से ऐसे अधिकार की लालसा करेगा। सच्चा आत्मिक अधिकार पाने के लिए कोई सम्मान नहीं है; यह उठाने के लिए एक बोझ है। कई जो अधिकार और प्रभाव खोजते हैं जानते नहीं वे क्या माँग रहे हैं, और कि उनकी अपरिपक्वता उनका सर्वनाश हो सकती है यदि यह उन्हें समय से पहले दिया जाता है।

हालाँकि दाऊद अनुग्रह के युग से एक हज़ार वर्ष पहले जीया था, फिर भी वह अनुग्रह के विषय में उतना ही अच्छा जानता है जितना कोई इस युग वाला जानता है। फिर भी, उसने गलतियाँ कीं जिनके लिए हज़ारों लोगों को जीवन गँवाने पड़े थे। सम्भवत: इसलिए क्योंकि सुलेमान ने अपने पिता का जीवन देखा था, उसने परमेश्वर के लोगों पर राज्य करने के लिए एक चीज जो माँगी थी बुद्धि थी। कोई भी जिसे कलीसिया में अगुआई के स्थान पर बुलाया गया है वैसी ही निष्ठा का व्यक्ति होना चाहिए। एक आत्मिक अधिकार के स्थान पर होने के बिना भी, अहंकार हमें मार सकता है। यदि हम अधिकार के स्थान में हैं तो यह हमें लगभग निश्चित रूप से हमारे पतन में ले जा सकता है, और कई दूसरों को भी पतन में ले जा सकता है। एक ज्ञान के वचन का वरदान सामर्थ्य का एक विस्मयकारी प्रदर्शन हो सकता है, और इसमें बहुत उत्तेजना भी होती है, परन्तु जिन्हें आत्मिक अधिकार में चलने के लिए बुलाया गया है, उनके लिए अच्छा होगा कि वे ज्ञान के वचन के बदले बुद्धि के वचन का वरदान खोजें। हमें प्रभु का काम पूरा करने के लिए ज्ञान के वचनों के सामर्थ्य की आवश्यकता है, परन्तु उस सामर्थ्य को उचित रूप से इस्तेमाल करने के लिए हमारे पास बुद्धि होनी चाहिए।

सुरक्षा का जाल

जो दीनता से पहले श्रेष्ठता प्राप्त कर लेते हैं गिरेंगे, क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है" (याकूब 4:6)। इसलिए यदि हमारे पास दीनता है तो हम पद से पहले दीनता खोजेंगे। सच्चा अधिकार परमेश्वर के अनुग्रह पर काम करता है, और जितने अधिक अधिकार में हम चलेंगे उतना अधिक अनुग्रह हमारे पास चाहिए होगा। हम में सच्चा अधिकार उतना ही होगा जितना राजा हमारे भीतर जीता है। सच्चा आत्मिक अधिकार एक पद नहीं है; यह एक अनुग्रह है। नकली आत्मिक अधिकार अनुग्रह के बदले इसके पद पर खड़ा होता है। सबसे बड़े आत्मिक अधिकार, यीशु ने अपने पद को अपना जीवन देने के लिए इस्तेमाल किया। उसने उसके पीछे आनेवालों को उनके क्रूस उठाकर वैसा ही करने के लिए कहा। झूठी सेवा और सच्ची सेवा के बीच अन्तर दिखानेवाला यह एक सरल तत्त्व है; झूठी सेवा वाले उनके वरदान और लोगों को अपने लिए इस्तेमाल करते हैं; सच्ची सेवा वाले उनके वरदान और अपने आप को लोगों के लिए इस्तेमाल करते हैं। और, अपने लिए खोज, आत्म-पदोन्नति और आत्म-सुरक्षा सच्ची सेवा की सबसे विनाशक शक्तियाँ हैं। चाहे हम राजा शाऊल के समान परमेश्वर का अभिषेक पाए हुए क्यों न हों, यदि हम इनके वश में पड़ जाएँ, तो हम भी जादू-टोना में पड़ सकते हैं।

अध्याय तीन - जादू-टोना के विरुद्ध हमारा कवच

न केवल जो अगुआई में हैं उन्हें जादू-टोना इस्तेमाल करने के की ओर चौकस रहना चाहिए, उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि वे उनका मुख्य लक्ष्य होंगे जो करते हैं। यह ऐसा शत्रु है जिसका हमें भीतर से और बाहर से ध्यान रखना चाहिए। यह उतना ही धूर्त है जब यह बाहर से आक्रमण करता है या जब यह हमारे अपने हृदयों में प्रभाव जमा लेता है। इस प्रकार का जादू अकसर वह नहीं है जिसे हम काला जादू कहते हैं, परन्तु यह प्रायः "सफेद जादू-टोना" की एक किस्म है। इसमें अच्छे लोग होते हैं जिन में निष्कपट होने का विश्वास नहीं है और इसलिए वे प्रभाव पाने के लिए छलयोजना की धूर्त किस्मों में पड़ गए हैं।
सफेद जादू-टोना की एक प्रमुख किस्म जो कलीसिया में सामान्य है "कैरिस्मेटिक जादू-टोना" है। इसने सम्भवतः किसी दूसरी चीज से अधिक मसीह की देह को अधिक हानि पहुँचाई है, और इसे हम पूर्ण रूप से समझे या सामना नहीं किया है। यह एक "नकली (तथाकथित)-आध्यात्मिकता" है जिसे एक अति-आध्यात्मिक नकाब इस्तेमाल करके प्रभाव या नियंत्रण पाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह झूठी भविष्यद्वाणी, स्वपनों और दर्शनों का एक स्रोत है जो अन्त में काम को नष्ट करता या व्यर्थ करता है, या अगुआई को एक ऐसे स्थान पर पहुँचा देता है जहाँ वे अतिप्रतिक्रिया करते हैं और भविष्यद्वाणियों को पूर्णतया तुच्छ समझते हैं। इस प्रकार का जादू-टोना इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति लगभग सदा सोचेगा कि उसमें प्रभु का मन है और कि अगुआई विद्रोह में है।

चापलूसी आपको कहीं नहीं पहुँचाएगी

चापलूसी शत्रु की एक सबसे घातक चाल है, जिसका उद्देश्य एक कलीसिया या काम को परमेश्वर की इच्छा से भटकाना है। जो भविष्यद्वक्ता आत्म-पदोन्नति के द्वारा जादू-टोना में पड़े हैं प्रायः शत्रु द्वारा इस प्रकार इस्तेमाल किए जाएँगे। वे उसकी भविष्यद्वाणी करके जो बहुत अधिक भव्य या आकर्षक है आपको परमेश्वर की इच्छा से भटका देंगे। इस प्रकार सेवा की आत्मा और साधन और स्थान पर लग जाएँगे, और प्रायः असफलता के कारण नष्ट हो जाएँगे। उनसे सावधान रहो जो भव्य दर्शनों की भविष्यद्वाणी करके प्रभाव पाने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे शब्द उनसे ही ग्रहण करो जिनको बताने से कोई लाभ होनेवाला नहीं है, या जिनकी ईमानदारी पूर्णतया स्थापित है, उनसे कभी भी मत ग्रहण करो जो अपने आप को स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस सदी के असाधारण वरदानों और अधिकार वाले भविष्यद्वाक्ताओं को दूसरों ने उलट दिया है जिन्होंने उनके लिए भविष्यद्वाणी की कि वे उससे बड़े हैं जो वे असल में हैं, या करने के लिए बुलाए गए हैं। न्याय के दिन हमें पता चलेगा कि इस प्रकार के जादू-टोना का पंथों, नया धर्म, या बाकी सारे झूठे भविष्यद्वक्ताओं से कलीसिया पर अधिक विध्वंसक प्रभाव पड़ा था।

उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं का पता लगाना जो दूसरे पंथों से हैं बहुत सरल है, परन्तु जो कलीसिया में हैं, और जो सच्चे विश्वासी हो सकते हैं, पता लगाना अधिक कठिन है। हाँ, एक सच्चा विश्वासी एक झूठा भविष्यद्वक्ता हो सकता है। हम किसी भी सेवा में जिसे हम ने परमेश्वर से पाए बिना ले लिया है झूठे हैं। भविष्यद्वाणी का अधिकार किसी दूसरे प्रत्यय-पत्र से स्थापित नहीं किया जा सकता है।

सिफारिश के पत्रों का अपना स्थान है, परन्तु हमें उस पर संदेह प्रकट करना चाहिए जो किस स्कूल में शिक्षा पाई है, कौन सा डिप्लोमा पाया है, या किसकी सेवा से सीखा है द्वारा आत्मिक अधिकार स्थापित करने का प्रयत्न करता है। और, उनसे सावधान रहो जो अपने भविष्यद्वाणी के कारनामों की सदा कहानियाँ बताते रहते हैं। कम से कम यह अपरिपक्वता का चिन्ह है। परन्तु जो असली है उन्होंने परमेश्वर और उसके स्वर्गदगूतों के साथ समय बिताया है कि वे सोचेंगे नहीं कि कौन उन पर विश्वास करता है। यदि हम झूठे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लगाएँ फँदों से छूटना चाहते हैं तो हमें आत्म-पदोन्नति को पहचानना और जो इसे इस्तेमाल करते हैं उनकी सेवा को अस्वीकार करना आरम्भ करना होगा।

जादू-टोना का सामना करना

जादू-टोना की शक्ति से अपने आपको छुड़ाने की मूल नीति जिसे हमें इस्तेमाल करना चाहिए उनको आशीष देना है जो हमें शाप देते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम उनके काम को आशीष देंगे, परन्तु कि हम उनके लिए, न कि उनके विरुद्ध प्रार्थना करेंगे। अपरिपक्व या अस्थिर के मामले में जो छलयोजना और आत्म-पदोन्नति में पड़ा है, हम समझौते के बिना सत्य और अखंडता के लिए खड़े रहकर आशीष देंगे। हम उन्हें अस्वीकार किए बिना उनकी सेवा को अस्वीकर कर सकते हैं, और छुटकारे और उद्धार के मार्ग में आने में उनकी सहायता कर सकते हैं। हमें उन्हें भी आशीष देनी चाहिए जो काला जादू या किसी दूसरे शक्ति के द्वारा हमें शाप देने का प्रयत्न करते हैं। यदि शत्रु हमें बदला लेने के लिए उकसा सके तब हम भी उसी आत्मा को इस्तेमाल करने लगेंगे, और हम ने उसी बुराई को बढ़ा दिया होगा जिसे निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा युद्ध मांस और लहू से नहीं, और न ही हमारे युद्ध के हथियार सांसारिक हैं, परन्तु आत्मिक हैं (इफि. 6:12)। जब हम उन लोगों को आशीष देने लगते हैं जो हम पर

आक्रमण कर रहे हैं, तब नियंत्रण और छलयोजना की दुष्ट शक्ति उन पर से और हम पर से टूटती है। हमें बुराई के बदले बुरा नहीं करना है, बल्कि बुराई को भलाई से जीत लेना है।

नए धर्म के जादू-टोना को समझना

नया धर्म मूल रूप से जादू-टोना और हिन्दु धर्म का मिश्रण है, जिसे सफेदपोश पेशावरों के स्वीकरण के लिए इस नए रूप में पेश किया गया है। इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण है कि क्यों इस प्रकार का अध्यात्मवाद इस समूह को लक्ष्य बना रहा है। पृथ्वी के 6000 वर्षों में से 5800 वर्षों के अभिलिखित इतिहास के लिए, सब कर्मचारियों में से पच्चानवे प्रतिशत् खेती-बाड़ी करते थे। एक शताब्दी से थोड़े अधिक समय में यह आँकड़े उलट गए हैं, और पश्चिम में पाँच प्रतिशत् से भी कम कर्मचारी खेती-बाड़ी में काम करते हैं। यह परिवर्तन शिल्पवैज्ञानिक प्रगति का परिणाम है। पाँच प्रतिशत् जो खेती-बाड़ी में काम करते हैं उन पच्चानवे प्रतिशत् से अधिक उत्पन्न करते हैं जो पिछली शताब्दी में काम करते थे।

1950 के दशक के मध्य में, पश्चिम में सफेदपोश कर्मचारी विद्वानों से अधिक संख्या में थे। उस समय से लेकर वे अधिकाँश बढ़ गए हैं और अनुमान लगाया गया है कि भविष्य में विद्वान् कर्मचारी भी खेती-बाड़ी कर्मचारियों के रास्ते पर जाएँगे, और समाज का एक बहुत छोटा अंश रह जाएँगे। जब प्रभु ने भविष्यद्वाणी की थी कि "ज्ञान बढ़ेगा" तब कल्पना नहीं की गई थी कि यह किस हद तक बढ़ेगा। अब जानकारी संसार में सबसे कीमती चीज है और ज्ञान को संचय करना, अर्थ निकालना, व्यवस्था से रखना और अन्तरण करना पृथ्वी पर सबसे बड़ा उद्योग है। जो ज्ञान के उद्योग में सम्मिलित हैं न केवल संख्या में बहुत हैं, परन्तु वे सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली भी हैं। और ये वे ही हैं जिन्हें कलीसिया सफलतापूर्वक जीत नहीं सकी है। इससे नए धर्म और दूसरे पंथों के प्रचुरोद्भव को बढ़ने में सहायता मिली है। क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर के साथ जो आत्मा है संगति के लिए बनाया गया था, उसमें एक शून्यस्थान है जो अलौकिक के लिए आत्मिक भूख उत्पन्न करता है। जो परमेश्वर की सच्ची अलौकिक सामर्थ्य को नहीं जानते शत्रु की बुरी और नकली अलौकिक शक्ति में खिंचे चले जाएँगे। पौलुस ने समझाया, "क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है।" (1 कुरिन्थियों 4:20)। शैतान इसे जानता है और वह शब्दों (सिद्धान्तों, आदि) के स्तर पर युद्ध करने में काफी संतुष्ट है। चाहे हम सिद्धान्तों के विषय में कितनी सच्चाई से या कितनी अच्छी तरह तर्क कर सकते हैं, शैतान को उनको जीतने में कोई समस्या नहीं जो परमेश्वर के सामर्थ्य को नहीं जानते - राज्य बातों का नहीं, परन्तु सामर्थ्य का है, और जो वास्तव में बाइबल में विश्वास करते हैं सामर्थ्य में चलेंगे। धार्मिकता हमारे मनों में नहीं, हमारे हृदयों में विश्वास करने का परिणाम है, और जो परमेश्वर के सामर्थ्य को नहीं जानते उस पर केवल मन में विश्वास करते हैं।

उस मूर्खता के प्रकाश में जो पेन्टेकोस्टल, कैरिस्मेटिक, फुल गास्पल और थर्ड वेव मूवमेंट में प्रकट हुई है, और जिन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य को भी जाना है, यह समझना सरल है कि क्यों कई आत्मा के वरदानों से दूर रहते हैं। परन्तु यह भी एक परीक्षा है जो सच्चे विश्वासियों को उनसे अलग करती है जो केवल धर्मसार या सिद्धान्त जानते हैं। परमेश्वर बुद्धिमानों को चकरा देने के लिए संसार की मूर्ख चीजों को बुलाता है। केवल दीन ही उसमें आएँगे जिसे वह कर रहा है और वह अपना अनुग्रह केवल उन्हें ही देगा। जिन कलीसियाओं ने परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ्य को अस्वीकार किया है बेमतलब हो गई हैं और अलौकिक संघर्ष में फँसे संसार तक नहीं पहुँच सकती हैं। जितना अधिक यह समाज लौकिक बनता जाता है असल में उतना अधिक मनुष्य में अलौकिक के लिए भूख बढ़ती जाती है। इसी कारण से नास्तिक सबसे नीच किस्म के जादू-टोना और काला जादू की ओर खिंचते जाते हैं; उन्हें धोखा होता है कि वे मनुष्य में स्थित शक्तियों को छू रहे हैं, परन्तु वे असल में शैतानी हैं। कलीसिया के जो सम्प्रदाय और आन्दोलन जिन्होंने परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ्य को अस्वीकार किया है लगभग सिकुड़ रही हैं क्योंकि वे बेमतलब हो रही हैं और अपने ही लोगों के लिए उबाऊ हो रही हैं, और उनमें नए लोगों को आकर्षित करने की कोई सामर्थ्य नहीं है। उन कलीसियाओं और कामों में से कई जिन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य को अस्वीकार किया है नए धर्म के प्रभावों के आगे झुक गए हैं। दूसरे इस युग की आत्मा के आगे झुक रहे हैं, और न केवल भ्रष्ट और अविश्वासियों को सदस्यों के रूप में सह रहे हैं, बल्कि उन्हें पास्टर और अगुवे भी बना रहे हैं। इसके विपरीत, जो सम्प्रदाय और आन्दोलन परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ्य का प्रचार करते और उसमें चलते हैं, न केवल बढ़ रहे हैं, बल्कि संसार में सबसे तेजी से बढ़ रहा धर्म हैं।

प्रेरित पौलुस ने कहा, "और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।" (1 कुरिन्थियों 2:4-5)। परमेश्वर के राज्य और दुष्ट के राज्य के बीच संघर्ष सत्य और भ्रम के बीच संघर्ष है, और यह एक अलौकिक शक्तियों का संघर्ष है। और दोनों पतन के कारण मनुष्य में बने शून्यस्थान को भरने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मनुष्यों के साथ परमेश्वर के सारे व्यवहार में अलौकिक सामर्थ्य का प्रदर्शन रहा है। परमेश्वर के लोग होना और उसके अलौकिक सामर्थ्य में नहीं चलना प्रतिवाद होगा। बाइबल सिखाती है कि जो विश्वास करते हैं वे भी बाइबल में लिखी बातों को करेंगे।

सम्भवतः सबसे अपमानजनक धर्मविज्ञान जिसे शक्तिहीन मसीहियों ने बनाया है कहता है कि पवित्र आत्मा एक लेखक था जिसने एक पुस्तक लिखी और फिर चला गया! यह कहना कि हमें अब उसकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे पास उसके विषय में एक पुस्तक है न केवल हास्यास्पद है, यह एक ऊँचे स्तर का धोखा भी है। प्रभु आज भी वैसा ही है जैसा वह तब था जब बाइबल लिखी गई थी, और वह आज सभी सबकुछ वैसा ही कर रहा है जैसा तब किया था।

सच्ची बाइबल पर आधारित मसीहियत न केवल शब्दों के विषय में है, बल्कि उद्धार करने, चंगा करने और छुटकारा देने के लिए परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ्य का प्रदर्शन है। यीशु ने कहा कि जैसे पिता ने उसे संसार में भेजा है, उसी प्रकार उसने हमें संसार में भेजा है (यूहन्ना 17:18 देखो)। यीशु ने चंगा करने और उद्धार करने के लिए परमेश्वर के सामर्थ्य की बात ही नहीं की, उसने इसे दिखाया भी था। यदि हम सुसमाचार का प्रचार करनेवाले हैं तो हमें इसे उसके समान करना होगा, परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ्य को दिखाया होगा। जब उसने चेलों को राज्य का प्रचार करने भेजा था तब यह बीमारों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने के लिए था। वह बदलता नहीं है और जिस तरीके से वह उसके सच्चे दूतों को भेजता है उसे भी बदला नहीं है।
युग के अन्त के विषय में कई भविष्यद्वाणियाँ समयों की अलौकिक प्रकृति के विषय में बात करती हैं। जो कलीसिया सामर्थ्य में नहीं चलती है समयों से निपटने के लिए अपर्याप्त होती जाएगी और उसके विरुद्ध आ रही शक्तियों का सामना नहीं कर सकेगी। शत्रु की शक्तियों को जीतने के लिए, "वरदानों की धुन में रहो, विशेषकर यह कि भविष्यद्वाणी कर सको" (1 कुरिन्थियों 14:1)। शत्रु की अलौकिक शक्ति के छल के विरुद्ध पहला बचाव परमेश्वर के सच्चे सामर्थ्य को जानना है।

ठीक से खोज करना

अधिकाँश विश्वासी आत्मिक वरदानों की इच्छा करते हैं, परन्तु यदि हमें उनको पाना है तो हमें उनकी "धुन" में रहना है। हालाँकि अधिकाँश कलीसिया परमेश्वर के इस्तेमाल के लिए "खुली" है, फिर भी उसने आदेश दिया है कि हमें पाने के लिए माँगना, खोजना और खटखटाना है। जो प्रभु के इस्तेमाल के लिए केवल "खुले" हैं असल में इस्तेमाल नहीं किए जाते हैं। "खुले" होना प्रायः उनके लिए छिपाना है जो असफल होने से या तो बहुत डरते हैं या अभिमानी हैं। यदि हमें पाना है तो, इसमें विश्वास और खोजना लगेगा।
यीशु ने हमारे लिए मार्ग बनाया है कि हम जितना चाहें उतना परमेश्वर के निकट हो सकते हैं। सारी बाइबल, इतिहास में, या कोई जीवित व्यक्ति नहीं है जो जितना आप प्रभु के निकट हो सकते हो उससे निकट है। जो परमेश्वर के निकट हैं और जो नहीं हैं उन में एकमात्र अन्तर यह है कि जो निकट हैं उसे इतना चाहते हैं कि वे खोजते हैं। वही बात उसके विषय में भी सत्य है जो वह हमें अपने वचन में देना चाहता है। जो आत्मा के वरदानों को गम्भीरता से चाहते हैं उनकी धुन में तब तक रहेंगे जब तक पा नहीं लेते। "परन्तु, हम पूछ सकते हैं, क्या यह मात्र आत्म-पदोन्नति नहीं?" यह हो सकती है। हम वरदानों को सबसे तुच्छ, स्वार्थी कारणों से, या सबसे शुद्ध कारणों से खोज सकते हैं। हम में से अधिकाँश इन दो चरमों के बीच में होंगे। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे सारे अभिप्राय शुद्ध नहीं होते, परन्तु मैं उसके वचन के आज्ञापालन से खोजता रहता हूँ, और प्रभु से प्रार्थना भी करता हूँ कि वह मेरे अभिप्रायों को शुद्ध कर दे। बाइबल का कोई भी काम, जैसे कि प्रार्थना करना, आराधना करना, या गवाह होना, स्वार्थी अभिप्रायों से किया जा सकता है। क्या इसका अर्थ यह है कि हम इन चीजों को करना बंद कर दे? निस्संदेह नहीं! हम उन्हें भिन्न अभिप्रायों से करते हैं। परन्तु यदि हम अपने अभिप्रायों के शुद्ध होने की प्रतीक्षा करेंगे तो हम कुछ नहीं कर पाएँगे। प्रायः उन्हें करते हुए हम बदलते हैं। हम प्रभु की उपस्थिति में आने के लिए नहीं बदलते हैं, परन्तु हम उसकी उपस्थिति में आने से बदलते हैं।
आत्मा के वरदानों में चलना खोजना परमेश्वर को खोजने की एक किस्म है, और उस से भी अधिक, यह आज्ञाकारी होना है। हमारा परमेश्वर अलौकिक है और हम अलौकिक के साथ संगति किए बिना उसके साथ संगति नहीं कर सकते हैं। वे भी जो धर्मविज्ञान द्वारा कठोर हो चुके हैं और उनकी शक्तिहीनता की सफाई देने का प्रयत्न करते हैं, उनके हृदयों में अलौकिक की चाह रखते हैं। वे उनके डरों को परमेश्वर को जानने से रोकने देते हैं, परमेश्वर जैसा है - सर्वसामर्थी। हम सब आत्मा में संगति के लिए बनाए गए थे, जो अलौकिक है, नहीं तो यह आत्मिक नहीं।

सत्य और सामर्थ्य

सच्ची बाइबल पर आधारित मसीहियत परमेश्वर के सच्चे सामर्थ्य के द्वारा सच्चा परमेश्वर का वचन है। यीशु "करने और सिखाने" लगा था (प्रेरितों 1:1)। वह सिखाने से पहले चमत्कार करता था। वह जानता था कि जिन लोगों ने परमेश्वर के साथ मुलाकात की है वे अधिक खुले रहेंगे जब उनसे बात की जाएगी। यीशु और उसके सुसमाचार प्रचारकों ने जो सामर्थ्य के काम किए थे उनकी शिक्षाओं की पुष्टि करने और प्रकाशमान करने के लिए थे। वही आज भी सत्य है; परमेश्वर के सामर्थ्य के प्रदर्शन उसकी शिक्षा के

बौद्धिक विचारों को विश्वास में बदल देते हैं। भीतरी मनुष्य को बदलने के लिए परमेश्वर का वचन और सामर्थ्य दोनों लगते हैं। दोनों के बिना, हम अपने बाहरी आचरण को बदल भी लें परन्तु हमारे हृदय अप्रभावित रहेंगे। यदि हम शत्रु के आत्मिक प्रभाव और शक्ति से स्वतन्त्र होना चाहते हैं तो हृदय के आत्मिक शून्यस्थान को परमेश्वर के साथ सच्ची संगति से भरना होगा।
क्योंकि जादू-टोना मूल रूप से नकली आत्मिक अधिकार है, हम जादू-टोना की शक्ति से तब ही पूरी तरह स्वतन्त्र हो सकेंगे जब हम पूर्ण रूप से परमेश्वर के सामर्थ्य और अधिकार के अधीन होंगे, जिसके लिए हमें सत्य के पूरी तरह अधीन होना है। यदि जो आत्मिक शून्यस्थान हम में है परमेश्वर के असली सामर्थ्य और असली अधिकार से भरता रहीं है, तो हम किसी प्रकार के जादू-टोना के अधीन होने लगेंगे। महायुद्ध "निर्णय की घाटी" में लड़ा जाएगा; उस दिन पृथ्वी का हर व्यक्ति एक निर्णय के स्थान पर लाया जाएगा। यह एक सामर्थ्य का सामना होगा और निर्णय सामर्थ्य और अधिकार के विषय में होगा। हम परमेश्वर के सामर्थ्य और अधिकार को चुनेंगे, या हम शैतान की शक्ति और अधिकार को चुनेंगे - परन्तु हम सब चुनेंगे।

नकली का पता लगाना

आत्मा का हर वरदान जो कलीसिया को उपलब्ध है शत्रु ने नकल किया हुआ है। जिनके डर धोखे में पड़ने से बचने के कारण आत्मिक वरदानों से दूर रखते हैं, निश्चित रूप से धोखे में पड़ेंगे। हमें विश्वास से, न कि डर से चलना है, यदि हम उस मार्ग पर बने रहना चाहते हैं जो जीवन को जाता है। डर हमें धोखे में ले जाएगा यदि हम इसकी सुनेंगे; इसके लिए अब्राहम जैसा विश्वास लगता है यदि हम उसे पाने के लिए जिसे परमेश्वर बना रहा है सबकुछ जिसे हम जानते हैं पीछे छोड़ देते हैं।
"अधोलोक के फाटक" शत्रु के हमारे जीवनों, हमारी मण्डलियों, गतियों, धर्मविज्ञानों आदि में प्रवेश द्वार हैं। डर प्रमुख द्वार है जिसे वह इस्तेमाल करता है, जिस प्रकार परमेश्वर विश्वास को हमारे जीवनों में पहुँच के लिए द्वार के रूप में इस्तेमाल करता है। यदि हम परमेश्वर के सामर्थ्य में चलने वाले हैं तो हमें, शत्रु की हमें धोखा देने की योग्यता से अधिक हमें सब सत्य में ले जाने की परमेश्वर की योग्यता में विश्वास होना चाहिए। विश्वास परमेश्वर के साथ संगति के लिए द्वार है, क्योंकि स्वाभाविक क्षेत्र से परे अलौकिक क्षेत्र में पहुँचने के लिए विश्वास लगता है जिससे हम "उसे देख सकते हैं जो अदृश्य है"। जैसे हम विश्वास में चलते हैं तो जो हम अपनी स्वाभाविक आँखों से देखते हैं उससे अधिक वास्तविक जो हम अपने हृदय की आँखों से देखते हैं होने लगता है। तब हम अस्थाई से अधिक अनन्त के लिए जीने लगते हैं। जो सच्चे विश्वास में जीते हैं वे उनको मूर्ख दिखेंगे जो इस संसार की बुद्धि के अनुसार जीते हैं, या जो "स्वाभाविक मन" वाले हैं।

हम जादू-टोना की शक्ति से छुटकारा तब पाने लगते हैं जब हम प्रभु को इतने स्पष्ट देखने लगते हैं कि हम दूसरी किसी भी चीज से अधिक उसकी सेवा और सम्मान करते हैं; तब हम उनके प्रभाव, छलयोजना और वश में नहीं पड़ते जो अभी भी सांसारिक सोच वाले हैं, या जो जादू-टोना की शक्ति में चलते हैं। हमें अन्धकार का उतना अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं जितनी ज्योति की है। ज्योति अन्धकार से अधिक शक्तिशाली है। जब हम रात को अपने एकान्त को खोलते हैं तब अन्धकार भीतर नहीं आता; ज्योति अन्धकार में चमकती है। ज्योति सदा अन्धकार को जीत लेती है। यदि हम ज्योति में चलेंगे तो हम अन्धकार को निकाल देंगे। यदि हम परमेश्वर के सच्चे अलौकिक सामर्थ्य में चलेंगे तो हम दुष्ट की अलौकिक शक्ति को निकाल देंगे, वैसे ही जैसे मूसा ने मिस्र के जादूगरों का सामना किया था। परन्तु यदि मूसा बिना किसी सामर्थ्य के मिस्र गया होता तो वह सफल नहीं होता, और न ही हम होंगे यदि हम लोगों को अपनी शक्ति से स्वतन्त्र करने का प्रयत्न करते हैं। शत्रु की शक्ति का सामना करने और निकालने के लिए परमेश्वर के सामर्थ्य की आवश्यकता होगी।

कायरों की शक्ति – काला जादू

जादूगर प्रायः उनके साथ सीधे मुकाबले से दूर रहते हैं जिनके पास सच्चा आत्मिक अधिकार है क्योंकि जो दुष्टात्माएँ उनके द्वारा काम करती हैं अपमानित होने और हारने का डर महसूस करती हैं। वे फिर भी उन पर आक्रमण करती हैं जो सच्चे आत्मिक अधिकार में बढ़ रहे हैं और परमेश्वर के राज्य के लिए फल ला रहे हैं, परन्तु वे इसे प्रायः गुप्त में करेंगे। वे ऐसा उनके काले जादू के अनुसार बलि करके और शाप देकर करते हैं।
शैतानी बलिदानों में शक्ति होती है जिसे यदि हम उनका सामना करनेवाले हैं तो पहचानना होगा। 2 राजा 3:27 में, मोआब के राजा ने उसके बड़े बेटे को होमबलि करके चढ़ाया, और, "इस कारण इस्राएल पर बड़ा की प्रकोप हुआ; इसलिए वे (इस्राएल) उसे छोड़कर अपने देश को चले गए।" एक मसीही के लिए शत्रु से डरना बाइबल नहीं सिखाती, परन्तु यदि हम उसकी शक्ति के समझते नहीं और उचित रूप से महत्त्व नहीं जानते, तो हम कमज़ोर पड़ सकते हैं।

अध्याय चार - जादू-टोना के योजनाबद्ध आक्रमण

हमें पहचानने की आवश्यकता है कि कब हम पर जादू-टोना के द्वारा शाप डाला जा रहा है ताकि हम इससे बचाव कर सकें और अन्धकार में ज्योति चमका सकें। जादू-टोना भिंड़ के समान काम करता है जो उनके शिकार को बार-बार डंक मारते हैं जब तक वह मर नहीं जाता या भाग नहीं जाता। निम्नलिखित हैं जिन्हें मैं "जादू-टोना के डंक" कहता हूँ। ये लक्षण हैं कि हमारे विरुद्ध जादू-टोना इस्तेमाल किया जा रहा है। एक-एक करके, इन लक्षणों को दूसरे कारणों के साथ भी जोड़ा जा सकता है, परन्तु यदि ये इस अनुक्रम में आने लगते हैं तो बहुत सम्भावना है कि जादू-टोना उनका स्रोत है।

डंक 1 – निराशा। सब कभी-कभार निराश होते हैं, और यह कई विभिन्न कारणों से हो सकता है। परन्तु, यदि हम बिना किसी प्रकट कारण के निराश होते रहते हैं, तो जादू-टोना को एक सम्भव स्रोत माना जाना चाहिए। जब सब कुछ गलत होता है, कठिनाइयाँ अजेय लगने लगती हैं और आप सोचने लगते हैं कि चलते रहना कठिन है, हालाँकि चीजें सामान्य से असल में कोई खराब नहीं हैं, तब सम्भवत आप पर आत्मिक आक्रमण हो रहा है। शत्रु की आपको निराशा देने की मुख्य नीति आपको अगले आक्रमण के स्तर के लिए कमज़ोर करना है, जो है:

डंक 2 – संभ्रम। एक बार फिर, हमें एक सामान्य और व्यापक "संभ्रम की आत्मा" को खोजना चाहिए, जिसके लिए कोई प्रकट कारण नहीं है। यहाँ हम अपनी स्पष्टता खोने लगते हैं कि हमें किस चीज के लिए बुलाया गया है, जो निश्चय ही हमारे दृढ़ संकल्प को कमज़ोर करेगा। यह संभ्रम निराशा को बढ़ाने के लिए है, जिससे हम और अधिक कमज़ोर होंगे और अधिक आक्रमणों के लिए भेद्य होंगे, जो इस रूप में आएँगे:

डंक 3 – उदासी। यह साधारण निराशा से गहरी समस्या है; यह एक अटल आशंका है जो निराशा और संभ्रम का इकट्ठा परिणाम है, और आत्मिक अनुशासनों की एक सामान्य उपेक्षा है जो इस समय तक आ गए हैं। यह ले जाता है:

डंक 4 – दर्शन का अभाव। यह पिछले डंकों का लक्ष्य है और उन सब का प्रभाव बढ़ाने में काम करता है। यहाँ हम संदेह करने लगते हैं कि क्या परमेश्वर ने हमें सेवा के लिए बुलाया है। संभ्रम के तूफान में से निकलने का एक ही तरीका है कि हम अपने मार्ग पर बने रहें। परन्तु यदि हमें पता न हो हम कहाँ जा रहे हैं हम अपने मार्ग पर बने नहीं रह सकते हैं। और यदि हम अपनी दिशा पर संदेह करने लगें तब तो हम अपने मार्ग पर बने रहने का प्रयत्न नहीं करेंगे। यह हमें चक्रों में घुमाता रहेगा जबकि हमें "अपने पाँव रखने के लिए मार्ग को समथर" करना है। यह आक्रमण के अगले स्तर के लिए द्वार खोलता है:

डंक 5 – दिशाभ्रम। यह उदासी, संभ्रम और दर्शन के अभाव का इकट्ठा परिणाम है। इस स्तर पर हम न केवल मार्ग को भूल गए हैं जिस पर हमें बने रहना चाहिए था, बल्कि हम ने कम्पास पढ़ने की अपनी योग्यता भी खो दी है। पवित्रशास्त्र हम से बात नहीं करेंगे, हम प्रभु की आवाज पर भरोसा नहीं करेंगे और सबसे अधिक अभिषिक्त शिक्षा और प्रचार भी बेमतलब लगेंगे। यह आत्मिक असमर्थ होने, काम करने की अयोग्यता की बात है, जिसका परिणाम है:

डंक 6 – पलटाव। यह तब होता है जब हम सेवा में अपने उद्देश्यों से, बाकी की कलीसिया के साथ संगति से, और अकसर अपने परिवारों और दूसरों से जिनके हम निकट हैं पीछे हटते हैं। पलटाव का परिणाम निराशा होता है।

डंक 7 – निराशा। युद्ध से पलटाव शीघ्र ही आशाहीनता में ले जाता है और आशा के बिना हम सरलता के साथ शत्रु द्वारा हराए जा सकते हैं, परीक्षा के द्वारा, बीमारी या मृत्यु के द्वारा। विज्ञान ने भी प्रमाणित किया है कि जब आशा नहीं रहती, तब सब से स्वास्थ्य व्यक्ति भी बिगड़कर मर सकता है। आशा के साथ, पुरुष और स्त्री एक लम्बी आयु तक जीवित रहे हैं जबकि एक सामान्य शरीर ने हार मान ली होती। निराशा सदा हार तक ले जाएगी।

इस रणनीति में हम ने देखा है कि शत्रु का उद्देश्य हमें कमज़ोर करना है ताकि हम पीछे रह जाएँ; तब हम पर अधिक सरलता के साथ आक्रमण किया जा सकता है। पवित्रशास्त्र में अमालेकी शैतान और उसकी सेना का प्रतिरूप हैं। कमज़ोरों और/या निहत्थों पर वार करना अमालेकियों का व्यवहार था। जैसे इस्राएल को लोगों ने जंगल पार किया, अमालेकियों ने उनको दबोच लिया जो बाकियों से पीछे रह गए थे। इसी कारण से इस्राएलियों को कहा गया था कि अमालेकियों के साथ निरन्तर युद्ध होता रहेगा। जब इस्राएल के राजाओं को उनसे युद्ध करने का आदेश दिया गया था, तब उन्हें उनको पूर्ण रूप से नष्ट करने और लूट नहीं लेने की

आज्ञा दी गई थी। हम भी शैतान के साथ निरन्तर युद्ध में हैं और हम कैदी नहीं ले सकते हैं। न ही हम उसे जो उसका है परमेश्वर की सेवा में लगा सकते हैं। जब राजा शाऊल ने आज्ञोल्लंघन किया और अमालेकियों के राजा, अगाग को जीवित रखा, और लूट का कुछ हिस्सा अपने पास रखा, ताकि "तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए बलि करने को" छोड़ दें, इससे परमेश्वर के लोगों के किसी भी अगुवे की एक सबसे बुद्धिहीन असफलता प्रकट होती है। उन दिनों, एक प्रतिद्वन्द्वी राजा को युद्ध के बाद जीवित रखने के दो ही कारण होते थे: उसे एक मित्र बनाना या एक दास बनाना। शाऊल ने मूर्खतावश सोचा कि वह उसे जो स्वयं शैतान का साकार था एक मित्र या एक दास बना सकता था।

यह कोई संयोग नहीं था कि एक अमालेकी ने शाऊल का वध किया और फिर उसकी मृत्यु की खबर दाऊद के पास ले गया। इस अमालेकी ने सोचा कि इस खबर से दाऊद प्रसन्न होगा, परन्तु दाऊद समझदार था और उसने उसे मरवा डाला (2 शमूएल 1:1-16 देखो)। यदि हम प्रभु की आज्ञा नहीं मानते और शत्रु का सर्वनाश नहीं करते, तो वह हमें नष्ट कर देगा। शत्रु के साथ कोई सन्धि नहीं हो सकती है; उसका सर्वनाश करना अवश्य है। हमें यह सोचने में मूर्ख नहीं होना है कि हम शत्रु को अपने दास के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं; अपने छल-कपट में वह शीघ्र पलट वार करेगा।

जादू-टोना को कलीसिया के विरुद्ध इस्तेमाल किया जा रहा है। जो इसे पहचानने में असफल रहे हैं हराए गए हैं, उनके दर्शन, सेवाएँ, उनके परिवार और उनके जीवन भी को बैठे हैं। यह कोई इन्द्रियार्थवाद नहीं है, यह तथ्य है। पौलुस ने कहा कि हम मांस और लहू से नहीं, परन्तु प्रधानों और अधिकारियों से युद्ध करते हैं (इफिसियों 6:12 देखो)। शत्रु वार करने वाला है; वह हमारे साथ मल्लयुद्ध करनेवाला है; यदि हम सोचते हैं कि हम वार नहीं करेंगे, तब तो हम दबोच लिए जाएँगे! एक मसीही यदि जीवित रहना चाहता है तो उसके सामने कोई विकल्प नहीं है कि वह लड़ेगा या नहीं। परन्तु हम इस जादू-टोना से कैसे युद्ध करेंगे? हम पहले हर विजय में इस्तेमाल होने वाले आत्मिक युद्ध के मूल सिद्धान्त को देखेंगे।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम देखते हैं कि सन्त (विश्वासी) शैतान पर: 1) मेम्ने के लहू; 2) अपनी गवाही के वचन; और 3) अपने प्राणों को प्रिय नहीं जाना, द्वार जयवन्त हुए। (प्रकाशित. 12:11)।

हम मेम्ने के लहू के द्वारा जयवन्त होते हैं जब हम उसे घोषित करते हैं जो उसने हमारे लिए क्रूस के द्वारा किया है। विजय पहले ही प्राप्त की जा चुकी है और जब तक हम उसने बने रहेंगे, हम हार नहीं सकते हैं।
हमारी गवाही का वचन पवित्रशास्त्र है। हर बार जब शत्रु ने यीशु को चुनौती दी, उसने पवित्रशास्त्र इस्तेमाल किया और शत्रु की परीक्षा को परमेश्वर के सत्य से व्यर्थ कर दिया। परमेश्वर का वचन "आत्मा की तलवार" है; इसके द्वारा हम उसके कपटी शब्दों के प्रहार को रोक सकते हैं और उस पर आक्रमण कर सकते हैं। उन सब हथियारों में से जिन्हें पहनने के लिए हमें आज्ञा दी गई है (इफिसियों 6:10-18 देखो), केवल आत्मा की तलवार ही एक आक्रमण का हथियार है।
कि उन्होंने "अपने प्राणों को प्रिय नहीं जाना", उस पूर्ण वचनबद्धता को प्रकट करता है जिसके द्वारा वे उसके पीछे कीमत की परवाह किए बिना चलते थे। हमें हर दिन अपने क्रूसों को उठाने, सब कुछ सुसमाचार के लिए करने, और अपने लिए नहीं बल्कि उसके लिए जीने को कहा गया है (1 कुरिं. 5:15)। जिस हद तक हम आत्म-केन्द्रित रहेंगे, हम शत्रु के आक्रमण के लिए भेद्य रहेंगे।

जब हम ने अपने आप को संसार के लिए मरा हुआ जान लिया है, अर्थात् मसीह के साथ क्रूसित, तब शत्रु की हम तक कोई पहुँच नहीं है क्योंकि उसकी यीशु तक कोई पहुँच नहीं है। यदि हम इस संसार के लिए मर चुके हैं, तो एक मरे हुए व्यक्ति के साथ क्या किया जा सकता है? एक मरे हुए व्यक्ति के लिए नाराज़ होना, परीक्षा में पड़ना, डरना, या सरल मार्ग खोजना असम्भव है क्योंकि उसने कीमती पहले ही दे दी है। इन में से हर एक हर आत्मिक विजय के लिए चाहिए। कुछ भी कम से विजय कम हो जाएगी। हम अनियमित, रुक-रुक कर आगे बढ़ सकते हैं, परन्तु कभी न कभी पीछे धकेले जाएँगे। परन्तु यह स्पष्ट है कि युग के अन्त में परमेश्वर की एक सेना होगी जो यदा-कदा विजयों पर बैठेगी नहीं - वे लड़ने के लिए समर्पित हैं और तब तक रुकेंगे नहीं जब तक शत्रु पर प्रतिज्ञात पूर्ण विजय प्राप्त नहीं हो जाती।
हम समझते हैं कि सम्पूर्ण विजय प्रभु के लौटने से पहले प्राप्त नहीं होगी, परन्तु उसने आने तक हमें लड़ना है, और हर चीज जिसे हम ले सकते हैं लेना है, जब वह आएगा और हमें अपने संग ले जाएगा और युद्ध समाप्त होगा। "पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है, जगत और उसमें निवास करनेवाले भी" (भजन 24:1)। जब तक पृथ्वी शैतान के अधिकार से पूरी तरह दुबारा पा नहीं ली जाती है, हमारा युद्ध समाप्त नहीं होगा। यदि हम विश्वास नहीं करते कि विजय सम्भव है तो हम में से कोई भी जीतने के लिए लड़ता नहीं। पवित्रशास्त्र की सम्पूर्ण भविष्यसूचक गवाही यही है कि प्रभु, कलीसिया, और सत्य विजयी होने वाले हैं। शैतान

को पृथ्वी पर गिराया जा रहा है; वह बड़े रोष से भरकर आ रहा है और संसार पर संकट का एक ऐसा समय आएगा जिसे उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया है - परन्तु हम जीतेंगे!
यशायाह 14:16-17 कहता है, जब हम शैतान को देखेंगे तब हम उसकी दयनीय प्रकृति को देखकर चकित होनेवाले हैं जिसने इतनी मुसीबत खड़ी की थी! वह जो सन्तों में सबसे छोटा है उससे, या उसके मसीह विरोधियों से बहुत बड़ा है। यह समय डरने का नहीं हैं - यह हमारा अवसर है! जैसे यशायाह 60:1-1 घोषित करता है, जब पृथ्वी पर अन्धकार छाया हुआ है तब उसके लोगों पर प्रभु का तेज उदय हो रहा है। अन्धकार उसके तेज को अधिक चमकीला करेगा। हमें जीतने के लिए लड़ना है, शत्रु को कोई स्थान नहीं देना है और जो उसने चुराया है वापस लेना है।

जादू-टोना के साथ प्रभावशाली तरीके से लड़ने के लिए, हमें शैतान का तब तक विरोध करना है जब तक वह हमारे सामने से भाग नहीं जाता। हमारा लक्ष्य शत्रु को हमारे अपने जीवनों से भगाने से अधिक है; हमें फिर तब तक उसका पीछा करना है जब तक वह उन सब में से निकाल नहीं दिया जाता जिन में उसने गढ़ बना रखा है। निम्नलिखित कुछ तरीके हैं जिनके द्वारा हम, इन सात निश्चित क्षेत्रों में जो शैतान के जादू-टोना द्वारा आक्रमण हैं, विरोध कर सकते हैं।

1) **निराशा।** निराशा परमेश्वर से कभी नहीं आती है; वह तो विश्वास और आशा का कर्त्ता है जो निराश नहीं करते। वह हमें ताड़ना देता है जब हमें आवश्यकता होती है, परन्तु वह हमें निराशा देकर ऐसा कभी नहीं करता है। "पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है।" (याकूब 3:17)। निराशा के विषय में कहीं नहीं कहा गया है कि यह बुद्धि है जो ऊपर से आती है और यह आत्मा का फल नहीं है। हमें निराशा को शीघ्रता के साथ और सहज-ज्ञान से अस्वीकार करना सीखना चाहिए और इसे अपने विचारों में कोई स्थान नहीं देना चाहिए। हम उसके द्वारा चलेंगे जो सोचते या महसूस करते हैं। इसलिए हमें हर विचार को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बनाना चाहिए; हमें निराशा को कभी भी आदेश नहीं देने देना चाहिए। विश्वास आत्मा का फल और हमारे हथियार की ढाल है जो निराशा को रोकती है। यदि हम निराश होने लगते हैं तो इस का अर्थ है कि हम ने अपनी ढाल गिरा दी है। इसे वापस उठा लो!

2) **संभ्रम।** याद रहे, कि "परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है" और जिस से आप पर प्रहार हो रहा है परमेश्वर से नहीं आ रहा है। सेना में युद्ध की एक प्रमुख चीज जिस में एक सैनिक को प्रशिक्षण दिया जाता है संभ्रम को सम्भालना है। बिरले ही कोई युद्ध होगा जिसमें संभ्रम न हो। बहुत कम युद्ध, या योजनाएँ, बिलकुल योजना के अनुसार काम करती हैं। यही बात आत्मिक युद्ध में भी सत्य है। अनुशासित सैनिक जो युद्ध के इस पहलू को समझता है संभ्रम को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करना सीखता है। वह इसे उसकी निराशा को बढ़ाने नहीं देता परन्तु शत्रु पर श्रेष्ठता पाने के लिए अवसर की अपेक्षा करने और खोजने लगता है। हमें सीखना है कि संभ्रम युद्ध का एक अंश है और इससे चकित या प्रभावित नहीं होना है। खड़े होकर युद्ध करने का हमारा दृढ़ संकल्प आक्रमण के इस पहलू को शीघ्र दूर कर देगा।

3) **उदासी।** परमेश्वर ने कैन को उदासी के लिए सबसे प्रभावशाली इलाज़ दिया था। "तब यहोवा ने कैन से कहा, 'तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुँह पर उदासी क्यों छा गई है? यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।'" (उत्पत्ति 4:6-7)। क्योंकि उदासी प्रायः निराशा और संभ्रम को हमें हमारे मूल आत्मिक अनुशासनों से दूर करने देने का परिणाम है, जैसे कि बाइबल पढ़ना, प्रार्थना, संगति, आदि, इसलिए उन्हें दृढ़ संकल्प के साथ करने लगना लगभग सदा नीचे जा रही सर्पिल गति को पलट देगा। यदि हम वह करने पर ध्यान लगाएँ जो करने के लिए हमें बुलाया गया है, हम उस पाप को निकाल फेंक सकेंगे जो कितनी सरलता के साथ हमें उलझा लेता है।

4) **दर्शन का अभाव।** इस आक्रमण को भी हमारे लाभ के लिए पलटा जा सकता है और एक अवसर के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। जब तुम अपना दर्शन खोने लगो, तो अपने दर्शन को मजबूत करने के लिए अपना समर्पण करो। अपनी जड़ों को गहरा करो और अपने उद्देश्य को परमेश्वर के वचन में अधिक दृढ़ करो। जब परमेश्वर हमें एक उद्देश्य में ले चलने लगता है तब हमें लिख लेना चाहिए वह हम से कैसे बात करता है। उन सब तरीकों पर दोबारा विचार करो जिनके द्वारा वह आपको ले गया है और उसकी अगुआई को अधिक दृढ़ता के साथ स्थापित करने के लिए पवित्रशास्त्र खोजो।

सबसे अधिक, अपने मार्ग पर बने रहो! अपने मार्ग को तब तक मत बदलो जब तक नए मार्ग को स्पष्ट देख नहीं लेते। पहले विश्व युद्ध में, शत्रु की एक सबसे प्रभावशाली रणनीति सहबद्ध रक्षदलों के सामने धूमपट लगाना था। जैसे रक्षदल धूमपट में प्रवेश करते वे उनका दर्शन खो बैठते, और किसी भी आवाज या सरंग की ओर मुड़ जाते; उससे होनेवाली टक्करों से अधिक जहाज डूब गए जितने टॉरपीडो से नष्ट नहीं हुए थे। अन्त में सहबद्धों ने इसका विरोध करने के लिए एक सरल उपाय किया, जो हमारे लिए भी काम करेगा। जब धूमपट में हो तब हर जहाज को बिना पथभ्रष्ट हुए अपने मार्ग पर बने रहना था। वे शीघ्र ही दूसरी ओर स्पष्ट हवा में निकाल जाते थे। यही उपाय हमें भी जो हमारे दर्शन को धुँधला कर रहा है शीघ्रता से निकलने के लिए योग्य करेगा। जब आप अपना दर्शन खो दो तब अपने मार्ग पर बने रहो और आगे बढ़ते रहो।

5) **दिशाभ्रम।** एक उपकरण उड़ान शिक्षक के रूप में, पहली बात जिसे मुझे एक पायलट को सिखाना होता था, कि उसकी भावनाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और उनकी उपेक्षा की जानी चाहिए। यदि एक पायलट उसकी भावनाओं के अनुसार उड़ाने का प्रयत्न करेगा, वह शीघ्र ही विमान का नियंत्रण खो देगा। जब आप बादलों द्वारा घिरे हो, और आप बिलकुल सीधे उड़ रहे हो, परन्तु आपको लगने लगेगा कि आप घूम रहे हो। यदि आप इस भावना की ओर प्रतिक्रिया करते हो तो आप घूमने लगोगे, मार्ग से भटक जाओगे या सम्भवत: जहाज को उलट दोगे।
एक विमान-संचालन परीक्षण में, पायलटों के एक दल को बिना उपकरण के प्रशिक्षण के उपकरण की स्थितियों में उड़ाया गया, और उन सब के सब ने उनके विमानों के नियंत्रण को खो दिया जब वे मार्गदर्शन के लिए उनकी भावनाओं पर निर्भर होने लगे थे। मेरा विश्वास है कि यही बात मसीहियों के लिए भी सत्य है जब वे कम दृश्यता या "आत्मिक बादलों" की आत्मिक स्थिति में प्रवेश करते हैं और मार्गदर्शन के लिए उनकी भावनाओं पर निर्भर होते हैं - वे नियंत्रण खो देंगे।
जो "उपकरण" हमें चलने के लिए दिए गए हैं बाइबल में पाए जाते हैं। हम भावनाओं से नहीं परन्तु परमेश्वर के वचन में विश्वास द्वारा चलते हैं। परमेश्वर का वचन हमें यदि हम अपना भरोसा इस पर डालेंगे सही दिशा में रखेगा, चाहे हमारी भावनाएँ हमें दूसरे ढंग से करने को कह रही हों।

6) **पलटाव।** हाल के फारसी खाड़ी के युद्ध में, अधिकाँश दुर्घटनाएँ या तो रिज़र्व सेना थे या असैनिक थे। युद्ध में होने का सबसे सुरक्षित स्थान युद्ध का मोर्चा था। यह आत्मिक युद्ध में भी सत्य है। जब आप युद्ध में होते हो तो समय हो गया नहीं कह सकते हो। जब मोर्चे पर हो तब शत्रु से नहीं कह सकते कि युद्ध को रोको क्योंकि आपको सरदर्द हो रहा है या चाय पीने जाना चाहते हो। मोर्चे पर आप खतरों को जानते हो और ढीले नहीं पड़ सकते हो।
हर मसीही हर दिन चाहे उसे पसन्द हो या नहीं मोर्चे पर होता है। शैतान आपको समय नहीं देगा। जब हम अपने आपको एक "असैनिक" समझने लगेंगे, हम उसके आक्रमण के लिए सबसे अधिक भेद्य होंगे। न ही एक मसीही कभी रिज़र्व में होता है। बिरले ही सारे मोर्चे पर सारे समय युद्ध होता रहता है। युद्ध से विराम मिलता है, परन्तु जब आप जानते हो कि आप मोर्चे पर हो, छूट का समय भी यह जानते हुए सर्तकता के साथ लिया जाता है कि आक्रमण कभी भी हो सकता है। मसीहियों को उनके हथियार कभी भी उतारने नहीं हैं और न ही उनकी चौकसी को खोना है।

युद्ध में रणनीतिक एकान्तवास के लिए समय और अवसर होते हैं। ऐसे समय भी होते हैं जब हम आत्मिक रूप से अधिक काम ले लेते हैं और हमें पीछे हटना होता है, परन्तु यह युद्ध से पलटाव जैसा नहीं है। जब हम ने अधिक काम ले लिया हो तब भी एकान्तवास अन्तिम आश्रय होना चाहिए - एकान्तवास में एक सेना सबसे भेद्य स्थिति में होती है। यदि सम्भव हो सके तो हमें कम से कम अपने स्थान पर बने रहना है ताकि हमारा स्थान मजबूत हो सके।

हमें परमेश्वर को धन्यवाद देने को कहा गया है, "जो हमारे प्रभु यीशु के द्वारा हमें जयवन्त करता है" (1 कुरिन्थियों 15:57), "इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:37), और "जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है" (2 कुरिन्थियों 2:14)। हार मसीह में कोई विकल्प नहीं है। हम उसमें विजयी होंगे जिस में उसने हमारी अगुआई की है। हम केवल छोड़ देने से ही हार सकते हैं।
तब भी जब हमें पता चले कि हम ने परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए बिना अभिमान में काम किया है, हम छोड़ते नहीं, हम पश्चाताप करते हैं। छोड़ने और पश्चाताप के कारण रुकने में अन्तर है। एक हार है, जबकि दूसरा सुधार है जो अतिरिक्त विजयें लाता है। पश्चाताप सत्य के कारण आता है जो हमें स्वतन्त्र करता है; हार शत्रु की शक्ति के बन्धन में ले जाएगा।

7) **निराशा।** प्रभु का मनुष्य के विषय में पहला विचार यह था कि उसके लिए अकेले होना अच्छा नहीं है। हम सामाजिक प्राणी हैं और जब हम संगति से पीछे हटेंगे तो हम प्रायः निराशा के सबसे गहरे खड्डे में गिर पड़ेंगे। नीचे जा रहे सर्पिल गति के इस स्थान पर हमें संगति में लौट जाना चाहिए और फिसलन को उलटने के लिए सहायता माँगनी चाहिए नहीं तो हम हार जाएँगे।

जादू-टोना मूल रूप से दूसरों को शाप देना है। यह शाप केवल जादू-टोना या काला जादू के द्वारा ही नहीं आता है, परन्तु उनके द्वारा भी आ सकता है जो हम से प्रेम करते हैं, भले इरादे रखते हैं, और हमें आशीष देने का प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु ऐसा हमें चालाकी से प्रभावित करके कर रहे हैं। जादू-टोना छलयोजना या एक नियंत्रण की आत्मा में जड़ पकड़ा होता है, चाहे यह किसी के द्वारा भी क्यों न आता हो।
एक माँ जो अपने बेटे या बेटी को अपने पसन्द का विवाद करने में चालबाजी करती है, ऐसा जादू-टोना से किया है, और ऐसे सम्बंधो को प्रायः छलयोजना और नियंत्रण द्वारा ही बनाया रखा जा सकता है। जो प्रार्थना समूह दूसरों को प्रकट करने के लिए प्रार्थनाएँ इस्तेमाल करता है छलयोजना की खातिर चुगली कर रहा है; यह प्रार्थना नहीं - यह जादू-टोना है। अधिकतर जो मसीही पत्रकारिता के नाम में कलीसिया को जानकार रखने के लिए लिखा जाता है गप-शप है, जिसे अनैतिक प्रभाव या छलयोजना के लिए इस्तेमाल किया जाता है - यह, भी, जादू-टोना है।

जो आत्मिक अगुवे उनकी कलीसियाओं या सेवाओं को बनाने के लिए छलयोजना, कृत्रिम उत्तेजना या नियंत्रण इस्तेमाल करते हैं जादू-टोना के बराबर एक नकली आत्मिक अधिकार में काम कर रहे हैं। अधिकतर जो व्यवसायी स्कूलों में सिखाया जाता है छलयोजना या नियंत्रण की किस्म है जो जादू-टोना है। अधिकतर रणनीतियाँ जिन्हें कलीसिया ने सांसारिक पत्रकारिता और व्यवसायी संसार से लिया है कलीसिया में जादू-टोना ले आया है, और यदि हमें अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्वतन्त्र होना है तो इसे निकालना होगा।
अधिकतर जूओं और मानवीय अपेक्षाओं में छलयोजना और जादू-टोना की कुछ शक्ति है जिन्हें शत्रु ने एक गढ़ के रूप में हमारे जीवनों में परमेश्वर के बुलावे के साथ युद्ध करने के लिए स्थापित किया है। परन्तु यह हमारे माता-पिता, शिक्षक, मालिक, आदि की अपेक्षाओं की उपेक्षा करने का एक लाइसेंस नहीं है। प्रभु हमें हमारे जन्म से पहले से जानता है और इनमें से अधिकतर प्रभाव उसने हमें उसमें हमारे उद्देश्यों में ले जाने के लिए रखे हैं। परन्तु कुछ जूए और अपेक्षाएं जो भली-मनसावाले माता-पिता, शिक्षक या कोच हम पर डालते हैं उतार दिए जाने चाहिए! जो जूए हम पर रखे गए हैं और प्रभु की ओर से नहीं हैं, जब हम उसमें अपने बुलावे और उद्देश्य को जानेंगे स्पष्ट हो जाएंगे - सत्य हमें स्वतन्त्र कर देगा।

एक ही जूआ जिसे हमें लेना चाहिए प्रभु का जूआ है। उसका जूआ सहज और उसका बोझ हलका है; और जब हम इसे गले लगाते हैं तब हम दबाव और निराशा के बदले असल में विश्राम और ताज़गी पाते हैं। इस प्रकार के "सफेद" जादू-टोना का भी उतना ही प्रभाव हो सकता है जितना काले जादू-टोना का होता है। भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ के दो पक्ष हैं। "सफेद जादू-टोना" प्रायः भले इरादों में होता है और यह ज्ञान के पेड़ का अच्छा पक्ष है, परन्तु जिसका फल उतना ही जहरीला है जितना इस पेड़ के बुरे पक्ष का है। सफेद और काला जादू-टोना भिन्न डालियाँ हो सकती हैं परन्तु उनकी जड़ें एक ही हैं और जहर उतना ही घातक।
जो अस्थिर हैं वे इसे उनके जीवनों पर परमेश्वर के नियुक्त अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए विकृत करेंगे और उचित दण्ड पाएँगे। राज़ा शऊल उसका मानवीकरण है जिसे परमेश्वर ने नियुक्त किया है परन्तु सच्चे आत्मिक अधिकार के अपने स्थान से गिर कर नकली आत्मिक अधिकार में काम करने लगा। राज़ा दाऊद सच्चे आत्मिक अधिकार का मानवीकरण है। दाऊद ने शाऊल की ओर प्रतिक्रिया कैसे की? वह तब तक शाऊल की सेवा करने को तैयार था जब तक शाऊल ने उसे भगा नहीं दिया। तब भी उसने बदला नहीं लिया, विद्रोह नहीं किया, या शाऊल के अधिकार को दुर्बल करने का प्रयास नहीं किया, परन्तु "प्रभु के अभिषिक्त" के रूप में उसका सम्मान किया।

हालाँकि दाऊद को शाऊल का स्थान लेने के लिए चुना गया था, उसने शाऊल पर अपना हाथ नहीं उठाया, परन्तु निश्चय किया कि यदि परमेश्वर ने उसे बुलाया है तब वह ही उसे स्थापित करेगा - उसने छलयोजना या नियंत्रण की आत्मा का बिलकुल उलटा करके दिखाया और उसके द्वारा बुराई को भलाई से जीत लिया। यदि दाऊद छलयोजना के द्वारा राज्य में घुस गया होता तो वह लगभग निश्चित रूप से शाऊल के समान जादू-टोना में पड़ गया होता। परन्तु दाऊद एक भिन्न आत्मा का था।
जो किसी भी किस्म के जादू-टोना के शिकार हैं ऊपर बताए आक्रमणों के क्रम के द्वारा डंक अनुभव करते हैं। यदि हम आक्रमण की ओर रचनात्मक तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं तो हम न केवल स्वयं इसके प्रभाव से छूट सकेंगे, बल्कि उनकी सहायता भी कर सकते हैं जो जादू-टोना करते हैं। छलयोजना और नियंत्रण की आत्माएँ डर के द्वारा प्रवेश करती हैं। यह भयभीत और असुरक्षित हैं जो दूसरों को वश में करने की इतनी धुन में रहते हैं कि वे बुरा प्रभाव इस्तेमाल करते हैं, और इन डरों को निकालने के लिए

सिद्ध प्रेम दिखाना पड़ेगा। अपने आक्रामकों के लिए प्रार्थना करो कि वे परमेश्वर के सिद्ध प्रेम का प्रकटीकरण पाएँ। हमारी सबसे बड़ी विजय उन्हें जीतना है जो शत्रु के चँगुल में हैं।

अपने आप को निर्बल-पक्ष बनाना

जादू-टोना का एक और स्रोत है जो हमारी निराशा, संभ्रम, उदासी, दर्शन का अभाव, दिशाभ्रम और निराशा का सबसे अनपेक्षित स्रोत हो सकता है - खुद हम! जब हम दूसरों पर छलयोजना, कृत्रिम उत्तेजना या नियंत्रण इस्तेमाल करते हैं तो हम उनके परिणामों के लिए अपने आप को खोल देते हैं।

इससे पहले हम स्रोत का पता लगाने के लिए दूसरों की ओर देखें, हमें पहले अपनी ओर देखना है। शैतान शैतान को नहीं निकाल सकता है; यदि हम स्वयं जादू-टोना में लगे हुए हैं तो हम इसे दूसरों में से नहीं निकाल सकेंगे। अधिकतर जो जादू-टोना के शिकार हुए हैं इसके साथ शरीर में लड़ने का प्रयत्न किया है, अर्थात् उसी आत्मा को इस्तेमाल करके। जब हम ऐसा करते हैं तो यह हमारे जीवनों में काम करने का स्थान पा लेता है जिसे पहले तोड़ना होगा, इससे पहले हमारे पास दूसरों को छुड़ाने का अधिकार हो।

पिता की इच्छा है कि कलीसिया में काम कर रहे जादू-टोना की हर किस्म और अभिव्यक्ति को नष्ट किया जाए। यह एक गम्भीर अपराध है और सहन नहीं किया जाता रहेगा। एक बार जब हम इस भयानक बुराई से स्वतन्त्र हो गए हों, हम अद्वितीय सामर्थ्य में चल सकेंगे जिसे केवल उन्हें ही सौंपा जा सकता है जो सच्चे आत्मिक अधिकार में चलते हैं।

अध्याय पाँच – ईजेबेल की आत्मा

ईजेबेल की आत्मा प्रायः तब प्रवेश करती है जब अत्याचार या दुर्व्यवहार व्यक्ति को कटु और विद्रोही बना देता है। हमें मन में रखना चाहिए कि परमेश्वर उत्पीड़ितों पर दया करता है, और उसने प्रकाशितवाक्य में ईजेबेल को भी दया दिखाई थी, जब उसे "मन फिराने के लिए अवसर" दिया था (प्रकाशित. 2:21 देखो)। परन्तु, उसने उस कलीसिया के अगुवों को उसे सहन करने के लिए ताड़ना भी दी (आय. 20 देखो)। हमें सब पापियों पर दया होनी चाहिए, परन्तु हम उनके पाप को सहन नहीं कर सकते हैं।

जिनमें ईजेबेल की आत्मा है वे अपने आप को लगभग हर अभिषिक्त कलीसिया के साथ सेवा के लिए जोड़ लेंगे। हमारा उनके लिए अन्तिम लक्ष्य उन्हें छुटकारा पाया और चंगा हुआ देखना होना चाहिए, परन्तु यदि वे अपने तरीकों से मन नहीं फिराते तब उन्हें निकाल देना चाहिए, नहीं तो वे निरन्तर निराशा और भंग से लेकर अनर्थकारी फूट तक सब कुछ लाएँगे जो कइयों को बहुत घायल कर देगा।

पहले हमें ईजेबेल की आत्मा का पता लगाना है। निम्नलिखित विशेषताएँ इस आत्मा के साथ सामान्यः जुड़ी होती हैं: जिनमें ईजेबेल की आत्मा है वे:

1) वे उनके प्रकटीकरणों के द्वारा निरन्तर अपनी गवाही देते रहते हैं।
2) प्रायः निरन्तर सम्मान खोजते रहते हैं; वे मंच से या अगुवों द्वारा बोले जाने पर पनपते हैं, और यदि जिक्र न किया जाए तो नाराज हो सकते हैं या दूर होने लगते हैं।
3) वे प्रायः चापलूसी या भव्य भविष्यद्वाणियों के द्वारा, अगुवों के निकट होने का प्रयत्न करते हैं।
4) बिरले ही अधिकार में होना चाहते हैं, परन्तु "सिंहासन के पीछे शक्ति" होना चाहते हैं।
5) प्रायः कलीसिया के सबसे निर्बल सदस्यों को आकर्षित करते हैं, और उन्हें चापलूसी और/या भव्य भविष्यद्वाणियों द्वारा आत्मिक रूप से दास बनाने लगते हैं।
6) उनके आत्मिक दासों को निन्दा, असंतोष और फूट फैलाने में इस्तेमाल करते हैं।
7) प्रायः विवाह तय करानेवाले बनते हैं, और फिर बने हुए सम्बंधों को नियंत्रण में रखने का प्रयत्न करते हैं।
8) अधिकतर उनके कमजोर पति/पत्नी होते हैं (अहाब के समान), परन्तु बोलेंगे कि वे बहुत मजबूत, आत्मिक, और बहुत प्रतिभाशाली हैं।
9) अपने आप को अच्छा पेश करने के लिए दूसरों से भविष्यद्वाणियाँ चुराते हैं।
10) प्रायः सताया हुआ महसूस करते हैं।
11) प्रायः बहाने बनाते हैं और कभी भी अपने पापों को मानते नहीं।
12) प्रायः काम में लगे रहते हैं, अकसर उपवास और प्रार्थना करते हैं, परन्तु इसलिए कि आत्मिक दिखें।

13) अकसर उनमें कटुता होती है, विशेषकर उनके पिता की ओर या किसी नर अधिकारी की ओर।

14) प्रायः उनमें दोषयुक्त तर्क होता है, जिसे एक "नकली"-आध्यात्मिकता द्वारा छिपाया गया होता है, जिसका तात्पर्य यह होता है कि केवल आत्मिक ही उन्हें समझ सकते हैं।

ईजेबेल से छुटकारा

पहले, हमें समझना है कि किसी व्यक्ति में इन में से एक या अधिक विशेषता हो सकती है परन्तु फिर भी एक ईजेबेल आत्मा न हो। परन्तु, यदि इन में अधिकाँश किसी व्यक्ति में लागू होती हैं तो आपके सामने यह समस्या हो सकती है। ये सब गम्भीर दोष हैं, और इससे पहले किसी को एक सेवा, या कलीसिया में अधिकार सौंपा जाए, उसे चंगा होना या छुटकारा पाना अवश्य है।
कुछ बाइबल के विद्वान् और सेवक विश्वास करते हैं कि यह आत्मा पतन के समय बाग में प्रकट हुई थी। यदि ऐसा है तो, हव्वा ने इसके कारण धोखा नहीं खाया होगा, परन्तु यह उसके पति आदम के पतन का दोष उस पर लगाने का परिणाम हो सकता है (उत्पत्ति 3:12 देखो)। परमेश्वर ने पेड़ का फल नहीं खाने का आज्ञा, हव्वा को नहीं, आदम को दी थी। हालाँकि साँप ने हव्वा को धोखा दिया था, जिम्मेवारी आदम की थी। आदम ने धोखा नहीं खाया, उसने पाप किया। पतन से पहले हव्वा उसकी सहायक थी, परन्तु पतन के बाद हव्वा को शाप दिया गया था कि "तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" (उत्पत्ति 3:16)।

पतन का शाप मसीह में निकाला गया है। यह कानूनी तौर से क्रूस पर पूरा हुआ था, परन्तु इसे उद्धार के काम में पूरा किया जाना चाहिए। (फिलि. 2:12-13)। पुरुष और स्त्री के बीच आरम्भिक सम्बंध पुरुष का स्त्री पर प्रभुता करना नहीं था, और न ही स्त्री का पुरुष पर प्रभुता करना था, परन्तु दोनों का मिलकर शासन करना था। जैसे हम पतन के परिणाम से छुटकारा पाते हैं तो इस सम्बंध को जैसे आरम्भ में बनाया गया था उसके निकट आना चाहिए। हमें अपने अन्तिम लक्ष्य को आँखों से ओझल होने नहीं देना है। जब मह मसीह में पूर्ण रूप में बने रहते हैं तब "न कोई नर न नारी" है (गलातियों 3:28)। हमें यह भी समझना चाहिए कि पुरुष का स्त्री पर प्रभुता करना उतना ही शाप का एक अंश है जितना स्त्री का पुरुष पर प्रभुता करना है। जब तक वे पतन के परिणामों से छुटकारा नहीं पाए हैं और एक दूसरे के साथ सही सम्बंध में चल सकते हैं, तब तक शान्ति और पूर्ति किसी को भी नहीं मिलेंगे।
अगुआई करने और शासन करने में एक प्रमुख अन्तर है। एक व्यक्ति एक सच्चा, गुणी अगुवा होए बिना शासन कर सकता है। एक सच्चा, गुणी अगुवा अगुआई अधिक करेगा और नियम कम झाड़ेगा। परन्तु, हम जानते हैं कि मसीह भी जब वह लौटेगा लोहे के डण्डे के साथ देशों पर शासन करेगा, परन्तु उसकी दुल्हिन उसके बगल में होगी।

पवित्रशास्त्र में हम देख सकते हैं कि पतन के कारण एक पति को उसका पत्नी पर अधिकार दिया गया है, परन्तु हम कहीं नहीं पाते कि स्त्री को पुरुष पर अधिकार दिया गया था, हालाँकि पवित्रशास्त्र में उदाहरण हैं जहाँ स्त्रियों को अधिकार दिए गए थे। इसका अर्थ यह नहीं कि स्त्रियाँ पुरुषों के साथ अधिकार नहीं ले सकती हैं। मेरी तीन बेटियाँ हैं जिनके पास भविष्यद्वाणी के वरदान हैं। मैं ने शीघ्र ही सीख लिया कि किस प्रकार प्रभु उनके द्वारा बात करता है। तीन वर्ष के होते होते जब वे चाहतीं मेरा ध्यान खींच सकती थीं। उनको मेरे ऊपर अधिकार नहीं है, परन्तु उनको मेरे साथ अधिकार है। इसी प्रकार कलीसिया को मसीह पर अधिकार नहीं है, और न ही होगा, परन्तु हमें उसके साथ अधिकार है। उसकी दुल्हिन होने के नाते, उसका हमारे लिए लक्ष्य है कि हम उसके साथ शासन और राज्य करें। हमारे लिए उसका लक्ष्य ऐसा है कि हम उसके साथ इस प्रकार एक हो जाएँ कि हम पृथ्वी पर उससे भी बड़े बड़े काम करें। यह लक्ष्य हर पति का उसकी पत्नी के लिए होना चाहिए।

ईजेबेल के लिए आशा

यह सारे पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के विषय में एक विशिष्ठ वक्तव्य है कि प्रभु ने ईजेबेल को, तब भी जब वह प्रभु के लोगों को बहका रही थी "मन फिराने के लिए अवसर" दिया। पहले, उसने उसे मन फिराने के लिए समय दिया क्योंकि इसमें समय लगता है। यह बुराई एक व्यक्ति के जीवन में इतनी गहरी जड़ें बना लेती है कि यह एक सबसे लम्बी और सबसे कठिन छुटकारा हो सकता है। परन्तु, जितनी गहरी जड़ें शैतान एक व्यक्ति बनाता है, उतनी गहराई तक वह परमेश्वर के प्रेम से छुटकारा होने के बाद भर जाएगा।
जो इस आत्मा से छुटकारा पाते हैं एक सच्चे आत्मिक आधिकार के सबसे ऊँचे स्तर को जान सकते और उसमें चल सकते हैं। एक स्त्री जो इस आत्मा से छुटकारा पाती है एक सबसे सुन्दर और दयालु उदाहरण बन सकती है जिसे हव्वा को उसे बनना चाहिए था। एक पुरुष जो छुटकारा पाता है कुलीनता, प्रतिष्ठा और सच्चे आत्मिक अधिकार का उदाहरण बनता है जो आदम को बनना चाहिए था।

एक बार इस समस्या को पार लेने पर, व्यक्ति भरोसे के ऊँचे स्तरों तक पहुँच सकता है जिसकी इन अन्तिम दिनों में आत्मिक अधिकार की आवश्यकता है। याद रहे हम मांस और लहू के विरुद्ध युद्ध नहीं करते। यदि प्रभु ईजेबेल को मन फिराने का समय दे सकता था, तो हमें उसके दुष्ट तरीकों का सामना करना चाहिए, नहीं तो यह शक्ति कलीसिया को बहुत हानि पहुँचाएगी।

अध्याय छः - नियंत्रण की आत्मा और विधिवादिता

हमारे प्राण के शत्रु की यह एक मूल रणनीति है कि वह कलीसिया को "आत्मिक सर्वसत्तावाद" द्वारा दास बनाता है। यह विश्वासियों को डर और धमकी द्वारा नियंत्रण करके और दमन करके किया जाता है। डर विश्वास की उलटी शक्ति है और दोनों हर विश्वासी के लिए जीवन और मृत्यु के संघर्ष में जुड़े हुए हैं। मनुष्यों के हृदय के लिए एक सबसे महत्त्वपूर्ण युद्धक्षेत्र आत्मिक दासता बनाम स्वतन्त्रता है। प्रेरित पौलुस ने कहा, "धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है" (रोमियों 10:10)। डर और धमकी व्यक्ति के मन से, और भावनाओं से भी, विश्वास करने के लिए दबाव डालते है, परन्तु उसके हृदय को कभी नहीं बदलेंगे। किसी के विरुद्ध डर और धमकी इस्तेमाल करने से वे कभी भी सच्चा विश्वास नहीं पा सकेंगे। डर अन्धकार के राज्य की शक्ति है जो दास बनाती है। जब डर हमें नियंत्रण में कर लेता है, तब, एक भाव से, डर हमारा प्रभु बन गया है। जिस हद तक परमेश्वर में विश्वास हमें नियंत्रण में करता है उसकी हमारे जीवनों पर प्रभुता निर्धारित करता है। विश्वास परमेश्वर के राज्य की शक्ति है जो हमें परमेश्वर की आत्मा और सच्चाई से आराधना करने के लिए स्वतन्त्र करती है। डर लोगों पर बाहरी दबावों और धमकियों से शासन करता है। विश्वास हृदय से शासन करता है।

एक तोते को सही बातें कहना और करना सिखाया जा सकता है, परन्तु वे उसके हृदय में प्रवेश नहीं करेंगी - वह तोता ही रहेगा। स्वीकरण जो डर या दबाव पर आधारित है कभी भी सच्ची धार्मिकता या हृदय परिवर्तन में नहीं बदलेगा, चाहे जो शिक्षा हमें दी जा रही है कितनी भी सही या सच्ची क्यों न हो। सच तो यह है कि हमारा विश्वास हृदय से आना चाहिए, केवल मन से ही नहीं, क्योंकि "जीवन जल की नदियाँ" हृदय में से बहती हैं। हम तब तक सच्चाई पर नहीं चल सकेंगे जब तक हम इसे हृदय से नहीं जी सकते। हम तब तक उसका प्रचार या शिक्षा नहीं दे सकेंगे जो सच्चा जीवन लाता है जब तक हम उसे हृदय से प्रचार नहीं करते जहाँ से जीवन की नदियाँ बहती हैं। जो हृदय में है उसकी ओर विश्वासयोग्य होने के लिए स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

हृदय को भावनाओं से जोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः संभ्रम उत्पन्न करती है। हमारी भावनाएँ हमारे हृदयों से आ सकती हैं, या वे दूसरे स्रोतों से आ सकती हैं जो हमारे सच्चे हृदय नहीं हैं। कम लोग, और कम मसीही भी उनके अपने हृदयों को जानते हैं। कइयों ने उनके हृदयों को आत्मिक या सामाजिक दिखावे से छिपा रखा है कि उन्हें पता नहीं है वहाँ क्या है। हमारे साथ वह समस्या भी है जिसका वर्णन यिर्मयाह ने किया था। "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?" (यिर्मयाह 17:9)। फिर भी, यह निर्णायक है कि हम सच्चे हृदय को समझें और उसके अनुसार जीएँ क्योंकि यह ही एक स्थान है जहाँ जीवन जल की नदियाँ बहती हैं।

सच्चे विश्वास का अन्तिम लक्ष्य मनुष्यों के हृदय बदलना है, और फिर उन्हें उनके हृदयों के अनुसार जीने के लिए छोड़ना है। क्योंकि हमारे हृदय जीवन जल के हौज हैं, जब हम अपने हृदय में जो है उसके अनुसार जीने के लिए स्वतन्त्र किए जाते हैं, तब जीवन जल बहने लगता है जिसके लिए सब मनुष्य प्यासे हैं। मसीही पृथ्वी पर के सबसे स्वतन्त्र लोग होने चाहिए, और बाकी की मनुष्यजाति के उलटे होने चाहिए। जब संसार सच्ची मसीहियत देखेगा, यह पृथ्वी पर सबसे बड़ी ज्योति होगी। सब मनुष्य देखने वाले हैं कि उन्हें क्या होने के लिए बनाया गया है। यह अन्त से पहले होगा। अभी क्यों नहीं? हमारे साथ क्यों नहीं?

बेदारी मुख्य रूप से विश्वासियों के हृदयों में जीवन जल छोड़ना है। इसी कारण से हर बेदारी का सबसे बड़ा शत्रु नियंत्रण का आत्मा रहा है। नियंत्रण का आत्मा विश्वासियों को दास बनाता और जीवन जल के प्रवाह को रोकता है जो हर बेदारी को बनाता और चालू रखता है।

शैतान को कोई चिन्ता नहीं हम क्या विश्वास करते हैं जब तक हम अपने मनों में न कि अपने हृदयों में विश्वास करते हैं। इस प्रकार सत्य को एक टीका के समान इस्तेमाल किया जाता है, हमें केवल अपने विवेकों को प्रसन्न रखने के लिए उतना ही दिया जाता है, और जो हमारे हृदयों को बदलने के लिए पर्याप्त नहीं और न ही एक सच्चा विश्वास लाने और न ही जीवन जल छोड़ने के लिए है। शैतान की पहली रणनीति मसीहियत को बौद्धिक बनाए रखना है। वह आपको उतना सत्य देगा जितना आप चाहते हैं, जब तक उसे पता है आप उसे गलत इस्तेमाल करेंगे। जब वह सत्य को बौद्धिक के परे जाते और हृदयों में पहुँचते देखता है तब

वह उसे रोकने के लिए एक नियंत्रण का आत्मा भेजता है। प्रभु सत्य को लोगों को स्वतन्त्र करने के लिए इस्तेमाल करता है, परन्तु शैतान सत्य को मनुष्यों को बाँधने के लिए, और उन्हें एक नियंत्रण आत्मा के अधीन करने के लिए इस्तेमाल करता है।

आज्ञापालन की प्रकृति

अन्धकार के राज्य और परमेश्वर के राज्य के बीच मूल संघर्ष दासता और स्वतन्त्रता का है। यीशु ने कहा: "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा।" (यूहन्ना 8:31-32)। उसका सत्य हमें स्वतन्त्र करेगा जब हम उसके वचन में बने रहते हैं, परन्तु हमें उसके वचन में बने रहना है। सत्य हमें स्वतन्त्र करता है और स्वतन्त्रता हृदय में से सत्य को समझती है। आज्ञापालन प्रभु के लिए महत्त्वपूर्ण है, परमेश्वर केवल आज्ञापालन के पीछे नहीं है - वह चाहता है हम सही कारणों से आज्ञापालन करें, क्योंकि हमारे पास उसका हृदय है।

एक स्त्री अधिकार की ओर अधीनता के रूप में कलीसिया में अपना सिर ढँकती है। क्या सिर ढँकना उसे अधीनस्थ बनाता है? सिर ढँकना अधीनता नहीं, बल्कि उसका प्रतीक है। एक विद्रोही स्त्री भी अपने सिर को ढँकती है; वह ऐसा अपने विद्रोह की क्षतिपूर्ति के रूप में अपनी अधीनता की कमी को छिपाने के लिए कर सकती है। प्रभु नहीं चाहता कि हम केवल अपनी अधीनता के प्रतीकों को पहनें - उसे हृदय की अधीनता की खोज है। कलीसिया के बहुत सारे सिद्धान्त जिन पर वह बल देती है सिद्धान्तों के "आवरक" हैं, न कि हृदयों में परिवर्तन हैं। प्रभु केवल उससे सम्बद्ध नहीं रखता जो हम क्या विश्वास करते हैं, बल्कि हम कैसे विश्वास करते हैं।

यदि परमेश्वर मनुष्य से केवल आज्ञापालन चाहता था, तो उसने आदम और हव्वा को एक विकल्प नहीं दिया होता। वह मनुष्य को आज्ञापालन करने के लिए प्रोग्राम कर सकता था, परन्तु फिर उसके पास केवल रोबोट ही होते। यदि हृदय से सच्चा आज्ञापालन होना है तो आज्ञा न मानने की स्वतन्त्रता भी होनी चाहिए। इसी कारण से प्रभु ने बाग में भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ रखा था; यह मनुष्य को ठोकर देने के लिए नहीं था, परन्तु यह वह स्थान था जहाँ मनुष्य आज्ञा नहीं मानने का फैसला कर सकता था। यदि हम आत्मा और सच्चाई में आराधना करने वाले हैं, जो हृदय से आराधना है, तब आराधना नहीं करने की योग्यता भी होनी चाहिए।

हृदय से आराधना

उस आराधना का क्या मजा जो उससे आ रही है जो कुछ और करने के अयोग्य है? यदि हमारी प्ररूपी "आराधना सभाएँ" हमारी आराधना की अवस्था का एक संकेत हैं, तो अच्छा होता यदि प्रभु एक कम्प्यूटर बनाकर और उन में से हज़ारों को उसकी स्तुति गाने के लिए प्रोग्राम कर देता। जब हमें बताया जाए कब खड़ा होना है, कब बैठना है, क्या गाना है, तो क्या इसमें से कुछ हमारे हृदय से आ रहा है? हम व्यवस्था बना सकते हैं, और यह अच्छा हो सकता है, परन्तु क्या यह परमेश्वर के हृदय को छूता है। समझ पाना कठिन है कि कैसे करेगा। प्ररूपी कलीसिया की आराधना, चाहे यह परम्परागत, पैन्टेकोस्टल, कैरिस्मेटिक, या थर्ड वेव हो, मुख्य कार्य - प्रचार, के लिए वातावरण गर्म करने के लिए एक प्रयास है।

हमें प्रभु को खोजना होगा कि अपनी सभाओं में सच्ची आराधना को कैसे प्राप्त करें। सबसे प्रगतिशील आराधना भी शीघ्रता के साथ आत्मिक लीक में फँस जाती है जो इसे रट लेने के द्वारा धर्मविधि बना देता है, जिसके विषय में प्रभु ने कहा है आराधना के रूप में कभी भी ग्रहण नहीं करेगा। जब तक हमारी आराधना हमें प्रभु के हृदय को स्पर्श करने के योग्य नहीं करती, यह आराधना नहीं - मात्र शोर है। यदि हम परमेश्वर के हृदय को स्पर्श करेंगे तो हमारे हृदय परिवर्तित हो जाएँगे। हर आराधना सभा प्रभु की उपस्थिति के साथ एक मुलाकात होनी चाहिए। जब हम प्रभु की महिमा को देखेंगे तब हम उस महिमा से परिवर्तित हो जाएँगे। परन्तु, सच्ची आराधना प्रभु को देखने के प्रयास से नहीं, परन्तु उसे खोजने से आती है।

हमारी आराधना सभाओं में एक वास्तविकता लाने में सहायता के लिए कुछ प्रत्यक्ष, व्यावहारिक कदम उठाए जा सकते हैं। पहला, यदि लोग बैठना चाहते हैं तो क्यों न उन्हें बैठने दिया जाए? यदि लोगों को बैठने की स्वतन्त्रता हो और वे खड़े होते हैं तो यह सच में प्रभु का आदर होगा। "आत्मा में गाना" जो वेल्श बेदारी के दौरान उत्पन्न (या दोबारा उत्पन्न) हुआ था, एक अच्छा तरीका है जिसके द्वारा आराधक परमेश्वर के हृदय को स्पर्श कर सकता है, इतना हो कि यह भी एक विधि न बन जाए। जब यह यान्त्रिक है, या मात्र एक दूसरी परम्परा है, तो यह वृद्धिरोक बन सकता है, परन्तु जब विश्वासियों को प्रभु के लिए उसे गाने दिया जाता है जो उनके हृदय में है, तब हम आत्मा और सच्चाई में सच्ची आराधना कर सकते हैं।

अधिकाँश मण्डलियों में सभा में व्यवस्था और दिशा देने के लिए आराधना के अगुवों की आवश्यकता होती है। प्रभु हर चीज में, और आराधना में भी, अगुआई इस्तेमाल करता है, जैसा हम दाऊद के तम्बू में और स्वर्ग के प्रकटीकरणों में भी देख सकते हैं।

परन्तु यदि हम सच्ची आराधना को स्पर्श करना चाहते हैं, तो एक समय होता है जब आराधना के अगुवे को सामने से हट जाना चाहिए, क्योंकि जब तक हमारा ध्यान अगुवे पर है तब तक हम अपने हृदयों से प्रभु की आराधना नहीं कर रहे हैं; हम एक अगुवे के पीछे चल रहे हैं।
मैं कई मण्डलियों में गया हूँ जिनके आराधना के अगुवे थे और वे दावा करते थे कि वे पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलते हैं, परन्तु अधिकाँश समय वे अपरिपक्व और विद्रोही द्वारा चलाए चल रहे थे। एक मण्डली को समय से पहले इस स्तर पर ले आना संकटपूर्ण हो सकता है, परन्तु हमारे पास उस स्तर की परिपक्वता को प्राप्त करने का लक्ष्य होना चाहिए। एक स्थान है जहाँ पर **सच्ची आराधना प्रभु की ऐसी उपस्थिति ला सकती है** कि न तो शरीर और न शैतान वहाँ होने का साहस कर सकते हैं। परन्तु यदि शरीर और शैतान कभी-कभी आ भी जाते हैं, तो अच्छा होगा कि कोई भी आग न होने के बदले कभी-कभी तीव्र आग हो। हृदय से आज्ञापालन होने की सम्भवना के लिए, प्रभु को मनुष्य को विकल्प देना होगा।

जितनी बड़ी चुनाव करने की स्वतन्त्रता होगी, उतनी अधिक गलत चुनाव करने की सम्भावना होगी, और उतनी ही बड़ी परमेश्वर की ओर सच्चे हृदय के आज्ञापालन की सम्भावना होगी। जब हम अपनी सभाओं, कार्यक्रमों या सिद्धान्तों के चारों ओर अत्यधिक नियंत्रण, दीवारें और घेरे बनाते हैं, ताकि उनका उल्लंघन न किया जाए, तब तो हम केवल आत्मिक रोबोट बना रहे हैं जो सही बातें कहेंगे और करेंगे, परन्तु उनके हृदयों से नहीं करेंगे। यह असल में सच्चा मसीही विश्वास बनाने में वृद्धिरोक है।

उसकी भेड़ें उसकी आवाज जानती हैं

जैसे प्रेरित पौलुस ने सिखाया, "प्रभु तो आत्मा है : और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतन्त्रता है" (2 कुरिन्थियों 3:17)। यदि हम आत्मा द्वारा चलने वाले हैं तो स्वतन्त्रता होनी चाहिए। जब हम जबरदस्ती आज्ञापालन करवाने के लिए नियम और बन्दोबस्त करते हैं, हम आत्मा द्वारा चलने की अपनी योग्यता को रोक रहे हैं। नए नियम को एक दूसरी व्यवस्था नहीं होना था; इसे हमें सामान्य निर्देश देना था और साथ में अधिकाँश मामलों पर, बहुत महत्त्वपूर्ण मामलों पर भी अपने लिए प्रभु से सुनने की स्वतन्त्रता देना था। प्रभु की भेड़ को उसकी आवाज जाननी चाहिए और नए नियम की स्वतन्त्रता को हमें उसे खोजने और अपने लिए उसे जानने के लिए विवश करना है।

उदाहरणार्थ, प्रभु बहुत परवाह करता है कि उसकी कलीसिया उसके अपने नमूने के अनुसार बनाई जाए, परन्तु नया नियम कलीसिया के शासन और नमूने के विषय में, जानबूझकर, आश्चर्यजनक रूप से अस्पष्ट है। यह इसलिए नहीं है कि हम जो चाहें करें, परन्तु इसलिए कि हम उसके निर्देश पाने के लिए उसे खोजें और उसकी सुनें। कुछ महत्त्वपूर्ण सामान्य सिद्धान्त हैं जिन्हें हम कलीसिया के ढाँचे के विषय में नए नियम के नमूने के रूप में पा सकते हैं, परन्तु वे सामान्य हैं जो उसके निर्माताओं की उसे खोजने और उसकी सुनने की उनकी आवश्यकता को बढ़ाते हैं, क्योंकि वह आप अपने घर का निर्माता है!
प्रभु ने हमें जीवन, कलीसिया, सरकारों से कैसे सम्बंध रखना, आदि के विषय में स्पष्ट सामान्य निर्देश देने के लिए नया नियम दिया है, जिनका पालन करके हम जीवन के पथ पर बने रह सकते हैं। परन्तु, ये निर्देश स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन देने के लिए पर्याप्त हैं। यह स्वतन्त्रता छूट के लिए नहीं है, परन्तु कि हम उसे खोजें और "सब" सत्य में जाने के लिए पवित्र आत्मा के पीछे चलें। प्रभु ने यह नहीं कहा कि जब वह जाएगा तब सब सत्य को जानने के लिए हमें एक पुस्तक दे जाएगा, परन्तु वह हमें सब सत्य को जानने के लिए पवित्र आत्मा देगा। हमें इस बेशकीमती पुस्तक के लिए बहुत कृतज्ञ होना चाहिए, परन्तु उसने नहीं चाहा कि यह हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा का, या उसका स्थान लेगी। जब यह ऐसा करती है, तब इसका केवल दुरूपयोग ही नहीं हो रहा है, यह एक मूरत बन गई है।

सच्ची मसीहियत मसीह के साथ एक सम्बंध है, और सम्बंध मूल रूप से बातचीत करना है। जैसे प्रभु ने उसकी अपनी परीक्षाओं के दौरान स्वीकार किया था, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा" (मत्ती 4:4)। जैसे हम ने पहले कहा था, यह शब्द "निकलता है" वर्तमान काल है, न कि "निकला था" भूत काल है। हमारे लिए पर्याप्त नहीं कि जो उसने अतीत में कहा है उससे जीवित रहें, परन्तु हमें उससे आज भी सुनना है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि कोई नए सिद्धान्त स्थापित करने हैं, या प्रमाणिक पवित्रशास्त्र-संग्रह में कुछ जोड़ना है, परन्तु कि एक जीवित, व्यक्तिगत सम्बंध है जो हम सबका उसके साथ होना चाहिए। जंगल के मन्ना की शिक्षा यही थी - इसे हर दिन सुबह नया इकट्ठा करना होता था। हमें भी उससे हर दिन सुनना चाहिए - हमें उसके मुँह से निकलने वाले शब्द से जीवित रहना है, जो एक निरन्तर सम्बंध दिखाता है। हर सम्बंध की विशेषता बातचीत पर निर्भर है। हमारे विश्वास की विशेषता प्रभु के साथ हमारी बातचीत पर निर्भर है, और नए नियम का काम उस स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन देना है जिससे हम में से हर एक उस बातचीत को बना सकता है और बनाए रख सकता है।
स्वतन्त्रता एक सच्चे सम्बंध के लिए पूर्वापेक्षा है। यदि एक व्यक्ति उसकी पत्नी के साथ सम्बंध में बल प्रयोग करता है तो वह बलात्कार कर रहा है, प्रेम नहीं। प्रभु अपनी कलीसिया को लूटेगा नहीं, परन्तु वह प्रेम जताता है, जिससे वह प्रेम के कारण अधीन

होने की इच्छा करती है। यह दुष्ट है जो हमें आज्ञापालन या वचनबद्धता के लिए विवश करता है और ऐसे में सच्ची धार्मिकता कभी नहीं आएगी जो केवल हृदय से ही आ सकती है। छलयोजना, धमकी और नियंत्रण सत्य के आत्मा से नहीं आते, यह तो दुष्ट आत्माएँ हैं जो मनुष्य को सच्चाई से दूर खदेड़ती हैं और उन्हें अन्धकार में बाँधे रखने का प्रयास करती हैं।

अध्याय सात - आधुनिक फरीसी

धर्मसुधार का एक सबसे बड़ा आत्मिक युद्ध शैतान का साधानण लोगों के हाथों से बाइबल को दूर रखने का प्रयास था। आज भी यह युद्ध चल रहा है क्योंकि शैतान अच्छी तरह जानता है कि जब "सामान्य लोग" परमेश्वर के वचन को पा लें तो क्रान्ति आरम्भ हो चुकी है और इस दुष्ट युग के राजकुमार के रूप में उसका तख्ता पलटा जाने वाला है। इसी कारण से प्रभु ने कहा कि निस्संदेह वह मसीहा है क्योंकि "कंगालों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है।"
प्रभु गरीबों से प्रेम करता है, और इसका भी युद्धनीतिक महत्त्व है। आजकल के शासक, और आत्मिक शासक भी अत्यधिक सुखी, और उनके क्षेत्र के अत्यधिक रक्षी हैं, जिसके कारण वे मूल आज्ञापालन में परमेश्वर के वचन की ओर प्रतिक्रिया नहीं करते जिससे बेदारी लाने के लिए आवश्यक जीवित जल नहीं मिलता। सच्ची बेदारी एक क्रान्ति है। यह परिवर्तन लाता है, और जो सुखी हैं वे सदा परविर्तन का विरोध करेंगे।
सामान्य लोगों के हाथों से परमेश्वर के वचन को दूर रखने का युद्ध इस्राएल में भी उस समय चल रहा था जब प्रभु पृथ्वी पर थे। दिलचस्प बात है कि, फरीसी, जो उस समय के किसी भी दूसरे पंथ से अधिक पवित्रशास्त्र से प्रेम करते और सम्मान करते थे, इस युद्ध में शत्रु का प्रमुख हथियार थे। इस निष्ठा के कारण, उन्हें सदियों भर में पवित्रशास्त्र की अखंडता को बनाए रखने की जिम्मेवारी दी गई थी। इस के लिए बाइबल के प्रेमी उनके कृतज्ञ हैं। परन्तु पवित्रशास्त्र के दुरुपयोग से सुरक्षा के उनके उत्साह में, फरीसियों ने पवित्रशास्त्र का अर्थ निकालने की एक प्रणाली बना रखी थी जो असली मूल-पाठ से अधिक उनकी परम्पराओं पर आधारित था।

इन परम्पराओं के कारण वे उसे देख नहीं पाए, और सताया भी, जो परमेश्वर के वचन का मानवीकरण था - यीशु। आज भी मसीहियत में अतिरूढ़ीवादी पड़ाव हैं जिन में आधुनिक फरीसी मूल रूप से वही कर रहे हैं जो उनके प्रतिरूप कर रहे थे - सिद्धान्तीय दुरुपयोग से पवित्रशास्त्र को बचाने के उनके उत्साह में उन्होंने अर्थ निकालने की एक प्रतिक्रियात्मक प्रणाली बना रखी है। असल में यह प्रणाली पवित्रशास्त्र को उनसे सुरक्षित रखने में काम करती है जो उनका गलत अर्थ निकालेंगे, परन्तु साथ में यह उन्हें रोकने का काम भी करती है जो मूल रूप से पवित्रशास्त्र का पालन करना चाहते हैं। सब जो सच्चाई से प्रेम करते हैं सही सिद्धान्त पाना चाहते हैं। परन्तु, जब हम मसीह के न्यायासन के सामने खड़े होंगे, तब हमारा न्याय हमारे सही सिद्धान्तों से नहीं, परन्तु हमारे कर्मों से होगा। सही सिद्धान्त केवल अपने लिए नहीं है, परन्तु एक साधन है जिसके द्वारा हम मसीह के स्वरूप में हो सकते हैं ताकि बेहतर तरीके से उसमें बने रहें। खरी शिक्षा हमें परमेश्वर की इच्छा का बेहतर पता लगाने में सहायता करती है ताकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकें। हम बाइबल को कंठस्थ कर सकते हैं परन्तु हो सकता है सत्य को न जानें क्योंकि सत्य एक व्यक्ति है। फरीसी पवित्रशास्त्र को चाहते थे और आज भी अनेक इस छल में पड़ जाते हैं। हम उसके वचन से प्रेम किए बिना परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते, परन्तु वचन को उससे बड़ा कर सकते हैं और इस प्रकार पवित्रशास्त्र को मूरत बना सकते हैं, जो उसके साथ हमारे सम्बंध का स्थान ले ले, और कलीसिया में से पवित्र आत्मा को निकाल दे।

अधिकाँश विश्वासी वचन को बहुत अधिक सम्मान देने के खतरे में नहीं है, परन्तु बहुत कम सम्मान देने, और प्रभु की उसके लोगों के लिए इस बेशकीमती तोहफे की उपेक्षा करने के खतरे में हैं। इसमें से अधिकाँश उपेक्षा का कारण कलीसियाई व्यावसायिकता है जिन्होंने भ्रम का इतना भय पैदा किया हुआ है कि कई मसीही सत्य की खोज करने से डरते हैं। उसी के साथ कई मसीही अगुवों ने लिखित वचन को जीवित वचन से बढ़कर सम्मान दिया है और पुस्तक के प्रभु के स्थान पर प्रभु की पुस्तक की आराधना करने लगे हैं। जिसकी वजह से उन्होंने नए नियम को एक दूसरी व्यवस्था बना लिया है। फरीसियों के समान, पवित्रशास्त्र के सबसे बड़े प्रेमी स्वयं वचन (मसीह) के सबसे बड़े शत्रु हैं; उन में से कुछ जो बारही तौर पर वचन की अखंड़ता की रक्षा करने में समर्पित हैं, आज सत्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। ये आधुनिक फरीसी, सत्य के महाशत्रु, उनके पूर्वजों के समान, डर और धमकी के द्वारा काम करते हैं। जो डर के वश में हैं उससे सबसे अधिक खतरा महसूस करेंगे जिसे वे धमकी द्वारा वश में नहीं कर सकते हैं। जो लोग उनके हृदयों से परमेश्वर में विश्वास करते हैं उसे जानते हैं जिसमें वे विश्वास करते हैं। जब हम जानते हैं कि हम

परमेश्वर द्वारा जाने गए हैं, हम परवाह नहीं करेंगे कि कोई हमारे विषय में क्या सोचता है। इसलिए हम पृथ्वी पर किसी का डर महसूस नहीं करेंगे। ऐसों द्वारा किए गए फैसले जो सही है उस पर आधारित होंगे, न कि राजनीतिक दबाव पर।

झूठे भाई

यीशु पापियों की ओर सहनशील था परन्तु उसे फरीसियों और व्यवस्था के शास्त्रियों के ओर कोई सहनशीलता नहीं था। वे राज्य में प्रवेश नहीं कर रहे थे और न ही दूसरों को करने दे रहे थे। अधुनिक फरीसी उनको शत्रु, झूठे शिक्षक, या झूठे भविष्यद्वक्ता मानते हैं जो सिद्धान्तों के उनके अर्थ से हट गए हैं। निस्संदेह कुछ झूठे शिक्षक और झूठे भविष्यद्वक्ता तो हैं ही। परन्तु, प्रेरित पौलुस का झूठे शिक्षकों का अर्थ इस अर्थ से काफी भिन्न था जिसे आज स्वीकार किया गया है। उसकी चेतावनी थी: "उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएँ।" (गलातियों 2:4)। जो उन्हें वश में करने के लिए डर और धमकी इस्तेमाल करते हैं जो उनके विश्वास के इनुसार नहीं चलते, आप झूठे शिक्षक हैं न कि वे जिन पर वे जोरशोर के साथ आक्रमण करते हैं।

व्याख्या सम्बंधी समस्याएँ

अर्थ निकालने के अधिकाँश तरीके जिनको अपधर्म या भ्रम को रोकने के उद्देश्य से बनाया गया है उस स्वतन्त्रता को भी नष्ट करते हैं जो एक विश्वासी को प्रभु के साथ उसका अपना सम्बंध विकसित करने, और आत्मा और सच्चाई में उसकी आराधना करने के लिए आवश्यक है। दुर्भाग्यवश, अधिकतर दवाएँ जिन्हें इलाज करने के लिए बनाया गया था बीमारी से अधिक हानिकर प्रमाणित हुई हैं। यह वक्तव्य उचित व्याख्या के विकास और इस्तेमाल के विरुद्ध नहीं है। परन्तु यह व्यक्तियों की पढ़ने, समझने, सोचने और उनके अपने लिए परमेश्वर से सुनने की योग्यता के विकास को रोकने के विरुद्ध है।

कैथोलिक और रूढ़िवादी प्रोटेस्टेंट भाष्य-विज्ञान दोनों लोगों को विश्वास में ले जाने के बदले डर के साथ बाँधने के दोषी हैं। उन फरीसियों के समान जो उनके पहले हुए हैं, कुछ सबसे रूढ़िवादी साम्प्रदायिक अगुवों ने लोगों को पवित्रशास्त्र से नए प्रकटीकरण या अर्थ पाने से रोकने के लिए घेरे बना रखे हैं। असल में, "नए प्रकटीकरण" को वे यह दोष लगाते हुए शाप देते हैं कि लोग पवित्रशास्त्र में कुछ जोड़ रहे हैं, जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है। नए प्रकटीकरण जिनकी आवश्यकता है पवित्रशास्त्र की अधिक या गहरी समझ के लिए हैं। जो पवित्रशास्त्र के नए प्रकटीकरण की ओर तीव्र प्रतिक्रिया करते हैं एक सबसे भयानक अभिमान में भूल करते हैं - यह विश्वास कि वे सब जानते हैं जिसे जानने की आवश्यकता है।
व्याख्या के कुछ सिद्धान्त हैं जो सत्य के किसी भी सच्चे खोजी की जीवन के पथ पर बने रहने में सहायता कर सकते हैं। दुर्भाग्यवश, ये अकसर कई दूसरे सिद्धान्तों द्वारा घिरे हुए हैं जो कई अनावश्यक सिद्धान्तों के पूर्वनिश्चित अर्थों की रक्षा के लिए बनाए गए हैं जो व्यक्ति की बाइबल के लगभग सब शिक्षाओं के विषय में पहुँच, दर्शन, और समझ को सीमित करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

प्रकट है कि जितना हम अभी बाइबल में से समझते हैं उससे काफी अधिक समझने के लिए है। रूढ़िवादी व्याख्याओं के कई पहलू पवित्रशास्त्र की अतिरिक्त खोज और समझ रोकते, या कम से कम बहुत हतोत्साहित करते हैं। यह एक अनर्थकारी भूल है। इसके भिन्न धर्मवैज्ञानिक पड़ावों के साथ, कलीसिया लोकोक्तीय अंधे मनुष्य और हाथी के समान बन गई है। जिसको हाथी की टाँग मिली उसे निश्चय था कि हाथी एक पेड़ के समान है। जिसे पूँछ मिली उसने सोचा कि बेकार की बात है; हाथी तो एक रस्सी के समान है! जिसे उसका कान मिला उसने सोचा कि दोनों गलत हैं; यह चीज तो एक बड़ा पत्ता है। वो सब कुछ-कुछ सही थे परन्तु पूर्ण रूप से गलत थे। जब तक वे एक दूसरे की सुनते नहीं और उनकी समझ को मिला नहीं लेते, वे हाथी को कभी भी पहचान नहीं सकते थे।

बुद्धिमान भजनकार ने कहा, "तेरा सारा वचन सत्य ही है" (भजन 119:160)। हम सब में एक अंश हो सकता है जो सत्य है परन्तु यह तब तक सारा सत्य नहीं है जब तक यह मसीह की देह के दूसरे अंशों के साथ उचित रूप से जुड़ता नहीं। बाइबल की व्याख्या के विभिन्न पड़ावों के साथ समझ और अदला-बदली बुरे से ठोकर खाए बिना अच्छे को पाने में हमारी सहायता करता है। जो सत्य के आत्मा को जानते हैं उनमें उसमें ऐसा करने का विश्वास होगा। दुर्भाग्यवश, जो सबसे अधिक डर के बन्धन में हैं, जिन्हें सबसे अधिक अदला-बदली की आवश्यकता है, उनमें सत्य में ले चलने का पवित्र आत्मा में बिरले ही विश्वास होगा। जो एक नियंत्रण की आत्मा के वश में हैं उनमें सारे सत्य में ले चलने की पवित्र आत्मा की योग्यता से अधिक शैतान की उन्हें धोखा देने की योग्यता में विश्वास होगा।

यह कहना कि कोई चीज बाइबल के अनुसार नहीं क्योंकि यह बाइबल में नहीं पाई जाती है पवित्रशास्त्र का गलत उपयोग है। पवित्रशास्त्र हमें उसे करने की जो विशेष रूप से मना नहीं है स्वतन्त्रता देने के लिए है, हमें वह सब करने से रोकने के लिए नहीं जिनका उसमें जिक्र नहीं है। हमें विश्वासियों को उसे करने की स्वतन्त्रता देनी चाहिए जो नए नियम में विशेष रूप से मना नहीं है, और फिर उनके फल से निर्णय करना चाहिए कि यह परमेश्वर का है या नहीं। इस स्वतन्त्रता का अर्थ यह नहीं कि जो कुछ हम करते हैं सही है; इसका सरल अर्थ यह है कि उन चीजों में हमें अपने-अपने लिए परमेश्वर की इच्छा और निर्णयों को खोजना है। ये ऐसे समय भी हैं जब प्रभु चाहेगा कि किसी चीज के विषय में उससे सुनने के बदले अपना निर्णय लें। जैसे हम परिपक्व होते जाते हैं वह चाहेगा कि अधिकाँश समय हम अपने निर्णय लें। यदि मैं अपनी बेटी से कहूँ कि वह अपने किसी मित्र को सुसमाचार सुनाए और वह करे तो मैं कुछ हद तक प्रसन्न होऊँगा, परन्तु उतना प्रसन्न नहीं जितना यदि वह ऐसा अपनी इच्छा से करती है।

पहली शताब्दी की प्रेरिताई दलों को हाथ पकड़कर नहीं ले जाया जाता था; उन्हें परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। वे अधिकाँश समय उनके अपने निर्णय इस्तेमाल करते थे क्योंकि उन में उसका मन था। जब प्रभु को उन्हें विशेष निर्देश देना होता था, या उनकी दिशा बदलनी होती थी, तब वह उन्हें एक स्वपन, दर्शन, या भविष्यद्वाणी का वचन देता था; परन्तु यह पवित्रशास्त्र की गवाही से बिरले ही होता था। प्रभु चाहता है कि उसके सब लोग उसकी आवाज जानें और उसके साथ एक व्यक्तिगत और घनिष्ठ सम्बंध रखें। सब सम्बंध बातचीत पर निर्भर होते हैं, परन्तु सब बातें निदेशक नहीं होतीं। कई लोग भविष्यद्वाणी के वचन के आदी हो जाते हैं, जिससे भविष्यद्वाणी के वचन का दुरूपयोग होता है। मेरे नन्हे को विशेष और लगभग निरन्तर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, परन्तु यह मेरे दस वर्ष के लड़के के लिए सही नहीं है। जैसे हम परिपक्व होते होते हैं, हमें कम, न कि अधिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होनी चाहिए। हर छोटी बात के लिए में प्रभु से पूछना परिपक्वता की नहीं, अपरिपक्वता की निशानी है। भविष्यद्वक्ताओं को गुरू नहीं होना है। न ही पवित्रशास्त्र को जन्मकुण्डली के रूप में इस्तेमाल करना है। फिर भी, विश्वासियों को अपने लिए प्रभु को जानने, उसके साथ अपने सम्बंध को विकसित करने, और उसकी आवाज जानने की स्वतन्त्रता होने के लिए, उन्हें ऐसा करते हुए गलतियाँ करने की भी स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

परमेश्वर के साथ कुछ भी असम्भव नहीं है। सब मसीहियों से हर सिद्धान्त के विषय में एक समान विश्वास करवाना उसके लिए छोटी सी बात है। परन्तु हृदय की सच्ची एकता तब तक प्राप्त नहीं हो सकती जब तक एक नहीं होने का विकल्प भी है। आत्मिक एकता समान सिद्धान्त पर निर्भर नहीं है; यह प्रेम पर निर्भर है - पहले परमेश्वर के लिए और फिर एक दूसरे के लिए।
परमेश्वर की योजना के अनुसार "अभी हमें दर्पण में धुँधला दिखाई देता है।" हर एक सम्पूर्ण तस्वीर का एक अंश ही देख पाता है, और हम सम्पूर्ण तस्वीर कभी भी नहीं देख सकेंगे यदि हम अपने अंश इकट्ठे करना नहीं सीखते। परमेश्वर की एकता अनुरूपता की एकता नहीं है, परन्तु कई भिन्न अंशों की एकता है। हृदय का सच्चा विश्वास उनकी ओर सहनशीलता दिखाता है जो भिन्न हैं, और यदि हृदय की सच्ची एकता होने वाली है तो इसकी आवश्यकता होगी।

हर एक अपना-अपना मन्ना एकत्र करे

जब इस्राएल के लोगों को स्वर्ग से मन्ना दिया जाता था, तब हर एक घराने को अपना-अपना एकत्र करना होता था। यही बात स्वर्गीय मन्ना एकत्र करने के विषय में भी सच है। हम अपने आत्मिक भोजन के लिए केवल अगुवों पर निर्भर नहीं हो सकते हैं। यह अगुवों और शिक्षकों की सेवा के महत्त्व को कम करने के लिए नहीं है जो अपने आप को वचन की सेवा में देते हैं। जिस प्रकार लेवी इस्राएल की मण्डली की सेवा के लिए अनिवार्य थे, हमारे अगुवे आज अनिवार्य हैं। परन्तु अगुवे व्यक्ति या घराने की जिम्मेवारी नहीं ले सकते हैं। उनके द्वारा एक सामान्य शिक्षा का दिया जाना जो वचन की सेवा के लिए समर्पित हैं और स्वर्ग से प्रतिदिन की रोटी जिसे हर घराने को एकत्र करना है, में अन्तर है।

एक अशिक्षित व्यक्ति कैसे भ्रम या झूठी शिक्षा में पड़े बिना स्वर्ग से एक नया वचन पाने के लिए बाइबल में जा सकता है? यह एक सबसे महत्त्वपूर्ण मामला है जिसका सामना परमेश्वर के लोगों को चार हज़ार वर्षों से करना पड़ा है जब से मनुष्य को लिखित वचन दिया गया है। मसीहियत का एक सबसे बड़ा संघर्ष साधारण लोगों के लिए अपने लिए पवित्रशास्त्र के पास जाने और अर्थ निकालने की स्वतन्त्रता का है। फिर परमेश्वर द्वारा नियुक्त अनेकार्थकता (एक से अधिक अर्थ होना) है जो बाइबल का अर्थ निकालने के एक परमसिद्धान्त या तरीके को रोकता है। यह अनेकार्थकता हमें सत्य में जाने के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भरता के लिए बनाई गई है। कि मनुष्य साहस करेंगे कि वे एक प्रणाली, या नियम बना लेंगे जिनके द्वारा वे पवित्रशास्त्र का अर्थ निकाल सकते हैं, अपने आप में एक गंभीर मानवीय अहंकार का काम है। ऐसे नियम अर्थ निकालने का बोझ पवित्र आत्मा पर रखने के बदले एक विज्ञान पर रखते हैं। यह, अपने आप में, सच्ची मसीहियत की प्रकृति से एक फिराव है - परमेश्वर के साथ सम्बंध। यदि यह चीजें सम्भव थीं, तो इन्हें पवित्रशास्त्र में क्यों स्पष्ट रूप से दिया नहीं गया है, और पवित्रशास्त्र के लेखक भी क्यों इन सिद्धान्तों से प्रायः हट जाते हैं। निश्चित रूप से कुछ सिद्धान्त हैं जो बाइबल के सत्य की खोज में हमारी सहायता कर सकते हैं; परन्तु

बाइबल का अर्थ निकालने का कोई परमसिद्धान्त या तरीके नहीं हैं। जब हम पवित्र आत्मा के स्थान पर अपने विज्ञान को रखने का साहस करते हैं, तो हम गंभीर भ्रम में पड़े गए हैं।
पवित्रशास्त्र में अनेक विरोधाभास हैं क्योंकि सत्य दो छोर के बीच तनाव में पाया जाता है। केवल पवित्र आत्मा ही ऐसे सत्य को समझने और दो छोरों के बीच जो हमें मार्ग से भटका देते हैं सन्तुलित रहने में सहायता कर सकता है। क्या यह पवित्रशास्त्र का अर्थ निकालने में बहुत सारी आत्मपरकता के लिए द्वार नहीं खोलता? हाँ! और बात यही है। सच्ची मसीहियत परमेश्वर के सत्य की व्यक्तिगत खोज के लिए एक असाधारण स्वतन्त्रता को बढ़ावा देती है, जिस स्वतन्त्रता की आवश्यकता है यदि हमें अपने हृदयों से, न कि केवल अपने मनों से विश्वास करना है।

सबसे ऊँचे किस्म की एकता

जब हम अर्थ निकालने के परम नियम, या सिद्धान्त बनाते हैं, तो यह व्यवस्था और एकता का एक रूप दिखाई पेश करगा, परन्तु व्यवस्था और एकता बाहरी होगी, भीतरी नहीं। जैसे ही प्रतिबंध निकाले जाएँगे, तो हम पाएँगे कि कितनी सच्ची व्यवस्था और एकता वहाँ है; अधिकाँश समय हम अव्यवस्था पाएँगे। जैसे मार्टिन लूथर ने एक बार कहा, "एक आत्मिक मनुष्य को एक वाचा की आवश्यकता नहीं, और एक शारीरिक मनुष्य इस पर चल नहीं सकता!" जब हम मनुष्यों को अपने सिद्धान्तों का पालन करने या मानवीय वाचाओं और वचनबद्धता वाली हमारी संगति से जुड़ने को कहते हैं तो हम ने एक सच्ची एकता या सिद्धान्त में एक सच्चे विश्वास में आने की उनकी योग्यता को सम्भवतः व्यर्थ कर दिया है। हम ने सम्भवतः अपने आप को एक भावी कलीसिया विभाजन के लिए तैयार भी किया है।

यह सत्य है कि हम अव्यवस्था के समय में जी रहे हैं। सच्चाई, सम्मान, और यह विश्वास कि एक मनुष्य का वचन उसका बन्ध है कठिनाई से दिख रहे हैं। फिर भी, अव्यवस्था का उत्तर विधिवादिता नहीं है, यह केवल अव्यवस्था को बढ़ाता है, इसीलिए पौलुस ने कहा, "पाप का बल व्यवस्था है" और "शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है" (1 कुरिन्थियों 15:56; 2 कुरिन्थियों 3:6)।
जब हम एक व्यक्ति पर व्यवस्था लगाते हैं तो हम व्यक्ति को उसकी समस्या को जीतने का अनुग्रह दिए बिना उसकी समस्या को विशिष्ट करके खराब कर देते हैं - इस प्रकार हम पाप को प्रकट करते हैं। यदि हमारे प्रतिबंध शक्तिशाली हैं तो हम व्यक्ति को वश में रख सकते हैं; परन्तु जैसे ही प्रतिबंध निकाल दिए जाते हैं वह अधिक खराब हो जाएगा। व्यवस्था को इस्तेमाल करके, हम अपराधी को बंद कर देते हैं; परन्तु हम उसे बदल नहीं सकते। जैसे ही उसे कैद से छोड़ा जाता है, वह अपराध करता रहेगा क्योंकि उसका जीवन बदला नहीं है।

सारांश

प्रभु भीतरी मनुष्य में सत्य की खोज करता है। जब हम अपने हृदयों में सच्चे है, तो हम तब भी सच्चे होंगे जब कोई देख नहीं रहा है और कोई पता नहीं लगा सकता है क्योंकि सत्य हमारे हृदयों में है। जब हम विश्वासियों पर नई वाचा से अधिक हैं जो पहले ही हमारे पास है बाहरी प्रतिबंध लगाकर जैसे कि वाचाएँ और समपर्ण एकता चाहते हैं, तो हम मनुष्यों को मसीह के साथ जोड़ने के बदले अपने साथ जोड़ रहे हैं; और यह लगभग सदा आत्मिक विपत्ति ही लाएगा। मनुष्य ऐसी वाचाओं पर जब वे उन्हें बनाते हैं सच्चाई से चलना चाहेंगे, परन्तु हम में से हर एक परिवर्तन की प्रक्रिया से गुज़र रहे हैं। जब हम मनुष्यों को उस से अधिक अपने पास रखने का प्रयत्न करते हैं जब तक वे रहना चाहते हैं, तो वे वचनबद्धता के कारण अधिक देर तक रहेंगे, परन्तु वे आखिरकार चले जाएँगे। यह सम्बंध में बहुत खराब दरार बना देता है, और सम्भवतः कुछ लोग, दोष और बन्धन के कारण जो डाले गए हैं प्रभावित होंगे।

प्रभु ने उसके चेलों के लिए उसे छोड़ कर जाना आसान और उनके लिए टिके रहना कठिन किया था। हम इसे भिन्न तरीके से करना क्यों चाहते हैं? हम क्यों चाहते हैं कोई समर्पित रहे यदि हृदय से नहीं होता? केवल तब ही जब एक व्यक्ति जाने के लिए स्वतन्त्र है, परन्तु टिके रहना चाहता है, हम जानते हैं कि वह अपने हृदय से हमारे साथ है।
जब हम मनुष्यों को अपने साथ ऐसी वाचाओं के साथ बाँधते हैं तो यह हमें थोड़ी अधिक सुरक्षा देगा, परन्तु यह झूठी सुरक्षा है। यह उस बन्धन की शक्ति में सुरक्षा रखना है जिसके साथ हम ने किसी को बाँधा है, यह प्रभु में विश्वास नहीं और न ही उसमें है जिसे वह बना रहा है। एक वाचा बाँधना एक गंभीर मामला है, और यदि हम इसे तोड़ते हैं तो यह हम पर दण्ड ला सकता है। कुछ सोचते हैं कि, मसीह में नई वाचा जो हमारे पास है, और हमारे विवाह की वाचाएँ, केवल यही बाइबल की वाचाएँ हैं। मेरा अपना विश्वास है कि समझौते करने में इससे कुछ अधिक स्वतन्त्रता होनी चाहिए। परन्तु, यदि हम मसीह के साथ जुड़े हैं तो हम उसकी देह के साथ भी जुड़े हैं, तो फिर हमें किसी के साथ आत्मिक रूप से जुड़ने के लिए अतिरिक्त वाचा की आवश्यकता क्यों है? जब हमें लोगों, स्थानीय कलीसियाओं या गतियों के साथ वाचाएँ बनाने के लिए विवश किया जाता है तब ये वाचाएँ नए नियम के

बाहर की हैं; और नया नियम और इतिहास दोनों गवाह हैं कि उनका अन्त बुरा होगा। जब पतरस ने वादा किया कि वह कभी भी प्रभु का इन्कार नहीं करेगा, तो वह उसे एक रात तक भी नहीं रख सका था।
मैं ने दाऊद और योनातान का वाचा की सुन्दरता के विषय में कुछ बहुत ही भावपूर्ण और हृदयस्पर्शी संदेश सुने हैं, परन्तु उस सम्बंध का दुखद अन्त इस बात का एक मार्मिक उदाहरण है - योनातान ने हालाँकि दाऊद के घराने के साथ वाचा बाँधी थी फिर भी वह शाऊल के घराने के साथ मरा। परन्तु, हमें योनातान के बच्चों के साथ वाचा निभाने के लिए दाऊद की प्रशंसा करनी चाहिए। एक महान व्यक्ति अपने समझौतों को बनाए रखेगा, तब भी दूसरा नहीं रखता है। हम अपने साथ या अपने काम के साथ जुड़ने के लिए लोगों पर अनावश्यक दबाव क्यों डालें ? यह हमारी अगुआई का उथलापन और प्रभु की उपस्थिति का अभाव प्रकट करता है। जब प्रभु यीशु ऊपर उठाया जाएगा, तब सब मनुष्य उसकी ओर चले आएँगे; और हमें किसी दूसरे टेक की आवश्यकता नहीं होगी। जब हम उसके स्थान पर अपने आप को या अपने काम को ऊँचा करते हैं, जो जब हम लोगों को अपनी ओर या अपने काम की ओर समर्पित होने के लिए दबाव डालते हैं तो ऐसा ही होता है, तब वे निराशा होंगे और बिखर जाएंगे, और सब को बड़ी चोट पहुँचेगी।

यरूशलेम में पहली परिषद् की सभा में कलीसिया के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घोषणा की गई थी, और उन्होंने सब मसीहियों के लिए एक बाइबल की स्वतन्त्रता स्थापित की थी। फरीसियों के पंथ के विश्वासियों के साथ विवाद करने के बाद, जो नई कलीसियाओं को मूसा की व्यवस्था पर चलने के लिए विवश कर रहे थे, प्रेरितों और प्रचीनों ने कहा: "पवित्र आत्मा को और हम को ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें; कि तुम मूरतों पर बलि किए हुओं से और लहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से दूर रहो। इनसे दूर रहो तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभ।" (प्रेरितों 15:28-29)।
क्या इसका अर्थ यह है कि हम बाकी कुछ भी कर सकते हैं, जो हम चाहते हैं टीवी पर देख सकते हैं, अश्लील चित्रों को देख सकते हैं, जूआ खेल सकते हैं, आदि? निस्संदेह नहीं! इसका अर्थ है कि हमें पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है। इसका अर्थ है कि हम "प्रेम की सिद्ध व्यवस्था" के द्वारा चलते हैं। यदि हम प्रभु से, अपने परिवारों से, कलीसिया से, और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं, तो हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिससे उनको चोट पहुँचे, या ऐसे तुच्छ कामों में अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाएँगे, जब हम उनके साथ समय बिता सकते हैं।

नियंत्रण की आत्मा, जो मनुष्यों की वाचाओं या दोष और दबाव के इस्तेमाल के द्वारा प्रकट होती है, नकली आत्मिक अधिकार का प्रदर्शन है। हमारे पास उतना ही सच्चा आत्मिक अधिकार हो सकता है जितना यीशु हमारे भीतर रहता है। जब वह हमारे भीतर रहता है, तब हम तीव्रता से जानते हैं कि वह उसकी कलीसिया बना रहा है, और कि वह ऐसा सिद्धता के साथ कर सकता है। इसलिए, हम निश्चिन्त हो सकते हैं। जब हम सच्चे आत्मिक अधिकार में सेवा करते हैं तो हम उसके साथ जूए में बँधे हैं, जिसका अर्थ है कि वह बोझ को खींच रहा होगा - उसका जूआ वास्तव में आसान है और उसका बोझ हलका है। जब हम उसके जूए को लेते हैं तो हमारे प्राण विश्राम पाते हैं। परन्तु जब हम अपनी शक्ति में बनाते हैं तो संघर्ष ही करना पड़ता है। एक सच्चे मसीही जीवन के लिए स्वतन्त्रता आवश्यक है। स्वतन्त्रता में बढ़ना सदा हमारा लक्ष्य होना चाहिए, परन्तु पता होना चाहिए कि स्वतन्त्रता का बढ़ना परिपक्वता के बढ़ने पर निर्भर है। मैं अपने तीन वर्ष के बेटे को उतनी स्वतन्त्रता नहीं दे सकता जितनी मैं अपने दस वर्ष के बेटे को देता हूँ। प्रकट है कि नए विश्वासियों को अधिक परिपक्व मसीहियों की तुलना में अधिक निरीक्षण और सहायता आवश्यकता होती है। असली मामला यह है: क्या हम आत्मिक स्वतन्त्रता और सच्चाई को बढ़ावा दे रहे हैं जो मनुष्यों के हृदयों को परिवर्तित करेंगे, और जो मनुष्यों के प्रतिबंधों और दबावों पर आधारित नहीं है ? यदि हम में स्वतन्त्रता नहीं है तो हम हृदय से सच्ची आराधना नहीं कर सकेंगे।

अध्याय आठ - हमारी सबसे बड़ी सामर्थ्य और हमारा सबसे बड़ा शत्रु

दो सेवाएँ हैं जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने निरन्तर चलती रहती हैं: एक मध्यस्थता की सेवा है, दूसरी दोषारोपण की सेवा। यीशु उसके लोगों के लिए "मध्यस्थता करने के लिए जीवित" है। जितना हम उसमें बने रहेंगे, उतना यीशु हमें मध्यस्थता करने के लिए इस्तेमाल करेगा; उसकी कलीसिया सब "देशों के लिए प्रार्थना का घर" होनी चाहिए। शैतान को "भाइयों पर दोष लगानेवाला" कहते हैं और हमें बताया गया है कि उसकी सेवा "रात दिन हमारे परमेश्वर" के सामने चलती रहती है (प्रकाशितवाक्य 12:10)।

शत्रु को जितनी हमारे जीवन में पहुँच है उतना वह हमें दोष लगाने और आलोचना करने के लिए इस्तेमाल करेगा। बाग के दो पेड़ों के समान, हम सब को चुनना होगा कि इन दो में से कौन सी सेवा हम करनेवाले हैं।

हम पूछ सकते हैं कि शैतान परमेश्वर के सामने सन्तों पर कैसे दोष लगा सकता है जब उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया है और सिंहासन तक उसकी पहुँच नहीं है? उत्तर यह है कि शैतान सन्तों को इस्तेमाल करता है, जिनको सिंहासन तक पहुँच है, जो उसका दुष्ट काम करते हैं। शैतान को अनेक नामों से जाना जाता है परन्तु उसका सबसे प्रभावशाली रूप "भाइयों पर दोष लगानेवाला" है। शैतान को यह नाम भाई को भाई के विरुद्ध करने के उसके प्रभाव के कारण दिया गया था। फूट डालना उसकी विशेषता है। शैतान की कलीसिया पर सबसे बड़ी विजय भाई को भाई के विरुद्ध करना है; मसीह की देह की ज्योति, सामर्थ्य और गवाही को नष्ट करने का उसका सबसे प्रभावशाली और घातक हथियार दोषारोपण है।

शैतान के राज्य को सबसे बड़ा खतरा कलीसिया की एकता है। शैतान उस अधिकार के विषय में भलि भाँति जानता जानता जो यीशु ने किसी भी दो को जो सहमत होंगे दिया है। वह जानता है कि केवल दो सन्तों के बीच समझौते के कारण पिता उनको जो वे माँगेंगे देगा। वह समझता है कि एक सन्त एक हज़ार को खदेड़ सकता है तो दो सन्त दल हज़ार को खदेड़ सकते हैं। एकता हमारे आत्मिक अधिकार को केवल बढ़ाता नहीं है - यह इसे घातीय रूप से गुणा करता है।

व्यंगपूर्वक, दोष लगानेवाले को हम में से अधिकाँश तक जो पहुँच है वह हमारी असुरक्षा के द्वारा है, जो हमें क्षेत्रीय बना देता है। असुरक्षित लोग उस हर चीज से खतरा महसूस करते हैं जिसे वे नियंत्रण में नहीं कर सकते हैं। हम हो सकता है सत्य या भेड़ों की रक्षा करने के लिए सिद्धान्त या कल्पित उच्च दृढ़ संकल्प इस्तेमाल करें, परन्तु मैं ने कलीसिया में ऐसी कोई भी फूट नहीं देखी है जो क्षेत्रीय रक्षण में से नहीं निकली थी। अपने क्षेत्रों की रक्षा करने में जो हम फूट लाते हैं असल में हमारे सच्चे अधिकार और अभिषेक को काट देता है। अन्त में इसका परिणाम यह होता है कि जिसे हम बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं वही हमारे हाथ से वह निकल जाता है। यह आत्मा का एक अखंडनीय नियम है, यदि तुम अपना जीवन बचाने का प्रयत्न करते हो, तो खो दोगे। यदि तुम अपना जीवन प्रभु के लिए खोते हो तो पा लोगे। यशायाह ने अध्याय 58 में इसे संभोदित किया है। "तब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे-आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और वह कहेगा, 'मैं यहाँ हूँ।' यदि तू अन्धेर करना और उँगुली उठाना, और दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे।" (आय. 8-9)।

क्या आपको अपने जीवन में अधिक प्रकाश चाहिए? क्या आप सोचते हैं कि स्वास्थ्यलाभ और चंगाई क्यों नहीं आते? प्रभु की महिमा से अधिक क्यों संकट आपके पीछे क्यों चलते रहते हैं? तुम प्रभु से प्रार्थना करते हो परन्तु वह नहीं सुनता; तु उसे पुकारते हो परन्तु उसे पाते नहीं। इसका कारण लगभग सदा वही है - हमारे बीच में एक जूआ है, जिसका नाम है "उँगुली उठाना, और दुष्ट बातें बोलना" - जो एक आलोचनात्मक आत्मा है। उसने यशायाह में प्रतिज्ञा की है कि यदि हम उस जूए को निकाल दें तब हमारे जीवन क्रान्तिक रूप से बदल जाएँगे। जैसे बुद्धिमान सुलेमान ने भी कहा: "परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता जाता है। दुष्टों का मार्ग घोर अन्धकारमय है; वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं।" (नीतिवचन 4:18-19)।

यदि हम धार्मिकता में चल रहे हैं तो हम बढ़ते हुए प्रकाश में चलेंगे। यह सच है कि जो अन्धकार में ठोकर खाते हैं उस अन्धकार का कारण बिरले ही जानते हैं, नहीं तो वे उसमें नहीं होते। आलोचनात्मक व्यक्ति प्राय: अपने को छोड़कर सबकी आलोचना करता है। जैसे प्रभु ने कहा, वह अपने भाइयों की आँखों में तिनके खोजने में इतना व्यस्त रहता है कि अपनी आँख में के लट्ठे को देख नहीं पाता, जो उसके अन्धेपन का कारण है। जब हम दूसरे भाई या बहन की आलोचना करते हैं तो हम वास्तव में यह कह रहे हैं कि परमेश्वर का काम मेरे स्तर के अनुसार नहीं है, कि मैं इससे बेहतर कर सकता था। हम में से कौन अपने आप को वह बना सकता है जो हमें होना चाहिए? जब हम अपने आप को बना नहीं सकते हैं तो किसी दूसरे को कैसे बना सकते हैं? यदि हम किसी दूसरे के बच्चों की आलोचना करें, तो कौन नाराज़ होगा? माता-पिता! यह परमेश्वर के विषय में भी सत्य है। जब हम उसके किसी व्यक्ति की आलोचना करते हैं तो हम उसकी आलोचना कर रहे हैं। जब हम उसके एक अगुवे की आलोचना करते हैं तो असल में उसकी आलोचना कर रहे हैं; इसके द्वारा हम कह रहे हैं कि परमेश्वर को पता नहीं है किस प्रकार की अगुआई देनी चाहिए।

इस प्रकार का कुड़कुड़ाना और शिकायत करना वही समस्या थी जिसने इस्राएल की पहली पीढ़ी को उनके प्रतिज्ञा के प्रदेश को पाने से रोके रखा था। उनके बड़बड़ाने के कारण उनको उनका सारा जीवन सूखे स्थानों में बिताना पड़ा था। यह प्रमुख कारण है कि क्यों कितने सारे मसीही परमेश्वर की प्रतीज्ञाओं में नहीं चलते हैं; और वे उनके जीवन जंगल में उसी पहाड़ों (समस्याओं) के

चारों ओर चक्कर लगाते हुए बिताते हैं। जैसे हमें चेतावनी दी गई है: "हे भाइयो, एक दूसरे की बदनामी न करो। जो अपने भाई की बदनामी करता है या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बदनामी करता है और व्यवस्था पर दोष लगाता है; और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलनेवाला नहीं पर उस पर हाकिम ठहरा। व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो एक ही है, जो बचाने और नाश करने में समर्थ है। पर तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है?" (याकूब 4:11-12)।
जब हम आलोचना करने के लिए "उँगली उठाते" हैं तो हम अपने को जूए में बाँधते हैं। प्रभु ने हमें चेतावनी दी: "दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाम से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।" (मत्ती 7:1-2)।

गरीबी की आत्मा

मैं एक बार एक देश में गया था जो एक सबसे शक्तिशाली गरीबी की आत्मा के अधीन था जिसे मैं ने पहले कभी वहाँ देखा था। उन लोगों के स्वभाव से सम्बंधित एक विशेषता जो सबसे अधिक प्रकट थी कि वे किस प्रकार अमीर लोगों का, या किसी का भी जिसका अच्छा चल रहा था तिरस्कार करते और आलोचना करते थे। इसके द्वारा इन लोगों ने अपने आप को उनके अपने न्यायों से जोड़ लिया था कि वे आशीष नहीं पा सकते थे।
हमारे पास कभी अभाव हो सकता है, तो कभी बहुत हो सकता है। प्रेरित पौलुस ने भी दावा किया कि वह अनेक बार भूखा रहा है, और उसने हमें कठोरता के साथ चेतावनी दी है कि यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो तो हम संतोष करें (1 तिमु. 6:8 देखो)। फिर भी. यदि मुझे अभाव में होना है तो मुझे इसे परमेश्वर और वह जो मेरे जीवन में करने का प्रयास कर रहा है उसके समर्पण में, न कि गरीबी की दुष्ट आत्मा के समर्पण में करना होगा। मैं दूसरों के अपने न्याय के कारण गरीबी की आत्मा के साथ जुड़ना नहीं चाहता हूँ।

उस देश में जिन पास्टरों से मैं मिला उन्होंने अपने आपको और उनकी कलीसियाओं को गरीबी के साथ दूसरे लोगों की आलोचना करते हुए कि वे कितनी बार दान लेते हैं जोड़ लिया था। उनके न्यायों के कारण वे दोषी महसूस किए बिना बाइबल वाला दान भी नहीं ले पाते थे। जैसे उन्होंने उनके विषय में संदेह बोया हुआ था जो दान लेने में बहुत समय लगाते थे, उनके अपने लोग भी यदि वे समय लगाते तो संदेह करने लगे थे। जैसे उनके न्याय उनके ही सिर पर लौटने लगे तो वे उनकी आवश्यकताओं के विषय में केवल अन्धकार और बिना उत्तर की प्रार्थनाएँ ही जानते थे। जो रुपये-पैसे के विषय में सत्य है आत्मिक वरदानों के विषय में भी सत्य हो सकता है। मैं उस देश में कइयों से मिला जिन पर आत्मिक अधिकार के महत्त्वपूर्ण अभिषेक थे, जिनका कलीसिया पर राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव होना चाहिए था, परन्तु वे उनका समय घट रही कलीसियाओं में बिना किसी फल के बिता रहे थे।
कभी-कभार हमारे लोग घटेंगे क्योंकि हम सही काम कर रहे हैं, वैसे ही जैसे प्रभु के अपने चेले उसे छोड़ गए थे जब उन्होंने उन्हें कठोर शिक्षा दी जिसे वे स्वीकार नहीं कर पाए थे, परन्तु इन पुरुषों के साथ ऐसा नहीं था। उन्होंने दूसरों की सेवाओं का न्याय और आलोचना की थी जो प्रभाव पा रहे थे और इस प्रकार अपने आप को जोड़ लिया था। परमेश्वर उनको वह स्थान नहीं दे सकता था जहाँ वे फल ला सकते थे जो उनके अभिषेक और अधिकार को लाना चाहिए था। हमारी आलोचनाएँ हमें गरीबी में ले जाएँगी। "जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा" (नीतिवचन 18:21)।

आलोचना अभिमान का अन्तिम प्रदर्शन है क्योंकि यह श्रेष्ठता का ढोंग करती है। अभिमान वह लाता है जिससे किसी भी विवेकी मनुष्य को सबसे अधिक डरना चाहिए - परमेश्वर का विरोध। "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है" (याकूब 4:6)। परमेश्वर हमारा विरोध करे उससे भला तो यह होगा कि नरक के सारी दुष्टात्माएँ हमारा विरोध करें।

सत्य मारता है

हमारी आलोचना सच्ची पहचान में से निकल सकती है। जिनकी हम आलोचना करते हैं भ्रम में हो सकते हैं। जिस प्रकार पास्टर उनकी आलोचना कर रहे थे जो छलयोजना, क्रत्रिम उत्तेजना और कभी-कभी एकदम छल के द्वारा पैसा इकट्ठा कर रहे थे, सही थे। हमें पहचानते हुए चलना है, और प्रेरित ने इसे स्पष्ट किया था, जब उसने कहा "हम उनकी आलोचना नहीं करते जो कलीसिया में हैं?" बात यह है कि उससे कैसे निपटें जिसे हम पहचानते हैं: क्या हम इसे दोष लगाने के लिए या मध्यस्थता करने के लिए इस्तेमाल करेंगे? किस सेवा के हम भाग होने वाले हैं? हम पहचान से किस प्रकार निपटते हैं हमारे आत्मिक जीवनों का परिणाम निर्धारित करेगा। "ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढ़ी टेढ़ी बातें बकता फिरता है, वह नैन से सैन और पाँव से इशारा, और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है, उसके मन में उलट-फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और झगड़ा-रगड़ा उत्पन्न

करता है। इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, वह पल भर में ऐसा नष्ट हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा।" (नीतिवचन 6:12-15)।

प्रभु ने बताया कि सबसे अन्तिम चीज जिसमें हमें पड़ना चाहिए एक ठोकर का पत्थर होना है; उसके छोटों में से किसी के ठोकर का कारण बनने से भला होता कि हम पैदा ही नहीं होते। मत्ती अध्याय 18 में, उसने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि हम किस प्रकार एक भाई से जो पाप में है निपट सकते हैं। उसने हमें ऐसा ठोकर के पत्थर बनने से रोकने के लिए कहा था। पहले, हम उसके पास अकेले जाते हैं। एक बार जब वह हमारी सलाह को अस्वीकार करता है हम उसके पास एक और भाई को लेकर जाते हैं। केवल जब उसने दोनों को अस्वीकार किया है हमें सारी कलीसिया के सामने मामले को लेकर जाना चाहिए। यदि हम उस नमूने पर नहीं चलते तो हम वह बनने के खतरे में हैं जिसे हमें कभी नहीं बनना चाहिए: एक ऐसा व्यक्ति जिसने उसे ठोकर खिलाई, जिसके लिए प्रभु ने अपना जीवन दिया था।

सुधार लाने में मत्ती 18 के अनुसार नहीं करने के मैं ने असंख्य बहाने सुने हैं। एक लोकप्रिय बहाना है: "मैं जानता था वे मेरी नहीं सुनेंगे।" मैं ने यह बहाना भी सुना है, "यदि उनकी सेवा सार्वजनिक है तो उन्हें सार्वजनिक रूप से प्रकट किया जाना चाहिए।" यह तो बहुत हास्यास्पद है क्योंकि कुछ हद तक, हर सेवा सार्वजनिक है। कौन पता लगाता है कि किस हद तक कोई सेवा सार्वजनिक है जो हमें परमेश्वर का वचन मानने से छूट देती है? प्रभु ने ऐसी कोई शर्त नहीं दी है। जो लोग प्रभु यीशु द्वारा दी गई स्पष्ट आज्ञाओं के साथ ऐसी स्वतन्त्रता लेते हैं दावा कर रहे हैं कि उनके पास परमेश्वर के वचन में जोड़ने की स्वतन्त्रता है। यदि एक व्यक्ति जो पाप में है और जिसकी बड़ी सेवा है और अगम्य है, तो हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हम नहीं हैं जिन्हें न्याय करना चाहिए। ऐसे मामले में, हमें दोष नहीं - मध्यस्थता करनी चाहिए। प्रभु अपने घराने का न्याय कर सकता है और यदि वह हमें इस्तेमाल करना चाहता है तो वह हमारे लिए मार्ग बनाएगा। यदि वह हमारे लिए मार्ग नहीं बनाता, तो हम भरोसा कर सकते हैं कि वह अपने तरीके से करेगा। एक बार फिर, यह हमें उस न्याय में आने से बचाने के लिए है जो उस से भी कठोर हो सकता है जो उस भाई पर आएगा जो पाप में है।

यदि हम ने उस भाई से निपटने के लिए जो पाप में प्रभु के निर्धारित तरीका नहीं अपनाया है, तो हमें इसके विषय में किसी दूसरे के साथ बात करने का कोई अधिकार नहीं है, सार्वजनिक जाने की तो बात ही नहीं है। किसी दूसरे का विचार लेने के लिए भी इस की बात नहीं की जानी चाहिए। जिसे हम किसी दूसरे का विचार लेना कहेंगे, परमेश्वर उसे गपशप करना कहता है! उसे धोखा नहीं दिया जा सकता है और हमें ऐसे अविवेक की कीमत देनी पड़ेगी। उसकी आज्ञा था कि पहले व्यक्ति के पास अकेले में जाओ। जब पहले हम ने ऐसा कर लिया है तब ही हम दूसरे व्यक्ति के पास जा सकते हैं, और वह भी केवल पाप में पड़े व्यक्ति की सहायता के लिए ही। हमारा लक्ष्य भाई को पाप में से छुड़ाना है, उसे प्रकट करना नहीं है। पौलुस ने चेतावनी दी: "हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।" (गलातियों 6:1)।

प्रेम ढाँपता है

आओ हम दूसरे के पाप के विषय में अपनी चुनौतियों में तुच्छपन न दिखाएँ। "प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है" (1 पतरस 4:8)। हम में से अधिकाँश के जीवनों में अभी भी सैकड़ों चीजें हैं जिनसे निपटना प्रभु ने समाप्त नहीं किया है। वह अकसर एक समय में एक या दो से निपट रहा होता है क्योंकि हम इतना ही सम्भाल सकते हैं। बाकी की तीन सौ समस्याओं से निपटने के प्रयास में हमें लगाने की शैतान की योजना होती है, जिससे कि हम परेशान और हार में फँसे रहें।

मत्ती 18 हमें एक डण्डे के रूप में अपने भाई को बताने के लिए कि उसने कैसे हमें नाराज़ किया है नहीं दिया गया था। यदि हम में प्रेम है तो हम उन में से अधिकाँश को, यदि ये हमारे भाई को अनावश्यक चोट नहीं पहुँचा रहे हैं तो ढाँप देंगे। हमें इस पवित्रशास्त्र को, वरन् सब पवित्रशास्त्रों को, प्रेम में, न कि अपनी सुरक्षा के लिए या बदले में इस्तेमाल करना चाहिए।

निस्संदेह, प्रभु यीशु आप हमारा आदर्श है। जब उसने सात कलीसियाओं को सुधारा था, तब उसने हमें कलीसिया में सुधार लाने का एक सिद्ध नमूना दिया था। पहले उसने हर कलीसिया की प्रशंसा की और उसे सामने लाया जो वे सही कर रहे थे। फिर उसने सीधे से उनकी समस्याओं को सम्भोदित किया। अविश्वसनीय रूप से, उसने ईजेबेल को भी मन फिराने का अवसर दिया! फिर उसने हर कलीसिया को उनकी समस्याएं जीत लेने के इनाम के रूप में अदभुत प्रतिज्ञा दी। प्रभु कभी बदलता नहीं है। जब वह आज भी सुधार लाता है तो यह सदा प्रोत्साहन, आशा और प्रतिज्ञाओं में लिपटा हुआ होता है।

"भाइयों पर दोष लगानेवाला" भी कलीसिया में सुधार लाने का प्रयत्न कर रहा है। उसके तरीके और लक्ष्य प्रकट है बहुत भिन्न हैं। यीशु प्रोत्साहन देता और आशा देता है; शैतान दण्ड देता और निराशा लाने का प्रयास करता है। यीशु व्यक्ति का निर्माण करता है

ताकि वह सुधार को सम्भाल सके। शैतान फाड़ डालता है ताकि आप हिम्मत छोड़ दें। यीशु हम से प्रेम करता है और हमें सबसे ऊँचे स्थान जहाँ वह ला सकता है लाना चाहता है। शैतान का लक्ष्य नाश करना है।
पैन्टेकोस्टल और कैरिस्मेटिक गतियों का एक सबसे विशिष्ट तथ्य आत्माओं की परख करने की उनकी अयोग्यता है जिनकी आत्मिक वरदानों और अनुभवों की ओर झुकाव था। शत्रु की सबसे घातक आत्मा - भाइयों पर दोष लगानेवाला - की सबसे कम पहचान है! क्या हो सकता है कि उनके विरुद्ध हमारे न्याय ने जिनका हमारे समान बपतिस्मा, या कोई दूसरे आत्मिक अनुभव नहीं हैं, हमें आत्माओं की परख की अयोग्यता के साथ जोड़ दिया है? परख के आत्मिक वरदान के बिना भी, याकूब हमें बुद्धि के स्रोत की पहचान करने के स्पष्ट निर्देश देता है, जिनकी ओर यदि हम ने ध्यान दिया होता तो कलीसिया इसकी सबसे शर्मनाक कुछ असफलताओं से बची रही होती:

"तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चाल-चलन से उस नम्रता सहित प्रकट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। पर यदि तुम अपने-अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, शारीरिक, और शैतानी है। क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। मिलाप कराने वाले धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोते हैं।" (याकूब 3:13-18)।

हमारा उद्धार अनुग्रह से हुआ है और इस जीवन में से निकलने के लिए हमें सारा अनुग्रह जो हम पा सकते हैं पाना है। यदि हमें अनुग्रह पाना है तो हमें अनुग्रह देना सीखना होगा क्योंकि हम उसे काटने वाले हैं जिसे बोते हैं। यदि हम दया पाने की अपेक्षा करते हैं तो भला होगा हम दया बोला आरम्भ करें, क्योंकि हम में से अधिकाँश को उस सारी दया की आवश्यकता होगी जो हम पा सकते हैं। उस दिन प्रभु के सामने अपने हाथों पर अपने भाई का लहू लेकर आना, वह अन्तिम काम जो हम करना चाहेंगे। उसने चेतावनी दी है, "तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि 'हत्या न करना', और 'जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा, और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे, और तू बन्दीग्रह में डाल दिया जाए। मैं तुझ से सच कहता हूँ कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा।" (मत्ती 5:21-26)। इस चेतावनी का संदर्भ यह है कि, यदि हम ने अपने भाई को नाराज़ किया है तो जब तक हम अपने भाई से मेल मिलाप नहीं कर लेते परमेश्वर की आराधना के विषय में भूल जाएँ। हम प्रायः सोचते हैं कि हमारी आराधना और दान हमारे पापों को बराबर कर देंगे परन्ते वे कभी नहीं करेंगे। हम तब तक अपने बनाए हुए कैदखानों में पड़े रहेंगे जिन्हें हम अपने न्यायों के द्वारा बनाया है, जब तक हम आखिरी कौड़ी तक भर नहीं दे देते, या जब तक हम अपने भाई से जिसकी निन्दा हम ने की है मेल मिलाप नहीं कर लेते।

प्रभु ने कहा है कि जब वह लौटेगा वह भेड़ों और बकरियों के बीच न्याय करेगा (मत्ती 25:31-46 देखो)। जो भेड़ें होंगे वे राज्य और अनन्त जीवन पाएँगे। जिन्हें बकरियाँ ठहराया जाएगा अनन्त न्याय में चले जाएँगे। यह विभाजन इस बात पर निर्भर करता है कि हर एक ने किस प्रकार प्रभु के साथ बर्ताव किया है, जो उसके लोगों के साथ बर्ताव में दिखाई देता है। जैसे यूहन्ना ने कहा: "जो कोई कहे, 'मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ', और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता।" (1 यूहन्ना 4:20)। "जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए।" (1 यूहन्ना 3:15-16)।
कलीसिया के इतिहास की एक सबसे बड़ी विपत्ति परमेश्वर की हर गति के वे अगुवे रहे हैं जो परवर्ती गतियों के विरोधी और अत्याचारी बने हैं। आज भी यह प्रवृत्ति जारी है। असंख्य अगुवों ने विश्वासयोग्यता और भलाई के साथ सेवा करने में उनके जीवन बिताए हैं, परन्तु अन्त में दोष लगानेवाले के पात्र बन गए हैं, जिसने उन्हें अगली गति के लिए ठोकर के पत्थर बनाया है।
प्रभु उसकी कलीसिया को शुद्ध करने, और उन अनेकों में दीनता लाने के लिए यह आक्रमण होने दे रहा है जिन्हें अधिक सामर्थ्य और अधिकार से भरकर इस्तेमाल करने वाला है। वह दोष लगानेवाले को कलीसिया में सर उठाने दे रहा है ताकि उसका सर उड़ा सके। प्रभु उन्हें इस प्रकार से निर्दोष सिद्ध करेगा जिन पर झूठे दोष लगाए गए हैं जिससे उसके लोगों में प्रभु का एक पवित्र और शुद्ध भय समा जाए ताकि हम अपने हृदयों में दोष लगानेवाले को अधिकार न देते रहें।

यह क्या है जो एक गति के अगुवों को अगली गति के विरोधी बना देता है? इस में अनेक तथ्य सम्मिलित हैं, जिन्हें हमें समझना और उनसे छुटकारा पाना है, नहीं तो हम भी उन्हीं भूलों को दोहराते रहेंगे। हम सम्भव है सोचेंगे और कहेंगे कि हम ऐसा कभी नहीं करेंगे, परन्तु यह बात सब ने सोची और कही थी परन्तु फिर भी किया था। "इसलिए जो समझता है, 'मैं स्थिर हूँ', वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।" (1 कुरिन्थियों 10:12)। जिस अभिमान के कारण हम सोच कर चलते हैं कि हम ऐसा नहीं करेंगे अनेक कारणों में से एक है जो हमें पतन में ले जाता है।

यह समस्या असल में कलीसिया के इतिहास से पहसे आरम्भ हुई थी, जब इस संसार में पहले दो भाइयों ने जन्म लिया था। बड़े वाला छोटे को सहन नहीं कर सका, जैसे यूहन्ना ने कहा। "क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें; और कैन के समान न बनें जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई को घात किया। और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे।" (1 यूहन्ना 3:11-12)। पवित्र आत्मा की हर कार्रवाही ने कलीसिया में अधिक ज्योति लौटाई है। यह कोई नई सच्चाई नहीं है परन्तु इस सच्चाई को कलीसिया ने अन्धकार-युग में खो दिया था। चाहे हम अपने विरोध को कोई भी नाम दें, इसके अधिकाँश का मूल कारण ईर्ष्या है। जो अगुआई में हैं, या जो कुछ समय के लिए ज्योति की ओर विश्वासयोग्य रहे हैं, विश्वास नहीं कर पाते हैं कि प्रभु उसके सत्य और उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए उनके सिवाय किसी दूसरे को इस्तेमाल करेगा।

जिन मनुष्यों में स्वाभाविक अगुआई के गुण हैं प्रायः वे होते हैं जो कलीसिया में प्रभाव के सबसे बड़े पद प्राप्त करते हैं। वे कमज़ोर नहीं हैं, और उनके लिए अगुआई छोड़ना कठिन होता है। फिर भी, यदि हम प्रभु की आज्ञा मानने के बदले, अपने स्वाभाविक अगुआई के गुणों का सहारा लेंगे, तो ठोकर के पत्थर बनने के अन्तिम असफलता तक पहुँच जाएँगे।

सच्ची आत्मिक अगुआई सेवकपन की दीनता में, न कि स्वाभाविक योग्यताओं में आधारित है। जितना अधिक प्रेरित पौलुस सच्चे आत्मिक अधिकार में बढ़ता गया उतना अधिक उसने निश्चय किया कि वह "शरीर में भरोसा नहीं रखेगा", बल्कि "अपनी निर्बलताओं में घमण्ड" करेगा। उन्हीं क्षेत्रों की हमें रक्षा करनी पड़ती है जिन्हें हम ने स्वयं खड़ा किया है। जिनके अधिकार परमेश्वर ने स्थापित किए उसे बनाए रखने के लिए जो उन्हें सौंपा गया है परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।

इस भयानक फँदे में पड़ने से अपने आपको रोकने के लिए अगुवों को यूहन्ना बपतिस्मादाता की दीनता और स्वभाव की खोज करनी होगी। यह मनुष्य सच्चे आत्मिक अधिकार का सबसे बड़ा प्रतीक है। उसके जीवन सारा उद्देश्य यीशु के लिए मार्ग तैयार करना, उसकी ओर संकेत करना, और फिर कम होते जाना था जब बड़ा बढ़ने लगा था। यूहन्ना का आनन्द दूल्हे के आनन्द को देखना था।

सच्चे आत्मिक अगुवों का रवैया "आत्मिक" हिजड़ों का सा होना चाहिए। एक हिजड़े का सारा उद्देश्य राजा के लिए दुल्हन को तैयार करना था। हिजड़े के लिए दुल्हन की चाह करना भी सम्भव नहीं था, परन्तु उसका सारा आनन्द राजा के आनन्द में था। यीशु ने "अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया।" इस प्रकार उन्हें भी करना चाहिए जो सच्चे आत्मिक अधिकार में चलते हैं। जब हम सेवा को नाम बनाने के लिए, उनको खोजने के लिए जो हमारी सेवा करेंगे और अपने आप को भरने के लिए इस्तेमाल करते हैं, तो हम में यीशु का अधिकार नहीं होगा। यह केवल अगुआई की पुरानी पीढ़ी ही नहीं है जो ठोकर के पत्थर रहे हैं; नई पीढ़ी भी पिछलों को ठोकर खिलाने के उतने ही दोषी हैं। यह मान कर चलने का अभिमान कि हम नई पीढ़ी हैं (पुराने के विरुद्ध) अभिमान की बात है जिसका विरोध परमेश्वर करेगा। यह उन पुरुषों और स्त्रियों के चेहरों पर अपमानजनक थप्पड़ है जिन्होंने प्रभु और उसके लोगों की सेवा में उनके जीवन बिताए हैं।

यीशु ने पुराने क्रम का भाग होने के लिए यूहन्ना बपतिस्मादाता की निन्दा नहीं की - उसने उसका सम्मान किया। यीशु ने अपने आप को यूहन्ना की सेवा के अधीन भी किया। इस अधीनता का अर्थ यह नहीं था कि यूहन्ना यीशु को नियंत्रण में करता, परन्तु यीशु ने यूहन्ना को स्वीकार किया और उसे और उसके काम को महत्त्व दिया।

ऐसा क्यों है कि दुर्व्यवहार किए गए बच्चे बड़े होकर दुर्व्यवहार करनेवाले बनते हैं? ऐसा क्यों है कि दोषित किए गए सन्त बड़े होकर दोष लगानेवाले बनते हैं? दोनों का उत्तर वही है। दुर्व्यवहार किए गए बच्चे उनके माता पिता का न्याय करते हुए और उनके समान नहीं बनने का निश्चय लिए हुए बड़े होते हैं। इसलिए वे प्रतिक्रियावादी बन जाते हैं, जो अनुग्रह नहीं लाता परन्तु कड़वाहट को पालता और बढ़ाता है - जो अन्त में उनको उनके माता-पिता के समान बना देता है। केवल दीनता, पश्चाताप और क्षमा उस चक्र को तोड़ सकते हैं। जब तक हम क्रूस का अनुग्रह नहीं पाते माता-पिता के पाप बच्चों के पाप बन जाएँगे। परमेश्वर अपना अनुग्रह दीनों को देता है - जो इसे समझते हैं उसकी सहायता बिना उनके माँ-बाप जैसे होंगे।

एक ऐसी पीढ़ी होगी जो इसके पहले की हर पीढ़ी के समान सताई गई होगी, परन्तु जो अगली को वैसे ही सताएगी नहीं। यह गति "पीढ़ियों का अभिमान" के अधीन नहीं हुई होगी, न ही मान कर चलेगी कि सब चीजें उनके साथ समाप्त होंगी। इस पीढ़ी ने क्रूस

का अनुग्रह पाया होगा, और उन्होंने उनको हृदय से क्षमा किया होगा जिन्होंने इनके साथ दुर्व्यवहार किया था। यह पीढ़ी समझेगी और आशा भी करेगी कि उनके आत्मिक और स्वाभाविक सन्तान मसीह में उससे आगे जाएँगे जहाँ वे पहुँचे हैं और इससे वे प्रसन्न होंगे। वे उनके जीवन उस पीढ़ी का मार्ग जितना सरल हो सकता है बनाने के लिए देंगे, और आनन्द के साथ कम होंगे जैसे यह पीढ़ी बढ़ती जाएगी। वे एलिय्याह की आत्मा होंगे जो पिताओं के हृदय पुत्रों की ओर, और पुत्रों के हृदय पिताओं की ओर फेर लेंगे।

ऐसी एक पीढ़ी होने की हमारी योग्यता, जो प्रभु और उसके अनन्त उद्देश्यों के लिए मार्ग तैयार करेगी, इस बात से निर्धारित होगी कि इन दो में से कौन सी सेवा हम चुनेंगे - दोष लगाना या मध्यस्थता करना। आओ अब हम अपने बीच में से "उँगली उठाने" के भयानक जूए को उतार फेंके और अपनी आलोचनाओं को मध्यस्थता की ओर फेरने लगें।

"तब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तब दोहाई देगा और वह कहेगा, 'मैं यहाँ हूँ।' और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और अकाल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखेगा। तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे; तू पीढ़ी पीढ़ी की पड़ी हुई नींव पर घर उठाएगा; तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारक और पथों का ठीक करनेवाला पड़ेगा।" (यशायाह 58:8-9, 11-12)।

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 8 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

==

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी, प
ाी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**